BIBLIOTHECA INDICA;

A

COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED UNDER THE SUPERINTENDENCE OF THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

NEW SERIES,

Nos. 339, 340, 342, 347, 348, 351, and 355 ?

Sáma Veda Sañhitá.

WITH THE COMMENTARY OF

SA'YAṆA A'CHA'RYA.

EDITED BY

SATYAVRATA SA'MAS'RAMI',

EDITOR OF THE HINDU COMMENTATOR.

VOL. III.

BIBLIOTHECA BODLEIANA

CALCUTTA.

PRINTED BY N. K. SIRCAR, AT THE GANES'A PRESS.

1876.

Digitized by Google

सामवेदसंहिता,

भगवत्सायणाचार्य्य-विरचित-भाष्य-सहिता।

श्रीश्री

वङ्गदेशीयासियाटीक्-समाजाभ्यर्थनया

——000——

अधीतवेद-"प्रत्नकम्रनन्दिनी"-सम्पादकेन

श्रीसत्यव्रतसामश्रमिभट्टाचार्य्येण

वहुसामगेन

टीकिता यथावसरं शोधिता च।

——000——

तृतीयो भागः

उत्तरार्च्चिकः

प्रथमादि-प्रपाठकत्रयात्मकः॥

कलिकाता

गणेशयन्त्रे मुद्रितः।

शाकाः १९२१।

Digitized by Google

Digitized by Google

॥ मन्त्राणामकारादिक्रमेण सूची ॥

——0*0——

मन्त्रप्रतीकम्			पृष्ठम्
अग्न आयाहि (१, १, ४, १ = उ ०)	...	...	१४
अग्निं वो वृधन्तं (१, १, १०, १ = उ २, १, १०—६, १, १)		...	५०२
अग्निनाग्निः (२, २, ५, १ = उ ०)	...	...	२८५
अग्निं दूतं (२, १, ६, १ = उ ०)	...	...	२०१
अग्निमग्निं हवीमभिः (२, १, ९, २ = उ ०)	...	...	२०३
अग्ने देवां (२, १, ६, ३ = उ ०)	...	...	२०५
अच्छा कोशम् (१, १, ३, १ = उ ११, १, १३)	...	...	१०
अच्छा समुद्रम् (१, १, ३, २ = उ ११, १, १२)	...	...	११
अतस्त्वा रयिर् (२, २, ३, ३ = उ ०) ...	..	..	२८१
अयाश्चमोर् (३, १, ८, ७ = उ ०)	...	...	५०९
अध धारया (३, २, १० २ = उ २, १, १५—८, २, ५)	...	...	६७१
अयावीन्द्र (१, १, २१, १ = उ १, १, १७—१०, २, ८)	...	..	१९०
अधा हिन्वान (२, २, ३, ४ = उ ०) ...	...	..	२८२
अनुलारोदसी (३, २, ९, २ = उ ०) ..	..	..	६११
अनुप्रत्नास ओकसो (१, २, ११, २ = उ १, २, ९)	...	..	२२९
अनूपे गोमान् (३, १, ११, २ = उ ३, १, ३—४--७, २, १२—१९, २, २— १०, १, १९—११, १, १५)	...	..	६२०
अप्सा इन्द्राय (३, २, ११, २ = उ, अर्षा सोम)	..	..	६१५
अभिगावी (३, २, २, २ = उ ०) ...	...	...	५९२
अभि ते मधुना (१, १, १, २ = उ ११, १, ११)	...	..	४
अभि त्वा वृषभा (२, २, ७, १ = उ १, २, ५)	..	..	२१५

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

अभित्वाशूर (१, १, ११, १ = उ १२, १, १९,—२२, १, १—२१, १, १२) ८३
अभिद्युम्नं (३, २, १७, १ = उ ३, १, ११—५, १, १ –९, १, १२—
१४, २, १४—१९, १, १२) ६४५
अभिद्रोणानि (१, १, १९, २ = उ, प्रगोभारोविपश्चितो) ... २९७
अभिप्रवः (२, १, १३, १ = उ २, १, २—७, १, ७—२१, १, ११—१५) ३३४
अभिप्रियाणि (१, १, १९, १ = उ १, १, १३,—९, १, २—१४, १, १८—
१६, १, १५—१९, १, १४) ६६५
अभिब्रह्मीर् (२, २, १४, १ = उ २, १, २0—७, १, १६—९, १, ७—
१५, १, १९—१६५ २0, १, १0—११) .. ४४२
अभिव्रतानि (३, २, २0, ३ = उ ३, १, १५—८, २, ५) ... ६७२
अभिसोमासआयवः (२, २, ९, १ = उ २, १, १४ –१५—४, २, ७—
८—९—१०— ११—१२—७, १, १३—७, २, १४—
१५—१६—८, १, १६—१७—८, २, १८—९, २, १५— ..
९, ३, ६—१२, १, ३—१२, २, १६—१४, १, ९— ...
१४, २, ५—७—१६, २, २—३—१८, २, २— ...
३—१०—२२, २, १०) ४०१
अभीषुणः (१, १, १२, ३ = उ १, १, ५—१0, १, ८) ... ८९
अभ्यर्षंबृहत् (३, २, ४, ४ = उ 0) ५९९
अयंयथान (३, १, २०, २ = उ २, २, १०—६, २, ११) ... ५७४
अयंवांमित्रावरुणा (३, १, ७, १ = उ 0) ५0४
अयंविश्वाअभि (३, १, २०, ३ = उ २, २, १0—६, २, ११) ... ५७४
अयंविश्वानितिष्ठति (१, २, १६, ३ = उ, अत्रप्रता) ... २५२
अयंसखो (३, १, ४, ३ = उ ०) ४९२
अयंसूर्य (१, २, १६, २ = उ, अत्रप्रता) २५१
अयन्तइन्द्र (१, २, ५, १, = उ १, २, २—१, २, २) २०८
अयम्पुनानउषसो (२, १, १७, ३ = उ २, १, १०—९, १, ५—१६, १, १७) ३६०
अयम्पूषारयिर् (२, १, १६, १ = उ २, १, ८—९—७, १, ९—११, २, १०— ...

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

१०—१३, १, २—१५, १, १३—१४—२, १०— .. ...
१०, २, ५—८—२२, २, ९) ३४५
अयाचित्तो (२, १, १०, ३ = उ, अया पवस्व) ३१४
अयंभराय (१, १, १७, २ = उ, इन्द्रमच्छसुता) १११
अयापवस्वदेवयुर् (१, २,२२,१ = उ १, २, १६—१७—९, २, १५—१६—९ ३, २) २८९
अरूरुचदुषसः (२, २, १९, ३ = उ ७, २, १—१२, २, २—१५, १; १) ४६२
अर्षासोमद्युमत्तमो (२, २, ११, १ = उ ३, १, ५—६—७—८—८, २, ३— ...
४—९, २, १३—१९, ३, ३—२०, १, १९—२०,—२०, २, १) ६१४
अवद्युतानः (१, १, १९, ३ = उ, अभिप्रियाणिपवते) १९७
अश्वोनचक्रदो (२, १, ३, ३ = उ ०) २९८
असर्जिकलशां (२,१,१८,३ = उ ३,२,१७—७,१,९—९,३, ४—१५, २, ११) ५६१
असाविसोमइन्द्र (३, २, २२, १ = उ ३, १, १८—११, २, १८— ...
२१, २, १८—२२, १, ४) ६८२
असाव्यंशुर्मद् (३, २, १६, १ = उ २, १, १३—७, २, १९—१६, १, ४— ..
२०, २, २) ६४१
असिहिवीर (३, २, १४, २—१९, २, ४) ६३१
अस्यप्रत्नामनु (१, २, १९, १ = उ ९, १, ९—२, ३—३, १०—११, २, ८— ...
१४, १, १९—२०—१४, २, १—२—३—४) .. ३४९
अस्येदिन्द्रोमदेष्वा (१, १, १७, ३ = उ, इन्द्रमच्छसुता) ११३

आघामसद् (१, २, ११, ३ = उ १, २, ९) २२०
आतिष्ठवृत्रहन् (३, २, २२, २ = उ ३, १, १८—११, २, १८—२२, १, ४) ६८४
आनूनमस्युमन्तं १, २, ९, १ = उ १, २, ४) २१२
आतेअग्नइधीमहि (३, २, २१, १ = उ ३, १, १६—१७, १, ६) ... ६७६
आतेअग्नऋचा (३, २, २१, २ = उ ३, १, १६—१७, १, ६) .. ६७७
आत्वाब्रह्मयुजा (१, १, ९, २ = उ ०) १८
आत्वेतानिषीदत— (१, २, १०, १ = उ १, २, ८) २२५

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

आदद्दसधाम् (२, १, ७, १ = उ ०) १९५

आदींहंसो (१, २, २१, २ = उ १, २, १४—११, १, २०) .. १८७

आदींत्रितस्य (१, २, २१, ३ = उ १, २, १४—११, १, २०) ... १८७

आदीमश्वं (३, २,१४,३ = उ ३, १,१०—७,२,१९—१६,१,४—१०, २, २) ६४२

आनइन्द्रो (२, ३, २, ३ = उ ०) २०९

आनःसोमसहो (२, ७, १, २ = उ ०) २०९

आनोमित्रावरुणा (१, १, ५, १ = उ ०) १६

आपप्राथ २, २, ११ २ = उ १२, १, १९) ४३२

आपवमानसुष्टुतिं (३, १, ५, ३ = उ ५, १, १०—१९, २, १०) ... ४९६

आपवस्वमहीम् (३, १, ३, ४ = उ ०) ४८९

आपवस्वसुवीर्यम् (२, १, ४, ३ = उ ०) ३००

आयाहिसुषुमा (१, १, ६, १ = उ ०) १८

आयोनिमरुणो (३, १, ११, २ = उ २, २, १२—२३, २, ११—११—१२) ५३२

आवंसते (२, २, १७, २ = उ २, २, ५) ४६७

आवच्यस्वसुदक्ष (३, २, १४, २ = उ ३, १, ११—५, १, १—९, १, १२— ..
१४, २, १४—१९, १, १३) ६४६

आविवासत् (३, १, ४, ५ = उ ०) ४९४

आसुरर्वं (३, ६, ५, १ = उ ०) ४९१

आवर्धतोअर्जुनो (१, २, १०, १ = उ, प्रतीमदेववीतये) ... २०५

इच्छन्तिदेवाः (१, २, ३, ३ = उ १, १, १०) २०२

इवअमसख (३, १, ८, २ = उ ०) ५०८

इदंवसोसुतं (१, २, ८, १ = उ १, २, ६) २१०

इदंह्यन्वोजसा (१, २, ९, १ = उ १, २, ७) २११

इन्दुरिन्द्रायपवते (२, २, १५, २ = उ २, २, २—४—७, १, २०—९, १, ८— ..
१५, २, १—२—१६, १, २—२०, १, १२—११— १३, २, ११) ४५०

इन्दुर्वाजीपवते (३, २, २०, १ = उ ३, १, १५—८, ३, ५) ... ...

इमोयथातम (३, २, ५, २ = उ०) ६०२

मन्त्रप्रतीकम् — पृष्ठम्

इन्द्रोयदद्रिभिः (२, २, ३, ४ = उ ०) ४९५
इन्द्रइद्धर्योः (२, १, ८, २ = उ ०) ३०९
इन्द्रइषो (१, २, १, ३ = उ १, १, १८) १९७
इन्द्रं विश्वाअवीवृधन् (२, १, १९, १ = उ २, १, १२—७, १, ११,—२१, १, ...
३—२, ३) ३६८
इन्द्रजठरं (२, १, १२, २ = उ ३, १, २) ५८३
इन्द्रजुषस्व (२, १, ११, १ = उ ३, १, १) ५८२
इन्द्रक्रतुंनआभर (२, १, १५, २ = उ १, २, १४--७, २, ७—१८, २, १२) ५४६
इन्द्रमग्निंकविच्छदा (१, १, ७, ३ = उ ०) २१
इन्द्रमच्छसुता (१, १, १७, १ = उ १, १, ७—१०, १, १६—१२, १, १०— ...
१, १, १०—९, १, १७,—६, २, ८—९, १, २०—१०, २, १— ...
१२, २, १०—१३, १, १—१४, १, ११—१४, १, १७) .. १११
इन्द्रमिद्गाथिनो (२, १, ८, १ = उ ०) ३०८
इन्द्रमिद्धरी (३, २, २२, २ = उ ३, १, १८— १२, २, १८—१२, २, १८— ..
१३, १, ४) ६८४
इन्द्रवाजेषु (२, १, ८, ३ = उ ०) ३०९
इन्द्रसुतेषु (१, २, ११, १ = उ १, २, १०—१९, १, २) .. २३२
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो (३, १, २०, ३ = उ ३, १, २) ५८३
इन्द्राग्नीआगतं (१, १, ७, १ = उ ०) १९
इन्द्राग्नीअपित्तुः (१, १, ७, २ = उ ०) २०
इन्द्राग्नीयुवां (३, २, १०, १ = उ ०) ६१२
इन्द्रायनूनं (३, १, २१, ३ = उ २, १, १—२१, २, १७—२२, १, २) ५७८
इन्द्रायमद्वने (१, २, ४, १ = उ १, २, १) २०४
इन्द्रायसाम (३, २, २२, १ = उ ३, १, ७) ६८०
इन्द्रेअग्ना (२, १, ९, १ = उ ०) ३११
इन्द्रेविश्वंहि (२, २, ७, १ = उ ०) ३९१
इन्द्रोदधीचो (३, १, ८, १ = उ ०) ५०६

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् | पृष्ठम्

इन्द्रो दीर्घाय (२, १, ८, ४ = उ०) ३१०
इन्द्रो मदाय वावृधे (२, २, १४, १ = उ १९, २, ४) ... ६२१
इममिन्द्र सुतं (१, १, २१, १ = उ २, १, १—२१, २, १०—२२, २, २) ५०७
इमा उ वां दिविष्टय (१, २, १५, १ = उ २१, २, १—१२—१६ .. २४५
इयं वामस्य (२, १, ९, १ = उ ०) ५११
इयन्नो काय (२, २, ११, २ = उ पर्षासोम) ६१६
इषे पवस्व (२, २, ४, १ = उ ०) ३८२
इहत्वा गोपरीणसं (१, २, ७, २ = उ १, २, ५) २१६
ईशान इमा (२, २, १, २ = उ ८, २, ७—१२, १, १८) ... ५८८
उग्रा विघनिना (२, २, ७, २ = उ ०) २९९
उच्चा ते जातम् (१, १, ८, १ = उ १, १, १—२, १, १२—६, १, ९—१०—
७, १, ११—८, १, ११—१०, १, १०—११—११, १, १४—
१२, १, १—२—११, २, ७—१२, १, १७—१५, १, २—४—
५—१६, १, १९—१९, १, ११, २०, १, ६—७—८—९—
२०, २, १४—२२, १, ४) २२
उत नो गोविद् (२, २, ५, २ = उ ०) ६०२
उत्तिष्ठन्नोजसा (२, २, ९, १ = उ ०) ६१०
उदु श्रियः सृजते (१, २, १४, २ = उ २१, २, ९—१२—१५) ... २४१
उपशितस्य (२, २, १८, २ = उ प्राणाशिशुर्) ६५०
उप त्वाकर्मन्नूतये (१, १, २२, २ = उ १, १, १६— २२, १, १०) ... १८७
उप शिक्षापतस्थुषो (१, २, १८, १ = उ ६, १, ५—१९, २, ११—२२, १, २—११) २६२
उपास्मै (१, १, १, १—१, २, १८, २ = उ २१, १, ११—६, १, ४—
१९, २, ११—२१, १, २—११) ... ... ४।२६२
उपोषु जातम् (१, २, १८, २ = उ ६, १, ५—१९, २, ११—२१, १, २—११ २६३
उभयतः पवमानस्य (२, १, १, २ = उ ८, २, २) ४८०
उरुशंसा (१, १, ५, २ = उ ०) १६

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
ऊर्जोनपातंस (१, १, १०, २ = उ यस्यावस्या)	१७६
ऋतस्यजिह्वापवते (१, १, १९, २ = उ अभिप्रियाणिपवते) ..	१६६
ऋतेनमित्रावरुणा (२, १, ६, २ = उ ०)	१९०
ऋतेनयावृतावृधा (२, १, ७, २ उ = ०)	२०६
ऋतेनयावृतावृधा (२, १, ७, २ = उ ०)	२०६
ऋधक्सोम (१, १, ९, २ = उ ११, १, १२)	८
ऋषिर्विप्रः (१, १, १०, २ = उ १, १, ४—१९, १, ७)	८०
एतेअसृग्रम् (२, २, १, १ = उ ०)	२०६
एनाविश्वान्यर्य आ (१. १, ८, २ = उ उक्थातेजा)	१२
एनावोअग्निं (१, २, १२, १ = उ ११, २, ८—२१, २, ११—२१, २, १४)	२२६
एवानःसोमपरि (२, २, १०, २ = उ २, १, १७)	४१९
एवापवस्वमदिरो (२, १, ११, २ = उ २, १, २—७, १, ६) ...	३१७
एवारातिस (२, १, १८, २ = उ २, १, ११—११, २, २) ..	२६५
एवाह्यसिवीरयुः (२, १, १८, १ = उ २, १, ११—११, २, २)	२६४
एषप्रत्नेनजन्मना (१, २, १७, १ = उ ०)	२६०
एषप्रत्नेनमन्मना (१, २, १७, २ = उ ०)	२६१
एष्वुषुब्रवाणि (१, १, २१, १ = उ १, १, १५—१३, १, १२) ...	१८३
ओभिष्टुबन्ध (३, २, ११, ३ = उ १, २, २१, ३—३, १, १६—१७, १, ६)	६७८
कस्तेमिर्धृष्णवा (२, २, १२, २ = उ २, १, १८—४, १, ८—९—१९, २, ७)	४३६
कयानश्चित्र (१, १, १२, १ = उ १, १, ५,—१०, १, ८) ...	८७
कवीनोमित्रावरुणा (२, २, ६, ३ = उ ०)	३९१
कस्यासत्वी (१, १, ११, २ = उ १, १, ५—१०, १, ८) ..	८८
कण्वकावरियो (२, २, १, २ = उ ०)	३७७
केतुंकृण्वन्दिवस् (१, १, २, १ = उ ०)	५९२
क्रीडुर्मखो (३, २, ४, ७ = उ ०)	६००

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्		पृष्ठम्
गृणाना जमदग्निना (१, १, ५, ३ = उ ०)	... ..	१७
गोवित्पवस्व (२, २, १, १ = उ ८, २, ७—२३, १, १८)	..	५८६
जघ्निर्वृत्रं (२, १, १५, २ = उ ०)	.. ..	३३४
जज्ञानो वाचं (३, २, २, ३ = उ ०)	.. ..	५९१
जनस्य गोपा (३, १, ६, १ = उ १९, १, १५)	.. ..	४९९
तं वो दस्म (१, १, १३, १ = उ १, १, ६—६, २, १४—१३, १, ५— १३, १, ८—१४, १, १०—२१, १, ४—२१, १, ९—२१, १, १७— २२, १, १४)	... ...	९१
तद्यावित (२, १, १८, ३ = उ २, २, ६—८, १, १३—१९, १, १९)		४७०
तत्ते मदं (२, २, १८, १ = उ २, २, ६—८, १, १३—१९, १, १९)		४६८
तत्ते यवं यथा (१, २, ८, ३ = उ १, २, ६)	... ..	२१९
तं त्वा धर्तारं (२, १, १०, २ = उ इषापवस्व)	... ..	३१४
तं त्वा नृम्णानि (२, २, ३, १ = उ ०)	... .	३८०
तं त्वा समिद्भिः (१, १, ४, २ = उ ०)	.. ..	१४
तं दुरोषमभी नरः (१, १, १८, ३ = उ पुरोजितीवो)	...	२१२
तपोष्पवित्रं (२, २, १६, २ = उ ७, २, १—१२, २, २—१५, १, १)		४६०
तमुष्टवाम (२, २, १९, ३ = उ २, २, ७—१२, १, १४)	..	४७५
तमु हुवे वाजसातय (१, २, १२, २ = उ १, २, १०—१९. १, २)	..	२१४
तरणिरित्सिषासति (२, २, १२, १ = उ २, १, १९)	... ..	४४०
तरत्समुद्रं (२, २, ९, २ = उ अभिसोमास आयवः)	... ..	४०१
तरोभिर्वो (१, १, १४, १ = उ १, १, ७—१०, १, १५)	..	१०१
तवश्रियो (३, २, ७, १ = उ ०)	... .	६०५
तवाहं नक्तं (३, १, ११, २ = उ तवाहं सोम)	... ...	५१७
तवाहं सोम (३, १, ११, १ = उ २, २, ९—१०—११—८, १, १८— ९, १, १०— ९, २, १४—१३, २, १—२—१६, २, १५— १६—१७—१८—१९, २, १—२०, १, १४—१५—१६)	... .	५१७

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

ताअस्यनमसा (२, २, १५, २ = उ १०, १, ४) ६२९
ताअस्यपृशनायुवः (२, २, १५, २ = १०, १, ४) ६२८
ताभिरागच्छतं (२, २, १०, २ = ०) ६११
तावांसम्यम् (२, २, ८, १ = उ ०) ६०९
तावांगीर्भिर (२, १, ९, २ = उ ०) २११
तासूयाआघृताहुतो (२, १, ७, २ = उ०) ५०५
ताश्विमग्रसन्न (२, १, ९, २ = उ ०) २११
ताड्वेयवोर् (२, २, ८. १ = उ ०) २९९
तिस्रोईरयति (२, २, १०, १ = उ २, १, १०,) ४२०
तिस्रोवाचउद् (२, २, १४, १ = उ २, १, २०—७, १, १६—९, १, ७—
१५, १, १९—२०, १, १०—११) ४४२
तुभ्येमाभुवना (२, १, १, २ = उ ०) २९४
त्रिकद्रुकेषुचेतनं (१, २, ४, २, = उ १, २, १) २०५
त्रीणित्रितस्य (२, २, १८, २ = उ प्रावाभिस्वर्) ६५०
त्वंराजेवसुव्रतो (२, २, ४, ५ = उ ०) ५९९
त्वंसमुद्रिया (२, १, १, २ = उ ०) २९४
त्वंसोमनृमादनः (२, २, २, ५ = उ ०) ५९५
त्वंसोमपरिस्रव (१, २, ६, १ = उ ०) ६०४
त्वंह्यङ्गदैव (२, १, १०, १ = उ २, २, १६—५, २, १६—११, २, १८—
१९, १, ११) ५५५
त्वन्द्याय (३, २, १९, २ = उ पवस्ववाजसातये) ६५९
त्वमिन्द्रवाजयुस् (१, २, २, २ = उ १, १, १९) २००
त्वन्नवचा (२, २, १, २ = उ ८, २, ७—१२, १, १८) ... ५८०
त्वमिन्द्राभिभूर् (२, २, १२, २ = २, १, १०) ६८१
त्वांरिहन्ति (२, २, १९, २ = उ पवस्ववाजसातये) .. ६५९
त्वामग्ने (२, १, ६, २ = उ १९, १, १५) ५०१
त्वामिद्धाह्वो (२, १, १४, १ = २, १, ४—१८, २, ८) ... २०४

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

त्वामिद्धि हवामहे (२, १, १२, १ = उ ०) २३०

दविद्युतत्या रुचा (१, १, २, १ = उ ११, १, ११) ७

दुहान ऊधर् (१, १, ९, २ = पुनानः सोम) ४२

दुहानः प्रत्नमित् (१, २, १७, ३ = उ ०) २९१

दुघं दुहानं (१, १, १३, १ = उ तं वो ०) ९२

धीभिर्मृजन्ति (३, १, १८, २ = उ १, २, १७—७, २, ९—९, २, ४—
१५, २, ११) ५६०

न किष्ट्वद्रथीतरो (३, १, २१, २ = उ ३, १, १—२२, २, १७—२३, १, ३) ५७७

नघेमन्यद् (१, २, ३, २ = उ १, १, २०) २०२

न त्वावां अन्यो (१, १, ११, २ = उ १२, १, १९—२१, १, १—२२, १, १२) ८४

नहुष्टु मित्रविषोदेषु (२, २, १२, १ = उ २, १, १९) ४४१

नसंकुआ (१, १, १४, २ = उ १, १, ७—१०, १, १५) १०१

नहितेपूर्णम् (१, १, २१, ३ = उ १, १, १५—२३, १, १२) ... १८४

नहिश्लामूर (१, २, ६, ३ = उ १, २, ४) २१३

नूनीरयिं (३, १, १३, ३ = उ २, २, १२—१३, २, ११—१२—१२) ५३४

नृभिर्धौतः (१, २, ८, २ = उ १, २, ६) २१८

नृभिर्येमाणो (२, २, ९, १ = उ नृभिसोमासयायवः) ४०२

नेमिन्नमन्ति (३, १, १४, २, = उ २, २, १२) ५४२

परि नः शर्मयन्त्या (३, १, २, ६ = उ ०) ४९०

परिप्रियादिवः (३, १, १६, १ = उ १, २, १५—७, २, ८—१५, २, १०—
१६, १, ११—२०, १, १७) ५५०

परिविंश्वानि (३, २, ४, ३ = उ ०) ५९८

परिष्कृण्वन् (३, १, ४, १ = उ ०) ४९२

पवते हर्यतो (१, २, २१, २ = उ यथापवस्वदेवयू) ... २८९

पवमानधिया (३, १, १०, ३ = उ २, २, ८—१५, २, ९—१६, २, १) ५१४

पवमानरसस्तव (३, १, २, २ = उ ३, १, १७) ४८४

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् प्रष्ठम्

पवमानस्य वाचा (२, १, ५, ९ = उ ५, १, १०—१५, २, १०) .. ४९६

पवमानस्य ते कवे (१, १, ३, १ = उ ११, १, १३) १०

पवमानस्य ते रसो (२, १, २, १ = उ २, १, १७) ४८४

पवमानस्य ते वयं (१, १, ५, १ = उ ०) ३०१

पवमानस्य विश्ववित् (२, १, २, १ = उ ०) ५९१

पवमानो अजीजनद् (२, १, २, १ = उ ३, १, १७) ... ४८२

पवस्व दक्षसाधनो (३, १. १०, १ = उ २, २, ८—१५, २, ९—१६, २, १) ५१२

पवस्व मधुमत्तम (१, १, १६, १ = उ १, १, ९—२, १, ६—७, १, ८—
१०, १, ५—१७, १, ४—४ १, ८—९, २, ७—१०, २, ५—
१३, २, १८) ११५

पवस्व वाचो (२, १, १, १ = उ ०) २९३

पवस्व वाजसातये (३, २, १९, १ = उ २, १, १२—१४,—८, १, १—२, ६—
१५ २, १९—२०—२१—१६, १, १०—२, ९—२०, २, २—
२१, ३, २—१२, १, १२) ६५८

पवस्व विश्वचर्षणे (३, १, ३, ५ = उ ०) ४९०

पवस्वेन्दवृष्णम (३, २. २, ६ = उ ०) ५९६

पवस्वेन्दो (२, १, २, १ = उ ०) २९५

पवित्रं ते विततं (२, २, १६, १ = उ ७, २, १—१२, २, २—१५, १, १) ४५९

प्रातरग्निं मित्रा (३, २, ८, ३ = ०) ६०९

पान्तमावो (१, २, १, १ = उ १, १, १८) १९५

पिबा सोममिन्द्र (३, १, १३, १ = उ २१, २, १—३) ५३७

पुनानः सोम धारया (१, १, ९, १ = उ १, १, २—३—२, २०—२, १, १—
४, १, ४—५—६—९, १, ११—१२—१३—२, २—८, २, १२—१४—
१५—९, २, १६—१२, १, १२—१०, १, १३—२०—११, २, १६—
१३, १, ७—१९—२, १५—१६—१५, २, ३—४—१६, १, १०—
१७, १, १—१६—१८, १, ७—२०—२१—२, २—१९, १, २०—
२, १२—२०, २, ११—१५—१६—१७—२१, २, ९—१२, १, ५—
८—२२, २, ८) ४१

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् | पृष्ठम्
पुनानो अक्रमीद् (२, १, ११, १ = उ १, २, ११—१३, २, ११—१२—१२) ५३३
पुनानो देववीतय (२, २, ४, ३ = उ ०) ३८४
पुनानो वरिवस्कृधि (२, २, ४, २ = उ ०) ३८४
पुरुहूतम्पुरुष्टुतं (१, २, १, २ = उ १, १, १८) १९६
पुरूतमम्पुरूणाम् (१, २, १०, २ = उ १, २, ८) २२५
पुरूणाचिध्यस्त्यवो (३, २, ८, १ = उ ०) ६०८
पुरोजिती वो अन्धसः (१, १, १८, १ = १, १, ११—१२—२, २, १८—
४, १, १२—१४—६, २, ९—७, २, १०—८, २, १५—१६—१७—
१०, १, ३—१७—१३, १, ६—१२, २—१२—११—१३—१४—
१३, १, ६—२, ६—१६, १, ३—८—९—१६, २, ६—१७, १, ३—
४—१७—२०, १, १८—२, १२—१३—२१, २, १—३, ३—
२२, १, ६—७—९—२, १३—१५—२३, १, ९) १२१
पूर्वीरिन्द्रस्य (२, १, १९, २ = उ २, १, १२—७, १, ११—२१, १, ३—२, २) ३७०
प्रकविर्देववीतये (३, २, ४, १ = उ ०) ५९७
प्रतवाग्निनोः (३, १, १, १ = उ ८, २, २) ४७९
प्रतुद्रव (१, १, १०, १ = उ १, १, ४—१९, १, ७) ७८
प्रतेअश्नोतु (१, २, ९, ३ = उ १, २, ७) २२२
प्रत्युअदर्श्या (१, २, १४, १ = उ २१, २, ९—१२—१५ ... २४०
प्रपवमानधन्वसि (३, २, ३, ३ = उ ०) ५९४
प्रप्रवयावपन्यसे (३, १, १३, ३ = उ ६, २, १५—७, २, ८—१५, २, १०—
१६, १, ११—२०, १, १७) ५५२
प्रमंहिष्ठीय (२, २, १७, = उ २, २, ५) ४६६
प्रवद्गावोन (३, १, ३, १ = उ ०) ४८७
प्रवइन्द्रायमादनं (१, २, २, १ = उ १, १, १९) १९८
प्रसुन्वानाय (१, २, ११, ३ = उ यथापवस्वदेवयुर्) १९०
प्रसोमदेववीतये (१, २, २०, १ = उ १, २, १३—६, २, १३— .. ..
८ १, १२—९, २, १७—१८—११, १, १७—१४, १, १५— ...

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

१८, १, ११—१३—१४—१९, २, १७—२१, १, ६) .. २०४
प्रसोमासोऽधन्विषुः (२, २, ३, १ = उ ०) ५९२
प्रसोमासोमदच्युतः (१, २, २१, १ = उ १, २, १४—११, १, २०) १८६
प्रसोमासोविपश्चितः (१, २, १९, १ = उ १, १, ११—११—६, २, ११— ...
११, २, ११—१४, १, १२—१२—१४—१८, १, ११—१९, २, १५—१६) ...
प्रावाग्निमुर् (२, २, १८, १ = उ ३, १, ११—५, १, २—७, २, १०— ...
७, २, २१—९, १, १४—९, ३, २—१२, १, ५—१५, २, ८—१६, २, ८) ६४९
प्रावीविपद्वाच (२, १, १९, २ = उ २, २, १९—८, २, १—२२, १, १०— ...
१६) ५६८
प्रोष्वस्मै (२, १, १२, १ = उ २२, २, १—२) ५३८
प्रत्नादेवानां (३, १, १९, २ = उ २. २, १९—८, २, १—२२, १, १०—१६) ५६६
प्रत्वावस्वायुजा (१, १, ६, ३ = उ ०) १९
मत्स्वामुभिप्रिय् (२, १, १४, २ = उ २, १. ४—१८, २, ८) ... २४०
मनीषिभिःपवते (२, १, १७, २ = उ २, १, १०—९, १, ५—१६, १, १७) ३५९
मामाभूरा० (१, २, ७, २ = उ १, २, ५) २१५
मापापत्वाय (२, १, ९, २ = उ ०) ५१२
मित्रंवयंहवामहे (२, १, ७, १ = उ ०) २०५
मित्रंवये (२, २, ६, १ = उ ०) ३८९
मेधाकारं (३, २, ७, ३ = उ ०) ६०७
मोषुब्रह्मेव (२, १, १८, ३ = उ २, १, ११—२१, २, २) ... ३६३
यथोजिष्ठमा (२, १, १९, २ = उ यथाभूयारथिर्) ३४७
यज्ञस्यकेतुं (३, १, ६, ३ = उ १९, १, १५) ५०२
यज्ञायज्ञावो (१, १, २०, १ = उ १, १, १४—१२, २, ५—१२, १, ११—
२१, २, १०—२१—१२, १, ८) १०५
यमक्व (१, १, २१, २ = उ १, १, १५—१२, १, ११) .. १८४
यत्सोमचित्रं (३, २, १२, १ = उ ३, १, ९) ६२९
यदद्भिःपरिषिच्यसे (२, १, ४, २ = उ ०) २९९

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् . पृष्ठम्

यदुदीरत (२, २, १४, ३ = उ १९, २, ४) ६३४
यद्यावइन्द्र (२, २, ११, १ = उ १२, १, १९) ४२१
यवंयवंनो (३, २, ५, १ = उ ०) ६०१
यदिन्द्र (१, १, १९, १ = २, २, ७—१२, १, १४) ... ४७४
यस्तेयनु (१, २, ९, २ = उ १, २, ७) २१२
यस्तेमदोयुज्यश्चारु (३, १, १२, १ = उ १२, २, १—३) .. ५३८
यस्तेमदोवरेण्यं (२, १, १५, १ = उ ०) ३४२
यस्तेशृङ्गवृषो (१, २, ५, ३ = उ १, २, २—१, २, ३) .. २०९
यस्त्वामग्ने (२, २, ५, २ = उ ०) ३८६
यस्मिन्विश्वा (१, २, ४, २ = उ १, २, १) २०५
यस्यतेपीत्वा (१, १, १६, २ = उ पवस्वमधुमत्तम) ११६
यस्तेसख्ये (२, १, १, २ = उ ०) २९२
यातेभीमान्यायुधा (२, १, २, १ = उ ०) २९६
यांवांसन्ति (३, २, १०, १ = उ ०) ६१३
यास्तेधारा (३, २, ६, १ = उ ०) ६०३
युञ्जन्तिहरिः (१, १, २२, ३ = उ १, १, १७—१०, २, ८) ... १९१
युर्वाचित्रं (१, २, १५, १ = उ २१, २, १०—११—१६) ... १४२
युवंहिस्थः (२, २, १२, ३ = उ ३, १, ९) ६३०
येतेपवित्रं (२, १, ५, १ = उ ०) २०१
येनज्योतींष्यायवे (१, २, १८, १ = उ २, २, ६—८, १, १२— .. ...
१९, १, १९) ४६९
येनागवम्या (३, १, १७, १ = उ २, २, १६—५, २, १६—११ २, १८— ...
१९, १, १९) ५५६
योअग्निंदेववीतये (२, २, ५, ३ = उ ०) ३८७
योगेयोगेतवस्तरं (१, २, ११, १ = १, २, ९) २१८
योजिनाति (३, २, ५, ३ = ०) ६०२

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्   पृष्ठम्

योधारया (१, १, १८, १ = उ पुरोजिती) ११२

योराजाचर्षणीनां (२, १, १५, १ = उ २, २, १४—७, २, ७—१८, १, १२) ५४५

रक्षोहा (१, १, १५, २ = उ स्वादिष्ठयामदिष्ठया) १०६

रसाय्यःपयसा) २, १, ११, १ = उ २, १, २—७, १, ६) ... २१६

राजानावनभिद्रुहा (३, १, ७, १ = उ ०) ५०५

राजामेधाभिर् (२, २, २, १ = उ ०) ३७८

रायःसमुद्रांश्चतुरो (१, २, १४, ३ = उ २, १, १०—७, १, १६—९, १, ७—
१५, १, १९—२०, १, १०—११) ४४४

वयकृत्वा (२, २, १२, १ = उ २, १, १८—४, १, ८—९—१९ २, ७) ४१४

वयमुत्वामपूर्व्य (१, १, १३, १ = उ १, १, १६—११, १, १०) ... १८७

वयमुत्वातदिदर्था (१, २, ३, १ = उ १, १, २०) २०१

वरिवोधातमो (१, १, १५, २ = उ स्वादिष्ठयामदिष्ठया) ... १०६

वरुणप्राविता (२, १, ७, ३ = उ ०) ३०७

वाचमष्टापदीं (३, १, ९, ३ = उ ०) ६११

वातोपजूत (१, २, ७, १ = उ ०) ६०६

वार्त्वायव्याभिर् (१, १, १३, २ = उ १, १, १७—१०, २, ८) ... १९०

विघ्नन्तोदुरिता (२, २, १, २ = उ ०) ३७७

विप्राश्चित्ता (१, २, ६, २ = उ १, २, ४) २१२

विभ्राजञ्ज्योतिषा (२, १, ११, ३ = उ ३, १, १७) ६८१

विश्वस्माइत्स्वर्दृशे (२, १, ३, ५ = उ ०) ६८३

विश्वाःपृतना (३, १, १४, १ = उ २, २, १२) ५४१

विश्वाधामानि (३, १, १, ३ = उ ८, २, १) ४८१

वीळुचिदारुजत्नुभिर् (१, २, ७, ३ = उ ०) ३९७

वृषापवस्व (२, १, १०, १ = उ १, २, १९—४, १, १—२—३—६, २, १— ..
७, १, १—२—११, २, १४—१५—१८, १, १८— ... ..
१९—२०, १, १—२, ९—१०) ३१३

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् ... पृष्ठम्

वृषा पुनान. (२, १, १२, २ = उ १, १, ९) ६०९
वृषा मतीनां (२, १, १०, १ = उ १, १, १०—९, १, ५—१६, १, १०) ३५०
वृषा शोणो (२, १, ११, १ = उ १, १, २—७, १, ६) ३१५
वृषा सोम (१, १, ३, १ = उ ०) २९०
वृषा ह्यसि (१, १, ४, १ = उ ०) १९९
वृष्णस्ते वृष्ण्यं (१, १, २, १ = उ ०) १९८
शंसेदुक्थं (१, १, १, १ = उ १, १, १९) १९९
शतानीकेव (१, १, १३, १ = उ १, १, ३—७, १, ७—११, १, ११—१५) ३३५
शाचीगो (१, २, ५, १ = उ १, २, १—१, २, ३) १०८
शुचिः पावक (३, २, २, ७ = उ ०) ५९६
शुम्भमानो (२, २, १६, २ = उ २, १, १०—७, २, १९—१६, १, ४—
२०, २, १) ६४१
शृणुतं जरितुर् (२, १, ९, २ = उ ०) ५११
शृण्वे वृष्टेरिव (२, १, २, २ = उ ०) ४८८
श्रुधी हवन्तिरश्च्या (१, २, १९, १ = उ २, १, ७—१३, १, १४) ... ४०७
संहताध्व्यं (२, २, २, १ = उ ०) ६८१
सख्ये त इन्द्र (२, १, १९, १ = उ २, १, ११—७, १, ११—११, १, ३—२, ३) ९९९
सघा नो योग (१, २, १०, १ = उ १, २, ८) २१६
सत्वमग्निव (२, १, १२, १ = उ ०) २२१
सनादग्नाय (१, १, ८, १ = उ उषा ते आनमन्वशो) २२
स नः पवस्व (१, १, १, ३ = उ २१, १, ११) ५
स नः पुनान (२, १, ५, २ = उ ०) ३०२
स नः पृथु (१, १, ४, ३ = उ ०) १५
सन्देवैः शोभते (३, १, १०, २ = उ १, १, ८—१५, १, ९—१६, १, १) ५१३
सप्रथमे (१, २, ११, २ = उ १, २, १०—१९, १, २) .. २९९
समीचीना अनूषत (३, १, ३, ६ = उ ०) ४९४

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

समुप्रियाअनूषत (२, १, १६, २ = उ० अवम्नूपारविभ्रमः) ... २४६
समुरेभासो (२, १, १४, २ = उ २, २, १२) ५४२
सखिस्रोषवणी (२, १, १५, १ = उ०) २४५
सधीअतेचवणा (१, २, १२, २ = उ ११, २, ८—११—१४) ... २२७
सपक्षिरपेहु (२, २, ४, ६ = उ०) ६००
सहतुर्मानरा (२, १, १६, १ = उ २, २, १५—७, २, ८—१५, २, १०— ...
१६, १, ११—२०, १, १७) ५५१
सहस्रधारःपवते (२, २, १५, २ = उ २, २, ३—४—७, १, १०—६, १, ८— ...
१५, २, २—२६, १, २—२०, १, ११—१२—१२, २, ११) ४५०
सविश्वाअरिष्यः (२. २, ४, २ = उ०) ५६८
सुतन्ति (२, १, ४, ४ = उ ०) ४९२
सुतासइन्द्राय (१, २, १९, २ = उ प्रसोमासोविपश्चितो) ... २६८
सुतासोमधुमत्तमाः (२, २, १५, १ = उ २, २, ३—४—७, १, १०— ..
९, १, ८—१५, २, १—२—१६. १, २—२०, १, १२—१२— ...
१२, २, ११) ४४९०
सुवितस्य (१, १, १, २ = उ ०) ५८८
सोअर्षेन्द्राय (३, २, ६, २ = उ ०) ६०४
सोमउष्वाणः (३, २, १२, १ = उ ३, १, ३—४—७, २, १२— .. ...
१९, २, २—१०, १, १९—११, १, १५) ६१९
सोमःपवते (३, १, १९, १ = उ २, २, १९—८, २, १—२२, १, १०—१६) ..
सोमःपुनानऊर्मिणा (३, १, १८, १ = उ २, २, १७—७, २, ९— ... ..
९, ३, ४—१५, २, ११) ५६०
सोमग्रावो (२, २, १०, २ = उ २, १, १७) ४१८
स्वरन्तित्वा (२ २, १२, २ = उ २, १, १८—४, १, ८—९—१९, २, ७) ४२५
स्वादिष्ठया (१, १, १५, १ = उ १, १, ८—८, २, २०—१०, २, १०— ..
११, २, १७—२, २, ४—१९, १, ९—१२, २, १२— ... ..
१८, १, १५—१६—१९ २, १८—२०, २, २०—२१, १, ६) १०५

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

स्वादोरित्था (३, २, १५, १ = उ १०, १.४) ६९९
स्वायुधःपवते (१, १, १, १ = उ १, १. ४—१९, १, ७) ... ७९
स्वयोष्टवाख्यार्या (२, १, ८, ३ = उ ०) ४००
हिन्वन्तिसूरम् (३, १, ५, १ = उ ५, १, १०—१९, २, १०) .. ४९५
हिन्वानोहेतृभिर् (१, ६, २, २ = उ ११, १, ११) ७

॥ ॐ नमः सामवेदाय ॥

॥ सामवेदसंहिता ॥

तत्र

॥ उत्तरार्चिकः ॥

॥ अथ भाष्यावतरणिका ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थाना मुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥ १ ॥
यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्—
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ २ ॥
तत्कटाक्षेण तद्रूपं दधद् बुक्कमहीपतिः ।
आदिशत् सायणाचार्य्यं वेदार्थस्य प्रकाशने ॥ ३ ॥
ये पूर्वोत्तरमीमांसे ते व्याख्यायातिसङ्ग्रहात् ।
कृपालुः सायणाचार्यो वेदार्थं वक्तु मुद्यतः ॥ ४ ॥
व्याख्यातावृग्यजुर्वेदौ सामवेदेऽपि संहिता ।
छन्दोभिधाभूद् व्याख्याता व्याख्यास्यत्युत्तराभिधाम् ॥ ५ ॥
छन्दस्येकैकशोऽधीता ऋचः सामोद्भवाय हि ।
स्तोम-निष्पत्तये सूक्तान्युत्तराया मधीयन्ते * ॥ ६ ॥

---

* छन्दसि पूर्वार्चिकग्रन्थे एकैकशः ऋचः अधीताः, सङ्गति समपेक्ष्येति भावः; तत्र सामोद्भवमात्रं प्रयोजनम्, सामोद्भवस्तु एकस्या ऋचोऽपि भवितव्य एव; परं स्तोम-निष्पत्तिस्तु तथा न भवेत् अत एव उत्तरायां सूक्तानि द्वृच्-त्वृचरूपाणि अधीयन्ते ।

स्तोमशब्देनोत्पत्तिषु सोमयागेषु प्रयुज्यमानास्त्रिवृत्पञ्च-दशादयोऽभिधीयन्ते। अतएव तैत्तिरीयकाः प्रश्नोत्तराभ्या मिद-मामनन्ति। तदाहुः—"कतमा वाव तानि ज्योतींषि य एतस्य स्तोमा इति? त्रिवृत्पञ्चदशः सप्तदश एकविंश एतानि वाव तानि ज्योतींषि यएतस्य स्तोमाः"—इति। छन्दोगाश्च त्रिवृ-दादि-स्तोमानां स्वरूपं ब्राह्मण-द्वितीय-तृतीययोरध्याययोः * बहुधा समामनन्ति। ते च बहुभिरवान्तररूपोपेताः समाम्नाताः स्तोमा नवसङ्ख्याकास्तेषु पूर्वोक्ताास्त्रिवृदादयश्चत्वारः त्रिणव-त्रयस्त्रिंशौ त्रिनवसङ्ख्योपेतः स्तोमस्त्रिणवइत्युच्यते। छन्दोमना-मका स्तोमास्त्रयस्तेषु चतुर्विंशाख्यस्तोमः प्रथमः। गायत्रीच्छन्द-सा चतुर्विंशत्यक्षरोपेतेन मीयतइति छन्दोमः। चतुस्त्रिंशश्चत्वा-रिंशाख्यो द्वितीयः। स च त्रिष्टुप्छन्दसा मीयते। अष्टाचत्वारिं-शाख्यस्तृतीयः। सोऽपि जगतीच्छन्दसा मीयते॥ नन्वत्र ये इयाम्नातलक्षणोपेतेभ्यस्त्रिवृदादिभ्योऽष्टादश-नवदशादि--नामका बहवः स्तोमा विद्यन्ते। तथाच तैत्तिरीयकाः केषुचिदिष्ट-कोपधान-मन्त्रेषु देवतावद्रूपेष्टकात्व-विवक्षया तान् स्तोमा-नामनन्ति—"आशास्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योम सप्तदशः। प्रतू-र्त्तिरष्टादशस्तपोनवदशोऽभिवर्त्तः सविंशो धरुण एकविंशो वर्चो-द्वाविंशः सम्भरणस्त्रयोविंशो योनिश्चतुर्विंशो गर्भः पञ्चविंश ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकविंशो ब्रध्नस्य विष्टपञ्चतुस्त्रिंशो नाकःषट्-त्रिंशोऽभिवर्त्तोऽष्टचत्वारिंशः"—इति। एवन्तर्हि सन्त्येव बहूनि

* ताण्ड्यमहाब्राह्मणइति।

Digitized by Google

स्तोमान्तराणि तेषां लक्षणानि तु ब्राह्मणान्तरानुसारेण सूत्र-कारैर्व्युत्पादितानि ॥ ते च स्तोमाः सर्वेऽप्याज्यपृष्ठादि-स्तोत्रेषूपयुक्ताः "पञ्चदशान्याज्यानि, सप्तदशानि पृष्ठानि"—इत्यादि-श्रुतिभ्यः स्तोम-विषयाः स्तोत्रविषयास्तन्निष्पादक-साम-विषयाश्च। सर्वेऽपि विचारा अस्माभिश्छन्दोव्याख्यानावतारवेलाया मेव जैमिनीयान्यधिकरणान्युदाहृत्य प्रदर्शिताः * ॥ किं बहुना "एकं साम तृचे क्रियते स्तोत्रियम्"†—इत्यादि-वचनैः स्तोत्रनिष्पाद-कस्य साम्नस्तृचप्रगाथादि-रूपाणि सूक्तान्याश्रयत्वेनोत्तराख्ये संहिता-ग्रन्थे समाम्नातानि। स च ग्रन्थ एकविंशति-सङ्ख्यातै-रध्यायैरुपेतः ‡ ॥

---

* १ भा० २० पृ०—२८ पृ० द्रष्टव्यम्।

† द्रष्टव्योऽस्यार्थः १भा० २० पृष्ठे।

‡ मूलपुस्तकस्य तु अध्यायसङ्ख्या नैव दृश्यते, परं सन्ति तत्र प्रत्यध्यायसमाप्तावध्यायः अध्यायद्वयेऽर्द्धाध्यायद्वयञ्च, पदग्रन्थे च तथा, विवरणाद्दावप्येवमेव। सायणमते तु अर्द्धाध्यायानङ्गीकारस्ततश्चैकविंशतितमं सूक्तमिति। अध्यायेति व्यवहारश्च सायणीय एव, वस्तुतः सामवेदे प्रपाठकव्यवहारएव सर्वमूलपुस्तक-पदपुस्तक-गानपुस्तकादौ विवरणकारमते च प्रसिद्धः।

Digitized by Google

तत्र, प्रथमाध्यायस्य प्रथमखण्डे, *

प्रथमसूक्ते तृचे, येयमृक् प्रथमा

सैव साम्नायते—

१ २ ३ १ २ ३ १ २

उपास्मैगायतानरःपवमानायेन्दवे।

२ ३ २ ३ १ २र

अभिदेवाꣳइयक्षते ॥ १ ॥ †

हे "नरः" नेतारः! यज्ञस्य, "देवान्" इन्द्रादीन् "अभि इयक्षते" आभिमुख्येन यष्टुमिच्छते "पवमानाय" क्षरते "अस्मै" अभिषूयमाणाय "इन्दवे" सोमाय "उप गायत" उपगानं कुरुत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ ३ १ २ ३ १ २र

अभितेमधुनापयोथर्वाणोअशिश्रयुः।

३ २ ३ १ २ ३ १

देवन्देवायदेवयुः ॥ २ ॥

हे सोम! "ते" तव "देवं" देवनशीलं "देवयुः" देव-कामं रसं ‡ "देवाय" देवनशीलायेन्द्राय "मधुना" ¶ "पयः" गव्येन

* अत्र ग्रन्थे खण्ड-व्यवहारोऽपि सायणेनाविष्कृतः।

† इयमेव ऋक् अत्रैव प्रपाठके द्वितीयार्द्धेऽपि दृश्यते (१८, २)।

‡ 'देवयुः देवान् युनक्ति यः सोमेन स देवयुः'—इति वि०। 'देवयवः'—इति ऋत्विङ्नामसु अष्टमं नैघण्टुकम् (३, १८)।

¶ 'मधुना स्वादुना'—इति वि०।

पयसा * "अथर्वाणः" ऋषयः † "अभ्यश्रियुः" अभ्यश्रिश्रपन् समकुर्वन्नित्यर्थः ‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ २ ३उ ३ १ १र २ १ २र
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
१ २ ३ १ २
शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ ३ ॥ १ ¶

हे "राजन्" दीप्यमान सोम ! "सः" प्रसिद्धस्त्वं "नः" अस्माकं § "गवे" ‖ "शं" सुखं "पवस्व" क्षर + "जनाय"

---

* 'पयः प्रथमैकवचनमिदं तृतीयैकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । पयसा सोम-मिश्रणं कुर्वन्ति'—इति वि० ।

† 'सोममिश्रणं कुर्वन्ति के ? अथर्वाणः ऋत्विजः । अथवा अथर्वा नाम ऋषिः आत्मीयान् पुत्रपौत्रानत्राह—हे अथर्वाणः !'—इति वि० ।

‡ 'अभीत्यय मुपसर्गः अश्रियुरित्याख्यातेन सह सम्बन्धयितव्यः । अभ्यश्रियु=आभिमुख्येन ते तव अश्रियुः=मिश्रणं कृतवन्तः'—इति वि० ।

¶ एताश्चिस्र ऋचः—ऋग्वेदे ९, ७, २९, १-२-३ अपि दृश्यन्ते । आसां ऋषि-सन्देहश्च—"असितः काश्यपो देवलो वा"—इति ऋषि नै० । दैवत-सन्देहोऽपि यथा—"उत्तरास्तु एतस्यास्तास्वास देवताः । पूर्वोक्ता ऋक्षु ता एवोत्तरासूपास्ते यथ-स्तुषाः । सौम्याः स सोमः पार्थिवः"—इति दैवत-नै० ॥

§ 'नः अस्माकम्'—इति वि० ।

‖ 'चतुर्थ्येकवचनमिदं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । गोभ्यो बहुभ्यः'—इति वि० ।

+ 'पवस्व प्रध्यस्व'—इति वि० ।

Digitized by Google

पुत्राय च * "शं" पवस्व "अर्वते" अश्वाय † च "शं" पवस्व "ओषधीभ्यः" च ‡ शम्पवस्व ॥ २ ॥ १

४ २ ५ ४ २ ४५

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ उपा२५ूस्मै। गा३या३ताना

५ २ १ २ २ १ २ १ २ २

रा:। पा३वामा३ना। या२३श्वा। ऊम्मायि। दा३वा

१ २२ ३२ १ २ १२

यि। आभिदेवा२३इया२स्वताउ ॥ ते (१)॥ आ। भिते

२ १ २ २ १ १२ २ २ १

मा। धू३नापा३याः। आया२र्वा। णोश्वा२३श्वा। ऊ

२ २ १ २२ ३२ १

म्मायि। आ३यूः। दायिवन्देवायदा२यिवयाउ ॥ यू(२)॥

२ १ २ १ २ २ १ १२

सा:। नःपवा। स्वा३श्वाङ्गा३वायि। अज्ञा२ना। य

२ १ २ २ १ २ २

श्वा२३मा। ऊम्मायि। वी३तायि। श्वा२३राजन्नोषधा

३ २

२यिभ्यश्वाउ ॥ (३) ॥ ११ ¶ ॥ १

---

* 'शं जनाय सुख बलिमज्जनाय'—इति वि०।

† 'शं मर्वते यजमानजनाय'—इति वि०।

‡ 'ओषधीभ्यः व्रीहि-यव-तिल-माषादिभ्यः'—इति वि०।

¶ सामवेदमूहगानस्यैकविंशप्रपाठक-प्रथमार्द्धे स्यैकादशम्।

Digitized by Google

अथ द्वितीयखण्डे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
दविद्युतत्यारुचापरिष्टोभन्त्याकृपा।
१ २ ३ १ २र
सोमाःशुक्रागवाशिरः॥ १ ॥

"दविद्युतत्या रुचा" अतिशयदीप्त्या "परिष्टोभन्त्या" परितः शब्दायमानया "कृपा" धारया च युक्ताः "सोमाः" "गवाशिरः" गवाशिराः भवन्ति गव्येन पयसा मिश्रिता भवन्ति इत्यर्थः* ॥१॥

अथ द्वितीया।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र
हिन्वानोहेतृभिर्हितआवाजंवाज्यक्रमीत्।
१ २ ३ १ २
सीदन्तोवनुषोयथा॥ २ ॥

"वाजी" बलवान् सोमः "हेतृभिः" प्रेरकैः स्तोतृभिः† "हिन्वानः" स्तोत्रैः स्मर्यमाणः "हितः" अभीष्टकारी सन् "वाजं" यागाख्यं युद्धम् "आ अक्रमीत्" आक्रामति। तत्र दृष्टान्तः—

---

* "दविद्युतत्या देदीप्यमानया रुचा। परिष्टोभन्त्या परि समन्तात् स्तोभन्त्या पुनः पुनः स्तोभः अभ्यासः अभ्यस्यमानया। कृपा कान्त्या। सोमाः शुक्राः शुक्लवर्णाः। कथं शुक्लवर्णा भवन्ति? गवाशिरः कारणे कार्यवदुपचारः गोक्षीराशिरः। आशिरं मिश्रम्॥"—इति वि०।

† "प्रचेतारं मनूनां प्रेरकम्"—इति ऋ० भा० ९, १, ५, १ सा० भाष्यम् (१भा० ५८१प०)।

यथा "वनुषः" हन्तारो भटाः * "सीदन्तः" युद्धं प्रविशन्तः आक्रामन्ति तद्वदित्यर्थः † ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
ऋधक्सोमस्वस्तये सञ्जग्मानो दिवाकवे ।

१ २ ३ १ २ ३ २
पवस्वसूर्योदृशे ॥ ३ ॥ २ ‡

हे "सोम"! "कवे" क्रान्तदर्शिन्! "सूर्यः" सुवीर्यः ¶ त्वं "ऋधक्" ऋध्नुवत् । तथाच यास्कः—"ऋधगिति पृथग्भावस्यानुप्रवचनं भवत्यथाप्यृध्नोत्यर्थे दृश्यते (निरु० नै० ४, २५)"—

---

* "वनुष्यति"—इति ऋध्यतिकर्मसु अष्टमं नैघण्टुकम् २. १२ । "वनुष्यतिर्हन्तिकर्मानवगतसंस्कारोभवति 'वनुयामवनुष्यत' इत्यपि निगमो भवति"—इत्यादि निरु० नै० ५, २ ।

† 'हिन्वानः प्रीयमाणः पीयमानो वा । कैः हेतुभिः? ऋरक्तभावैर्ऋत्विग्भिः वा वाजम् । आ शब्दः उपसर्गः । अक्रमीदित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः आ, मनुष्येन अक्रमीत् वाजं वाजी वाजमन्नं, पशुपुरोडाशादि-लक्षणस्यान्नस्य स्वामी अथवा वाजं द्रोणकलशम् आक्रमीत् सोमः । कथमाक्रमीत्? सीदन्तोवनुषोयथा । सीदन्तः उपविशन्तः वनुषः मनुष्यः एकवचनमिदं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । वनुषाः मनुष्याः उच्यन्ते । यथा उपविशन्तो मनुष्याः आसन माक्रमन्ति तद्वत् द्रोणकलशं सोमः'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, ४१, १-४-५ । ऋ० "कश्यपो मारीचः" इति ऋषि-नै० । छन्दोदेवते पूर्ववत् ।

¶ 'सूर्यः इमे, सूर्यः (इव शब्द माहयते । दृशे दर्शनाय । यथा सूर्य उदेति विश्वस्य जगतो दर्शनाय तद्वत् त्वमपि पवस्वेत्यभिप्रायः'—इति वि० ।

Digitized by Google

इति। "सज्जम्मानः" सङ्गच्छमानः "स्वस्तये" "इष" दर्शनाय "दिवा" दिवः विभक्तिव्यत्ययः* ॥ "पवस्व"-"चर"—"दिवाकवे"-"दिवाकविः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ इवा॥५ पुयिद्यु। ता३नी३याह्वचा। पा३रायिष्टो३भा। ता२३वा। ऊम्मायि। का३र्षा। सोमाःघृक्कागवा२शिराउ ॥ रा(१)द्दायि। न्वानोहोत् इभायिर्द्दा३यिताः। यावा २जम्। वाजा२३या। ऊम्मायि। क्रा३मीत्। सायिद्न्तोवनुषो२यथाउ ॥ या(२) द्यः। धक्सोमा। इ३वास्ता३यायि। सञ्जा २म्मा। नोदा२३यिवा। ऊम्मायि। का३वायि। पावस्वद्दरियो२ इया३उ (३) ॥ १२ † ॥ [१]२

* 'दिवा कवे धनन्धमनि चे मेधाविन्!'—इति वि०।

† ऋ० मा० २१ प्र०१ ख० १२ सा०।

Digitized by Google

तृतीय-खण्डे—प्रथमा ।

१ २   ३ २   ३   १ २
पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत ।
१ २   ३ १ २ ३ १ २
अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ १ ॥

मार्जनप्रसङ्गादाह—हे "कवे" क्रान्तप्रज्ञ ! हे "वाजिन्" बलवन् सोम ! "पवमानस्य" दशापवित्रेण पूयमानस्य "ते" तव "सर्गाः" सृज्यन्ते इति सर्गा धाराः * । कीदृश्यः ? "श्रवस्यवः" ["छन्दसि परेच्छायां क्यच् (३,१,८वा०] यष्टृणां मनं कामयमानास्त्वदीया धारा "असृक्षत" विसृजन्ति निर्गच्छन्तीत्यर्थः । तत्र दृष्टान्तः—"अर्वन्तो न" यथा अश्वा मन्दुरातो निर्गच्छन्ति तद्वत् पवित्राद्विःसरन्तीत्यर्थः † । प्रयोगापेक्षं चात्र धारा-बाहुल्यम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३   १ २   ३ २ ३१ २ ३१ २ ३ १ २
अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये ।
१ २   ३ १ २
अवावशन्त धीतयः ॥ २ ॥

धारानिर्गमनप्रसङ्गादभिधीयते—"मधुश्चुतं" मधुररसस्य श्चावयितारं चारयितारं "कोशं" द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि-

* 'सर्गाः उदकस्य अन्योन्यकर्मायः सङ्घाताः'—इति वि० ।

† 'अर्वन्तः यजमानाः'—इति वि० ।

Digitized by Google

तस्य* "अव्यये" अवि-सम्भूते "वारे" वाले दशापवित्रे "असृग्रं" सोमाः ऋत्विग्भिरभिसृज्यन्ते [सृजेः कर्म्मणि लिङ्गातिस्तो भवन्तीति टेरमादेशः]। किञ्च। "धीतयः" [अङ्गुलि नामैतत्†, धयन्ति पिबन्त्याभिरिति] अस्मदीया अङ्गुलयः "अवावशन्त" तान् सोमान् न पुनः पुनर्मार्जनार्थं कामयन्ते‡॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १उ २ ३ २ १ २ ३ ३ १ २

अच्छासमुद्रमिन्दवोस्तङ्गावोनधेनवः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १

अग्मन्नृतस्ययोनिमा॥ ३॥ ३¶

"इन्दवः" क्षरन्तः सोमाः "समुद्रं" सोमाना मेकत्रैव सङ्गमनस्थानं द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि गच्छन्ति। तत्र दृष्टान्तः—"धेनवः" पयः-प्रदानेन जनानां प्रीणयित्र्यो नवप्रसूतिका गावः "अस्तं" गृहं यथा अभि गच्छन्तीति तद्वत् §। किञ्च ते

---

* 'अच्छ आप्नुम्'—इति वि०।

† "धीतयः"—इति अङ्गुलिनामसु सप्तमं नघण्टुकम् २, ५।

‡ 'धीतयः धीतिः बुद्धिः बुद्धिमन्तः सोमाः। अथवा अवावशन्त कामयन्तु के धीतयः ऋत्विजः, किं कामयन्त? सोमस्य पावनं द्रोणकलशगमनञ्च'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ७, १, ८, ५—९, ६, २। ऋ० "वैखानसा आङ्गिरसः"—इति ऋषि नै०।

§ 'कथमाप्नुम्? अस्तं गावो न धेनवः। अस्तमनकाले गावो न प्रस्द उपरिष्टा

सोमाः "ऋतस्य योनिं" सत्यभूतस्य यज्ञस्य* योनिं स्थानम् "आ" "अग्मन्" आभिमुख्येन गच्छन्ति। [गमेर्लुङि सिचो लुकि उपधालोपः ॥ ३ ॥ ३

४ १ र ४ २ ४र ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवा ऽ५ मा। ना३स्या३नेकावायि।
२ १ २ १ १ १ १ २ २
वा३जायिन्मा३र्गाः। आ२३सा। ऊम्मायि। त्वा३ता।
१ र २२ १ १ १र र
आर्वन्तोनश्रवा२स्यवाउ॥ वा(१)आ। च्छाकोशाम।
२ १ २ २ १ १ र २ १
मा३धूमू३ताम्। असा२र्यम्। वार२३आ। ऊम्मायि
२ २ १ र १२ १ २
व्या३यायि। आवावशन्तधा२यितयाउ॥ या(२)आ।
१ २ १ २ २ १ १र र
च्छासम्। द्रा३मायिन्दा३वाः। अस्ता२ज्ञा। वीना२
२ १ २ २ १ १२
३धे। ऊम्मायि। ना३वाः। आगमन्नृतस्ययो२निमाउ।
१११२
वा३४५(३)॥ १३ † ॥ [१]३

दुपमाधीयः गावः इव धेनवः यथा आगमनकाले वत्सानभियन्ति तथा-इत्थाः"—इति वि०।

* 'ऋतस्य यज्ञस्य प्रजापते र्वा'—इति वि०।

† ऊ० गा० २१ प्र० १ अ० १३ सा०।

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः * ॥ १ ॥

---

* 'ज्योतिष्टोमिकं बहिष्पवमानं समाप्तम्'—इति वि०। "तदिदं सूक्तत्रय-गानसाध्यं स्तोत्रं बहिष्पवमानमित्युच्यते। तत्रावस्थितानां मृचां पवमानार्थत्वात् बहिःसम्बन्धाच"—इति मी० द० जै० अ० ९ अध्या० ४पा० ३ अधि०। न खल्विदं स्तोत्रम् इतरस्तोत्रवत् सदोनामकस्य मण्डपस्य मध्ये औदुम्बर्याः स्तम्भशाखायाः सन्निधौ प्रयुज्यते किन्तु सदसो बहिः प्रसर्पद्भिः प्रयुज्यते। 'बहिष्पवमान'-नाम वेदी, यत्र स्थित्वा तद्बहिष्पवमाननामकत्र्यृक्-साध्य-त्रिवृन्नामस्तोमपाठपूर्वकं मार्ज्जनं भवति ; 'सा तु उदग्वंशनामशालान्तर्गत-सदोमण्डपात् पश्चिमस्याः प्राचीनवंशनामशालान्तर्गतै-ष्टिकवेदेश्चान्तरतो विद्यते, अस्य च बहिष्पवमानस्य प्रकृतियागेऽग्निष्टोमादौ त्रिवृन्ना-मकः स्तोमो भवति, एतद्विधायकं ब्राह्मणवाक्यं ताण्ड्यद्वितीयप्रपाठकारम्भे एव खण्डत्रयात्मकं द्रष्टव्यम्—'तिसृभ्यो हिंकरोतीत्यादि'। अत्र च विष्टुतित्रयमस्ति उद्यती, परिवर्त्तिनी, कुलायिनीति ; ताश्च तत्रैव स्फुटाः। विकृतियागेऽति-रात्रादावत्रैव एकविंशादि-स्तोमा विहिताः। बहिष्पवमाने चात्र आम्नातमाना-भावात् त्रिषु तृचेष्ववस्थिताभिर्नवभिर्ऋग्भिरेकविंशस्तोमपूरणाभावात् तत्पूरणाय चत्वारस्तृचा आगमयितव्याः, त्रिणवस्तोमपूरणाय षट् तृचाः, त्रयस्त्रिंशत्स्तोमपूरणाय चाष्टौ तृचाः। तदागमने च मानम्—"त्रीणि ह वै यज्ञस्योदराणि गायत्री"—इत्यादि ताण्ड्य-सप्तम-तृतीये द्रष्टव्यम्। आगन्तूनाञ्च तासां मध्ये निवेशः। द्वादशाहे तु मध्ये एव निवेशः। तद्विचारश्च मीमांसाधिकरणमालायाः पञ्चम-तृतीयस्य चतुर्थे द्रष्टव्यः। प्राकृतानां बहिष्पवमानगतानां त्रयाणां तृचानां स्तोत्रियोऽनुरूपः पर्यासश्चेति यथा क्रमं त्रीणि नामानि। अत्र मानम् ताण्ड्यैकादशषष्ठे "स्तोत्रि-यानुरूपौ तृचौ भवतः"—इत्यादि। गवामयनादिषु सत्रेषु पूर्वं चतुर्भिराभिप्लविकैः चतुर्विंशत्यहानि भवन्ति तत एकेन पृष्ठ्य-षडहेन मासः पूर्य्यते, तत्र प्रथमाहः त्रिवृत्स्तोमसाध्यः अतोऽयं स्तोमः पृष्ठ्य इत्यप्युच्यते। किञ्चेदमेकषष्ठ्यधिकत्रिशत-दिनसाध्येषु सत्रेषु—पञ्चविंशदिने, पञ्चपञ्चाशद्दिने, षडशीतिदिने, पञ्चदशाधिक-शततमे दिने, पञ्चचत्वारिंशदधिकशतदिने, ऊनसप्तत्यधिकशतदिने, नवत्यधिक-शतदिने. एकादशाधिकद्विशतदिने, एकचत्वारिंशदधिकद्विशतदिने, एकसप्तत्य-

द्वितीयखण्डे,

प्रथमदृचे—प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्नआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये।
१ २र ३ १ २
निहोतासत्सिबर्हिषि॥ १ *॥

हे "अग्ने" अङ्गनादिगुणविशिष्ट! त्वम् "आयाहि" अस्मद् यज्ञं प्रत्यागच्छ। किमर्थम्? "वीतये" हविषां चरुपुरोडाशादीनां भक्षणाय। कीदृशः सन्? "गृणानः" अस्माभिः स्तूयमानः [व्यत्ययेन: कर्मणि कर्तृ-प्रत्ययः]। पुनश्च किमर्थम्? "हव्यदातये" देवेभ्यो हविःप्रदानाय। आगत्य च "होता" देवाना माह्वाता सन् "बर्हिषि" आस्तीर्णे दर्भे "निषत्सि" निषीद [सदेः छान्दसः शपो लुक्]॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
तन्त्वासमिद्भिरङ्गिरोघृतेनवर्द्धयामसि।
३ १ २
बृहच्छोचायविष्ठ्य॥ २ †॥

चिकद्दिशतदिने, एकाधिकत्रिंशततमे च दिने विनियुज्यते—इति दिक् विस्तरस्तु, माण्ड्ये चतुर्थप्रपाठकादिके।

* छ॰ आ॰ १, १, १, १ (१भा॰९४ पृ॰) = ऋ॰ वे॰ ४, ५, २९, ४।

† य॰ वे॰ ३, ३ = ऋ॰ वे॰ ४, ५, २३, १।

Digitized by Google

हे "अङ्गिरः" अङ्गनादिगुणयुक्त! अङ्गिरसः पुत्र वा अग्ने! "तं" पूर्वोक्तगुणं "त्वा" त्वां "समिद्भिः" समिन्धन-हेतुभिः दारुभिः "घृतेन" आज्येन च "वर्द्धयामसि" वर्द्धयामः। अतो हे "यविष्ठ्य" युवतमाग्ने! * "बृहत्" महत् अत्यन्तं "शोच" दीप्यस्व ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
सनःपृथुश्रवाय्यमच्छादेवविवाससि।

३ १ २ ३ १ २
बृहदग्नेसुवीर्यम्॥ ३ † ॥ ४ ‡

हे "देव" द्योतमानाग्ने! स पूर्वोक्तगुणस्त्वं "पृथु" विस्तीर्णं "श्रवाय्यं" श्रवणीयं प्रशस्यं "बृहत्" महत् "सुवीर्य्यं" शोभन-वीर्य्योपेतं धनं "नः" अस्मान्¶ "अच्छ" § "विवाससि" अभिगमय+। अत्र वाजसनेयकम्—"अच्छादेवविवाससीति तन्नो ग्निमयेत्येवैतदाहेति ॥ ३ ॥ ४

* 'यविष्ठ्यः अतिशयेन बलवान्'—इति वि०।

† ऋ० वे० ४, ५, १२, २।

‡ इदमाग्नेय माज्यम्।

¶ 'नः अस्माकम्'—इति वि०।

§ 'अच्छ आप्नुम्'—इति वि०।

+ 'विवाससि . . . दीप्तिं करोषि'—इति वि०।

Digitized by Google

द्वितीयतृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २र
आनोमित्रावरुणाघृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्।

२ ३ १ २
मध्वारजाᳬसिसुक्रतू॥ १ *॥

"सुक्रतू" शोभनकर्माणौ, हे "मित्रावरुणौ"! "नः" अस्माकम् "गव्यूतिं" गवां मार्गं गोनिवासस्थानं "घृतैः" क्षरणसाधनैः पयोभिरुदकैः "आ उक्षतं" समन्तात् सिञ्चतम्। अस्मभ्यं दोग्ध्रीः गाः प्रयच्छत मित्यर्थः। किञ्च "मध्वा" मधुरेण सुरसेन "रजांसि" पारलौकिकानि अस्मदावासस्थानानि "सिञ्चतम्" ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ १ ३ ११ २र
उरुशᳬसानमोवृधामह्नादक्षस्यराजथः।

३ २
द्राघिष्ठाभिःशुचिव्रता॥ २ †॥

"शुचिव्रता" परिशुद्धकर्माणौ‡ हे मित्रावरुणौ! "उरुशंसा" उरुभिः बहुभिः¶ शंसनीयौ। यद्वात्र महच्छंसः शस्त्रं ययोस्तौ।

* छ० आ० ३, २, २, ७ (१भा० ४५९ पृ०) = ऋ० वे० ३, ४, ११, ५।

† ऋ० वे० ३, ४, ११, ६।

‡ 'हे शुचिव्रतौ शुचिर्यस्या मर्थे क्रियमाणं कर्म भवति तौ शुचिव्रतौ सत्यव्रतौ —इति वि०।

¶ "उरु"—इति बहुनामसाय' मैघण्टुकम् ३, १।

Digitized by Google

"नमोवृधा" नमसा हविर्लक्षणेनान्नेन स्तोत्रेण वा वर्द्धमानौ*। "द्राघिष्ठाभिः" अत्यन्तदीर्घस्तुतिलक्षणाभिर्युक्तौ युवां "दक्षस्य" दक्षते समर्था भवत्यनेनेति दक्षं धनं बलं वा तस्य† "मह्ना" महत्वेन "राजथः" ईशाथे‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२   १ २ १ २   ३ १ २ ३ १ २

गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्।

३ १   २र

पातꣳ सोममृतावृधा ॥ ३ ¶ ॥ ५ §

हे मित्रावरुणौ! "जमदग्निना" एतन्नामकेन महर्षिणा यद्वा जमदग्निना प्रज्वलिताग्निना विश्वामित्रेण "गृणाना" स्तूयमानौ युवां "ऋतस्य" यज्ञस्य "योनौ" देवयजनाख्ये देशे "सीदतं" उपविशतं "ऋतावृधा" ऋतस्य कर्म्मफलस्य वर्द्धयितारौ युवां + "सोमं" "पातम्" अस्माभिरभिषुतम् सोमं पिबतम् ॥ ३ ॥ ५

---

* 'नमस्कारैर्वृद्धौ'—इति वि०।

† 'दक्षस्य कर्षेः अथवा दक्षो यजमान उच्यते तस्य यजमानस्य बलेन दीप्यमानेन—इति वि०। दक्ष इति बलनामसु पठितं नैघण्टुकम् २, ९।

‡ 'राजथः दीप्यथः'—इति वि०।

¶ ऋ० वे ३, ४, ११, ७।   § इदं मैत्रावरुण साम्नम्।

+ 'ऋतावृधौ यज्ञेन वर्द्धितौ'—इति वि०।

Digitized by Google

तृतीये दृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १उ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २

आयाहि सुषुमा हित इन्द्र सोमम्पिबा इमम्।

२उ ३ १ २ ३ १ २

एदम्बर्हिः सदो मम॥ १ *॥

हे "इन्द्र"! त्वम् "आ याहि" अस्मद्यज्ञं प्रत्यागच्छ, वयं "ते" त्वदर्थं "सुषुमा हि" सोम मभिषुतवन्तः खलु तम् "इमम्" अभिषुतं सोमं त्वं "पिब" त्वदर्थं "मम" यमिदं "बर्हिः" वेद्या मास्तीर्णं दर्भम् "आ सदः" आसीद अभि निषीद॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २

आत्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना।

२ ३ १ २

उप ब्रह्माणि नः शृणु॥ २ †॥

हे "इन्द्र"! "ब्रह्मयुजा" ब्रह्मणा मन्त्रेण युज्यमानौ "केशिना" केशिनौ केशवन्तौ "हरी" हरणशीलौ वा अश्वौ "त्वा" त्वाम् "अवहताम्" अभि प्रापयताम्। त्वं चास्मद्यज्ञ मुपेत्य "नः" अस्माकं "ब्रह्माणि" स्तोत्राणि "शृणु" सम्यक् चित्ते धारय॥ २॥

* ऋ० ब्रा० ९, २, ५, ७ (१ भा० ४१७ पृ०) = ऋ० वे० ६, १, १२, १।

† ऋ० वे० ६, १, १२, १।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

२ ३ १ २   ३ २ ३ १   २ ३ २ ३   २ ३ १

ब्राह्मणास्त्वायुजावयꣳसोमपामिन्द्रसोमिनः।

३ १ २

सुतावन्तोहवामहे॥ ३ *॥ ६ †

हे "इन्द्र" "ब्राह्मणाः" ब्राह्मणा वयं त्वां "त्वायुजा" योग्येन स्तोत्रेण "हवामहे" आह्वयामहे। कथम्भूतम्? "सोमपां" सोमस्य पातारम्। ईदृशा वयं "सोमिनः" सोमयुक्ताः "सुतावन्तः" अभिषुतैः सोमैरुपेताः॥ "ब्राह्मणास्त्वायुजावयं"-"ब्राह्मणास्त्वा-वयं युजा"—इति पाठौ॥ ३॥ ६

चतुर्थं तृचे—प्रथमा।

१ २   ३ १ २   ३ २ ३ २उ   १ २

इन्द्राग्नीआगतꣳसुतङ्गीर्भिर्नभोवरेण्यम्।

३ १ २   ३ २ ३ २

अस्यपातन्धियेषिता॥ १ ‡॥

इन्द्रश्चाग्निश्च "इन्द्राग्नी" ¶ देवौ § "सुतम्" अभिषवा-

---

* ऋ० वे० ६, १, २२, ३।   † इद मैन्द्र माज्यम्।

‡ य० वे० ७, ३१ = ऋ० व० ३, १, ११, १। ऋ० "विश्वामित्रो गाथिनः"—इति ऋषि-नै०। दे० 'इन्द्राग्नी ऐन्द्राग्नम्'—इति देव-नै०। छ० गायत्री। एव-मेवायोत्तरत्व इयोः।

¶ इ० चा० ३, २, ४, ९, = अत्र तु १, १, ७, १ = १, १, ७, २ = १, २, ८ १ = १, २, ८, २ = ३, १, ९, १ = ३, २, १०, १—इति सप्तसु ऋक्षु श्रूयते 'इन्द्राग्नी'।

§ "अथास्य संस्तविका देवाः—अग्निः सोमो वरुणः पूषा बृहस्पति र्ब्रह्मणस्पतिः पर्वतः कुत्सो विष्णु र्वायुः"—इति निरु० द० १, १०।

दिभिः संस्कारैः संस्कृतम् अतएव "वरेण्यं" वरणीयं सम्भजनीय मिमं सोमं प्रति 'गोभिः'' अस्मदीयाभिर्वाग्भिराहुतौ सन्तौ "नभः" नभसः स्वर्गाख्यात् स्थानात् "आगतम्" आगच्छतम्। आगत्य च "धिया" अस्माभिः क्रियमाणेन कर्मणा "इषिता" इषितौ प्रेरितौ युवाम् "अस्य" इमं सोमं "पातं" पिबतं। यद्वा "धिया" अस्मदीयया बुद्धया इषितौ प्राप्तौ * अस्मद्गत्या प्रेरितौ युवा मिमं सोमं पिबतम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २   २ १   २र ३ १   २ १   २ १ २
इन्द्राग्नीजरितुःसचायज्ञोजिगातिचेतनः।
३ १ २   ३ १   ३ २
अयापातमिमꣳसुतम् ॥ २† ॥

हे "इन्द्राग्नी" "जरितु" स्तोतुः‡ "सचा" स्वर्गादिलक्षणप्राप्तौ सहायभूतौ "यज्ञः" ज्योतिष्टोमादि-यज्ञ-साधनभूतश्चेतनः इन्द्रियाणां चेतयिता आप्यायनकारी सन्नसौ सोमः "जिगाति" युवा मभिगच्छति¶। "अया" अस्मदीयया स्तुतिलक्षणया अनया वाचा आहुतौ सन्तौ युवां "सुतम्" अभिषवादि-संस्कारोपेतम् "इमं" "पातं" पिबतम् ॥ २ ॥

---

* "इषता इषु इच्छायाम् इच्छन्त्या"—इति वि०।

† ऋ० वे० ३, १, ११, १।

‡ 'जरितुः स्तोतुः उद्गातुः'—इति वि०।

¶ 'जिगाति गायति चेतनः सुप्तोपमान मिदं चेतन इव'—इति वि०।

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे।

१ २र ३ १ २

तासोमस्येह तृम्पताम्॥ ३*॥ ६†

"यज्ञस्य" यज्ञसाधनभूतस्य सोमस्य "जूत्या" जूतिः प्रेरणं सोमस्तावद्यजमानं प्रेरयति। साधन मुपलभ्य तत् साध्ये क्रतौ यजमानः प्रवर्त्ततइति हि तस्य प्रेरकत्वम्। तया प्रेरणरूपतया जूत्या ‡ प्रेरितोऽहं स्तोता "कविच्छदा" कवीनां स्तोतॄणा मुचितफल-प्रदानेनोपच्छन्दकौ इन्द्र मग्निं च युवां "वृणे" सम्भजेत आगतौ च ताविन्द्राग्नी "इह" अस्मदीये अस्मिन् कर्मणि "सोमस्य" सोमेन सोमयागेन "तृम्पतां" तृप्यताम्॥ ३॥ ७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः¶॥ २॥

---

* ऋ० वे० ३, १, ११, १।

† इद मैन्द्राग्न माज्यम्। 'प्रातः सवनं समाप्तम्'—इति वि०।

‡ 'जूत्या अभिहत्या निमित्तभूतया'—इति वि०।

¶ "तान्येतानि प्रातःसवने गायत्रसाम्ना गीयमानानि चत्वार्याज्यस्तोत्राणीत्युच्यन्ते"—इति मी० द० जै० अ० ९ अध्या० ४ पा० ३ अधि०। 'यदाजिमीयुस्तदाज्याना माज्यत्वम्'—इति चैतन्निर्वचनम् ता० ब्रा० ७, २। एष्वाज्यस्तोत्रेषु पञ्चदशनामकः स्तोमो भवति; तद्विधायकं ब्राह्मणं ताण्ड्य म, 'पञ्चभ्योहिङ्करोति'—इत्यादि (२, ५-

तृतीयखण्डस्य,

प्रथमतृचे—प्रथमा।

३ १ २ ३ ११ २र ३ ११ २र
उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्याददे।
३ १र २ ३ १ २
उग्रꣳशर्ममहिश्रवः॥ १ *॥

हे सोम! "ते" तव सम्बन्धिनः "अन्धसः" रसस्य "उच्चा" उपरि "जातं" जन्म अपिच "दिवि" द्युलोके "सत्" तव सम्बन्धि "उग्रम्" उद्गूर्णं "शर्म" सुखं "महि" महत्। "श्रवः" अन्नं "भूमि" भूमिष्ठैः यजमानैः "आ ददे" आदीयते॥ दिविसद्"-दिविषद्"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सनइन्द्रायरज्यवेवरुणायमरुद्भ्यः।

५-६) तथैवैतद् विष्टुतित्रयञ्च परिस्फुटम्। सोमोऽयं द्वितीय पृष्ठ इत्युच्यते किञ्च सत्रेषु षड्विंशतितमे ह्ने, षट्पञ्चाशत्तमे ह्ने, षडशीतिदिने, षोडशाधिकशतदिने, षट्चत्वारिंशदधिकशतदिने, सप्तत्यधिकशतदिने, अष्टनवत्यधिकशतदिने, दशाधिक-द्विशतदिने, चत्वारिंशदधिकशतदिने, सप्तत्यधिकद्विशतदिने, त्रिंशत्तमे च दिने विनियुज्यते। विस्तरस्तु ताण्ड्य-चतुर्थप्रपाठकादिके।

* छ० आ० ५, २, ४, १ (२ भा० २ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, १९, ५। ऋ० 'अमहीयुः आङ्गिरसः'—इति ऋषिनै०। दे० 'पवमानः सोमः'—इति दैव-नै०। छ० गायत्री। एवमेवाग्रेतरत्र द्वयोः॥ इदानीं माध्यन्दिनः पवमानः। गायत्री बृहती त्रिष्टुबिति छन्दांसि। पुष्कलोऽग्निर्वामदीयवोऽग्निदरिन्द्रीयुधाजीवश्रमाःकावः इति आर्षाणि। सोमः सोमदेवता साम-देवता विस्तरतयाग्रोचन्ते'—इति वि०।

२ ११ १र
वरिवोवित्परिस्रव ॥ २ * ॥

हे सोम "वरिवोवित्" धनस्य लम्भकः पवमानः † "नः" अस्माकं ‡ "यज्यवे" यष्टव्याय ¶ "इन्द्राय" "वरुणाय" च "मरुद्भ्यः" च "परि स्रव" धारया चर § ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२१ २र ३२उ ३ १ ३१ २
एनाविश्वान्यर्यआद्युम्नानिमानुषाणाम्।
१ २
सिषासन्तोवनामहे ॥ ३ ** ॥ ८ ††

"मानुषाणां" मनुष्याणां लब्धव्यानि "एना" एनानि "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि "द्युम्नानि" यज्ञसाधनानि धनानि ‡‡ हे सोम! त्वत्प्रसादात् "आ" आभिमुख्येन "अर्य्यः" ¶¶ अभि-

---

* छ० आ० आर० १, ७ (२ भा० २५४ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, २०, २।
† 'वरिवः वरिष्ठः। वित् भजनीयः'—इति वि०।
‡ 'नः अस्माकम्'—इति वि०।
¶ 'यज्यवे यजमानार्थे'—इति वि०।
§ 'परिस्रव परि समन्तात् दशापवित्रात् स्रव'—इति वि०।
** छ० आ० आर० १, ८ (२ भा० २५६ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, २०, ६।
†† इदं माध्यन्दिनपवमान सामम्।
‡‡ 'द्युम्नानि यशांसि'—इति वि०।
¶¶ 'अर्यः यजमानः'—इति वि०।

गच्छन्तः वयं "सिषासन्तः" सम्भक्तुमिच्छन्तश्च * "वनामहे" त्वां सम्भजामहे † ॥ ३ ॥ ८

५ र २ ४र ५ २ १
॥ आमहीयवम् ॥ उच्चाता३इजातमन्धसाः। दिवा
२ १ २ १ २ १
इसाऽ१भू२। मियार३ददाइ। उग्रᳪशर्मा। मघार३
२ ५ २ ४र ५ १ २ १
इश्रवाउ। वा३ ॥(१) सनआ३इन्द्रायायज्यवाइ। वरुणा
१ २ २ २र १
ऽ१या२। मरु२३द्भियाः। वरिवोवाइत्। परा२३इस्र
२ ५रर २ ४र ५ २ १ २
वाउ। वा३ ॥(२) एनावा३इस्यानिभर्यआ। द्युम्नानाऽ१इ
२ १ २र २ १ २
मा२। नृषार३णाम्। सिषासन्ताः। वना२३महाउ।
२र १ १ १ १
वा३। स्तौषे२३४५(३) ॥ १ ‡ ॥ [१]

४ २ र ४ २ १ ५
॥ वृक्षकवैष्टम्भम् ॥ उच्चाऽ५ते। जा३तमन्धसाः।
१ २ र १ २ १ २ २ १
दायिवीसद्भू। मियादा१दे२३। होवा३हायि। उग्राᳪ

* 'सिषासन्तः साधयन्तः'—इति वि०।

† 'वनामहे भाजयामः'—इति वि०।

‡ ऊ० गा० १प्र० १अ० १खा०।

२ १ २ २ १ २ ५र
आ१र्मा२३। होवा३हायि। महि। आ२वा२३४औ
१ २ ४ ३ ४ २ २ ५ १ २र
होवा॥(१) सनाऽ५इ। द्रा३ययज्यवायि। वारुणाय। म
१ २ १ २ २ १ २
रुद्भा१या२३:। होवा३हायि। वरायिवो१वी२३त्।
१ २ २ १ २ ५र र ४र २
होवा३हायि। परि। स्पा२वा२३४औहोवा ॥(२) एनाऽ५
४ २ ३ ५ १ र २ र १ २
वि। स्वा३निअर्य्यआ। द्युम्नानिमा। नृषा१णा२३म्।
१ २ २ १ २ १ २ २ १र
होवा३हायि। सिषासा१न्ता२३:। होवा३हायि। वना।
२ ५र र २ ५
मा२हा२३४औहोवा। दी२३४आ:(३) ॥ १३ * ॥ [२]
१ २ १ २ १
॥ आजिगम् ॥ उच्चातेजा। तमान्धासा:। दि
२र १ २ २ १ २ १
विसद्भू। माया१दा२३दायि। उग्रा५शार्म्मा। महिश्रा
२ १ २ १ २ १ २र
२३वा३४३: ॥(१) सनाआयिन्द्रा। ययाज्यावायि। वरुणा
१ ० २ १ २ १ २
य। मारुद्भा२३या:। वरायिवोवीत्। परिस्पा२३वा३४
१र २ १ २ १ र २ र १
३ ॥(२) एनावायिस्वा। निआर्य्याआ। द्युम्नानिमा। नृ

* ऋ० अ० ७अ० १व० १२वा० ।

Digitized by Google

२ १ २ १र २
षा२३णाम्। सिषासान्ताः। वनामा२३हा३४३यि।
१
ओ२३४५ई। डा (३) ॥ ९ * ॥ [३]

१ २ र र र
॥ आभीकम्॥ ऊ२३४वातेजा५। तमौहोन्धा
१ २१र २ २ २ ५ १
साः। दिविसङ्ग्मिया१दा३दे। उग्र९आ२३४म्र्णा। मा
ऽ २ २ ५ १
हा३उवा३४३। श्रा२३४५वो६हायि ॥(१) सा२३४नइन्द्रा५।
र ४ ५ १र २ २ २ ३
ययौहोज्यावायि। वरुणायमरु१ङ्गा३या:। वरिवो२३४
५ १ऽ २ २ ५ १
वीत्। पारा४उवा३४३। सा२३४५वो६हायि ॥(२) षा२३४
र र४५ १र र१२ २
यिनाविश्वा५। नियौहोर्य्याषा। द्युम्नानिमानू१षा३णा
२१ ५ १ऽ २ २
म्। सिषासा२३४न्ताः। वाना३उवा३४२। मा२३४५हो
५
६हायि(३) ॥ १० † ॥ [४]

२१र ५ २१ २ २
॥ गायत्रीवैरूपम्॥ उवाते२३४जा। तमान्धा३सा३:।
१ ३ ५ १ २ १
दिवा२यिसा२३४ङ्गू। माया१दादा२यि। उग्रा२३म्।

* ऊ० गा० ६प्र० १खं० ९सा०।

† ऊ० गा० ६प्र० १खं० १०सा०।

२ ५र र २ १ २ ३१११ १ २ १
शर्म्मा२३४औहोवा। महिश्रवा२३४५ः॥(१) सनापा२३४यि

५ २१ २ २ १ १ ७
न्द्रा। ययाज्या३वा३यि। वहूरणा२३४या। मावद्भा

१ र १ ५र र २१२ ३११
या२ः। वरा२३यि। वोवा३४औहोवा। परिस्रवा२३

११ २र१र ५ २१ २ २ १
४५॥(२) एनावा२३४यिश्वा। निपार्या३षा३। द्युम्ना२

२ ५ १ २ १ ३ २
ना२३४यिमा। नृषा१णा२म्। सिषा२३। सन्ता३४

५र र २१र२३ ११११
औहोवा। वनामहो२३४५यि(३)॥ १२ *॥ [५]

१ १ र र
॥ सत्रासाहीयम्॥ उच्चा२३४। तेजातमन्धसः।

५ ५ १ र र १ १ १
ओ६वा। दिविसद्भूमियादा२दायि। उ२ग्राम्। आ

२ १ ५ र१ ३र २ १ ५ ५
२३र्मा। महौ३हो। वाहा२३४३यि। आ२३४वो६हा

३ २ र र ५ ५ १ र
यि॥(१) सना३४ः। इन्द्राययज्यवे। ओ६वा। वरुणाय

१ १ २ १ ५ ३र
मरुद्भ्या२याः। वा२रायि। वो२३वीत्। परौ३हो।

३र १ १ ५ ५ ३र१ र
वाहा३४३यि। हा२३४वो६हायि॥(२) एना३४। विश्वान्य

---

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० १२गा०।

२ ५ ५ १ २ २ १ १
र्य्यश्वा। ओ६वा। द्यु म्नानिमानुषा२णाम्। सा२यिषा।
२ १ १ १२ १२२ १ ५
सा२३न्ताः। वनौ३चो। वाहा३४५यि। मा२३४चो६
५
हायि(३) ॥ १२ *॥ [६]

२ २ २ २ २ ४ ३
॥ स्वारसौपर्णम्॥ उच्चातेजातमन्धा३सा:। दिवि
४ २ ५ २ १ ३ ५ १ २ २ १
सद्भूमिया। हुम्। दा२३४दायि। उग्रा३उवा। शर्म।
२ १ ५ ४ ५ २ २ २
मचो२३४वा। आ५वो६हायि ॥(१) सनइन्द्रायय़ज्या३वा
३ ४ ५२ २ १ ३ ५ १ २
यि। वरूणायमरु। हुम्। द्भा२३४या:। वारा३उ
२ २ १ २ १ ५ ४ ५ १२२
वा। वोवित्। परो२३४वा। आ५वोई६हायि॥(२) एना
२ २ ४ ३२ ४ ५२२ १ ३ ५
विश्वान्यर्य्या३आ। द्यु म्नानिमानू। हुम्। षा२३४णाम्।
१ २ २ १२ २ १ ५ ४ ५
सायिषा३उवा। सन्ता:। वनो२३४वा। मा५हो६ हा
यि(३) ॥ १० † ॥ [७]

१ २ २१२ २ १ २ १
॥ आकारवर्णम्॥ उच्चा। तेजातमन्धसा:। दिवि

* ऋ० सा० ८प्र० २अ० १२सा०।

† ऋ० सा० १०प्र० १अ० १८सा०।

Digitized by Google

सत्। भूमिया२। ददा३१उवा२३। ऊ३४पा। उग्र
ऽश्मा२३र्मा। महिश्रवा३१उवा२३॥(१) सानाः। इन्द्राय
यज्यवायि। वरुणा। यमरु२। दभिया३१उवा२३।
ऊ३४पा। वरिवो२३वीत्। परिस्रवा३१उवा२३॥(२) आ
यिना। विश्वान्यर्यआ। द्युम्नानि। मानू२। पाणा३
माउवा२३। ऊ३४पा। सिषासा२३न्ताः। वनामहा३१
उवा२३। ऊ३२३४पा३॥ ११ *॥ [८]

॥ जराबोधीयम्॥ उच्चातेजोवा। तामन्धसाः।
दिवायिसा२३द्भू। मियाददायि। उग्राऽश्मा१र्मा२३
मा। हि। श्रवो३४५ई। डा॥(१) सनइन्द्रोवा। याय
ज्यवायि। वरुणा२३या। मरुद्भ्यायाः। वरायिवो१वी
२३त्या। रि। स्रवो३४५ई। डा॥(२) एनाविश्वोवा। ना

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ११मा०।

Digitized by Google

२ १ २ १ २ १ २
यर्य्यञ्चा। द्युम्नाना२३यिमा। नुषाणाम्। सिषासा
४ ५र २ २
१न्ता२३वा। ना। महो३४५ई। डा(३)॥ १४*॥ [९]

२र र र र
॥ ऋषभः पावमानम् ॥ हाहाउवातेजा। हा३।
२ १ २ ५ २१ र २ २
हा३यि। तामा२न्त्रा२३४माः। दिविसद्भूमियार्दा३
२ २ ५ १ २ ४ ५ ४
दे। उग्र९श्रा२३४म्मा। ओमो३। मद्दोवा। आ५
५ २र र २ १
वो६हायि॥(१) हाहाउसनइन्द्रा। हा३। हा३यि। या
२ ५ १ र २ २ २ २
या२ज्या२३४वायि। वरुणायमरु१द्भा३याः। वरिवो
५ १ २ ४ ५ ४ ५ २र
२३४वीत्। ओमो३। परोवा। हा५वो६हायि॥(२)हा
र र र २ १ २ ५
हावेनाविश्वा। हा३। हा३यि। नाञ्चा२र्य्या२३४षा।
१ र र २ २ १ २ २ १ २
द्युम्नानिमानू१षा३णाम्। सिषासा२३४न्ताः। ओमो३।
४ ५ ४ ५
वनोवा। मा५वो६हायि(३)॥ १ †॥ [१०]

---

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १४गा०।

† ऊ० गा० १२प्र० १ख० १गा०।

२ १र र २र १ र र २
॥ गौषूक्तम् ॥ उच्चातेजातमौ। होहोवाहायि।
१ र २ १
धसाः। दिविसद्भूमियौ२। ऊवायि। ऊवा२यि।
१ १ २ १
दादा२यि। उग्रꣳशर्ममहौ२। ऊवायि। ऊवा२
१ १ २ ५र र १ ११ २र १
यि। आवा२३ः। हो२वा२३४औहोवा ॥(१) सनइन्द्राय
र र २ १ र २
यौ। होहोवाहायि। ज्यवायि। वरुणायमरौ२।
१ १ १ र २
ऊवायि। ऊवा२यि। दभाया२ः। वरिवोवित्परौ२।
१ १ १ ५र र
ऊवाहि। ऊवा२यि। स्तावा२३। हो२वा२३४औहो
२र १र २र १ र र २ १ र
वा ॥(२) एनाविश्वानियौ। होहोवाहा। यꣳआ। द्युम्ना
र २ १ १
निमानुषौ२। ऊवायि। हुवा२यि। पाणा२म्।
१ र र २ १ १
सिषासन्तोवनौ२। हुवायि। हुवा२यि। माहा२३यि।
१ २ ५र र २ १ र २ ३ १११
हो२वा२३४औहोवा। अग्निराहुता२३४५ः(३) ॥ २*॥ [११]
२ र र र १ २ १
॥ स्वारसैन्धुक्षितम् ॥ उच्चातेजातमन्धासाः। दा

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० १गा०।

Digitized by Google

२ १ २र र २ १
यिविसद्भू। मियादादौ। होवा३हायि। ऊया२९

१ २ १ ५ ४ ५ २ र
श्राम्मा२३। महो२३४वा। आ५वो६हायि॥(१) सनइन्द्रा

१ २ १ २र १ २र र २
ययज्यावायि। वारुणाय। मरुद्भायौ। होवा३हा

१ १ २१ ५ ४ ५
यि। वारा२यिवोवी२३त्। परो२३४वा। सा५वो६हा

२र र र १ २ १ र २ र १ २र
यि॥(२) एनाविश्वानिअर्य्याआ। द्युम्नानिमा। नूषाणौ।

र २ १ १ २१ ५ ४
होवा३हायि। सायिषा२साता२३ः। वनो२३४वा। मा

५
पुहो६हायि(३)॥७*॥ [१२]

२ रर १ २ १ २ ३
॥ ऐडसौपर्णम्॥ उहातेजोवा। तामन्धा२३४

५ १२ १ ७ २ २
साः। दिवायिसद्भू। मिया२दा२३४दायि। ऊ२

१ २ १ २ १ २ ४ ५ २
ग्राम्। शा२३र्म्मा। माहिश्रवा। औ३होवा॥(१)सन

१ ५ १ २ ३ ५ २ १ २र १ ७ ३
इन्द्रौवा। यायज्या२३४वायि। वरुणाया। मरु२द्भा

५ १ २ १ २ १ २
२३४याः। वा२रायि। वो२३वीत्। पारिसवा। औ

* ऊ० गा० १९प्र० २खं० ७सा०।

४ ५ १२२ १ २ १ १ २ ५ २ १
३होवा ॥(२) एनाविश्वोवा । गामर्य्या२३४आ । द्युम्ना
२ १ १ ५ १ २
निमा । नू२षा२३४णाम् । सा२यिषा । सा२३न्ता: ।
१ १२ १ २ ४ ५ ॥
वानामघा । यौ३होवा । होऽ५ई । डा(३) ॥ १७* ॥ [१३]

१२ १२ १ २
॥ सुरूपोत्तरम् ॥ उच्चातेजौहो२ । हुया । तम
१ १ १ २२ १
न्धासा२: । दिविसद्भौहो२ । हुया । मियादादा२
१ १ २ १ २
वि । उग्रᳫशर्म्मौहो२ । हुया । महिश्रा२३वा३४३: ॥(१)
२ १ १ २ १ १२
सनइन्द्रौहो२ । हुया । ययज्यावा२यि । वरुणायौहो
१ २ १ १२ १
२ । हुया । मरुद्भाया२: । वरिवोवौहो२ । हुया ।
२ १ २ १२२ १ १ २ १
परिषा२३षा३४३ ॥(२) एनाविश्वौहो२ । हुया । निअर्या
२ १ १ ११
आ२ । द्युम्नानिमौहो२ । हुया । नुषाणा२म् । सि
१ १ १ २१२ २ १
षासन्तौहो२ । हुया । वनामा२३हा३४३यि । ओ२३
४५ई । डा (३) ॥ ३ † ॥ [१४]

---

* ज० ग्रा० १२प्र० १ख० १०गा० ।

† ज० ग्रा० १४प्र० १ख० १गा० ।

Digitized by Google

२र र र १
॥ मदारवम् ॥ हाउवातेजा । तमा२न्धासा२ः ।
१ र २ १ १ १
दिविसद्भूमिया२दादा२यि । उग्रा२ऽग्रार्म्मा२ । महि ।
२ ३र र २र १
आ२वार२३४औहोवा ॥(१) हाउसनइन्द्रा । यया२ज्यावा ।
१ र १ १
२यि । वरुणायमरु२द्भाया२ः । वरा२यिवोवी२रन् ।
१ २ ३र र २र र र
परि । हा२वार२३४औहोवा ॥(२) हावेनाविश्वा । निश्वा
१ १ र र १ १
२र्यांपा२ । द्युम्नानिमानू२षाणा२म् । सिषा२सा
१ २ ३र र १ १ २ र
न्ता२ः । वना । मा२हार२३४औहोवा । घतमभ्यक्रातु
१ २ २ १ १ १ १
विक्तमा२३४५म् (३) ॥ ४ * ॥ [१५]

२र र १ २
॥ इडामाऽऽसंवारः ॥ औहोयिहुवा३होयि । उ
र र ४ २ १ ५ २ ४ २ १ ५
हातेजा३ता३मन्धसः । दिविसद्भूमी३यादादायि ।
२ १ २ ५ २ १ १ १ २
उग्राऽऽग्रार२३४र्म्मा । महिश्रवः । इडा२३ ॥(१) सनइन्द्रा३
४ २ १ ५ १ र ४ २१ ५ १ १ २
या३यज्यवायि । वरुणाया३मा३रुद्भियः । वरायिवोर३

* ऋ० मा० १५म० १प० ४वा० ।

५ २ १ २ १ २र ४ २ ३ ५र
४वीत् । परिस्रव । इडा२३ ॥(२) एनाविश्वा३नी३अर्य्यआ ।
२ र ४ २र ५र १र र १ ३ २र
द्युम्नानिमा३नू३षाणाम् । औहोयिहुवा३होयि । सिषा
२ ५ २ १र २ र १ २ ४ ५
सा२३४न्ताः । वनामहे । इडा२३भा३ । एहीडा ।
४
होऽ५ई । डा(३) ॥ ५ * ॥ [१६]

२ १र र १र २
॥ आष्कुभार्गवम् ॥ उच्चाते । जातमन्धा३साः ।
१ २ १ २ ५ १ २
दायिविसद्भू३ । मायाँ२दा२३४हायि । उग्राश्शा१
१ २ १ ५ ५ १ २ १ १र
र्माँ२ । महा३यि । आ२३४वो६हायि ॥(१) सनद्रू । द्रा
२ १ २ १ २ ५
यवज्या३वायि । वारुणाया३ । माहू२द्भा२३४याः ।
१ २ २ २ १ ५ ५ १र
वरायिवो१वीरंत् । परा३यि । श्वा२३४वो६हायि ॥(२) ए
१र र २ २ १ २ १ २
माविश्वानि । अर्य्याँ३आ । द्यूम्नानी३ । मानू२षा२३
५ १ २ २२ १ ५ ५
४णाम् । सिषासा१न्ताँ२ः । वना३ । मा२३४हो६हा
यि(३) ॥ ११ † ॥ [१७]

---

* ऊ॰ गा॰ १५प्र॰ १ख॰ ५गा॰ ।

† ऊ॰ गा॰ १८प्र॰ १ख॰ ११गा॰ ।

१ र र र   १   १
॥ सौमित्रम् ॥ उच्चातेजातमन्धसा३ए। दिविस

१र   २   १ १
द्भूमि। या २१२३। ददा३४३यि। ऊ२३याम्। उ

१ ४ ५ ४ ५ १ र
र्मा २यो२३। महोवा। आ५वो६हायि॥(१) सनइन्द्राय

२ १ १र २
यज्यवा३ए। वरुणायम। रु २१२३। द्भिया३४३ः।

१ २ र १ ४ ५ ४ ५
वा२३रायि। वोवा २ओ२३। परोवा। स्वा५वो६हा

१रर र २ १र १ १र
यि॥(२) एनाविश्वान्यर्य्यआ३ए। द्युम्नानिमा। नू २१२३।

र १ १ १ १ ४
षाणा३४३म्। सा२३यिषा। सन्ता २ओ२३। वनो

५ ४ ५
वा। मा५वो६हायि(३)॥ ६ *॥ [१८]

१ २ १ २ र र
॥ ऐटतम् ॥ उच्चा। एउच्चा। तेजातम्। आ

१ २ ५र र २ ५ २ २
३। जा२मा२३४औहोवा। धा२३४साः। दिवायिसा

५ २२ १ २ ५र र २ ५
२३४द्भू। मिया३। मा२या२३४औहोवा। दा२३४दे।

२ २ ५ २२ १ २ ५रर
उग्रा३ग्रा२३४म्मी। महा३यि। मा२हा२३४औहोवा।

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० ६गा०।

२ ५ १२ १ २ र
आ२३४वाः ॥(१) सनः। एसानाः। इन्द्राय। या। ३।
१ २ ५र र २ ५ २ २ ५
यार्व्यार२३४औहोवा। ज्यार२३४वे। वरुणार२३४या।
२१ १ २ ५र र २ ५ १ २
मरु३। मार्रुर२३४औहोवा। द्भीर२३४याः। वरायिवो
५ २२ १ २ ५र र २ ५
२३४वीत्। पराइयि। पार्रार२३४औहोवा। म्रार२३४वा॥(२)
११ १ २ र १ २ ५र र
एना। एनायिना। विश्वानि। या३। नार्‍यार२३४औहो
२ ५ १ २ ५ २र २ १ २
वा। यो२३४या। द्यू म्ना२३४नी। मानू३। मार्नूर२३४
५र र २ ५ १ २ ५ २१
औहोवा। षार२३४णाम्। सिषासार२३४न्ताः। वना३।
१ २ ५र र २ ५
वार्नार२३४औहोवा। मार२३४हे(३)॥ ७*॥ [१९]

१ र र १ ५ २
॥ धुरासाकमश्वम्॥ उच्चातेजा३। हौ३होऽ३१।
२ ५ २ २ ५ २
तमन्धसाइः। हौ३होऽ३१यि। दिविसद्भू३। हौ३हो
र २ ५ १ १
३१यि। मियाददाश्यि। हौ३होऽ३१यि। उग्रंशर्मा
५ १ २ ५ २
३। हौ३होऽ३१यि। महिश्रवाइः। हौ३होऽ३१२३४५ई।

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ७गा०।

१ २ ५ १ २ ५
डा ॥(१) सनइन्द्राइ। द्यौइहोइ१। ययज्यवाइयि। द्यौ
२ र २ ५ २ २
इद्योइ१यि। वरुणायाइ। द्यौइद्योइ१यि। मरुद्भिया
५ २ र २ ५ २
इः। द्यौइद्योइ१यि। वरिवोवीइत्। द्यौइद्योइ१यि। प
२ ५ २ १ र २
रिस्रवाइ। द्यौइद्योइ१२३४५ई। डा ॥(२) एनाविश्वाइ।
५ २ २ ५ २ र
द्यौइद्योइ१। निभर्य्यंषाइ। द्यौइहोइ१यि। द्युम्नानि
२ ५ २ र २ ५ २
माइ। द्यौइद्योइ१यि। नुषाणाइम्। द्यौइद्योइ१यि।
र २ ५ २ र २ ५ २
सिषासन्ताइः। द्यौइद्योइ१यि। वनामहाइ। द्यौइहो
इ१२३४५ई। डा(३) ॥ ८ * ॥ [२०]

१ १र र १र१ २ १२
॥ विलम्बसौपर्णम् ॥ उच्चातेजातमन्धसः। इय
१२ ४ ३ ४र ५र २ २ १
इयाहायि। दिविसद्भूमिया। हाइहाइयि। दार३४
१ २ २ १ २ ५र र २
दायि। ऊग्राइउवाइ। ग्रार्म्मार३४यौहोवा। महि
२ १११ १११ १र१ १र १११ २ १
अवार३४५ः ॥(१) सनइन्द्राययज्यवे। इयइयाहायि। व

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ८गा०।

४र५र र १ १ १ ५ १ १
हुणायमह्व। हाउहाउयि। द्भार३४याः। बाराउउ
१ १ ‸ १ ५र र २ ‸ १ १ १ १ १ २र१र
वाउ। वोरवार३४औहोवा। परिस्रवार३४५ ॥(२)एना
२र १ १र १ १ १ १ ४ ३र ४ र ५र १
विश्वान्यर्य्यआ। ईंयद्युयाहाहि। द्युम्नानिमानू। हाउ
१ १ ५ १ २ १ १ ‸ १
हाउयि। षार३४णाम्। सायिषाउवाउ। सारन्ता
५र र १र ‸ १ १ १ १ १
२३४औहोवा। वनामहार३४५यि(३) ॥ ८ * ॥ [२१]

॥ मार्गीयवाद्यम्॥ उहौहोवा। तेजार। तमा
१र १ १ १ १२
न्वार३४साः। दिविसद्भू। मियादा१दारयि। उग्र
१ १ १ १ र १ २ १
म्। हा। चौउहोयि। ग्रार३४र्म्मा। मारहार३४
१ १ ‸ १ ‸ १
५र र १ १ १ १ १ १ २ र १ १ १
औहोवा। एउ। अवार३४५ः ॥(१) सनौहोवा। चायि
‸ १ १ ‸ १ ५ १ १र १ १
न्द्रार। ययाज्यार३४वायि। वरुणाय। मरुद्भा१
१ र
या२ः। वरा। हा। चौउहोयि। वोर३४वीत्। पा
२ २ ‸ १ ५ १

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० ८गा०।

२रा२३४औहोवा। ए३। सुवा२३४५ ॥(२) एनौहोवा।
वायिश्वा२। निश्राय्यो२३४आ। द्युम्नानिमा। नूषा१
णा२म्। सिषा। हा। औ३होयि। सा२३४न्ताः।
वा२ना२३४औहोवा। ए३। महा२३४५यि(३)॥ १४*॥[२२]

॥ ऐडकौत्सम ॥ सनाचेन्द्रा२३। ययज्यवईया।
वरुणायमरुद्भियः। वारुणाय। मरुद्भा२३याः। वा
रा३यिहायि। वोवो३हायि। परिहा२३वा३४३। औ
२३४५ई। डा(२) ॥ ४ † ॥ [२३]

॥ सौमित्रम् ॥ एनाविश्वान्यर्य्य आ३ए। द्युम्नानि
मा। नू२१२३। षाणा३४३म्। सा२३यिषा। सन्ता
२ओ२३। वनोवा। मापुत्रोईहायि(३) ॥ १८‡ ॥[२४] ८

---

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० १४गा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० ४गा०। द्वितीयस्या ऋचो गानमेतत्।

‡ ऊ० गा० १६प्र० १ख० १८गा०। तृतीयस्या ऋचो गानमेतत्।

द्वितीय-सूक्तरूपे प्रगाथे* प्रथमा—

२ १ २ ३१ २३ १ २र
पुनानःसोमधारयापोवसानोअर्षसि।
१ २३१ १ २र३१२ ३१ २ ३१ २३१ २
आरत्नधायोनिमृतस्यसीदस्युत्सोदेवोहिरण्ययः॥ १† ॥

हे सोम! "पुनानः" पूयमानस्त्वम् "अपः" उदकानि वसतीवर्य्याख्यानि "वसानः" आच्छादयन् "धारया" "अर्षसि" पवित्रं गच्छसि, ततो "रत्नधा" रत्नानां रमणीयानान्धनानां दाता च "ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "योनिं" स्थानम् "आसीदसि"। कीदृशस्त्वम्? "उत्सः" प्रस्यन्दनशीलः "देवः" द्योतमानः "हिरण्ययः" हिरण्मयः सुवर्णोत्पत्तिस्थान मित्यर्थः॥

"उत्सोदेवः"—"उत्सोदेव"—इति पाठौ॥ १ ॥

---

* "प्रकर्षेण ग्रथनं यत्र स प्रगाथः। प्रकर्षो नाम आम्नाता दृक्पाठा दाधिक्यम्"—इति मी० द० अ० ९, २, ६ अधि० १वर्णके माधवव्याख्यायाम्। एष च प्रगाथः—पादाभ्यास-पुरःसर ऋगन्तरसम्पादनेनोपजायते। अत्र च "पुनःपदा"—इति श्रौतोक्तिर्लिङ्गम्। तथा च श्रूयते ताण्ड्ये तृतीये—"एषा वै प्रतिष्ठिता बृहती या पुनः पदा तद् यत् पदं पुनरारभते तस्माद् वत्सो मातर मभिहिङ्करोति"—इति। अस्यार्थः—या बृहती पुनः पदा भवति, सैषा प्रतिष्ठिता स्थिरा भवति; पदं चतुर्थः पादः सोऽप्यृगन्तर-सम्पादनाय पुनः पठ्यते, ततः सा बृहती पुनः पदा; सेय मृगाम्नाता, तस्याः पादो वत्सः; तथा सति यस्मादेव चतुर्थं पाद मुद्गाता पुनरारभते तस्माद् वत्सो मातर मभि वीक्ष्य हि मिति शब्दं करोतीति।

† छ० आ० ६,१,३,१ (२भा० ७० पृ०)=ऋ० वे० ७, ४, १२, ४। छ० बृहती। दे० ऋ० पूर्ववत्।

अथ द्वितीया।

३ १र २र ३ १र २र३१२ २ ३१२१ २
दुहानऊधर्दिव्यम्मधुप्रियम्प्रत्नꣳसधस्थमासदत्।
२ १२ ३१२३१र ३१२३ १ २ ३२
आपृच्छ्यन्धरुणंवाज्यर्षसिनृभिर्धौतोविचक्षणः॥ २* ॥९ †

"मधु" मदकरं ‡ "प्रियं" प्रीणनकारि ¶ "दिव्यं" दिविभवम् "ऊधः" सोमवल्ली-लक्षणं "दुहानः" पवमानः § सोमोदेवः "प्रत्नं" पुरातनं "सधस्थं" सह तिष्ठन्त्यत्रेति सधस्थं स्थान मन्तरिक्षम् ‖ "आसदत्" आसीदति [सदेर्लुङि रूपं] तदनन्तरम् "आपृच्छ्यं" कर्मणा प्रष्टव्यं "धरुणं" कर्मणो धारयितारं यजमानं "वाजी" बलवान्** सन् हे सोम! त्वम् "अर्षसि" तस्मै अन्नं दातु मतिगच्छसि। कीदृशः? नृभिः कर्मनेतृभिर्ऋत्विग्भिः "धौतः" अद्भिर्यद्वा परिशोधितः

* ऋ० वे० ७, ५, ११, ५। † इदं माध्यन्दिनपवमानं द्वितीयम्।

‡ 'मधु स्वादु सोमाख्यम्'—इति वि०।

¶ 'प्रियं देवमनुष्याणाम्'—इति वि०।

§ 'दुहानः दुह्यमानः। ऊधः ऊधसः सकाशात् द्रव्यापवित्ररूपात्। अथवा ऊधउदकं यत्र क्रियते सोमस्य सकाशात् तद् दुहाने'—इति वि०।

‖ 'सधस्थं स्थानं द्रोणकलशाख्यम्'—इति वि०।

** बलवान—सोमः, चरुः, पशुः, धानाः, करम्भः, पुरोडाशः, सतीयापः, पयस्येति।

["तैरेनं* चतुराधूनोति पञ्च कृत्वः सप्त कृत्वो वा (१२, ५, १७)"—इत्यापस्तम्बेन सूचितम्] "विचक्षणः" सर्वस्य विद्रष्टा॥

"नृभिर्धौता"—"नृभिर्धूतः"—इति पाठो॥ २॥ ९

२र र १ ५ १र

॥ रौरवम् ॥ पुनानःसोमा३धारा२३४या। आपो

र र र र र ३१ १ २

वसानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसा२इदसाइ। ओहा

२ १र रर २ १ २ २ १

इउवा। उत्सोदेवोहिरा२३ण्याइ। ओहा३उवा। एग्रया।

२ ४ ५ २र र र १ ५ १ र र

औ३होवा ॥(१) उत्सोदेवोहा३इरण्या२३४याः। उत्सोदे

र र र र ३१ १ २

वोहिरण्ययोदुहानऊधर्हिवियम्मधू२प्रियाम्। ओहा३उ

२ १ २ १ २ २ १

वा। प्रत्नंसधस्थमा२३साइ। ओहा३उवा। सदात्।

● तैः निग्राभ्य-सञ्ज्ञकाद्भिः, एनं सोममित्यर्थः; अदाभ्यग्रहे इति सङ्गति-ग्रन्थः। अदाभ्यमिति ग्रहविशेषस्य नाम; तथाहि—'अदाभ्यं गृह्णात्याग्रयणे निग्राभ्याः पात्रे तस्मिंस्त्रीन् सोमांशूनवधायाग्नये त्वा गायत्रच्छन्दसमिति प्रतिमन्त्र मुपयामः सर्वत्राविशेषात्'—इति आ० श्रौ० सू० १२, ५, ११—१५। अस्यार्थः—वसिष्ठौदुम्बरे पात्रे ग्रहणं सोमः तस्मिन् सोमचमसस्था निग्राभ्य-सञ्ज्ञा अप आनीय तस्मिंश्चिताः सोमलताः अग्नये त्वेत्यादिभिस्त्रिभिर्मन्त्रैः क्रमेणादाभ्यं ग्रहं गृह्णाति। मन्त्रैः सोमलता प्रक्षेपो वेति केचित्। उपयामगृहीतोसीत्येतत् त्रिष्वपि मन्त्रेष्वादावनुषञ्जनीयं सर्वत्रैवत्वादाम्नातत्वेति॥ किञ्च अभिषोतव्यस्य सोमस्य सेचनीया आपो निग्राभ्या उच्यन्ते।

Digitized by Google

४ ५ २ १ ५ १
औ२३होवा ॥(२) प्रत्न९सधस्था३मासा२३४दात्। प्रात्न९स
२ २ २ ३ २ १ २ २
धस्थमासदद्दापृच्छन्नरुणंवाजिया२र्षसाइ। औहो३उवा।
१ २ १ २ १ २ २ १ २
नृभिर्धौतोविचा२३हाइ। औहो२उवा। त्वणा। औ
४ ५ ४
३होवा। ह्वो॒ऽ५इ। डा(३)॥ २ *॥ [१]

३२ २ ४ ५ २
॥ यौधाजयम्॥ पुना३१। ना३ःसो। म। धा
२ ५ १ २ १ २२ २ ५
रा२३४या। आपो३। वसा२। नआ३४५। षा२३४सी।
१२१ २१ १२ १ २ २ ३
आरात्नधाः। यो। निम्रता२। स्यसा३४५इ। दा२३
५ २ १ १ २ ३
४सी। उत्सा२ः। दाइवो२। हिरा३४५। ण्या२३४
२ ३ २ २ ४ ५ २ २ ५ १
याः॥(१) उत्सो३१। द २३वो। हि। रण्या२३४याः। उ
२ १ २ २ ३ ५ ३ १ २
त्सो३। दाइवो२। हिरा३४५। ण्या२३४याः। दुहान
१ २ १ ३२ ३ ५ २
ऊ। धः। दिविया२म्। मधू३४५। प्री२३४याम्। प्र
१ ३ २ ३ ५ ३
त्ना२म्। साधा२। स्थमा३४५। सा२३४दात्॥(२)प्र

* ऊ० गा० १प्र० १अ० २गा०।

२ २ ४ ५ २ ३ ५ १२
त्मा३१म् । सा३ध । स्थम् । आसा२३४दात् । प्रात्ना

१ ३ २ २ ५ २र १
३म् । सधा२ । स्थमा३४५ । सा२३४दात् । आपा

२ १ २ १ २ २ २ ५
च्छियाम् । ध । रुणंवा२ । जिया३४५ । षा२३४सौ ।

२ १ ३ २ २ ५
नृभा२इः । धौतो२ । विचा ३४५ । चा २ ३ ४ णा (३)
॥ ३ * ॥ [२]

१ २ १ २ १र
॥ ऐडमायास्यम् ॥ आयिपुना । नाःसो । मधार

र २ :र १ २
या । आपोवसा३१ । नौअर्षसी । आरत्नधा३१: ।

र २१र २ २ १
योनिम्टता । स्यसीदसी । उत्सोदेवा३१: । हिरण्या२

२ १ २ १ २ १
३या३४३: ॥(१) आउत्साः । दायिवो । हिरण्ययाः । उ

२ २ १ र २
त्सोदेवा३१: । हिरण्ययाः । दूहानऊ३१ । धर्दिवियाम् ।

२ १ २ २ १र २
मधुप्रियाम् । प्रात्नꣳसधा३१ । स्थमासा२३दा३४३त् ॥(२)

१ २ १ २ १र २
आयिप्रत्नाम् । साधा । स्थमासदात् । प्रात्नꣳसधा

२ १र २ २
३१ । स्थमासदात् । आपृच्छिया३१म् । धरुणंवा । जि

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ३सा०।

१ १ १ १ १ १ १
यर्षसायि। नृभिर्द्धौताश्१ः। विचचाश्२णाश्४२ः। षो
२३४५ई। डा (३) ॥ २० * ॥ [३]

१र र र र १ १
॥ त्रिणिधनमायास्यम्॥ पुनानःसोमधाराउह्वोवा।
१ १ २ ५ १ ५ २ १ २ ५
रायाओ२३४पो। वसार। नपा३४५। षा२३४सी।
१र २ २र ४र ५ १ र र २ २
आरा३४। औहोवा। ऋधायोनिम्हता२। स्वसा३४५
२ ५ १ २ २र ४र ५ १
यि। दा२३४सो। उत्सा३४। औहोवा। दायिवो२
२ २ २ ५ १र र र र र १ २
हिरा३४५। ण्या२३४याः॥(१) उत्सोदेवोहिराण्याउहोवा।
१ २ २ ५ १ २ २ २
ण्यायाजर२३त्साः। दायिवोर। हिरा३४५। ण्या२३४
५ १ २ २र ४र ५ १र २ २
याः। दुहा३४। औहोवा। नऊधर्हिवियार२म्। मधू
२ ५ १ २ २र ४र ५ १
३४५। प्री२३४याम्। प्रत्ना३४। औहोवा। साधा
२ २ २ ५ २ र र
२। स्थमा३४५। सा२३४दात्॥(२) प्रत्न५सधस्थमाहाउ
१ २ १ २ २ ५ १ २ २
होवा। सार्दतप्रा२३४न्नाम्। सधार। स्थमा३४५।

• ऋ० मा० १प्र० १ष० १०मा०।

Digitized by Google

२ ५ १र २ २र ४र १ १
षा२३४दात्। आपा३४। औहोवा। छन्अस्वणंवार२।

२ २ २ ५ १ २ २र ४र ५ १
जिया३४५। षा२३४सी। नृभा३४। औहोवा। धौ

२ २ २ ५
तो२। विचा३४५। णा२३४णाः(३)॥ १ * ॥ [४]

२र र १ २र १र २ १ २ १र
॥ कण्वरथन्तरम्॥ पूनानःसोमधारया। अपोवसा।

२ १ २ २ र र र र २ ५र
नो३अर्षा३सी। आरत्नधायोनिमृतस्यसीदसा२३४ऐही।

२ १र ५ २ २ १ २
उत्सोदा२३४यिवाः। हिरा३१उवा२३। ए३। ण्यय

२ र र १र २र १ २ १ २ १र र र २ १
आ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययाः। उत्सोदेवो। हा३यिरा

२ २ र र २ ५र २ १
ण्या३याः। दुहानऊधर्दि वियम्मधुप्रिया२३४मैही। प्रत्न९

५ २ २ २ २ २ र
सा२३४धा। स्थमा३१उवा२३। ए३। सददा॥ (२)प्रात्न९

१ २ १र २ १ २ १ २ १ २ २ र
सधस्थमासदात्। प्रत्न९सधा। स्था३मासा३दात्। आ

र २ ५र २ १ ५ २
पृच्छन्अस्वणंवाजियर्षसा२३४ऐही। नृभिर्यौ२३४ताः। वि

२ २ २ २
चा३१उवा२३। ए३। णाआ(३)॥ ४ † ॥ [५]

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० १गा० ।

† ऊ० गा० ४प्र० १ख० ४गा० ।

५ र १ ४र ५ ४र ५ १
॥ गौङ्गवम् ॥ पुनानाः३सोमधारया। आपो२।
१र १र २ ४ ५ २र १ र र १
वसानोआ३। षासायि। आरत्नधायोनिमा२३र्त्ता२।
३ १ ४ ५ २र १ र र ३ २ ४
स्यसा३यिदासायि। आरत्नधायोनिमृत। स्यसा३यिदा
५ १ र र १ २ २ १ ५
सायि। ऊत्सोर्दे। वा। औ३हो। विरो२३४वा।
४ ५ ५ र २ ४र ५र ५ १
ण्या५योऽ६हायि॥(१) उत्सोदा३यिवोहिरण्ययाः। ऊत्सो
१रर ३ २ ४ ५ २र १र १
२। देवोहिरा३। ण्यायाः। दुहानऊधर्हिवा२३यारम्।
३ २ र ५ २ र १ र ३ २ ४ ५
मधू३प्रायाम्। दुहानऊधर्हिवियम्। मधू३प्रायाम्।
१ २ १ २ २ १ ५ ४
प्रात्नꣳस। धा। औ३हो। स्थमो२३४वा। सा५दो
५ ५ २ ४ ५ ४र ५ १
६हायि॥(२) प्रत्नꣳसा३धस्थमासदात्। प्रात्ना२म्।
१ ३ २ ४ ५ २र १ १ ३ २
सधस्थमा३। सादात्। आपृच्छ्यन्धरुणा२३वा२। जिया
४ ५ १ २र १ २ २ १ ५
३र्षसायि। नृभिर्वौ। ता। औ३हो। विचो२३४वा।
४ ५
सा५णो६हायि(३)॥ ५ *॥ [६]

---

० ऊ० गा० ४प्र० १ख० ५गा०।

४ र २ ४र १र ४ ५र २
॥ द्विनिधनमायास्यम्* ॥ पुनानःसोमधारया । ए३ ।
२ ४ १ २ १ १ २ २
औ३होऽ५वा॥ । आपो३ । वसा२ । नआ३४५ । षा
१ १ १ १ १ १ २ १ २ १ २ १
३सो२३४५ । आरत्नधाः । योनिमृता । स्यासा३आ ।
२ ४ ५ १ १ २ २ १
औ३हो३ । दा२३४सी । उत्साऔ३हो । दायिवो२ ।
२ १ २ १ १ १ १ १ ३ ४र २ ३र ४ ५
हिरा३४५ । एया३या२३४५ः ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययः ।
२ २ ४ १ २ १ २ १
ए३ । औ३होऽ५वा॥ । उत्सो३ । दायिवो२ । हिरा
२ १ १ १ १ १ ५ र २ १ २ १
३४५ । एया३या२३४५ः । दूहानऊ । धार्हिवियाम् ।
२ १ १ ४ ५ २ १ २ २
माधू३आ । औ३हो३ । प्री२३४याम् । प्रत्नाऔ३हो ।
१ २ २ २ १ १ १ १ १ ४ २ ४ ३ ४
साधा२ । स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् ॥(२)प्रत्नꣳसधस्थ
३र ४ ५ २ ४ ४ १ २ १
मासदत् । ए३ । औ३होऽ५वा॥ । प्रात्ना३म् । सधा२ ।
२ २ २ १ १ १ १ १ १ २ १
स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् । आपृच्छियाम् । धारु

* "निरस्तीन मायास्यम्"—इति क० पु० ।

२ १   २ १   ४ ४   ५   २ १ २
यांवा। जायाइश्वा। औइहोइ। षा२३४सौ। नृभाश्वौ
२   १   २ २   २   २ १ १ १ १
इषो। धौतोर२। विषा ३ ४ ५। ह्वाइणा २ ३ ४ ५:(३)
॥ ६ * ॥ [७]

३ र २ ४र २र ३ ५र   २ १
॥ उत्सेधम् ॥ पुनानःसोमधारया। पः। वसा३४
२र ४र ५   २र १   २ ५
औहोवा। नोअर्षसाऽ२यि। हा३१उवार३। ऊ३५पा।
२र २ ४   ५र ४ ५   १   २ १   २ र १
धारा३त्नधा। औहोवाहायि। योनिमृता। अ्सीदा
२   २ ५   २ २ ४र   ३र
सि। हा३१उवार३। ऊ३४पा। उत्सो३देवः। औ
४ ५   २ २ ४   २ ४र र २र ४
होवाहायि। हिरा३ण्या५याई५६: ॥(१) उत्सोदेवोहिर
५   ३र २   २र ४र ५   २ १
ण्ययः। उत्सः। देवा३४औहोवा। हिरण्मयाऽ२ः।
२ ५   २ २ ४   ५र ४ ५
हा३१उवा२३। ऊ३४पा। दुहा३नऊ। औहोवाहायि।
१ २ १   २ १ २   २ ५
धार्हिवियाम्। मधुप्रायम्। हा३१उवार३। ऊ३४पा।
२ २ ४   ५र ४ ५   १ २ ४
प्रत्ना३९सध। औहोवाहायि। आमा३सा५दाई५त् ॥(२)

---

* ऊ० गा० ४प्र० १अ० ६गा० ।

४ १ ४ १ ४१र४५ १ १ १र ४र५ १
प्रत्नꣳसधस्थमासदत्। प्रत्नम्। सधा३४औहोवा। स्थ
१र २ ५ १र१ ४
मासदा२ऽ३त्। हा३१उवा२३। ऊ२३४पा। पापा३र्थि
५र ४ ५ १ १ १ १ १ १
याम्। औहोवाहायि। धारुणंवा। जियर्णासि। हा
२ ५ १ १ ४र ५र ४ ५
३१उवा२३। ऊ२३४पा। नृभा३यिर्द्धौतः। औहोवाहा
२ १ ४ १ १ १ १ १
यि। विचा३ र्षा पूणा६५६ः। ऊ२३४५(३) ॥११*॥ [८]

४ १ ४ २ ४र ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पुना ऽ५नः। सो३मा३धाराया।
१ र १ १ १ १ १र १ र र
आपोवसा। नो३र्षार्षा३सी। आरा२त्नधायोनिम्ह।
२ १ १ १ १ र र र
तस्या२३सा। इड्मायि। दा३सायि। ऊत्सोदेवोहिरा
२ १ १ १ १ १ १ १
ण्ययाउ॥(१)ऊत्साः। दायिवो। हा३यिराण्या३याः।
१ १र १ १ १ १
दुहा२नऊधर्हि वि। यज्ञा२३धू। इड्मायि। प्रा३याम्।
१ १ १ १ १ १ १
प्रत्नꣳसधस्थमा२सदाउ॥(२)प्रात्नाम्। साधा। स्था३
१ २ १ १ १ २ १
मासा३दात्। आपार्च्छग्नश्रणम्। वाजा२३या।

* ऋ० मा० ६म० १ष० ११वा०।

१ २ १ १ २ २ ३ २
इन्भायि । पाइसायि । नृभिर्द्दौनोविचाऽरचक्षाउ । वा
१ ११
३४५ (३) ॥ १२* ॥ [८]

२ २ २ २२ १ २ १
॥ निषेधम् ॥ पुनानःसोमा३धारया । अपोवसा ।
२२ १ ११ १ २ ४ ५ २ २
नोअर्षसा२यि । इहा३ । आरा३त्नाधाः । हाहो२३
५ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १
४हा । योनिमृता । सुसीदा२३सायि । इहा३ । ऊ
२ ४ ५ २ ३ ५ ३ २ ४
त्सो३दायिवाः । हाहो२३४हा । हिरा३ण्याउ्या६५६ः ॥(१)
२ २ २२ २ १ २ २ १ १ १
उत्सोदेवोहा३यिरण्ययाः । उत्सोदेवो । हिरण्यया२ः ।
१ २ १ २ ४ ५ २ २ ५ १ २१
इहा३ । इहा३नाऊ । हाहो२३४हा । धाद्दिवियाम् ।
२ १ २ १ २ १ २ ४ ५ २ २
मधुप्रा२३याम् । इहा३ । प्रात्ना३ऽसाधा । हाहो२३
५ ३ २ ४ २ २२
४हा । स्यमा३सा५दाई५६त् ॥(२) प्रत्नऽसधस्था३मासदा
१ ११ १ २ १ १ २ १
म् । प्रत्नाऽसधा । स्यमासदा२त् । इहा३ । आ
२ ४ ५ २ ३ ५ १ २१ २ १
पा३र्च्छीयाम् । हाहो२३४हा । धारुणांवा । जियर्षा

* छ० आ० ६प्र० १खं० १२सा० ।

२ १ १ १ २ ४ ५ २ १ ५
२३सायि। हुवा३। नुमा३यिवौना:। हाचो२३४वा।
३ २ ४ ३ १ १ १ १
विचा३वा५णा६५६:। ए२३४५ (३) ॥ १२ *॥ [१०]

२ र १ १र १र १ १ १ १र १र १
॥ समन्तम् ॥ पुनानःसोमधारया। अपोवसानो अ
र २ १ २ १ १
र्षसायि। आरत्ना२३धाः। योनिमृत। स्यसायिदासा।
३र २ ३र १ १ २ १ २
औहो३४वाहायि। उत। सोदा२३यिवा३ः। होवा३
१ १ १ र २र र २ १
हायि। हिरण्या२३या३४३: ॥ १) उत्सोदेवोहिरण्ययाः।
र र २ १ र २ १ २
उत्सोदेवोऽहिरण्ययाः। दुहाना२३ऊ। धार्हिवियम्।
१ १ ३र २ ३र २ १ २
मधूप्रायाम्। औहो३४वाहायि। प्र। त्नाᳪसा२३धा
१ २ २ १र २ २ १ २ १ २
३। होवा३हा। स्थमासा२३दा२४३त् ॥(२)प्रत्नᳪसधस्थ
१र २ १ २ १ २ १र र २
मासदात्। प्रत्नᳪसधास्थमासदात्। आपृच्छा२३याम्।
१ १ र १ २ ३र १ ३र १ १
धारूणंवाजियार्षासा। औहो३४वाहायि। नृ। भायि

* ऋ० सा० ६म० १ख० ११सा०।

२ १२ २ १ २ १
हौ२३ताइ:। होवा३हायि। विचषा२३णा३४३:। णो

२३४५ई। डा (३) ॥ २ * ॥ [११]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १र २
॥ अभीवर्त्तम् ॥ पुना३ना३:सोमधारयोवा। आपोव

र र १ २ १ २ २र
सा। नोआर्षा१सा२यि। आरत्नधा३१२३४:। योनि

४ ५ २ १ २ १ २ २ २
मृत। स्यसायिदा१सा२यि। उत्सोदा१यिवा२:। हिरा

१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५ ४ ५
इण्या२३४५। या२३४५: ॥(१) उत्सोदे३वोऽहिरण्ययोवा।

१ र २र १ २ १र २ २
ऊत्सोदेव:। हिराण्या१या२:। दुहानऊ३१२३४। अ

४ ५ २ १ २ १ २ २
हि्ं वियम्। मधुप्रा१या२म्। प्रत्नाᳬसा१धा२। स्थ

२ १ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५र
मा३। सा२३४५। दा२३४५त् ॥(२) प्रत्ना३ᳬसा३धस्थमा

४ ५ १ २ १ २ १ २
सदोवा। प्रात्नᳬसध। स्थमासा१दात्। आपृच्छ्या

२ ४ ५र २ १ २ १ २
३१२३४म्। धरुणंवा। जियार्षा१सा२यि। नृभायि

२ २ १ २ १ १ १ १
हौ१ता२:। विचा३। षा२३४५। णा२३४५:(३)॥ १ २ † ॥[१२]

---

* ऊ० गा० ८प्र० २ख० २गा०।

† ऊ० गा० ८प्र० २खा० ११गा०।

Digitized by Google

॥ अभीवर्त्तम् ॥ उत्सो३देश्वोऽहिरण्ययोवा। उत्सो
देवः। हिराण्या१या२ः। दूहानऊ३१२३४। धर्दिवि
वम्। मधूप्रा१या२म्।(२) प्रत्नाꣳसा१धा२। स्थमा३।
सा२३४५। दा२३४५त् (३)॥ १४ * ॥ [१३]

॥ महाकालेयम् ॥ प्रत्नꣳसा३धस्थमासदात्। प्रत्ना
ꣳसधा। स्थमासदा२३त्। आपृच्छियाम्। धा२३४।
रुणंवाजिय। आ३सायि। नृभायिद्यौती। वा३४३यो
३४वा। विश्वा५सणाः। स्रो५इ। डा(३)॥ १५ † ॥ [१४]

॥ वासिष्ठम् ॥ उत्सोदेवोहिर। ण्यया३ओ२३४वा।
इयाहायि। उवेहो२यि। उत्सोदेवोहिराण्या१या२ः।
दुहानऊधर्हिविवम्। मधूप्रा१या२म्। ई३या॥(२) प्रत्न

* क० ग्रा० प्र० १ख० १४ग्रा०।
† क० ग्रा० प्र० १ख० १५ग्रा०।

Digitized by Google

५ १ १५ २ १ १ १
ऽसा२३४धा। स्यमासा२३४५दा६५६त्। अवा३सा२३
१ १
४५यि (३)॥ १६*॥ [१५]

१ २ २ १ २ २ १ २
॥ महावैष्टम्भम्॥ पुनानःसोहायि। मधारयोवा।
१२ २ २ २ १ २ १ २ २ २
आपोवसा। नोआर्षा१मा२३यि। होवा३हायि। आं
१ १ २ १ २
रत्नधायोनिमृत। स्वसायिदा१सा२३यि। होवा३हा
२ १ २ १ २ २ १
यि। उत्सोदा१यिवा२३ः। होवा३हायि। हिर। एधा
२ ५२ २ १ २२२ १ २ १ २
२यार३४औहोवा॥ (१) उत्सोदेवोहायि। हिरण्ययोवा।
१ २ २२ १ २ १ २ २ २
उत्सोदेवः। हिराण्या१या२३ः। होवा३हायि। दुहा
१२१ १ २ १ २ १ २ २ १
नऊधर्दिवियम्। मधूप्रा१या२३म्। होवा३हायि। प्र
२ १ २ २ १२ २
त्नाऽसा१धा२३। होवा३हा। स्थमा। सा२दा२३४
५२ २ २ १ २ २ १ २ १
औहोवा॥(२) प्रत्नऽसधोहायि। स्थमासदोवा। प्रा
२ १ २ १ २ २ २ १
त्नऽसध। स्थमासा१दा२३त्। होवा३हायि। आपृ

* ऋ० मा० ९म० २अ० १६ग०।

२ १ १ २ र १ २ १ २ २ १
ऋन्धरुणांवा । जियार्षा१सा२३यि । चोवा३वायि । नृ
१ १ २ २ १ २
भायिद्बौं१ता२३ः । चोवा३वायि । विच । चा२चा२३
५र र ३ ५
४औचोवा । दी२३४आः (३) ॥ १२ * ॥ [१६]
५ र २ ४र ५ ४र ५ २ १ २ १
॥ कालेयम् † ॥ पुनानाः३ःसोमधारया । अपोवसा ।
१र २ २ १ १र २ २ १ २ ४
नोअर्षसा२३यि । आरत्नधाः३ः । यो२३४ । निमृतस्य
५र २ २ १ २ र२ २ ५ ४
सो । दा३सायि । उत्सोदेवौ । वा३४३चो३४वा । वि
५ र २ ४र ५ ४ ५ २ १ १र १
रा५ण्ययाः ॥(१) उत्सोदा३यिवोहिरण्ययाः । उत्सोदेवो ।
२ ३ २ १ २ १र २ १ ३ ४ ५
हिरण्यया२३ः । दुहानऊ३ । धा२३४ः । हिवियमधु ।
१ २ १ २ १ २ ५ ४
पृा३याम् । पृत्ना२सधौं । वा३४३चो३४वा । स्वमा५
५ २ ४ ५ ४र २ १ २ १
सदात् ॥(२) पृत्न२सा३धस्थमासदात् । पृत्ना२सधा ।
२ ३र २ १ २र ३ २ १ ३र र
स्थामासदा२३त् । चापृच्छिया३म् । धा२३४ । रुणांवा

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० ११गा० ।

† "महाकालेयम्"—इति ख० पु० ।

५ २ २ १ ३र २ ४ २ ५
जिय। षा३सायि। नृभायिद्वौतौ। वा३४३ओ३४वा।

४ ४
विचा५स्वणाः। हो५ई। डा(३)॥ १२ *॥ [१७]

४ र ३ ४र ३र ४ ५र र १
॥ वषट्कारणिधनम्॥ पुनानःसोमधारया। पुनाना

४र ५ ४र ५ २र र र ऽ १ ७ र १ १
३ःसोमधारया। अपोवसानो३आर्षसा२यि। नोआर्षा

१र ऽ २ र र र १
१सा२३यि। ओमो३वा। आरत्नधायोनिमृतस्या३सायि

७ २ १ २ १र ऽ १ र
दसा२यि। स्यसायिदा१सा२३यि। ओमो३वा। उत्सो

र र १ ७ २ १ २ १र
देवोहि२राण्य१या२ः। हिराण्या१या२३ः। होम्। ओ२।

३ ५र र ३ ५
वा२३४। औहोवा॥ ऊ२३४पा(१)॥ २० †॥ [१८]

२र र र र र र र र
॥ दैर्घश्रवसम्॥ पुनानःसोमधारयाओहाओहा३

२ १र २र र १ २ ऽ २ ऽ १ २
ए। अपोवसानोअर्षसि। ओ३हा। ओ३हा३ए३४।

३र २ ३ २ १ २ १ र २ ऽ
आरा३४त्नधाः। योनिम्। तस्यासीदसायि। ओ३

* ऊ० गा० १०प्र० १ अ० १३ गा०।

† ऊ० गा० १०प्र० १ अ० २० गा०।

Digitized by Google

२ ५ २ २ ३ १ ३२ १ २ १ ५
हा । ओ३हा३ए३४ । उत्सो३४देवा३ः । हिरो२३४वा ।
४ ५ १२ २ २ २ २ २ २
ण्या५योऽ६हायि ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययओहाओहा३ए ।
१२ १२१२ २ १ १ ५ २ ५ २१ ३१
उत्सोदेवोहिरण्ययः । ओ३हा । ओ३हाए३४ । दुहा
३१ १ २ १ २ ५ १ ५
३४नऊ । धाहिंवि । यन्माधुप्रियाम् । ओ३हा । ओ
१ २ ३ १ ३२ २ १ ५ ४
३हा३ए३४ । प्रत्ना३४९सधा३ । स्थमो२३४वा । सा५
५ १ २ २ २ २ २ १
दोऽ६हायि ॥(२) प्रत्न९सधस्थमासदोहाओहा३ए । प्रत्न९
२१ २१२ २ ५ २ ५ २ २ ३२ २
सधस्थमासदत् । ओ३हा । ओ३हा३ए३४ । आपा३४
३ १ १ २ २ १ २ ५ २
प्रियाम् । धारुणम् । वाजायर्षसायि । ओ३हा ।
५ २ २ ३२ ३२ २ १ ५ ४
ओ३हा३ए३४ । नृभा३४यिन्नौता३ः । विचो२३४वा । सा
५
५णोऽ६हायि(३) ॥ १६ * ॥ [१९]

२२ १ १ ३१ ४ ५
॥ मैधातिथम् ॥ पुनानःसोहायि । मधा३राया ।
२ १२ १ २ १ २ १ २
अपोवा२हो१यि । साओ३हो । नाआउवा । षासा

* ऋ० मा० ११प्र० २ख० १६सा०।

Digitized by Google

उवा। आरत्नधायोनिमृताऔ३हो। ऋतासाउवा। दा
साउवा। उत्थोदेवाऔ३हो। हिरा। औहो। वा
होर२३४वा। ण्या५योइहायि॥(१) ओदेवोहायि। हि
रा३ण्यायाः। उत्थोदा२हो१यि। वाऔ३हो। हायि
राउवा। ण्यायाउवा। दुहानऊधर्हि वियाऔ३हो।
माधाउवा। प्रायाउवा। पूर्व्यंसधाऔ३हो। स्थमा।
औहो। वाहोर२३४वा। सा५दोइहायि॥(२) पूर्व्यंसधो
हायि। स्थमा३सादात्। पूर्व्यंसा२हो१यि। धाऔ
३हो। स्थामाउवा। सादाउवा। आपृच्छ्यन्धरुणंवा।
औ३हो। जायाउवा। सासाउवा। नृभिर्हीताऔ३
हो। विचा। औहो। वाहोर२३४वा। सा५योइहा
यि(३)॥ ७ *॥ [२०]

* ऊ० गा० १२प्र० १अ० ७गा०।

Digitized by Google

२ र र र १ २ १ २
॥ वरुणसाम ॥ पुनानःसोमधारयोवा । ओवा ।
१ र२र र १ २ १ २ १
आपोवसा । नोआर्षा१या२यि । आ२३रा । त्ना२३
२ १र २ १ २ १ ऽ २ १ र
धाः । योनिमृत । स्यसा२३दायि । दसा३या । उत्सो
१र१र २ १ २ १ २ १ र २ऽ २
देवोहिरण्ययः । ऊ२३त्साः । दायिवोहिरौ३ । हो३१
५ ४ ५ १ र रर १ २
२३४ । वा । ण्या५योऽ६हायि ॥(१)उत्सोदेवोहिरण्ययोवा ।
१ २ १ र २र १ २ १ २
ओवा । ऊत्सोदेवः । हिराण्या१या२ः । दू२३हा ।
१ २ १ २ १ २ १ ऽ २
ना२३ऊ । धर्हिवियम् । मधू२३हायि । प्रिया३मा ।
१ २ १ २ १र २ १ २ १ २ ऽ
प्रत्नꣳसधस्थमासदत् । प्रा२३त्नाम् । साधस्थमौ३ ।
२ ५ ४ ५ २ २
हो२१२३४ । वा । सा५दोऽ६हायि ॥ (२)प्रत्नꣳसधस्थमा
१ २ १ २ १ २ १ २
सदोवा । ओवा । प्रात्नꣳसध । स्थमासा१दा२त् ।
१ २ १ २ १२ र १ २ १ऽ
आ२३पा । च्छो२३याम् । धरुणंवाजिया२३हा । यसा
२ १ १र१र २१२ १ २ २ र १
३या । नृभिर्धौतोविचक्षणः । नृ२३भीः । धौतोवि
ऽ २ ५ ४ ५
चौ३ । हो३१२३४ । वा । क्षा५णोऽ६हायि(३) ॥ १८* ॥[२१]

० क० मा० १३प्र० १ख० १८सा० ।

Digitized by Google

२ र र र २ र १
॥ वैयश्वम् ॥ पुनानःसोमधारया३ए। अपोवसा२
र १ १ २ २ १र २१र र २ १
नोअर्षसा२३यि। होवा३हायि। आरत्नधायोनिमृता
१ २ २ ३ ५ १ र र र
२। स्वासा३हायि। दा२३४सायि। उत्सोदेवोहिरा२
१ २ १ २ ४ ५ ४
३ण्यो। एयया। औ३होवा। होपुइ। डा(१) ॥ १५* ॥[२२]

२ ४र र र २र ४ ५
॥ वषट्कारणिधनम् ॥ उत्सोदेवोहिरण्ययः। उ
र २ ४र ५ ४ ५ २र र र १ ७
त्सोदा३यिवोहिरण्ययाः। उत्सोदेवोहो३राण्यया२ः। हि
१ २ १र ऽ २ र र १
राण्यया२३ः। ओमो३वा। दुहानऊधर्हिं वियम्मा३धू
७ १ २ १र ऽ २
प्रिया२म्। मधप्रा१या२३म्। ओमो३वा ॥(२) प्रत्नꣳस
१ ७ १ २ १र
धस्या३मासदा२त्। स्थमासा१दा२३त्। ओम्। ओ
२ १र र २ ५
२। वा२३४। औहोवा। ऊ२३४पा(३) ॥ १६† ॥[२३]
२ १ ४र र र ५ २ १र २र
॥ पृश्नि ॥ पुनाना२३ःसोमधारयाहाउ। अपोवसा

* ऊ० गा० १३प्र० २ख० १५सा०।
† ऊ० गा० १३प्र० २ख० १६सा०।

२ १ २ १र २ १ २ २ १
नोअर्षसि। आराला१धार२३ः। होवा३हायि। योनि
२ १ २ १ २ २ १
मृत। असायिदा१सा२३यि। होवा३हायि। उत्सो
२ १ २ ० १ २ १
दा३यिवा२३ः। होवा३हायि। हायिरण्ययः। इडा
२ १र ४र र ५ १ र २र१र २
२३॥(१) उत्सोदा२३यिवोहिरण्ययोहाउ। उत्सोद वोहिर
१ २ १ २ १ २ २ १ २
ण्ययः। दुहाना१ऊ२३। होवा३हायि। धार्हि वियम्।
१ २ १ २ २ १ २
मधूपा१या२३म्। होवा३हायि। प्रत्नाऽ९सा१धार२३।
१ २ २ १ र २ १ २१
होवा३हा। स्यामासदत्। इडा२३ ॥(२) प्रत्नाऽ९सा२३
४ र ५ २१ ११ २ १र २ १र २
धस्थमासदहाउ। प्रत्नऽ९सधस्थमासदत्। आपार्च्छा१
१ २ २ १ १र १ २
या२३म्। होवा३हायि। धारुणंवा। जियार्षा१सा
१ २ २ १ २ १ २
२३यि। होवा३हायि। नृभायिर्दू१ता२३ः। होवा३
२ १ २ १ २ १
हायि। वायिचक्षणः। इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई।
डा(३) ॥ ३ * ॥ [२४]

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० ३सा०।

२ र र र र
॥ आभीशवोत्तरम् ॥ पुनानःसोमधारयाए। ए।

र ऽ र १ ७ २ २ ५ २ २ १ र
अपोवसाउनो अर्षसायि। आ२३४रा। हा३हा। त्नधा

र २ २ २ ५ २ २
योन्मृतस्यासी१दसायि। ऊ२३४त्साः। हा३हायि।

१ र २ १ ५ ४ ५ २ र र र
दायिवोहिरो२३४वा। ए३।५योई३हायि॥(१) उत्सोदेवोहिर

र र १र १ ७ २ २ ५ २
ण्यए। ए। उत्सोदेवो३हायिरण्ययाः। दू२३४हा। हा

२ १ र ७ २ २ ५ २
३हा। नजधर्हिवियम्माधुप्रायम्। प्रा२३४त्नाम्। हा

२ १ २ १ ५ ४ ५ १
३हायि। साधस्थमो२३४वा। सा५दो६हायि॥(२) प्रत्नꣳ

र १ र २ १
सधस्थमासदद्दे। ए। प्रत्नꣳसधा३स्थामा१सदात्। आ

५ २ २ १ र ७ २ २
२३४धा। हा३हा। आप्रच्छ्यन्धरुणम्वाजायर्षसायि। न्ह२३

५ २ २ १ ९ २ १ ५ ४
४भीः। हा३हायि। धीतोविचो२३४वा। सा५णोई

५
हायि(३)॥ ४ *॥ [२५]

---

* ऊ० गा० १५प्र० २अ० ४गा०।

२ र १ १र १र २र र १
॥ पौरुमुद्गम्॥ पुनानःसोमधारया। औहोवा। ए
२ र र १ र १ र २
हियां। हाउ। अपोवसा२नोअर्षसि। आरत्ना१धा
१ २ १ २ ३ ५ १
२ः। योनिमृताइ। आसायिदा२३४सायि। उत्सो।
२ ३ ५ २ २ ४
दायिवौवाओ२३४वा। हाइहायि। हिराऽण्ययाः॥(१)
१ र २र१र २ १ २ र १ २ र
उत्सोदेवोहिरण्ययः। औहोवा। एहियां। हाउ।
र १र १ २ १ २ १ २
उत्सोदेवो२हिरण्ययः। दुहानाश्ऊ२। धार्दिवियाइम्।
१ २ २ ५ १ २ २ ५ २
माधुआ२३४याम्। प्रत्नाम्। साधौवाओ२३४वा। हा
२ ४ २१ २१२ १र २ र
इहा। स्थमाऽसदात्॥(२) प्रत्नꣳसधस्थमासदत्। औ
१ २ र १ र१ २
होवा। एहियां। हाउ। प्रत्नꣳसधा२स्थमासदत्।
१र २ १ २ १ २ ३ ५
आपाच्छा१या२म्। धारुणंवाइ। जायर्षा२३४सायि।
१ २ ३ ५ २ ४
नृभायिः। धौतौवाओ२३४वा। हाइहायि। विचाऽक्ष
४
णाः। होऽई। डा(३)॥ १०* ॥ [२६]

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० १०ग्रा०।

५ र २ ४र ५र ४
॥ आष्कारणिधनं काण्वम्॥ पुनानाऽ३ःसोमऽधार
५ १ र२ र र १ २ र १
या। आपोवसा। नोभाऽ२३र्षसाउ। वाऽ३२। आर
२ १ २र ३ ४ ५ २ १र ५ १ २
त्नधाः। योनिमृता। स्वसीदाऽ२३४सायि। जऽ२३त्साः।
१र र २ १ ५ र २ ४र ५
देवोहि। रण्याऽ२३४५ूयाऽ६५ऽ६ः॥(१) जत्सोदाऽ३यिवोहिऽर
४ ५ १ र १र १ २
ण्ययाः। जत्सोदेवः। हिराऽ२३ण्ययाउ। वाऽ३२। दु
१र २ १ २ ३ २ १ २ १ ५ १ २
हानज। धक्षिवियाम्। मधुप्राऽ२३४याम्। प्राऽ२३त्ना
१ २ १र ५ २
म्। सधस्थम्। आसाऽ२३४५ूदाऽ६५ऽ६त्॥(२) प्रत्नऽंसा
४ ५र ४ ५ १ २ १ २
ऽ३धस्थऽमासदात्। प्रात्नऽंसध। स्थमाऽ२३सदाउ। वा
र १ २ १ २ ३ ४ ५ २ १ ५
ऽ३२। आपृच्छियाम्। धरुणंवा। जियर्षाऽ२३४सायि।
१ २ १र र २ १ ३ १ १
तऽ२३भोः। धौतोवि। चक्षाऽ२३४५ूणाऽ६५ऽ६ः। आऽ२३
१ १
४५ूष्(३)॥ ११ * ॥ [२७]

१ र र १ १
॥ सोमसाम† ॥ पुनानःसोऽ२मधारया। आपोऽ२वा

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० १सा०।

† "वृहत्सोमः"—इति क० पु०।

२ १ १ २ १
सा२। नोअर्षसी। आरा२त्नाधा२ः। योनिमार्त्ता
१२ १ १ २
२। स्वसीदसी। उत्सो२दायिवा२ः। हिरण्यार२३या
१ २ २ १ १
३४३ः॥(१) उत्सोदेवो२हिरण्ययाः। उत्सो२दायिवो२।
२ १ १ १
हिरण्ययाः। दूहा२नाऊ२। बर्हिंवाया२म्। मधु
१ १२ २
प्रियाम्। प्राता२७साधा२। स्वमासार२३दा३४३त्॥(२)
१ २ १ १ १२
प्रत्न९सधा२स्वमासदात्। प्राता२९साधा२। स्वमा
१ १ १
सदात्। आपा२च्छीया२म्। धरुणांवा२। जियर्ष
१ १ २ १
सायि। नृभा२यिर्धौता२ः। विचक्षा२२३णा३४३ः। ओ
२३४५ई। डा(३)॥ १६ *॥ [२८]
१ २ १ २२ १ २
॥ वाचंदुक्थ्यम्॥ पुनानःसोम। धा२रया। अपो
२ २२ १ १ १ ० १ ०
वसानोअर्षा२३सायि। आरत्नाधा२ः। योनिमार्त्ता२।
१२ २ २ १ २
स्वसीदसायि। उत्सोदार२३यिवाः। हिरण्यार२३या३४

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० १६गा०।

१र २र १र २ १ र र र २ १
३: ॥(१) उत्मोदेवोहि। रा२ण्ययया:। उत्मोदेवोहिर

२ १ २ १ ७ १
ण्यार२३्या:। दूहा१नार्ज२। धाहिंवाया२म्। मधु

२ १र २
प्रियाम्। प्रत्नꣳसार२३धा। स्थमासार२३दा२३४२त्॥(२)

२१ २१ २ १ २ १र
प्रत्नꣳसधस्थम्। भा२सदात्। प्रत्नꣳसधस्थमासार२३

२ १ ७ १ ७ १
दात्। आपृच्छाया२म्। धारुणांवा२। जियषँसा

२ १ २ १
यि। नृभिर्द्धौ२३ता:। विचक्षा२३र्णा२३४३:। औ२३४५ई।

डा (३)॥ ७ *॥ [२९]

५४ २ ३र ४ र५ १ र र र
॥ पृष्ठम्॥ पुनाइनःसोमध्‌ रया। अपोवसानोअ

१ २र १ र र र
र्षसार२३यिद्धोइया। आरत्नधाः मिग्तस्यसीदसार२३यि

१ २ १र २ १ २
द्धोइया। उत्मोदार२३यिवा:। हिरण्यार२३या२३४३:॥(१)

५४ २र १र ४ ५ १ र र र १
उत्मा३र्देवाहिरण्ययया:। उत्सदेवोहिरण्ययार२३होइया।

२ र १ र १ २१ २
दुहानऊधर्दिवियम्मधप्रियार२३ꣳहोइया। प्रत्नꣳसार२३धा।

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० ७गा०।

१र २ ५ ४ २ २ ४ र ५
स्थमासा२३दा३४३त् ॥(२) प्रत्ना३ꣳसधस्थमासदात्।
१ र १ २र १ र
प्रत्नꣳसधस्थमासदा२३ओइया। आपृच्छन्धरुणं वाजियर्ष
१ २ १ २ १ २
सा२३यिहोइया। नृभिर्यौ२३ता:। विचक्षा२३णा३४३:।
१
औ२३४५ई। डा (३) ॥ २० * ॥ [३०]

५ ४ २ ४र ५र १
॥ कौल्मलबर्हिषम् ॥ पुना३ना३:सोमधारया। अ
र र र १ २र र र १ २ र
पोवसानोअर्२षासा२३४यि। आरत्नधायोनिमार्ता। ऐ
१ १र र र र २ १
होयि। स्या२सीदसायि। उत्सोदेवोहिरोवा३ओ२३
५ ४ ५ ५ ४ २ ४र ५
४वा। एप्५योईहोयि ॥(१) उत्सोदा३यिवोहिरण्यया।
१ र र र १ २ र र १ २
उत्सोदेवोहिरा२ण्याया२३४:। दुहानऊधर्दिवायाम्।
र १ १ २ १
ऐहोयि। मा२धुप्रियाम्। प्रत्नꣳसधस्थमोवा३ओ२३४
५ ४ ५ ५ ४ २ ४ ५र
वा। सा५दोईहायि ॥(२) प्रत्ना३ꣳसा३धस्थमासदात्।
१ १ २र १ २ र
प्रत्नꣳसधस्थमा२सादा२३४त्। आपृच्छन्धरुणांवा। ऐ

---

* ऋ० मा० १८म० १अ० २०ग्रा०।

Digitized by Google

१ १ २ २ २ १
होयि। जा२यर्षसायि। नृभिर्ह्वौतोविचोवा३ओ२३४
५ ४ ४
वा। श्रा५णोऽहायि (३) ॥ २१ * ॥ [३१]

२ २ १ १ १ २
॥ वाम्रम् ॥ पुनानःसो। मधारा१या२। अपोव
२ २ २ १२ २ २ २
सानोआर्षा१सा२यि। आरत्नधायोनिम्तस्यसायिदा१सा
१२ १ १ ३ ५२ २
२यि। उत्सदा२३यिवा३ः। हा२यिरा२३४औहोवा।
२ ५ २२२ १ २
स्या२३४णाः ॥(१) उत्सदेवाः। हिरा ण्या१या१या२ः।
१२२२ २ १ २ २
उत्सदेवोहिरा ण्या१या२ः। दुहानऊधर्दिवियम्मधूप्रा१या
१ १ ३ ५२ २ ३
२म्। प्रत्नꣳसा२३धा३। स्या२मा२३४औहोवा। सा
५ २ १ २ १
२३४दात् ॥(२) प्रत्नꣳसधा। स्थमासा१दा२त्। प्रत्नꣳ
२ १ १२ २ २
सधस्थमासा१दा२त्। आपृच्छ्यन्धरुणंवाजियार्षा१सा२
१ २ १ ३ ५२ २ ३
यि। नृभिर्ह्वौ२३ता३ः। वा२यिचा२३४औहोवा। णा
५
२३४णाः (३) ॥ ३ † ॥ [३२]

---

* ऊ० गा० १८प्र० १श्व० २१सा०।

† ऊ० गा० १८प्र० २श्व० ३सा०।

२ ४र ५ र २ १ ४र ५ ५
॥ माधुच्छन्दसम् ॥ पुनानःसो। हो। मधारयाइए।
२ १२ १ २ २ ५ २र १ र २र १ २
अपोवसा। नोअर्षा२३४ऽसायि। आरत्नधायोनिम्रत।
१ २ २र २ २र २ १ २
स्यसायिदासा। औहो३४वाहायि। उत्सोदायिवा।
२र २ १ २ १
औहो३४वाहायि। हिरण्या२३या३४३ः। ओ२३४५ई।

डा (१) ॥ २० * ॥ [३३]

५ २र २ ४ ५
॥ गौरीवितम् † ॥ उत्सः। देवो३। हिरण्ययाः।
१ र र र १ र २ ४
उत्सोदेवोहिरण्यया२३ः। दूहानऊ३१२३। धर्हिवियम्म
१ २ ४ ५ ४
धू५प्रियाम्। प्रात्न१सधा३१२३। स्यमोवा। सा५दो
५
इहायि(२) ॥ १२ ‡ ॥ [३४]

२र र र र र
॥ उभयतस्तोभं गौतमम् ॥ हाउपुनानःसोमधारया
१ र२ र र १ ७ २र २
हाउ। आपोवसा। नोआर्षसा२३४यि। हाहोयि।

---

* ऊ० गा० १९प्र० १ख० १०गा०। † "महागौरीवितम्"—इति ख० पु०।

‡ ऊ० गा० १९प्र० २ख० १२गा०।

Digitized by Google

२१ २१२ १ २ १ २ २ ३२ १ १
भारत्नधायोनिम्हतास्यासीदसा३४यि। हाहोयि। ऊ

२ २ ३२१ २१ ५ ४
त्सोदायिवा३४ः। हाहो३। हिरो२३४वा। एयाप्योई

५ ३२ २२२ २ १ २ ३२
हायि ॥(१) हाउत्सोदेवोहिरण्ययोहाउ। उत्सोदेवः।

१ ७ ३२ १ २ १ २ १ १ १
हिराण्यया२३४ः। हाहोयि। दुहानऊधर्हिवियम्।

१ २ ३२ २ १ २ ३२ १
माधुप्रिया३४म्। हाहोयि। प्रात्न९सधा३४। हाहो

२ १ ५ ५ ३२
३। स्थमा२३४वा। साप्दोईहायि ॥(२) हाउप्रत्न९

२ १ २ १ ७
सधस्थमासदहाउ। प्रात्न९सध। स्थमासदा२३४त्।

३२ १ २ १ २ १ २ १ १ २ ३२
हाहोयि। आपृच्छ्यन्धरुणंवा। जायर्षसा३४यि। हा

२ १ २ ३२ २ २ १ ५
होयि। नृभिर्द्धौता३४ः। हाहो३। विचो२३४वा।

४ ५
त्तापुणोईहायि (३) ॥ ११ * ॥ [३५]

२ १२ ४२ ५२
॥ द्विर्हिङ्कारं वामदेव्यम्॥ पुनाना२३:सोमधारया।

१२ २ २ २ २ २ २ १ ३२ १ १
आपोवसानोअर्षस्यारत्नधायोनिम्हताःस्यसीदो३। ऊत्सा

* ऊ० गा० २०प्र० २अ० ११सा०।

१ २ १ र र र २ ३र ० १
२ । दा२३साथि । उत्थोदेवो ऽ ह्रिरौहो३ । ऊम्मा २ ।
१ २ ४ ५ १ १र ४र ५
ण्यया । औ३होवा ॥(१) उत्थोदा२३यिवोहिरण्यया: ।
१ र र र र र र २ ३र २ १
ऊत्थोदे वोहिरण्ययोदुहानऊधर्हि वियाम्मधौहो३ । ऊम्मा
१ २ १ २ ३र १ १
२ । प्रा२३याम् । प्रत्नꣳसधास्थमौहो३ । ऊम्मा २ ।
१ ४ ५ २ १ ४ ५र
सदान । औ२३होवा ॥(२) प्रत्नꣳसा२३धस्थमासदान् ।
१ र र २ ३र २ १
प्रात्नꣳसधस्थमासददापृच्छन्धरुणंवाऽजियौहो३ । ऊम्मा
१ २ १ र २ ३र २ १
२ । षा२३साथि । नृभिर्द्धौतोऽविचौहो३ । ऊम्मा २ ।
१ २ ४ ५ ४
क्षणा । औ३होवा । हो५ई । डा (३) ॥ १५ * ॥ [३६]
५ र २ ४र५ ४र ५ १ र २ र
॥ दैगतम् ॥ पुनाना३:सोमधारया । आपोवसा ।
र १ १ ३र २ ५ २ २ १ र र
नोआर्षा१सा२यि । आरा३ । हौ३हो३वा । त्नधायो
२ १ १ ३ ५र
निम्हतस्यामौ१द्मा २यि । उत्सोर३ । दा२यिवा२३४औ
र २ ३ १ १ १ १ ५ र २
होवा । ए३ । हिरा २ण्यया२३४५: ॥(१) उत्सोदा३यि

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० १५सा० ।

४र५ ४ ५ १ र १र १ २ २ २
वोहिरण्ययाः। उत्सोदेवः। हिराण्या१या२ः। इहा३।
५ २ २ १ र ० १
हौ३वो३वा। नऊधहिं वियम्माधुप्राया २म्। प्रत्ना२३म्।
१ २ ५र र २ १ २१११११
सा२धा२३४औहोवा। ए३। स्थमा २सदा२३४५त्॥(२)
५ २ ४ ५ ४र ५ १ २ १ २
प्रत्न९सा३धस्थमासदात्। प्रात्न९सध। स्थमासा१दा
२र २ ५ २ २ १ र ०
२त्। आपा३। हौ३वो३वा। आप्यन्धरुणंवाजायर्षा
१ १ २ ५र र २
सा२यि। नृभा२३यिः। धौ२ता२३४औहोवा। ए३।
१ २११११
विचा २र्षणा२३४५ः (३)॥ १६ *॥ [३७]

१ र १ २र १र २र १
॥ सर्वपुष्पाख्यम्॥ पुनानःसोमधारया। ऊवे२३।
२१र २र र १ १ २१रर २ १ २ र
अपोवसानोअर्षसि। ऊवे२३। आरत्नधायोनिमृतस्यसी
१ १ र २र१र १ २ १
दसि। ऊवे२३। उत्सोदेवोहिरण्ययः। ऊवे२३॥(१)
१ र २र१र २ १ २ १ १ र २र १र २ १ २
उत्सोदेवोहिरण्ययः। ऊवे२३। उत्सोदेवोहिरण्ययः।
१ २ र १ र २ १ २ १ ११
ऊवे२३। दुहानऊधर्दिव्यम्मधुप्रियम्। ऊवे२३। प्रत्न९

* छ० मा० २०प्र० २ख० १६सा०।

१ १ २ १र २ १ २र १ ११०२र १ १
सधस्थमासदत् । ऊवे२३ । आपृच्छ्यन्धरुणंवाज्यर्ष सि ।
२ १ ०र१र०२१ २ १ १
ऊवे२३ । नृभिर्द्योतोविचक्षणः । ऊवे२३ । ऊवे२३ ।
१ २ २ २ ५र र २१र र र ऽ
होवा३हा३ । हा३४ । औहोवा । चक्रोदेवानां२पर
१र २ १ १ १ १
मेवियोरमार३४५न् (३) ॥ १७ * ॥ [३८]

२ ऽ २ ऽ २
॥ द्यौतानम् ॥ हा३ । ओ३हा३ । ओ३हा३ ।
२ १र र २२ २ ५ १र र
हायि । उत्सोदेवोर । हिरण्या२३४याः । उत्सोदेवो
२२ २ ५ १र र २२
२ । हिरण्या२३४याः । दुहानऊधर्दिवियार्म् । मधू
२ ५ १ २२ २ ५ २
प्रा२३४याम् । प्रत्नꣳसधार । स्थमासा२३४दात् । हा
ऽ २ ऽ २ २ ५र र १
३ । ओ३हा३ । ओ३हा३ । हा३४ । औहोवा । आ
१ १ १ १
दृहो२३४५(२) ॥ ८ † ॥ [३९]

१ र ५र४र ५ ४ ५
॥ नौधसम् ॥ ज२३४त् । सोदेवोहिर । ण्यायाः ।

---

* ऋ० मा० १०म० २ख० १७वा० ।

† ऋ० मा० ११म० २ख० ८वा० ।

Digitized by Google

२ १२ र २ १ २ २ १ २ १ २
उत्सोदेवो। ह्वाइयिराण्याइया:। दूर२ह्वा। नाजध:।

११ १ २ २ १ ५ १ २ १
दिवि। याम्। माधुप्रा२३४याम्। प्रा२३त्नाम्। सा

२ १ ५ २ ५
धस्थमो२३४वा। सा२३४दात्(२)॥ ५ * ॥ [४०]

३ ४र र ३र ४ ५ ३ २ ३र ४र ५
॥ श्यैतम्॥ उत्सोदेवोह्विर। ण्यया२३४औहोवा।

१ र २र १ ७ ५ ५ १ र १ र
उत्सोदेव:। ह्विराण्यया२३४:। ओ२ह्वा। दुह्वानज

२ १ २ १ २ ५
ध:। दायिवा२३याम्। मधू२। प्रा२३४याम्। प्रत्नठ्

२ २ १ २ ५र १ २
सधास्था३मा। ऊम्मायि। सा२दा२३४औहोवा। वा

५
२३४ह्व(२)॥ ८ † ॥ [४१]

२रर र २ १ २
॥ काण्वबृहत्॥ औहोपुनान:सो३ए। मधारा१यार

३र २ १ र २ र र १र २
३४। हाहोयि। आपोवसानोअर्षसि। आरात्ना१धा

३र २ १ २ १ २
२३४:। हाहोयि। योनिमृत। स्सायिदा१सा२३४

---

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० ५सा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० ८सा०।

२र २ १ २ १र १ १
यि। हाहोयि। उत्सोदा१यिवा२३४:। हाहौ। हि
२ १ ५ ५ २र र
रा३। ण्या२३४या:।. उऊवा६हाउ। वा॥(१) औहो
२र र २ १ २र २ १ र
उत्सोदे वा३ए। हिरा ण्या१या२३४:। हाहोयि। ऊत्सो
२र र १ २ २र २ १ २
दे वोहिरण्ययः। दुहाना१ऊ२३४। हाहो। धाहिंवि
१ २ २र २ १ र २ र
यम्। मधूप्रा१या२३४म्। हाहोयि। दूहानऊ।
१ २ २र २ १ २
धर्हायिवा१या२३४म्। हाहोयि। मधूप्रा१या२३४म्।
२र २ १ २ २र २ ३ १ १
हाहोयि। प्रत्ना७सा१धा२३४। हाहो। स्थमा३। सा
५ ५ २र र
२३४दात्। उऊवा६हाउ। वा॥(२) औहोप्रत्न७सधा
२ १ २ २र २ १ २
३ए। स्थमासा१दा१दा२३४त्। हाहोयि। प्रत्न७सध
र १र २ २र १ १
स्थमासदत्। आपाक्र्ला१या२३४म्। हाहोयि। धारु
१ र १ २ २र १ १ २
णंवा। जियार्षा१सा२३४यि। हाहोयि। आपृच्छ्यम्।
१ २ २र २ १ २
धरुणा१वा२३४। हाहोयि। जियार्षा१सा२३४यि।

Digitized by Google

२र २ १ २ २र २ २ २
हाहोयि। नभायिह्नौंशा२३४:। हाहौ। विचाइ।
१ ५ ५
णा२३४णा:। उड्वाइहाउ। वा (३) ॥८*॥ [४२] ६

तृतीय-तृचे—प्रथमा।

१ २र३१२२ ३ १२३१ २ ३ २ २ १र २र
प्रतुद्रवपरिकोशन्निषीदनृभिःपुनानोअभिवाजमर्ष।
२३ १२२ १२३१२३१ २ ३१ २३१२
अश्वन्नत्वावाजिनंमर्जयन्तोऽच्छाबर्हीरशनाभिर्नयन्ति॥१†॥

हे सोम! "तु" चिप्रं "प्रद्रव" अस्मदयज्ञं प्रकर्षेणागच्छ। गत्वा च "कोशं" द्रोणकलशं "परि निषीद" निषण्णो भव। "नृभिः" नेतृभिः "पुनानः" पूयमानः सन् "वाजम्" अन्नं हवीरूपं त्वम् "अभ्यर्ष" अभिगच्छ। "वाजिनं" बलवन्तं "अश्वं न" अश्वमिव तं यथा मार्जयन्ति। तद्वद्वाजिनं त्वां "मर्जयन्तः" शोधयन्तः अध्वर्यु-प्रमुखा ऋत्विजः "बर्हिः" "अच्छ" अस्मदीयं यज्ञं प्रति "रशनाभिः" रशनावदाय ताभिरङ्गुलीभिः "नयन्ति" ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० २अ० ८मा०।

† ऋ० सं० ९, १, ४, १ (२भा० १०९ पृ०)=ऋ० ७, ३, २१, १। छ० त्रिष्टुप्। एवमेवोत्तरत्र।

अथ द्वितीया।

१ १ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजना रक्षमाणः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

पिता देवानां जनिता सुदक्षो

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः॥ २ *॥

"स्वायुधः" शोभनायुधः † "इन्दुः" "सोमः" देवः "पवते"‡ स च देवः "अशस्तिहा" रक्षोहा ¶ "वृजना" वृजनानि उपद्रवाणि परिहृत्येति शेषः, "रक्षमाणः" § "पिता" "पालकः" "देवानां" "तथा" "जनिता" उत्पादकः "सुदक्षः" शोभन-बलः "दिवः" "विष्टम्भः" विशेषेण स्तम्भयिता "पृथिव्याः" च "धरुणः" धारकः ‖। एवं महानुभावः पवते। "वृजना"—"वृजन्" —इति पाठौ॥ २॥

---

* ऋ० वे० ७, ३, १२, १।

† 'स्वायुधः असि-खड्ग-परशु-प्रासादिभिरायुधैः स्वायुधः। अथवा वज्र-धनुः-शक्ति-अस्त्राश्च प्रभृतिभिर्वायुधैः स्वायुधः'—इति वि०।

‡ 'पवते पूयते'—इति वि०।

¶ 'अशस्तिहा अशस्तयः शत्रवः। अथवा अशस्ता वाचः अशस्तानि वा कर्माणि ये कुर्वन्ति तेषां हन्ता'—इति वि०।

§ 'वृजना रक्षमाणः। वृजनं बलम् अथवा वृजनं विमर्दं कुत्सितं कर्म तेभ्यो रक्षमाणः'—इति वि०।

‖ अतएवोक्तं मनुना—"अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिः, वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः (३अ० ७६श्लो०)"—इति।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ १ २ ३ १२ ३२ ३ १२ ३२ ३ २ ३ १ २
ऋषिर्विप्रःपुरएताजनानामृभुर्धीरउशनाकाव्येन।
१ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३
सचिद्विवेदनिहितंयदासामपी
२ ३ २ ३ १ २
च्याऽ३ङ्गुह्यन्नामगोनाम् ॥ ३ * ॥ १०

"ऋषिः" अतीन्द्रियद्रष्टा † "विप्रः" मेधावी "पुरएता" पुरतो गन्ता "जनानां" मनुष्याणां "ऋभुः" उरुभासमानः ‡ "धीरः" धीमान् ¶ "उशनाः" एतन्नामकः ऋषिः यः "सचित्" स एव § "काव्येन" स्तोत्रेण "विवेद" लभते। किमिति ?

---

* ऋ० वे० ७, ७, २१, २।

† "साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान्त्सम्प्रादुरुपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदाङ्गानि च। बिल्मं भिल्मं भासनमिति वा एतावन्तः समानकर्माणो धातवः"—इति निरु० नै० १, २०।

‡ 'पुर' एता जनानाम्। पुरतः अग्रतः एति सोमः अथवा पुरतः नेता-जनानां नेता। ऋभुर्विभुः'—इति वि०।

¶ 'धीर धैर्यसम्पन्नः'—इति वि०।

§ 'चित् शब्दः च शब्दस्यार्थे द्रष्टव्यः'—इति वि०। "चिदित्येषोऽनेककर्मा—आचार्यश्चिदिदं ब्रूयादिति पूजायाम्। ० ० ०। दधिचिदित्युपमार्थे। कुल्माषांश्चिदाहरेत्यवकुत्सिते। ० ० ०।"—इति निरु० नै० १, ४।

Digitized by Google

उच्यते। "आसां" "गोनां" गवां सम्बन्धि * "यत्" "अपीच्यम्" [अन्तर्हितनामैतत् †] अन्तर्हितं "नाम" नामक मुदकं पयोलक्षणम्। कोदृशम्? "गुह्यं" गोपनीयम्॥ २॥ १० ‡

१ २ १ र २
॥ श्रौशनम् ¶॥ प्राह्व। द्रवापरिकोशाम्। निषी२

२ १ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ १
दा। नृभाइःपुना। नो२अभि। वाजमर्षा। अश्वन

र र ० २ १र २ १ २ १ र
त्वावाजिनम्मा। जया२३न्ता:। अच्छाबर्हीइः। रशना।

२ २ ४ १ २ १
भा२३४३इः। ना२३या५न्ता६५६इ॥(१) स्वा। युधा:प

र २ २ १ २ १ २ १ र २ ३ ४
वतेदाइ। वई३न्दू:। अशास्तिषा। वृजना। रक्षमा

५ १ र र र र ० २ १ २र
णा:। पितादेवानाञ्जनिता। सुदा२३क्षा:। विष्टम्भो

१ २ १ २ २ ४
दाइ। वो३धरू। णा२३४३:। पा२३र्था५५इव्या६५६:॥(२)

---

* "आसां गोनां गवामादित्यरश्मीनां वा"—इति वि०। "गोः पादान्ते (७, १, ५७)"—इति नुडि रूपम्।

† "४, ४. ० *, *, अपीच्यमिति निर्णीतान्तर्हितनामानि"—इति निघ० ३, २५। "निर्णीतं कस्मान्निर्णिक्तं भवति"—इति यास्कक्षतं तद्व्याख्यानम् ३, १९। "अपीच्य मपगत मपचित मपिहित मन्तर्हितं वा"—इति निरु० नै० ४, २५।

‡ इदं माध्यन्दिनपवमानं तृतीयम्। "उक्तौमाध्यन्दिनः पवमानः"—इति वि०।

¶ "त्रिष्टुबौशनम्"—इति ख० पु०।

Digitized by Google

१ २ १ र २ २ १ २र १
आर्षा:। विप्रा:पुरएता। जना३नाम्। ऋभूर्द्धीरा:।
२ १ र २ १ ४ ५ १ र ७
उशना। काविये ना। सचिद्विवेदनिहितम्। यदा२३
२ १ २ १ २ २
साम्। अपाइचियाम्। गुह्मियम्। ना३४३। मा३
४
गोऽ५नाइ५६म् (३)॥ ४ *॥ [१]

२ १ २ १ र २ १ ४
॥ वैश्वज्योतिषाद्यम्॥ प्रतुद्रवा। परिको। शनिषी
५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ २ १
दा। नृभि:पुना। नो३अभि। वाजमर्षा। अश्वनत्वा।
२ १ २ ३ ४ ५ २ १र २ १ र
वा३जिनम्। मर्ज्जयन्ता:। अच्छावर्हायि:। रशना।
२ २ ४ २ १र २
भा३४३यि:। ना३या५न्ता६५६यि ॥(१) सुवायुधा:। प
१ र २ ३ ४ ५ २ १ २ १ र २ ३ ४ ५
वते। देवइन्दू:। अशस्तिहा। वृजना। रक्षमाणा:।
२ १र र २ १ २ १ ४ ५ २ १ र
पितादेवा। ना३ञ्जनि। तासुदक्षा:। विष्टम्भोदायि।
२ १ २ २ ४ २ १
वो३धरू। णा३४३:। पा३र्था५यिव्या६५६:॥(२) ऋषि
२ १ २ २ २ ४ ५ २ १र २ १ र
र्विप्रा:। पुरऐ। ताजनानाम्। ऋभुर्द्धीरा:। उशना।

० ऊ० गा० १प्र० १ख० ४गा०।

Digitized by Google

२ १४५　　२१　　२१　　२३४५
काविये३ना। सचिद्दिवे। दा३निहि। तंयदासाम्।

२१र　　२१　　२　　२४
अपीचियाम्। गुहियम्। ना३४३। मा३गो५ना३६५

६म् (३)॥७*॥ [२] १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य

तृतीयः† खण्डः।

अथ चतुर्थखण्डे,

प्रथम-सूक्ते—प्रथमा ॥‡

३ १ २　　३१२　　३१२
अभित्वाशूरनोनुमोदुग्धाइवधेनवः।

१ २　३१र　२र　३ २३१२　　३१
ईशानमस्यजगतःस्वर्दृशमीशानमिन्द्रतस्थुषः॥ १‡॥

हे "शूर" विक्रान्तेन्द्र! "त्वा" त्वाम् "अभि नोनुमः" वयं भृश मभिष्टुमः। तत्र दृष्टान्तः—"अदुग्धा इव धेनवः" अकृतदोहा गावः आदरेण वत्सान् प्रति हम्भारवं कुर्वन्ति तद्वत् वयं स्तुमः

---

* ऊ० गा० १९प्र० १पा० ७सा०।

† अत्र श्लोको न विद्यते। एवां खण्डपर्यायां यथाश्रुतएव पाठो व्यवहृयते।

‡ छ आ० ३, १, ५, १ (१ भा० ४०८ पृ०) = ऋ० वे० ५, ३, ११, २। ऋ० बृहती। ऋ० वसिष्ठः। दे० इन्द्रः। एषमेवाभोगतत्र। 'इदानीं षष्ठानि इन्द्रस्य जिज्ञोक्तानि, वार्हताण्येव मायनकानि'—इति वि०।

इत्यर्थः। कीदृशम्? "अस्य" "जगतः" जङ्गमस्य "ईशानम्" ईश्वरं "तस्थुषः" स्थावरस्य "ईशानं" "स्वर्दृशं" सर्वदृशं सर्वज्ञ मित्यर्थः॥१॥

अथ द्वितीया।

१र २र ३ १ २ ११ २र ३ १ ३ १र २र
नत्वावाꣳ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे॥२*॥११†

हे "मघवन्निन्द्र!" "दिव्यः" दिवि भवः "त्वावान्" त्वत्सदृशः "अन्यः" न जायते। "पार्थिवः" पृथिव्यां भवोऽपि त्वावान् "न जातः" जायते दिव्यः पार्थिवो वा त्वावान् न जातः न च "जनिष्यते" नोत्पत्स्यते लोकद्वयेऽपि त्रिष्वपि कालेषु‡ त्वादृशः कश्चिन्नास्ति त्वमेव समर्थो भवसीत्यर्थः। "अश्वायन्तः" अश्वानिच्छन्तः "वाजिनः" वाज मन्न मिच्छन्तः [इच्छाया मिन् प्रत्ययः] हविष्मन्तो वा "गव्यन्तः" गा इच्छन्तश्च वयं हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "हवामहे" आह्वयामः॥२॥११

---

* ऋ० वे० ५, ३, ११, ३। † 'रथन्तरं पृष्ठम्'—इति वि०।
‡ 'भूतभविष्ये छन्दसि वर्त्तमान मपि लभ्यते'—इति वि०।

Digitized by Google

२र १र २र १र २ १ २ १ र
॥ काण्वरथन्तरम् ॥ आभित्वाशूरनोनुमाः। अदुग्धा
२ १ २ १ र र ३
यायि। वा३धायिना३वाः। ई३शानमस्यजगतःसुवदृ। शा
५र २र२र ५ २ १ २
२३४मैषी। ई३शाना२३४मी। द्र३इ३याउवा२३। ए३।
२ १ २ र र १ २ १ २ १ २र १र
स्थुषधा ॥(१) यायिशानमिन्द्रतस्थुषाः। ई३शानमायि।
२ १ २ २ र र र र र ३ ५र
द्रा३इतस्थु३षाः। नत्वावा ऽअन्योदिवियोनपार्थिवा२३४ऐ
२१र ५ २ २ २ १
ही। नजातो२३४ना। जना३१उवा२३। ए३। ष्यत
२ र र १र २ १ २१र र २
च्चा ॥(२) नाजातोनजनिष्यतायि। नजातोना। जा३
१ २ २ र र र ३ ५र
नायिष्या३नायि। अश्वायन्तोमघवन्निन्द्रवाजिना२३४ऐ
२ १ ५ २ २ २
ही। गव्यन्ता२३४स्त्वा। हवा३१उवा२३। ए३। म
३ १
हयाः(३) ॥ १८ * ॥ [१]

२र १र २र १र २ १
॥ ककुप्तरेकाण्वरथन्तरम् ॥ आभित्वाशूरनोनुमाः।
२ १ र २ १ २ १ र र
अदुग्धायायि। वा३धायिना३वाः। ई३शानमस्यजगतः

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० १८सा०।

२ ५र २र१र ५ २ १
सुवर्दृशा२३४मैहो। ईशाना२३४मी। इन्द्र३स्थाउवा२३।

१ २ ३ २ २र र २ १२ २ २ १
ए३। स्थुषषा॥(१) आयिशानमिन्द्रस्तुस्थुषाः। नाश्त्वा

२ २ र र र ३ ५र २१र
वा३ऽन्यान्। योदिवियोनपार्थिवा२३४ऐहो। नजातो

५ २ २ २३२ र
२३४ना। जना३१उवा२३। ए३। ष्यतश्चा॥(२) ना

र १र २ १ २ १ २ २ १
जातोनजनिष्यतायि। आ३श्वायाऽन्ताः। मघवन्निन्द्र

र ३ ५र २१ ५ २
वाजिना२३४ऐही। गव्यन्ता२३४स्त्वा। हवा३१उवा२३।

१ २ ३ २
ए३। मरुषा (३)॥१*॥ [२]

१ र र र १ २
॥ वारवन्तीयम्॥ अभित्वाशाभोहोहायि। रानो

१ ५ २ र र१ ५ १ १र
नू२३४माः। अदुग्धाइवधेनावो२३४हायि। ईशानमस्य

२ ३र ४ र५ १ ३ ५ २ ३
जगतःसुवर्दृ३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उन्नुवा

५ २र १र २ १ ० २ २र ४र
२३४शाम्। ईशानम्। आयिन्द्रस्तुस्थू३४। औहो

५ १ ३ २र २ १ ३ ५
वा। इहा२३४हायि। औहोवा। इहा२३४हायि।

---

* ऊ० गा० २२प्र० १ख० १गा०।

१र २　　५र　५　१र र र र
औहो३१२३४। षाः। एहियाई३हा॥(१) ईशानमाऔ
१ २　　२　५　२ १　५
होहायि। द्रावुस्यू२३४षाः। नत्वावाᳲ२३४हायि।
१ र　र र २　१र ४र ५　१ २　५
अन्योदिवियोनपार्थी३४। औहोवा। इहा२३४हायि।
२　२　५　१ १र　१ ७　२　१र ४र ५
उज्जवा२३४वाः। नजातः। नाजनिष्या३४। औहोवा।
१ २　५　१र २　　५र
इहा२३४हायि। औहो३१२३४। तायि। एहियाई
५　२ र र र र १ २　२　५
हा॥(२) नजातोनाऔहोहायि। जानायिष्या२३४ता
२ १　५　१र　र २　१र
यि। अश्वायार२३४हा। तोमघवन्निन्द्रवाजा३४। औ
४र ५　१ २　५　२　२　५　२ १ २
होवा। इहा२३४हायि। उज्जवा२३४। नाः। गव्यन्तः।
१ ७र २　१र ४र ५　१ २　५　१र २
त्वाहवामा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३
५र　५
१२३४। हायि। एहियाई३हा (३)॥ १२ *॥ [३] ११

द्वितीय-तृचे प्रथमा।

१ २　३ १र　२र ३ १ ३ १ २ ३ १ २
कयानश्चित्रआभुवदूतीसदावृधःसखा।
२ ३ १ २　३ २
कयाशचिष्ठयावृता॥ १ †॥

---

* ज० गा० २२प्र० १ष० १२सा०।

† ऋ० चा०२,२,३,५ (१ भा० ३८४ पृ०) = ऋ० वे० ३, ६, २४, १। 'गायत्र'

"सदावृधः" सदा वर्द्धमानः "चित्रः" चायनीयः पूजनीयः "सखा" मित्रभूतः इन्द्रः "कया" "ऊती" ऊत्या तर्पणेन "नः" अस्मान् "आ भुवत्" आभिमुख्येन भवेत् ? "शचिष्ठया" प्रज्ञावत्तमया प्रज्ञासहितानुष्ठीयमानेन । "कयावृता ?"—केन वर्त्तनेन कर्म्मणा च अभिमुखो भवेत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ १ २
कस्त्वासत्योमदानाम्मंहिष्ठोमत्सदन्धसः ।
२ १ २ ३ २ ३ १ २
दृढाचिदारुजेवसु ॥ २ † ॥

"मंहिष्ठः" पूजनीयः "सत्यः" सत्यभूतः "मदानां" मादयितॄणां मध्ये "कः"‡ मदकरः ? "अन्धसः" सोमलक्षणस्यान्नस्य रसः¶ । "दृढाचित्" दृढ मपि "वसु" शत्रु-सम्बन्धि गवादिकं

साम । सर्वदेवत्यं वामदेव्यं वा ; यत्कवतीषु तेन प्राजापत्यं, कोहि प्रजापतिः । यदनिरुक्तासु तेन प्राजापत्यं, अनिरुक्तोहि प्रजापतिः ; यद् गायत्रीषु तेनाग्नेयं गायत्रीच्छन्दोह्यग्निः ; यत्पृष्ठेषु न्यदधुः तेनैन्द्रम् ;—एवं सर्वदेवत्यं वामदेव्यम्'—इति वि० एवमेवाम्नोत्तरत्र ।

† ऋ० वे० ३, ६, २४, २ ।

‡ 'कः प्रजापतिः—इति वि० ।

¶ 'अन्नस्य चरु-पुरोडाशादि-लक्षणस्य'—इति वि० ।

Digitized by Google

धनं "आरुजे" आ समन्तात् भङ्क्तु* हे इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "मत्सत्" मादयेत्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २उ १ ३ २ ३ १
अभीषूणःसखीनामविताजरितॄणाम्।
२ १ २ ३ १ २
शतम्भवास्यूतये॥ ३ †॥ १२ ‡

हे इन्द्र! "सखीनां" समानख्यातीनां "जरितॄणाम्" "अविता" रक्षिता त्वं "नः" अस्माकं "शतं" शत-सङ्ख्याकम् ऊतये रक्षायै ¶ "सु" सुष्ठु "अभि भवासि" अभिमुखो भव §। "शतम्भवास्यूतये"—"शतम्भवास्यूतिभिः"—इति पाठौ॥ ३॥१२

३ र ४ २ ४र
॥ महावामदेव्यम्॥ का ऽ५या। नश्चा३इत्रा३आभु
५ १ र२१र २ १ २ र २
वात्। ऊ। तीसदावृधःस। खा। औ३होहाइ।
१ २ ३ र २ १
कया२३शचाइ। ष्ठयौहो३। हुम्मा२। वा२र्त्तो३ऽ५

* 'रुजा दर्शने। निदिति पुरस्तः। रुजानि यानि वसूनि तान्येव रुजे, रुजो भङ्गे। भङ्क्त्वा, मा मे मम प्रयच्छ'—इति वि०।

† ऋ० वे० ३, ६, १४, ३। ‡ 'मेवावरुणं पृष्ठम्'—इति वि०।

¶ 'ऊतये चतुर्थ्येकवचनमिदं तृतीया-बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् ऊतिभिः सम बहुभिः पालनैरित्यर्थः'—इति वि०।

§ 'शतम्भवासि शतशब्दो बहुवाची। एतस्मादेव पदात् यत् बहुदेवत्य सुभगं पदं तेन वैश्वदेव मित्युक्तम्। शतम्भवासि छान्दसं दीर्घत्वम्—शतं भवसि'—इति वि०।

Digitized by Google

२ ३ र ४ २ ४ ५ १
हाइ ॥(१) काऽ५स्त्वा। सत्योश्माश्दानाम्। मा।
२र १ २ २ र २ १ २
हिष्ठोमात्सादन्ध। सा। औश्होहाइ। हढार३षिदा।
३ र २ १ १ २ २
रुजौहोइ। ऊम्मा२। वाऽ३सोऽ५हायि॥(२) पाऽ५
र ४ २ ४ ५ १ २र १ २र
भी। षुणाश:साश्खीनाम्। पा। विताजरायितॄ।
१ र २ १ २ २ र २
णाम्। औरश्होहायि। शतार३म्भवा। सियौहोइ।
१ १ २
ऊम्मा२। नाऽ२योऽ५हायि॥ ५ * ॥ [१]

२ र र २ ४र
॥ स्वारसौपर्णम्॥ कयानश्चिचपा। भूश्वात्। ऊ
३र ४र५ र १ २ ५ १ २ २
तीसदावृधा:। ऊम्। सा२३४खा। काया३उवा।
१ २ १ ५ ४ ५ २ र
शचि। ष्ठयो२३४वा। वा५र्त्तोहायि॥(१) कस्त्वास
र २ २ ४ र २ ४ ५र १ २
त्योमदा३नाम्। मंहिष्ठोमत्सदा। ऊम्। धा२३४
५ १ २ २ १र २ १ ४ ४
सा:। दाढी३उवा। चिदा। रुजो२३४वा। वा५सो
५ २ र २ ३ ४ ५र र
ईहायि॥(२) अभिषुणःसखीश्नाम्। अविताजरा।

---

* ऊ० गा० १प्र० १अ० ५सा०।

१ २ ५ १ २ २ १२ २ १
उम्। हु२३४वाम्। मानाइउवा। भवा। स्त्रियो२
५ ४ ५
३४वा। ताध्योहायि ॥ ८* ॥ [२] १२

अथ प्रमाथरूपे तृतीये सूक्ते—

प्रथमा।

१ २ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३२
तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः।
३ १ २ ३१२ ३२ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ १† ॥

नोधा नाम ऋषिरिन्द्रं स्तौति। हे ऋत्विग्यजमानाः! "दस्मं" दर्शनीयं "ऋतीषहम्" ऋतयो बाधकाः शत्रवः तेषा मभिभवितारं; पुनः कीदृशम्? "वसोः" वासयितुर्दुःखस्य विवासयितुर्निवारयितुः; यद्वा वसोः पार्श्वे निवसतः स्थितस्य तादृशस्यान्धसः सोम-लक्षणस्यान्नस्य पानेन "मन्दानं" मन्दमानं मोदमानं "वः" यष्टव्यत्वेन युष्मत्सम्बन्धिनं तं ईदृश मिन्द्रं "गीर्भिः" स्तुतिलक्षणाभिर्वाग्भिः "नवामहे" [नु स्तवने, शब्दे वा] अभिष्टुमः। कुत्रेति "स्वसरेषु"। [अत्र यास्कः—"स्वसराण्यहानि स्वयं सारीण्यपि वा स्वरादित्यो भवति स एतानि सारयतीति] (निरु० नै० ५, ४) सूर्य-नेतृकेषु दिवसेषु वयम् "अभिष्टुमः" अभितः

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ८गा०।

† ब्रा० श्रा० २, १, ५, ४ (१भा० ४७५ पृ०) ऋ० वे० ६, ६, २, १। नोधाः काक्षीवत आर्षम्। इन्द्रो देवता।

Digitized by Google

शब्दयाम: । तत्र दृष्टान्तः—"वत्सं न" यथा धेनवो नव-प्रसूतिका गावः स्वसरेषु सुष्ठु अस्यन्ते प्रेर्यन्ते गावोऽत्रेति स्वसराणि गो-ष्ठानि तेषु वत्स मभिलक्ष्य शब्दयन्ति तद्वत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३१२३१ २
द्युक्षᳬसुदानुन्तविषीभिनावृतङ्गिरिन्नपुरुभोजसम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ १ ३ १ २ ३ १२ ३१
क्षुमन्तंवाजाᳬशतिनᳬसहस्रिणंमक्षूगोमन्तमीमहे॥२*॥१३†

"द्युक्षं" दीप्तिमन्तं निवासस्थानम् अतिशयितदीप्ति मि-त्यर्थः । यद्वा, द्युक्षं दिवि द्युलोके क्षियन्तं निवसन्तं "सुदानु" शोभन-दानं "तविषीभिः" बलैः "आवृतम्" आच्छादितम्‡ । पुनः कीदृशम्? "पुरुभजसं" सोमादि-हविः-प्रदानेन बहुभिर्यजमानै र्भोजयितव्यम् । यद्वा, बहूनां पालयितारम् इन्द्रम्¶ "क्षुमन्तम्" [टु क्षु शब्दे] शब्दवन्तम् अनेन पुत्रादिकं लक्ष्यते; स्तोत्रादीनि कुर्वाणं "शतिनं सहस्रिणं" शत-सहस्र-सङ्ख्याक-धन-युक्तं "गोमन्तम्" गवादि-युक्तं "वाजम्" अन्नं "मक्षु" शीघ्रं "ईमहे" याचामहे । यद्वा, पूर्वार्द्धो वाज-विशेषणत्वेन योजनीयः— प्रदीप्तं शोभन-दान-योग्यं बलादियुक्तं बहुभिः पुत्रमित्रादिभि-र्भोक्तव्य-शब्दादि-युक्तम् अन्नम् इन्द्रं याचामहे इति ॥ २ ॥ १३

* ऋ० वे० ६, ६, २, २ । † अत्र गौषसं साम ।

‡ 'तविषीभिरावृतम् । तव शव इति बलनाम, बलवद्भिः बलावयवैरावृतम् । अथवा तविषीभिः स्तोतुमिच्छद्भिः मनुष्यजातिभिरावृतम्'—इति वि० ।

¶ 'गिरिं न पुरुभोजसम् । न शब्द उपरिष्टादुपचारत्वादुपमार्थीयः, गिरि-मिव बहुभोज्यम् । गिरौ पर्वते बहुभोजन-तृणकाष्ठान्युपजीवन्ति । अथवा गिरि-र्मेघः तं सर्वं जगदुपजीवति'—इति वि० ।

१ २ ५ ४ ५ २ ४ ५
॥ नौधसम् ॥ ता२३४म् । वोदस्मम्नृती । षाह्वाम् ।

२ १र १ २ २ १ २ १ २
वसोर्मन्दा । ना३माऽन्धा३सः । अ्रा२३भी । वात्सव ।

१ २ १ २ २ १ १ १ १
स्वस । रायि । पूर्वेना२३४वाः । आ्रा२३यिन्द्राम् । गा

२ १ ५ २ ५ १
यिर्भिर्न्नवो२३४वा । मा२३४द्वे ॥(१) आ्रा२३४यि । द्यु

५र ४ ५ र ४ ५ २ १ र २ १ २
क्षोर्भिर्न्नवा । माहायि । इन्द्रगीर्भायिः । ना३वामा३

२ १ २ १ र २ १ २ १
हायि । द्यू२३क्षाम् । सुदानुम् । तवि । षायि ।

२ ३ ५ १ २ १ २ १ ५
भायिरावा२३३र्त्ताम् । गा२३यिरीम् । नपुरुभो२३४वा ।

१ ५ १ ५ ४र ५
जा२३४साम् ॥(२) गा२३४यि । रिन्नपुरुभो । जासास् ।

२ १ २ १ २ २ १ २ १ र २
गिरिन्नपू । रु३भोजा३साम् । चू२३मा । तंवाजम् ।

१ २ १ १ ३ ५ १ २ १
शति । नाम् । साहस्रा२३४इणाम् । मा२३चू । गो

२ १ ५ ३ ५
मन्तमो२३४वा । मा२३४द्वे ॥ ६ * ॥ [१]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १र
॥ अभीवर्त्तम् ॥ तंवो३दा३स्माऽम्नृतीषहोवा । वा

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ६गा० ।

१ र   १ २   १ २
सोम्मिन्दा । नमाधा१सा२ः । आभिवत्सा३१२३४म् ।
३ ४५र २ १ २   १ २   ३
नस्वसरे । धुधायिना१वा२ः । इन्द्राग्ना१यिभी२ः । न
२ १ ३ १११११ ५ ४ १ ७ ५
वा३ । मा२३४५ । हा२३४५यि ॥ (१) इन्द्रा३ग्ना३यिभिं
५र ४ ५ १ २र १ २ १
र्वामहोवा । आयिन्द्रगौर्भिः । नवामा१हा२यि । यू
२ ३ ४५र २ १ २
थ२ःसुदा३१२३ । नुन्तविषी । भिरावा१न्ता२म् । गि
१ २ ७ २ १ १र११११
रायिन्ना१पूर । रुभो३ । जा२३४५ । सा२३४५म् ॥ (२)
५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १ २ १ २
गिरा३यिन्ना३पुरुभोजसोवा । गायिरिन्नपु । रुभोजा१
१ २ २ ४५ २ १
सा२म् । सूमन्तवा३१२३४ । जऽ्मतिनम् । सहा
२ १ २ १ २ १
स्रा१यिणा२म् । मघूगो१मार । तमा३यि । मा२३
३ ११११
४५ । हा२३४५यि ॥ १४ * ॥ [२]

५ र २ ४ ५ ४र ५ २ १
॥ जनित्राद्यम् ॥ तंवोदा३स्माऽम्हतीषहाम् । क्रुवे
१ र र २ १
न्तो२यि । वसोर्मन्दानमान्धा१सा२ः । अभिवत्समस्व

* ऋ० मा० ६म० २ष० १४सा० ।

२ १ २ ५ १ २ १ २
सरा२यि। षुधायिमा२३४वाः। इन्द्रा३ऽ२होयि। गी
२ १ २ १र २ ५र २ ५ ०
र्भोईयिर्वो। नवा। मा२हा२३४औहोवा॥(१) इन्द्रगा
४ ५ ४र ५ २ १ १ र २
३यिर्भिर्नवामहा२यि। ऊवेहो२यि। इन्द्रगोभिर्नवामा
१ र २ १ २
१हा२यि। द्युम्नऽस्तुदानुम्नविषा२यि। भिरावा२३४
५ १ २ १ २ १ २ १र
णाम्। गिरा३यिऽहोयि। नपू३हो। रुभो। जा२
२ ५र र ५ २ ४ ५ ४र ५ २ १
सा२३४औहोवा॥(२) गिरिम्ना३पुरुभोजसाम्। ऊवे
१ २ १ र
हो२यि। गिरिम्नपुरुभो१जासा२म्। द्युमन्तंवाजऽ
२ १ २ ५ १ २ १ र
शतिना२म्। सहावा२३४यिणाम्। महा३होयि। गो
२ १ २ १र २ ५र र २ १ ११
मा३हो। तमी। मा२हा२३४औहोवा। जनिवा२३
११
४५म्॥५*॥ [३]

१ र २ १ २र १ र
॥ घृतश्चुतीयाद्यम्॥ तंवोदस्ममृतीषहाम्। वसो
र २ १ २ १ र २ १र २
र्मन्दानमन्धा२३साः। अभिवत्सन्नस्वसरेषुधेना२३वाः।

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ५सा०।

१ २ १ २र २ ५र र ३
इन्द्रज्ञार३यिर्भा३यिः। ना२। बामा३४औहोवा। हा

१ १ १ १ १ २र १ २र १ र २ १र
२३४५यि ॥(१) इन्द्रगीर्भिर्न्नवामहायि। इन्द्रगीर्भिर्न्नवा

२ १ र र २ १र २
मा२३हायि। द्युक्षꣳसुदानुन्तविषीभिरावार३र्त्ताम्। गि

१ २ १ २र २ ५र र ३ १ १ १ १
रिन्ना२३पू३। हु२। भोजा२४औहोवा। सा२३४५म् ॥(२)

२ १ २ १र २ १ २ १र २ १
गिरिन्नपुरुभोजसाम्। गिरिन्नपुरुभोजा२३साम्। क्षु

र २ १ २ १र २
मन्तवाजꣳशतिनꣳसहस्रा२३यिणाम्। मक्षूगो२३मा३।

१ ३र २ ५र र ३ १ १ १ १
ता२म्। ईमा३४औहोवा। हा२३४५यि ॥ ८ * ॥

३ ४र २ ४ ५र २ १ ४ र
॥ जनित्रोत्तरम् ॥ तवोद्दस्ममृतो। षहा३म्। वसो

र १ र ७ ३
र्म्मा। होयि। होयि। दानामन्धामा२३४ः। अभि

४ ३ ४ ५र ३ २ ४ ५ १ २र ६
वत्सन्नस्वसरे। षुधा३यिनावाः। आयिन्द्रज्ञीर्भिर्न्नवौ३।

२ ३ ५र र २ ४ र ३ ४ ५र
हो३१यि। मा२हा२३४औहोवा ॥(१) इन्द्रज्ञीर्भिन्नवा।

२ २ ४ ५ १ २
महा३यि। इन्द्रज्ञायि। होयि। होयि। भिर्न्नावा

* ऊ० मा० १२प्र० १ख० ८सा० ।

२ ४ १र ४ ३ ४ ५र ३ २ ४ ५
१माद्या२३४यि । द्युक्ष७ं सुदानुन्तविषी । भिरा३वार्त्ताम् ।
१ २ ३ १ २ ५र र
गायिरिन्नपुरुभौ३ । द्दो३१यि । जा२सा२३४औद्दोवा ॥(२)
४ २ ४ ५ र ३ २ ४ ५ १
गिरिन्नपुरुभो । जसा३म् । गिरिन्ना । चोयि । द्दोयि ।
२ ४ २ ४ १र ४ ३ ४ ५ २ १
पुरुभो१जासा२३४म् । सुमन्तं वाज७ं भ्रतिनम् । सद्या३
४ ५ १ र १र ३ १ २
द्यायिणाम् । मातूगोमन्तमौ३ । द्दो३१यि । मा२द्या
५र र २ १ १ १ १ १
२३४औद्दोवा । जनी३च्चा२३४५म् (३) ॥ १० * ॥ [५]

५ ४ १ ४ ५र ४ ५ १ र
॥ सौभरम् ॥ तं वो३दा३स्मा३ऽम्रतीषद्दोवा । वसोर्म
र र १ ७ १ २
न्दानमन्धसोभिवत्सन्नस्वसा२रायिषुधा२३ । द्दोयि । ना
५ १ र ३ २ १ २
२३४वाः । इन्द्रङ्गीर्भिः । नवा३द्दा३यि । मा२द्दा२३४
५र र ५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १ र
औद्दोवा ॥(१) इन्द्रा३ङ्गा३यिभिर्नवामद्दोवा । इन्द्रङ्गी
र र र १ ७ १
र्भिर्नवामद्देद्युक्ष७ं सुदानुन्तवा२यिषायिभिरा२३ । द्दो ।
२ ५ १ ३ २ १ २
वा२३४र्त्ताम् । गिरिन्नपु । रुभो३द्दा३यि । जा२सा२

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० १०सा० ।

Digitized by Google

५र र १ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
३४औहोवा ॥(२) गिरा३विन्ना३पुरुभोजसोवा। गिरि

र र १ ० १
न्नपुरुभोजसंचुमन्तंवाजᳲशता२यिनाᳲसहा२३। हो।

२ ५ १ र र ६ १ १ २
हा२३४यिणाम्। मक्षूगोम। न्तमा३हा३यि। मा२हा

५र र २ १ १ १ १
२३४औहोवा। ज२३४५(३) ॥ ४ * ॥ [६]

५ र २ ४ ५र ४ ५
॥ भाष्कारणिधनं काण्वम्॥ तंवोदा३स्मऽतीषहा

१ र २ र १ २ १ २ १
म्। वासोमिन्द्रा। नमा२३न्धसाउ। वा३२। अभिवत्साम्।

२ ३ १ १ २ १र ५ १ २ १र
नस्वसरायि। धुधेना२३४वाः। आर३यिन्द्राम्। गीर्भि

२ १र ५ २ ४
र्न। वामा२३४५हाई५६यि ॥(१) इन्द्रङ्गा३यिर्भिर्न

५र ४ ५ १ १र १ २
वामहायि। आयिन्द्रङ्गीर्भिः। नवा२३महाउ। वा३२।

१ २ १ २ ३ २ १ २ १र ५
द्युक्षᳲसुदा। नुन्तविषायि। भिरावा२३४र्नाम्।

१ २ १ २ १र
गा२३यिरीम्। नपुरु। भोजा२३४५साई५६म् ॥(२)

१ २ ४ ५र ४ ५ १ २ १ २
गिरिन्ना३पुरुऽभोजसाम्। गायिरिन्नपु। रुभो२३जसा

* ज० गा० ११प्र० १ख० ४सा०।

१ २ १ २ ३ १ १ २ १
उ। वा३२। सुमन्तंवा। ज०ग्मतिनाम्। सहस्रा

५ १ २ १र २ १र
२३४यिणाम्। मा२३सू। गोमन्तम्। ईमा२३४५त्था

२ १ १ १ १
६५६यि। आ२३४५ष् (३) ॥ ८ * ॥ [७]

१ २ ५ ४ ५ र
॥ ककुबुत्तरनौधसम्॥ ता२३४म्। वोदस्मम्ऋती।

४ ५ २ ०र १ १ २ २ १
षाहाम्। वसोर्म्मन्दा। ना३मान्धा३सा:। आ२३

३ १ २ १ २ १ २ ३ ५ १
भी। वात्सन्न। स्वस। रायि। षूधेना२३४वा:। गा

२ १ २ १ ५ ३ ५
२३यिन्द्राम्। गायिर्भिर्न्नवो२३४वा। मा२३४हे ॥(१)

१ ५र ४ ५ र ४ ५ २ १ २
आ२३४यि। न्द्रक्षीर्भिर्न्नवा। माघायि। द्यूश्चा०क्ष

२ १ २ १ २ २ ५
३दा। नूर२३न्ता। वि। षायि। भायिरावा२३४र्त्ताम्।

१ २ १ २१ ५ ४ ५
गा२३यिरीम्। नपुरुभो२३४वा। जा२३४साम् ॥(२)

१ ५ ४र ५ २ १ २ २
गा२३४यि। रिव्रपुरुभो। जासाम्। चू३मान्ता३वा।

---

* क० मा० ११प्र० १च० ६सा०।

१ २ १ २ ३ ५ ५

जा२३९आ। ति। नाम्। साइया२३४यिणाम्। मा

२ १ २ १ ५ ४ ५

२३वू। गोमन्तमो२३४वा। मा२३४द्दे(३)॥ १७* ॥ [८]

२ १ २ ५र

॥ वाङ्निधनं कौञ्चम्॥ तंवोदास्मा३१२३४म्। ऋती।

३ २ २ १र २ ५ १ २ २

षहा३म्। वसोर्मन्दा३१२३४। नम। धसाइः। अ

१ २ ३ ४ ५र २ ३ २ २ १

भीवात्मा३१२३४म्। नखसरेषुधे। नवाइः। इन्द्राङ्गा

२ ३ २ १ २

यिर्भा३१२३यिः। नवापुमहाउ॥(१) इन्द्राङ्गायिर्भा३१

५र ३ २ २ १ र २

२३४यिः। नवा। महा३यि। इन्द्रङ्गीर्भा३१२३४यिः।

५र ३ २ २ १ र २ ३ ४ ५र

नवा। महा३यि। द्युक्षा९सूदा३१२३४। सुन्तविषी

र ३ २ २ १ २ ४

भिरा। वृता३म्। गिरायिन्नापू३१२३। रुभोपुजसा

२ १ २ ५र ३ २

उ॥(२) गिरायिन्नापू३१२३४। रुभो। जसा३म्।

२ १ २ ५र ३ २ २ १ २

गिरिन्नपू३१२३४। रुभो। जसा३म्। चुमान्तांवा

क० गा० २१प्र० १ख० १०गा०।

२ ४५ १२ २१ २
३१२३४। ज ऽ्मतिनऽ्सव। स्त्रिणाश्म्। मचूगोमा
४
३१२३। तमापुयिमवाउ ३॥ १४*॥ [९] १३

चतुर्थे प्रगाथे—प्रथमा॥

१ २ ३१२३ १२ ३१ २३१२
तरोभिर्वोविदद्वसुमिन्द्रऽ्सबाधऊतये।
३१र २र ३१२ ३१२३उ३ २३ १२
बृहद्गायन्तःसुतसोमेअध्वरेहुवेभरन्नकारिणम्॥ १†॥

हे ऋत्विजः! "वः" यूयं "तरोभिः" वेगैरश्वैरुपेतं वेगै रेव वा "विददसु" वेदयद्वसु धनावेदकम् "इन्द्रं" "सबाधः" बाधासहिताः "ऊतये" रक्षणाय "बृहद्गायन्तः" बृहत्संज्ञकं साम गायन्तः सन्तः परिचरतेति शेषः। कुत्र? इति, तदुच्यते—"सुतसोमे" अभिषुत-सोमके "अध्वरे" यज्ञे सोम-यागे; अहञ्च स्तोता युष्मदर्थं "हुवे" आह्वयामि। कमिव? "भरं न" भरं भर्त्तारं कुटुम्बपोषकं "कारिणं" स्वहित-करण-शीलं यथा स्वहित-करणायाह्वयन्ति पुत्रादयस्तद्वत्, तथा भूत मिन्द्रं हुवेइति॥ १॥

अथ द्वितीया।

२उ ३१र २र३१ ३२उ ३ १२ ३१र २र
नयन्दुध्रावरन्तेनस्थिरामुरोमदेषुशिप्रमन्धसः।
१३१२ ३१२ ३१र २र ३१२३र २र
यआदृत्याशशमानायसुन्वतेदाताजरित्रउक्थ्यम्॥२‡॥१४¶

* छ० आ० २२प्र० १ख० १४दा०।

† ब० आ० ३, १, ५, ५ (१भा० ४९९पृ०)=ऋ० वे० ६, ४, ४७, १।

‡ ऋ० वे० ६, ४, ४७, २।

¶ "अत्र कालेयं साम"—इति वि०।

Digitized by Google

"सुशिप्रं" शोभन-हनुकं शोभन-नासिकं वा ["शिप्रे हनूनासिके वा (६,१७)—इति यास्कः] "यम्" इन्द्रं "दुध्राः" दुर्द्धराः असुरादयः "न वरन्ते" सङ्ग्रामे न वारयन्ति, तथा "स्थिराः" देवाः "न" वरन्ते, किञ्च "मुरः" मरणशीला मनुष्याः न वरन्ते, "यः" च इन्द्रः "अन्धसः" सोमलक्षणस्यान्नस्य "मदे" मदाय सोमपानजनिताय* "आदृत्य"†, "शशमानाय" शंसमानाय‡ "सुन्वते" अभिषवं कुर्वते "जरित्रे" स्तोत्रे च¶ "दाता" भवति। किम्? "उक्थ्यं" स्तुत्यं धनम्§, तं हुवे इति पूर्वेण सम्बन्धः॥

"मदेषुशिप्रं"-"मदेसुशिप्रम्"—इति षकार-सकारौ पाठौ॥ २॥ १४

---

* मूले "मदेषुशिप्रम्"—इति संहितापाठः, तत्र सायणेन 'मदे' इत्येकं पदं छित्वा सुशिप्रमिति द्वितीयं स्वीकृतमत एव 'मदे' मदाय, 'सुशिप्रं' शोभनहनुकमित्यादि व्याख्यानम्। विवरणकारस्तु "मदेषु" इति छित्वा शिप्रमिति द्वितीयं चिच्छेद, तथाहि—'मदेषु मदनीयेषु सोमेषु सन्निधानभूतेषु, सन्निधान-सप्तम्येषा, अथवा मदेषु पुरतोऽवस्थितेषु'—इति वि०। पदकारकृत-पदपाठोऽपि विवरणकार-मत-पोषकः।

† संहितापाठस्तु "आदृत्या"—इति, तत्र "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः। आदृत्य आदरं कृत्वेत्यर्थः।

‡, ¶ वैदिकी स्तुतिस्तु द्विधा भवति, शस्त्रैर्मन्त्रैः स्तोत्रैर्मन्त्रैश्च, तथा चाच अप्रगीतमन्त्रात्मक-शस्त्रैः स्तुतिं कुर्वाणः शंसमान उच्यते, तस्मै; किञ्च प्रगीतमन्त्रात्मक-स्तोत्रैः स्तुतिकारी स्तोता, तस्मै चेति विवेकः।

§ 'उक्थो नाम क्रतुः, तमुक्थ्यम्; अथवा उक्थ्यानि सामानि तैर्यः सम्भजते स उक्थ्यः, तमुक्थ्य-सामवन्तं क्रतुमित्यर्थः'—इति वि०।

Digitized by Google

५ र १ ४र ५ ४ ५ २ १
॥ महाकालेयम् ॥ तरोभा३इर्वोविदद्वसुम् । इन्द्रा २

२ १ २ ३र २ १ २ ३ र २ १ ३
सबा । धजतया२३इ । बृहद्गायाऽ । ता२३४ः । सुत

४र ५र २ २ १ ३ २ २ ५ ४
सोमेब । ह्वा३राइ । ऊवाइभरी । वा३४३ओ२३४वा । न

५ र २ ४ ५ ४र ५ २ १ २
का५पूरिणाम् ॥ (१) ऊवेभा३रन्नकारिणाम् । ऊवाइभ

१ २ ३र २ १ १ २ २ १ र
राम् । नकारिणा२३म् । नयन्दुध्रा३ः । वा२३४ । रन्ते

३ ४ ५र २ २ १ ३ २ २ ५
नखिराः । मू३राः । मदाइषुग्री । वा३४३ओ२३४वा ।

४ ५ र २ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १
प्रमा५पून्धसाः ॥(२) मदेषू३ग्राइप्रमन्धसाः । मदाइषुग्रा

२ ३ २ १ २ ३र २ १ र ३र
इ । प्रमन्धसा२३ः । यश्राहत्या३ । ग्रा२३४ । ग्रमाना

४ २ २ १र ३ २ २ ५ ४
यत्तु । न्वा३ताइ । दाताजरी । वा३४३ओ२३४वा । च

४
ज५पूक्थियाम् । हौ५पूइ । डा(३) ॥ ७ * ॥ [१]

२ र र र १ २
॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ तरोभिर्वाओहाइ । वा

---

* ऊ० १गा० १प्र० १ख० ७सा०

Digitized by Google

३ ५ २ र र १ ५ १
यिदद्वा२३४द्धम्। इन्द्र७सबाधऊतायो२३४हायि। बृ

र र र २ ३र ४र १ २ ५
हद्गायन्तःसुतसोमेअध्वा३४। औहोवा। इहा२३४हा

२ २ ५ २ १र १ १ ७र २ ३र
यि। उऊवा२३४रायि। ऊवेभ। राम्नकारा३४। औ

४र ५ १ २ ५ ३र र ५र
होवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। णाम्। एहि

५ २र र र १ २ २ ५
याइहा॥(१) ऊवेभराऔहोहायि। नाकारा२३४यिणाम्।

२र २ १ १ र र र २
ऊवेभरम्नकारायिणो२३४हायि। नयन्दुध्नावरन्तेनस्थिरामू

३र ४र ५ १ २ ५ २ ३ ५
३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उऊवा२३४राः।

२ १र २ १ ७ २ ३र ४र ५ १ २ ५
मदेषु। ग्रायिप्रमन्धा३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

७र २ ५र ५ २र र र १
औहो३१२३४। साः। एहियाइहा॥(२) मदेषुग्राऔहो

२ २ ५ २र १ ५
हायि। प्रामन्धा२३४साः। मदेषुग्रिप्रमन्धासो२३४हायि।

१र र र र २ ३र ४र ५ १ ३र ५ २
यन्नाहत्याभ्रभ्रमानायसुन्वा३४औहोवा। इहा३हायि। उ

३ ५ २र १र २ १ ७ २ ३र ४र
ऊवा२३४तायि। दाताज। रायिचउक्था३४। औहो

५   १ २   ५   ३र २   ५र
वा । इहा२३४हायि । औहो३१२३४ । याम् । एहि

५   ४
याइहा । होऽ५ई । डा(३) ॥ १५ * ॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य चतुर्थखण्डः † ॥ ४ ॥

पञ्चमखण्डे ‡,

प्रथम तृचे—प्रथमा ।

१   २   ३ १ २   ३ १ २   ३ १ १ २
स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया ।

१   २   ३ १   २   ३ १
इन्द्रायपातवेसुतः ॥ १ ¶ ॥

हे "सोम !" "इन्द्राय" "पातवे" पातु "सुतः" अभिषुतः त्वं "स्वादिष्ठया" स्वादुतमया "मदिष्ठया" अतिशयेन मादयित्र्या "धारया" "पवस्व" क्षर ॥ १ ॥

---

* ऊ॰ गा० १०प्र० १ख० १५सा॰ ।

† 'इदानीं मार्गवः पवमानः । तत्र बहूनि छन्दांसि—गायत्रीककुबुष्णिगनुष्टुब्जगतीति छन्दांसि । पुष्कलोऽग्निः संस्थितः स्तुतः प्रस्तावस्तः अभीमव इत्यादीनि । सोमः स्तोत्रदेवता । सामदेवता नोच्यते विस्तरभयात्'—इति वि॰ ।

‡ 'उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि॰ ।

¶ छ० आ० ५, १, ४, २ (२भा॰ ७पृ॰)=ऋ॰ वे॰ ७, ७, १६, १ ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ १ २ ३१२ २ १२ ३ २ १२

रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते।

१ २ ३ २ ३ १ २

द्रोणेसधस्थमासदत्॥ २ * ॥

"रक्षोहाः" रक्षसां हन्ता "विश्वचर्षणिः" विश्वस्य द्रष्टा सोमः "अयोहते" अयसा हिरण्मयेन हते [तथा च श्रूयते— "हिरण्यपाणिरभिषुणोति"--इति] "द्रोणे" द्रोणकलशेन अधिषवण-फलकाभ्यां वा† "सधस्थं" सहस्थानं "योनिम्" अभिषवस्थानम् "अभ्यासदत्" आभिमुख्येनासीददिति॥

"अयोहते"—"अयोहत", "द्रोणे"—"द्रुणा"—इति च पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ १ २ ३१ २ ३ १२

वरिवोधातमोभुवोमꣳहिष्ठोवृत्रहन्तमः।

२ ३ १ २ ३ १ २

पर्षिराधोमघोनाम्॥ ३ ‡॥ १५

---

* ऋ० वे० ७, ७, १९, २।

† सोमाभिषवे प्रथमं तावत् चतुष्कोणमुख × रत्याकारं फलकद्वयं स्थाप्यते, तदुपरि कृष्णमृगचर्म विस्तीर्य तत्र सोमोऽभिषूयते। ये चर्मिकृत्य सूयते सोम ग्रावभिः, ते अधिषवणे, अधिषवणे च ते फलके, ताभ्याम्; अभिषवणात्मक-फलकाभ्या मित्यर्थः। अथवोनकणबेवं तृतीया।

‡ ऋ० वे० ७, ७, १९, ३।

हे सोम! त्वं "वरिवोधातमः" अतिशयेन धनानां दाता* "भुवः" भव † ['वेदः', 'वरिवः'—इति धननामसु (निघ० २, १०,४-५) पाठात्] "मंहिष्ठः" दातृतमश्च ‡ भव [सर्वदातृत्व मत्रोच्यते इत्यपुनरुक्तिः] "वृत्रहन्तमः" अतिशयेन शत्रूणां हन्ता च भव। किञ्च "मघोनां" धनवतां शत्रूणां ¶ "राधः" धनञ्च "पर्षि" अस्मभ्यम् प्रयच्छ § ॥

"भुवः"-"भव'—इति पाठो ॥ ३ ॥ १५

॥ सप्तहितम् ॥ स्वादिष्ठयाम। दा२इष्ठया। पवा२। स्वार३सो। मधा२राया। पार३इन्द्रा। या२पा। तवार३। हाउवा३। सु२३४ता: ॥(१) रक्षोहा विश्व। चा२र्षणाई:। अभा२इ। यो२३नीम्। अयो२हाताइ। द्रो२३णे। सा२धा। स्थमा२३।

* 'वरिवः वरिष्ठं धनं। धातमः धेट् पाने, पानतमः। एकः पानभूतः, एक पानतरः, अन्यः पानतमः। अथवा धाता दाता, स्थापिता वा'—इति वि०।

† 'भुवः भूर्लोकस्य'—इति वि०।

‡ 'मंहिष्ठः मंहनीयतमः'—इति वि०।

¶ 'मघोनां धनवतां धनमानानाम्'—इति वि०।

§ 'पर्षि परिषिञ्चते'—इति वि०।

हाउवा३। सा २ ३ ४ दात् ॥(२) वरिवोधात। मो
२ भुवाः। मᳪहा२३। ष्टोर३वा। नदा२न्तामाः।
पार३र्षो। रा२धो। मा२३। हाउवा३। घो२३४
नाम् (३) ॥ ८ * ॥ [१]

॥ सुज्ञकवैष्टम्भम् ॥ स्वादाऽ५यिष्ठ। या३मदिष्ठया।
पावस्वसो। मधारा१या२३। होवा३हायि। इन्द्राया
१पा२३। होवा३हा। तवे। सू२ता२३४औहोवा ॥(१)
रक्षोऽ५हा। वा३यिस्वचर्षणायिः। आभियोनिम्। अ
योहा१ता२३यि। होवा३हायि। द्रोणेसा१धा२३।
होवा३हा। स्थमा। सा२दा२३४औहोवा ॥(२) वराऽ
५यिवः। धा३तमोभुवाः। माᳪहिष्ठोवृ। नहान्ता१
मा२३ः। होवा३हायि। पर्षायिरा१धा२३ः। होवा३

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ८गा०।

१ १ २ ५र र २ ५
च्छायि। मघोर। नार२३४औहोवा। दो२३४आः (३)

॥ २० * ॥ [२]

१र १ २ १ २१ २
॥ जराबोधीयम्॥ स्वादिष्ठयोवा। मादिष्ठया। प

१ २ र १ २ ४ ५र
वास्वार२३सो। मधाराया। इन्द्राया१पार२३ताऽ। वे।

३ २ १ र र १ २ १ २१
सुतो३४५ई। डा ॥(१) रक्षोहावोवा। स्वाचर्षणायिः।

२१ २ र १ र २ ४
अभायियोर२३नीम्। अयोहातायि। द्रोणेसा१धार२३स्था

५र ३ १ २ र १ २
म्। आ। सदो३४५ई। डा ॥(२) वरिवोधोवा।

१ र २ १ २ १ २ १
तामोभुवाः। मꣳहायिष्ठोर२३वा। वृत्रहन्तामाः। पर्षा

२ ५ ३र २
यिरा१धार२३ः। म। घोनो३४५ई। डा(३)॥ १०†॥ [३]

१र र रर १ २ १
॥ हाविष्कृतम्॥ स्वादिष्ठयामदायिहाउष्ठाया। पव

१ र २ १ २
स्वसो। मधारा२३या। इन्द्रा२यो१। या२३पा। त

१र २ ५र र २र र र र १
वे। सुर्ता२३४औहोवा ॥(१) रक्षोहाविश्वचायिहाउर्षा

---

* ऊ० गा० ८प्र० २ख० १०सा०। † ऊ० गा० १०प्र० २ख० १०सा०।

१ १ २ २ १ १२
यायिः । अभियोनायिम् । अयोहार२३तायि । द्रोणे२
१ १२ ३ ११२२
होश्यि । सा२३धा । स्थमा । सा२दा२३४औहोवा ॥(२)
१ २ २ २ २ १ १ १ २
वरिवोधातमोहाउभूवाः । मर्ंहिष्ठोवा । वहन्ता२३
२ १ २ १
मा२३माः । पर्षा२हाेश्यि । रा२३धाः । मघोर२ ।
३ ५२ २ २ १२११११
ना२३४औहोवा । हविष्कृते२३४५ (३) ॥ ७ * ॥ [४]
१२ २ २ १ १ २ १२
॥ दक्षिणानिधनं मौक्षम् ॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठया । औ
१२ १ १ १ २ १२ २
होवा । इहश्रुधायि । पवस्वा२३सो । मधारया । इन्द्रा
२ १ २ ३ १२
या२३पा३ । होवा३हा । नवेसू२३४५ुता३६५६ः ॥(१)
१ २ १२ १ १ २ १२ १२ १ २ १
रक्षोहाविश्वचर्षणिः । औहोवा । इहश्रुधायि । अभि
२ १२ २ २ २ १ २
योर२३नीम् । अयोहतायि । द्रोणेसा२३धा३ । होवा
२ १२ २ २ १२ १२
३हा । स्थमासा२३४५ुदा३६५६त् ॥(२) वरिवोधातमो
१२ १२ १ २ १ २
भुवः । औहोवा । इहश्रुधायि । मर्ंहिष्ठोर२३वा ।

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० ७सा० ।

१ २ १ १ २ १
चक्षन्तमाः। पर्षिंरा२३धाइः। हौवा३हायि। मघो

१ १ १ १ १ १ १
२३४५मा६५६म्। इत्थाइया२३४५ (३) ॥ ४ * ॥ [५]

१२ २ २ १ २ २ २
॥ गौषूक्तम्॥ स्वादिष्ठयामदौ। हौहोवाहायि।

१ २ १ १ १
ष्ठया। पवस्वसोमधौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। रा

१ २ २ १ १ १
या२। इन्द्रायपातवौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। स्त

१ ३ ५२ २ २ १२११ १ १
ना २ ३:। हो२वा २ ३ ४ यौहोवा। अग्निराऊता २ ३

१ १
४ ५:(२)॥ ८ † ॥ [६]

२ २ १२ १ २ १
॥ बृहदुपोत्तरम्॥ रक्षोहावौहो२। इया। स्वचर्षा

२ १२ १ २ २ १
णा२यिः। अभियोनौहो२। इया। अयोहाता२यि।

२२ २ १ १ १२ २ १
द्रोणेसधौहो२। इया। स्थमासा२३दा३४३त्। ओ२

३४५ई। डा(२)॥ १२ ‡ ॥ [७]

---

* ऊ० गा० २प्र० २ख० ४गा०। † ऊ० गा० १३प्र० १ख० ८गा०।

‡ ऊ० गा० १२प्र० २ख० ११गा०।

Digitized by Google

५र २ ४र ५ १ १ २ १ १
॥ काक्षीवन्तम् ॥ स्वादिष्ठा३यामदिष्ठया । पवास्व

१र २ १ ऽ २ ३र २ १ २
सो । मधारया३ । औ३४ । हाहोयि । इन्द्रायार३पा ।

३र २ ३र १ ५ ४ ५ ५ र
तवौहोयि । औहोर३४वा । सूपुतोऽहायि ॥(१) रक्षो

२ ४ ५ २ १ ३र १ २ र १ ऽ
हा३विश्वचर्षणायिः । अभायियोनिम् । अयोहता३यि ।

२ ३र २ १र ऽ २ ३र २
औ३४ । हाहोयि । द्रोणेसार३धा । स्थमौहोयि ।

३र १ ५ ४ ५ ५ २ ४र ५र
औहोर३४वा । सापुदोऽहायि ॥(२) वरिवो३धातमो

२ १ ३र१ २ १ ऽ २
भुवाः । मꣳहायिष्ठोवृ । त्रहन्तमा३ः । औ३४ ।

३र २ १ २ ३र २ ३र १
हाहोयि । पर्षायिरार३धाः । मऔहोयि । औहोर३

५ ४ ५
४वा । वोपुनोऽहायि(३) ॥ १५* ॥ [८]

५र २ ४ऽ ५ ४ ५ १
॥ भासम ॥ स्वादि । ष्ठा३यामा । दूया । दायि

२ १ २ र ऽ ३र ३र २ १
ष्ठा१या२ । पावस्वसो । म । धौ३हो । वाहायि । र

१ १ २ ५र र २२ २ २
या२ । इन्द्रा२३ । या२पार३४औहोवा । तवेसुता१ ॥(१)

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १५सा० ।

५ २ ४ऽ ५ऽ ४ ५ १ २
रक्षः। च्छा३वायि। श्वा। ई्या। चार्षा१णा२यिः।
१ २र ५ २र ३र १ १
आभियोनिम्। अ। यौ३चो। वाचायि। हता२
१र १ ३ ५र र १ र २ १
यि। द्रोणे२३। सा२धा२३४औचोवा। स्थमासदा
५ २ ४ऽ ५ऽ ४ ५ १ १
१त्॥(२) वरि। वो३धा। ता। ई्या। मोमू१वा२ः।
१ २र ५ १र २र १ १ १
मा७ंहिष्ठोवृ। त्र। चौ३हा। वाचा। तमा२ः। पर्षा
१ ३ ५र र १ २र १
२३यि। रा२धा२३४औहोवा। मघोना१म्(३)॥ १६*॥[९]

२र र १ १ १ र र
॥ ऐअवम्॥ स्वादिष्ठयाम,दिष्ठाया। पवस्वसोमधा
१ १र ५ ३ १ ४
रया। इन्द्राया२३४पा। तवा३यिद्ध५ता६५६ः॥(१)
१ र र १ १ १ र र २र
रक्षोहाविश्वचर्षाणायिः। अभियोनिमयोहतायि। द्रो
१र ५ १ २ ४ १ र र
णेसा२३४धा। स्थमा३सा५दा६५६त्॥(२) वरिवोधात
र १ २ १ र २ १ ५
मोभुवाः। म७ंहिष्ठोवृत्रहन्तमाः। पर्षिरा२३४धाः।
१ ४
मा३घोपुना६५६म्(३)॥ १८ †॥ [१०]

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १६सा०। † ऊ० गा० १९प्र० २ख० १८सा०।

१र २र ४ ५ र २
॥ आश्वसूक्तम् ॥ आओ३ोवा३ायि । स्वादिष्ठया । म
१ २ १र २र२ २ र १ र २र
दायि । ष्ठया । ऐहीयैहो१ । पावस्वसोमधारया । ऐ
२र २ १ १ १र
हीयैहो१ । आ२यि । यायिन्द्रा२यापा२ । तवे । सू
२ ५र र १ १ र २ २ १ १ १ १
२ता२३४औहोवा । सुक्रआऊता२३४५: (१) ॥ २० * ॥ [११]

१ १ र र र
॥ सत्रासाहीयम् ॥ वरा३४यि । वोधातमोभुव: ।
५ ५ १ र १ १
ओ६वा । मꣳहिष्ठोवृत्रहन्ता२मा: । पा२र्षायि । रा
२ १ ऽ २र २र २ १ ५ ५
२३धा: । मघौर्वा । वाहा१४३यि । घो२३४नो६हा
यि(२) ॥ ६ † ॥ [१२]

३र र २ १ ४र र
॥ स्वारकौत्सम् ‡॥ स्वादीष्ठा२३ । यामदिष्ठयाई
५ १ २ र १र १र १ २ र १र २
धा । पवस्वसोमधारया । पावस्वसो । मधारा२३या ।
१ २ २ १ २ २ १र २ ३ र
यायिन्द्रा३हा । यापा३हा । तवेसू२३ता२४३: ॥(१) रक्षो
२र १ ४ ५ २ १ र २ १ र २ र १
हौहा२३ । विश्वचर्षणिरोया । अभियोनिमयोहते । आ

---

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० २०साम । † ऊ० गा० ११प्र० १ख० ६सा० ।

‡ "ऐडकौत्सम्"—इति ख० पु० ।

Digitized by Google

भियोनिम्। अयोहा२३तायि। द्रोणे३हायि। साधा३हा। स्थमासा२३दा३४३त्॥(२) वरीहोवो२३। धातमोभुवर्ईया। मꣳहिष्ठोवृत्रहन्तमः। माꣳहिष्ठोवृत्रहन्ता२३माः। पार्षा३यिहायि। राधो३हायि। मघो२३ना३४३म्। ओ२३४५ई। डा (३)॥ २० *॥[१३]१५

अथ प्रगाथरूपे द्वितीय-सूक्ते—

प्रथमा।

पवस्वमधुमत्तमइन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमदः।
महिद्युक्षतमोमदः॥ १ †॥

हे "सोम!" "मधुमत्तमः" अतिशयेन माधुर्योपेतस्त्वम् "इन्द्राय" इन्द्रार्थं "मदः" मदकरः सन् "पवस्व" क्षर। कीदृशः? "क्रतुवित्तमः" अत्यन्तं प्रज्ञायाः कर्मणो वा लम्भकः, "महि" मंहनीयः "द्युक्षतमः" अत्यन्तं दीप्तः "मदः" मदहेतुः॥ १॥

* ऊ० गा० ११प्र०१ख० १० सा०।

† छ० आ० ६, २, ४, १ (२भा० ११२पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १७, १।

अथ द्वितीया।

१२ ३१ २३१२३१२ २३२ ३ १२
यस्यतेपीत्वावृषभोवृषायतेस्यपीत्वास्वर्विदः।

२३१२ ३क२र ३ २र २ २ ३१२
ससुप्रकेतोअभ्यक्रमीदिषोच्छावाजन्नैतशः॥ २ *॥ १६

"वृषभः" कामानां वर्षकः इन्द्रः, हे सोम! "यस्य" यं "ते" त्वां "पीत्वा" "वृषायते" वृषभ इवाचरति, किञ्च "स्वर्विदः" सर्वं जानतः "अस्य" तव † "पीत्वा" पाने सति "सु प्रकेतः" शोभन-प्रज्ञः ‡ "सः" इन्द्रः वृषभः शत्रूणाम् अन्नानि "अभ्यक्रमीत्" अभिक्रामति। तत्र दृष्टान्तः—"न" "एतशः" [—इत्यश्वनाम (निघ० १, १४, १०)] यथा अश्वः "वाजं" सङ्ग्रामम् अभि गच्छति तद्वत्॥

"स्वर्विदः"—"स्वर्दृशः"—इति पाठौ ¶॥ २ ॥ १६

१ १ २ ४५ २ १ ५ १ १र २
॥ सफम्॥ पवस्वा३मधु। मत्ता२३४माः। इन्द्राय

१ ३१ २ ४ २ ५ २१
सोमा२। क्रतुवाइत्ता३मो३। मा३२३४दाः। महाइ।

२ ४ २ ५ २ ११ ४५
द्युत्ताता३मो३। मा३४५दोईहाइ॥(१) महिद्यू३त्त।

---

* ऋ० वे० ७, ५, १७, २। † 'अस्य सोमस्य'—इति वि०।

‡ 'सुप्रकेतः सुप्रज्ञः'—इति वि०।

¶ "पीता"—इति "शर्वतः"—इति, "स्वर्दृशः"—इति च ऋग्वेदीयपाठाः।

Digitized by Google

२ ३ ५ २ १ २र १ १ २ ४
मोमार२३४दाः । यस्यतेपाइत्वा२ । वृषभोवा३र्षा३ ।
२ ५ २ १ र २ ४ २
या३२३४ताइ । अस्या । पीत्वाव३वा३ः । वा३४५इदो
५ १ १ २ ४र५ २ ३ ५ २ १ १
६हाइ ॥(२) अस्यपी३त्वास्व । ववा२३४इदाः । सवुप्र
१ १ २ ४ २ ५
काइतो२ । अभियाक्रा३मी३त । आ३२३४इषाः ।
२ १ र २ ४ २ ५
सच्छा । वाजावा३ए३ । ता३४५ओ६हाइ(३) ॥ ८* ॥[१]

१ २ १र १
॥ अङ्कुसाम ॥ पवस्वमा । ए२ । धुमा । तमाः ।
र र २ १र २ १ १
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमार३दाः । माची२ह्यु वा२३ ।
२ १ ५ ४ ५
तमो२३४वा । मा५दो६हायि (१)॥ ६† ॥ [२]

१ २ १र १
॥ अङ्कु ॥ पवस्वमा । ए२ । धुमा । तमाः ।
र र २ १र २ १ १
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमार२३दाः । माची२ह्यु वा२३ ।
२ १ ५ ४ ५ १ २ १र
तमो२३४वा । मा५दो६हायि ॥(१) मच्छिद्यु वा । ए२ ।
१ र र र र २ १र २ १
तमाः । मदो । यस्यतेपीत्वावृषभोवृषायार३तायि । आ

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ८सा० । † ऊ० गा० २प्र० १ख० ६सा० ।

१ २ १ ५ ४ ५
स्था२पायित्वा२३ । सुवो२३४वा । वा५यिदो६हायि ॥(२)
१ १ १२ १२ १ २ २
अस्यपीत्वा । ए२ । सुवाः । विदाः । सत्तुप्रकेतोअ
२ १२ २ १ १ २ १
भियक्रमीदा२३यिषाः । पाच्छा२वाजा२३म् । नथो२३४
५ ४ ५
वा । ता५ओ६हायि(३) ॥ ८* ॥ [३]

२ २ ५
॥ सत्रासाहीयम् ॥ पवा३४ । स्वमधुमत्तमः । ओ
५ १ २ २ २ १ १
६वा । इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमा२दाः । मा२हायि ।
२ १ ऽ १२ १२ २ १ ५
द्यु२३म्ना । तमौ३हो । वाहा३४३यि । मा२३४दो६
२ २ २ ५ ५
हायि ॥(१) मह्रा३४यि । द्युक्ततमोमदः । ओ६वा ।
१ २२ २ २ २ १ १
यस्यतेपीत्वावृषभोवृषाया२तायि । आ२स्या । पा२३यि
२ १ ऽ १२ १२ २ १ ५ ५
त्वा । सुवौ३हो । वाहा३४३यि । वा२३४यिदो६हा
३ २ २२ ५ ५ १
यि ॥(२) अस्या३४ । पीत्वास्वर्विदः । ओ६वा । सत्तु
२ २ २ १ १ २
प्रकेतोअभियक्रमीदा२यिषा । आ२च्छा । वा२३जाम् ।

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ८सा० ।

१ ५ २र   ३र २   १ ५ २र   ३र २
नश्चौ३हो । वा२३जाम् । नश्चौ३हो । वाहा३४३यि ।
१ ५ ५
ता२३४औ६हायि(३) ॥ ७ * ॥ [४]

॥ इडानान्संक्रारम् ॥ २र र १ २
औहोयिइवा३होयि । पव
४ २ १ ५   २ १   ४ १र १ ५
स्वमा३धू३मत्तमः । इन्द्रायसोमक्रतुवा३यित्ता३मोमदः ।
१र र   १   २ १   २   ५   २ १र १
औहोयिइवा३होयि । महायिद्यु२३४त्ता । तमोमदः ।
१ १ ४ ५ ४
इडा२३भा३ । एहीडा । हो५ई । डा ॥ ५ † ॥ [५]

५ २ ४ ५ ४ ५   २ १ २ १
॥ कालेयम् ‡ ॥ पवस्वा३मधुमत्तमाः । इन्द्रायसो ।
२ २ १ ५ २ १
मा२३ । क्रतू३ । वा२३४यित् । तमः । मा३दाः ।
१ २ १   २   ५   ४   ५
महायिद्युत्वौ । वा३४३औ३४वा । तमो५मदाः ॥(१) म
२ ४ ५ ४र ५ २ १र १ २
हियु३त्तमोमदाः । यस्यतेपायि । त्वा२३ । वृषा३ ।
१ ५र २ २ १ ३र २
भो२३४ । वृषा । या३तायि । अस्यापीत्वौ । वा३४३

---

* ऊ० गा० ९प्र० १ख० ७ सा० ।   † ऊ० गा० १०प्र० ५सा० ।
‡ "महाकालेयम्"—इति ख० पु० ।

Digitized by Google

२ ५ ४ ५ २ ४र ५ ४ ५
वो३४वा । सुवापुर्विदाः ॥(२) अस्यपी३त्वासुवर्विदाः ।
२ १ २ १ २ १ ५र
सत्प्रकायि । तो२३ । अभा३यि । आ२३४ । क्रमीत् ।
२ २ १ ३र २ २ ५ ४
आ३यिषाः । अच्छावाजो । वा३४३वो३४वा । नए५त
४
ग्राः । हो५इ डा(३) ॥ ५ * ॥ [६]

२ ५ २ २
॥ च्यावनम् ॥ पवा२३४ । स्वम । धुमा२३४त्तमा
५ २ २ ५ २ र १
६ः । हाउ । आयिन्द्रा̐या२३४सो । मक्रतुवितमोमा
५ १ २ २ १ २
दो२३४हायि । महायिद्यु३त्ता३ । तामा२३हा३४३यि ।
१ ५ ५
मा२३४दो६हायि(१) ॥ ४ † ॥ [७]

१ २ १
॥ प्रतीचीनेडक्काग्नीतम् ॥ पवस्वमधु । मा२त्तमाः ।
र २ र १ ७ १र २
आयिन्द्रायसोमक्रतुवित् । नमोमदा२३४ः । हाहोयि ।
१ २ २ १ ४ ५ १ २
महिद्यु त्ताता३माः । मदा । औ३होवा ॥(१) महिद्युत्तत ।
१ २र र र १ ७
मो२मदाः । यास्यतेपीत्वावृषभः । वृषायता२३४यि ।

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० ५गा० । † ऊ० गा० १६प्र० १ख० ४गा० ।

२र २　　१ र १ १ १ २ ४ ५
हाहोयि । श्रस्यपीत्वाह्व३वाः । विदा । औ३होवा ॥(२)

२ १ २र १र २　　१　　१र र
श्रस्यपीत्वास्तु । वा२र्विदाः । सासुप्रकोतोषभिय । क्र

१ ७　　२र २　　१ र र　　२ २
मायिद्रिषा२३४ः । हाहोयि । अच्छावाजान्नाः३ए । त

१ २ ४ ५　　४ ४
था । औ३होवा । ई३डा (३) ॥ १८ * ॥ [८]

१ २ ५ २
॥ धुरासाकमश्वम् ॥ पवस्वमा३ । हौ३हो३१ । धुम

२ ५ २　　र २　　५ २
त्तमा३ः । हौ३हो३१यि । इन्द्रायसो३ । हौ३हो३१ ।

र २　　५ २　　१ २
मक्रतुवित्तमोमदा३ः । हौ३हो३१यि । महिद्युक्षा३ ।

५ २　　र २　　५ २
हौ ३ हो ३ १ । तमोमदा ३ः । हौ३हो३१२३ ४५ ई ।

डा(३) ॥ ८ † ॥ [९] १६

तृचात्मके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा ।

२ ३१ २ ३ २ ३१ २र २ ३१
इन्द्रमच्छसुताइमेवृषणंयन्तुहरयः ।

३ १२ ३ २३१ २ ३ १ २
श्रुष्टेजातासइन्दवःस्वर्विदः ॥ १ ‡ ॥

---

* ऊ० गा० १३प्र० २ख० १८गा० ।　　† ऊ० गा० १४प्र० १ख० ८गा० ।
‡ छ० आ० ६. २, ३, १ (२भा०२०१पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, ९, १ ।

Digitized by Google

"श्रुष्टे" [श्रुष्टीति क्षिप्रनाम (निरु० ६, १२)] क्षिप्रं "जातासः" जाताः "इन्दवः" पात्रेषु चरन्तः "स्वर्विदः" सर्वज्ञाः "हरयः" हरितवर्णाः "सुताः" अभिषुताः "इमे" सोमाः "वृषणं" कामानां वेत्तारम् "इन्द्रम्" "अच्छ यन्तु" अभिगच्छन्तु ॥

"श्रुष्टे"-"श्रुष्टि"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ १   २र   ३ १   २र   ३ २
अयम्भरायसानसिरिन्द्रायपवतेसुतः।
२ ३ १ २   ३ १ २ ३ २
सोमोजैत्रस्यचेततियथाविदे ॥ २ * ॥

"भराय" सङ्ग्रामाय "सानसिः" भजनीयः† "सुतः" अभिषुतः "अयं" "सोमः" "इन्द्रार्थं" "पवते" क्षरति ग्रहादिषु क्षरति। ततः सोमः "जैत्रस्य" ["क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (१, २, २७५वा०)"—इति कर्मणः सम्प्रदान-सञ्ज्ञा, चतुर्थ्यर्थे षष्ठी (२, ३, ३६)] जयशील मिन्द्रं "चेतति" जानाति। "यथा" इन्द्रः "विदे" लोकैर्ज्ञायते तथा जानाति ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ५, ६, २।

† 'सानसिः सादयिता'—इति वि०।

अथ तृतीया।

१ २उ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णाति सानसिम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
वज्रञ्च वृषणम्भरत्समप्सुजित्॥ २ *॥ १७

"अस्येत्" अस्य सोमस्यैव "मदेषु" सञ्जातेषु† "सानसिं" सर्वैः सम्भजनीयं‡ "ग्राभं" ग्रहीतव्यं धनुः "गृभ्णाति" गृह्णाति ["हृग्रहोर्भश्छन्दसि"—इति भत्वम्] किञ्च "अप्सु-जित्" उदकार्थं वृत्रस्य जेता¶। यद्वा, 'आप इत्यन्तरिक्षनाम (निघ०१,३,८) अन्तरिक्षे अहिनामकस्य जेता "इन्द्रः" "वृषणं" वर्षितारं "वज्रं च" स्वकीय मायुधं "सम्भरत्" सम्बिभर्तु:§ [विभक्तेरडागमः॥

"गृभ्णाति"—"गृह्णीत"—इति पाठौ॥ २॥ १७

१ १ २ ४ ५ २ ३ ५
॥ पौष्कलम्॥ इन्द्रमाउच्छत। तोई २ ३ ४ माइ।
२ १ २ १ २ ३ ५ २ १ र ७ ह
वृषाणंया। वृत्रारा२३४याः। सुष्टाइजाता। सई२

* ऋ० वे० ७,५,८,२।

† 'मदेषु निमित्तभूतेषु'—इति वि०।

‡ 'सानसिं सावनस्वभावम्'—इति वि०।

¶ § विवरणकारस्तु यथाश्रुतं 'समप्सुजित्'—इत्येव पदं व्याख्यातवान्, न तु समिति भरदित्याख्यातेन अप्सुजिदिति पृथगिति। तथाहि—'समप्सुजित् वज्रा मेषु जेता'—इति।

२ १ २ १ १ १ १ २
न्दा २ ३ ४ ५ वा ई ५ ई: । सुवर्विदा २ ३ ४ ५: ॥(१) अ
१ २ ४र ५ २ २ ५ २ १र २ १ २
यम्भा३राय। साना २ ३ ४ साइ: । इन्द्रायपा। वाता
२ ५ २र १ र ० २
इह २ ३ ४ ताः। सोमोजै। त्रा। स्यचा२इता २ ३ ४ ५
२र १२ १ १ १ १ २ १र २ ४र ५ २
ताई५६इ। यथाविदे२३४५॥(२) अस्येदी३न्द्रोम। दा
२ ५ २र १ २ १ २ २ ५
इषू२३४वा। ग्राभङ्क्भणा। ताइसाना२३४साइम्।
२ १ ० २ २ १ २ १ १
वज्राच्चवा। षणा२भ्मा२३४पूराई५६त्। समप्सुजी२३
१ १
४५त्(३) ॥ १० * ॥ [१]

२ २ १ २ १
॥ सुम्रानम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमायि। वृषणं
१ २ र १ १ २
या२। तुच्छरयाः। अृष्टेजाता२। सइ। दा२वा२
५र र १ २ १ १ १ १
३४औहोवा। सुवर्विदए३उपा२३४५ (१) ॥ ७ † ॥ [२]

१ २ १ २ १र र
॥ रोहितकुलीयाद्यम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमे।
२ १र २ १ २ १ २
वृषणंयन्तुच्छरयःअृष्टेजा२३ता। सा२३ई। दावःसुवा३१

* ऊ० गा० १प्र० १अ० १०गा०। † ऊ० गा० १प्र० १अ० ७गा०।

५ १ २ १ र
उवा२३। वी२३४ट्ः॥(१) अराम्भरा। यस्तानसिः।
र र २र १र २ १ २ १
इन्द्रायपवतेसुतःसोमोजा२३यित्वा। स्या२३चे। ताति
२ ५ १ २र १ २
यथा३१उवा२३। वी२३४दे॥(२) अस्येदिन्द्राः। मदे
र र र र २१ २ १ २
ष्वा। ग्राभङ्गृभ्णतिसानसिंवज्रम्वा२३वा। धा२३णाम्।
१ २ ५
भा२त्समा३१उवा२३। ए२३४जीत्(३)॥ १७ ॥ [३]
२ र १ २ १
॥ सुम्नानम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमायि। वृषणां
१ २ र १ १
या२। तुवरयाः। अुष्टेजाता२। सइ। दा२वा२३
५र र १ २ २ र १
४औहोवा। सुवर्विदए३॥(१) अयम्भरा। यस्तानसा
२ र १ र १ २र र १
यिः। इन्द्रायापा२। वतेसुताः। सोमोजायित्वा२।
१र २ ५र र १ र २ २ र
स्यचे। ता२ता२३४औहोवा। यथाविदए३॥(२) अस्ये
र १ २र १ २ १
दिन्द्राः। मदेषुवा। ग्राभङ्गाभ्णा२। तिसानसायि

* ऋ॰ मा॰ ६म॰ १ष॰ १७मा॰।

१ १ १ १ १र २
म् । वज्रम्बा२ । षणाम् । भा२रा२३४औहोवा ।
१ १ १११
समप्सुजिदे३उपा२३४५ (३) ॥ ८ * ॥ [४]

१ ० १ २ १ २
॥ मुध्यम ॥ इन्द्रमच्छा२व । ताइमोवा । वृषणं
१ १ २ २ १ २ २र १र १ १ २ १
या । तुहरयाः । अष्टेजातासइन्दवःसु । वा२३ः । वि
२ १र १ २ १
दाउवा । अधिया२ ॥(१) अयम्भरा२य । सानसोवा ।
२ १ २ १ १ २र २ १ २ २र १र २ २ १
इन्द्रायपा । वतेसुताः । सोमोजैवस्यचेततिय । था२३ ।
२ १र १ २ २ १ २
विदाउवा । अधिया२ ॥(२) अस्येदिन्द्रो२म । देषुवोवा ।
१र १ २ १ २ २र २ १ २ १ २ १
ग्राभङ्गृभ्णा । निसानसायिम् । वज्रञ्चवृषणम्भरत्सम् ।
२ १र १ २
था२३ । प्सुजाउवा । अधिया२ । ए२३हियाइ४३ ।
१
औ२३४५ई । डा (३) ॥ २० † ॥ [५]

१ २ १ २ १र
॥ ऐडमायास्यम् ॥ आइन्द्राम् । आच्छा । सुता

* ऊ० गा० ६प्र० २ष० ८गा० । † ऊ० गा० ६प्र० १ष० २० गा० ।

२ ११ २ १र
इमायि। वार्षणांयाऽ२१। तुञ्जयाः। अ्रूष्टाऽ२१यि। जा
१ २ २१ २
ता। साइन्दवाऽ२१ः। सुवर्वा२३यिदा२३४३:(१)॥ १६ † ॥[६]

२ १र
॥ औपगवाद्यम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमायि। वृष
१ र १र २ १
णां२३या। तुञ्जयःश्रुष्टेजाता। सइन्दा२३वाः। सुव
२ २ १र र
र्वा२३यिदाः॥(१) अयम्भरा। यसानसायिः। इन्द्राया
२ र र र १र र २ १र
२३पा। वतेसतःसोमोजैत्रा। स्यचेता२३तायि। यथा
२ र १ र र
वा२३यिदायि॥(२) अस्येदिन्द्राः। मदेष्ववा। ग्राभङ्गृ
२ र १ २
२३भ्णा। तिसानसिंवज्रम्बवा। र्षणम्भा२३रात्। स
१ २ र १ २ १ ५र र
मप्सु२३जीत्। ऐ। हियारयि। हिया३४औहोवा।
१ ११ ११११
ए३। उपा२३१२३४५(३)॥ १ *॥[७]

२ २ २ २
॥ दैवोदासम्॥ इन्द्राऽ२१म्। अच्छाऽ२१२३४। सु
५र २ २ २२ २२ ५
ताः। आ२३यिमायि। वृषाऽ२१। णांयाऽ२१२३४। तुञ्ज।

* ऋ० मं० १०म० १अ० १६वा०।   † ऋ० मं० १०म० २अ० १वा०।

२ २ २ २ ३र २ ५ २
राश्याः। अ्रुष्टा३१यि। जाता३१२३४। सह्। दा३

२ २ २ २ २ १ ५ २ २
वाः। सुवा३१। विदा३ः। ओ२३४वा॥(१) अया३१

२ २ ५र २ २ २ २
म्। भरा३१२३४। यसा। ना३सायिः। इन्द्रा३१।

२ २ ५र २ २ ३र २ ३र २
यपा३१२३४। वने। ऋ३ताः। सोमो३१। जैत्रा३१

४ ५र २ २ २ २ २ २ १
२३४। स्यचे। ना३तायि। यथा३१। विदा३। ओ

५ २ २ २ २ ५र २ २
२३४वा॥(२) अस्ये३१त्। इन्द्रो३१२३४। मदे। षू३वा।

३र २ २ ५र २ २
आभा३१म्। गृभ्णा३१२३४। तिसा। ना३सायिम्।

२ २ २ २ ५ २ २ २ २
वज्रा३१म्। चवा३१२३४। षणम्। भा३रात्। समा

२ २ १ ५ २ ५
३१। सजी३त्। ओ२३४वा। ऊ२३४पा(३)॥१०*॥[८]

२ र २र
॥ विश्वोविश्वीयम्॥ इन्द्रमच्छ३म्। सु३ताइमा

१ २ २ १ २ १
यि। वा३र्षणा३या। तुहर। यःशू२३ष्टायि। ऊम्मा

२ २ १ ५ १ २ २
यि। जा३ता३। सा२३४इ्वायि। ओ। ऊर्वायि।

---

* ऊ० गा० १२प्र० १अ० १०गा०।

५ १ २ २ १
दा२३४वाः । ऊम्मायि । सू३वा३ः । वा२३४यिदाः ।
५र ५ २ रर २र
एहियाइ्हा ॥(१) अयम्भराङ्गम् । या३सानसायिः । आ
१ २ २ १र २ १
३यिन्द्रायाइपा । वतेसु । तःसो२३माः । ऊम्मायि ।
२ २ १ र५ १ २२ ३
जा३यिवा३ । स्या२३४चेद्दायि । ओ । ऊवायि । ता
१ २ २ १
२३४तायि । ऊम्मायि । या३था३ । वा२३४यिदायि ।
५र ५ २र रर २र १२
एहियाइ्हा ॥(२) अस्येदिन्द्रोऊम्मा३देषुवा । ग्रा३भाङ्गा३
२ १र २ १ २
भ्णा । तिसान । सिंवा२३ग्राम् । ऊम्मायि । चा३
२ १ ५ १ ३२ ३
वा३ । पा२३४णुहायि । ओ । ऊवायि । भा२३४
५ १ २ २ १ ५र
रात् । ऊम्मायि । सा३मा३ । पू२३४जीत् । एहिया
५
ईद्दा । हो५ई । डा(३) ॥ १ * ॥ [९]

२ ३र ४र ५
॥ आस्वयक्तम् ॥ औ३औहोवाहायि । इन्द्रमच्छा ।
२१ र २र१३र२ १ १
सुताः । इमे । ऐहोयैहो१ । वार्षणंयन्तु हरयःअ्रुष्टा

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० १सा० ।

र २र २ ३र२ १
यिजाता । ऐहीयैहौ१ । आ२यि । सा३आ२यिन्दावा

१ ३ ५र र ११ र १ २
२: । सुवः । वा२यिदा२३४औहोवा । ऋक्थाऊता
१११
२३४५: (१) ॥ १० * ॥ [१०]

२ १ २ १ र२१
॥ जराबोधीयम् ॥ इन्द्रमच्छोवा । सुताइमायि ।
२१ २ र १र २
वृषाणां२३या । तुविरयः अ्ःष्टेजाता । सचायिन्दा१वा२३:
४५ ५ २ २ २ १ २ १
सू । वः । विदो३४५ई । डा ॥(१) अयम्भरोवा । या
र२१ २१ २ र र र१र
मानसायिः । इन्द्राया२३पा । वतेसुतःसोमोजैवा । स्य
२ ४५ ५र ३ १ २
चायिता१ता२३यिया । था । विदो३४५ई । डा ॥(२) अ
र १ २ १ र२१ २र १ २ र
स्येदिन्द्रोवा । मादेषुवा । ग्राभाङ्गा२३४भ्णा । तिसान
१ २ ४ ५ ३ २
सिंवज्रच्चवा । षणाभ्मा१रा२३त्माम् । अ । पुजो३४५
ई । डा(३) ॥ ११ † ॥ [११]

५ १ २ १र ४
॥ आखारम् ॥ इन्द्रम् । अच्छा३४ । औहोऽ५सु

* ऊ० गा० १३प्र० १ख० १०गा० । † ऊ० गा० १४प्र० १ख० ११गा० ।

र ४　　१　　२ १　　२　　२ २　　२र
ताइमायि । वृषणं यन्तु हरा२३या३४ः । अुष्टा३४यिजा
२　　१　　२ ४ ५　　३ १ १ १ १　　५
ता । सइन्दवाः । सू३ववि । दा२३४५ः ॥(१) अयम् ।
३ २　　३र ४　　र ४　　१ र　　२ १र　　२
भरा३४ । औहोऽयसानसायिः । इन्द्रायपवतेह्व२३ता
३र २　　३र२　　र १　　२　४र५　　३
३४ः । सोमो३४जैत्रा । स्यचेततायि । या३थावि । दा
१ १ १ १　　५ र　　३ र　　३र ४　　र ४
२३४५यि ॥(२) अस्येत् । इन्द्रो३४ । औहोऽमदेषुवा ।
१र　　र २ १र　　२　　३ २　　३ २
आभङ्गृभ्णातिसाना२३सा३४यिम् । वज्रा३४ञ्चवा । षण
१　　४　४ ५　　३ १ १ १ १
भरात् । सा३मप्सु । जौ२३४५त्(३) ॥ १७ * ॥[१२]१७

अथ चतुर्थसूक्ते—प्रथमा ॥

३ १ २　३ १ २　३ १ २　३ १ २
पुरोजितीवोअन्धसःसुतायमादयित्नवे ।
२ ३ १ २　　३ १ २　　३क २र
अपश्वानंश्नथिष्टनसखायोदीर्घजिह्वम् ॥ १ † ॥

हे "सखायः" सखिभूताः समानख्याना वा हे स्तोतारः ! "वः" यूयं "पुरोजितीः" [पूर्वसवर्णदीर्घः (७, १, ३८)] पुरः-

* ऊ० गा० १४प्र० १अ० १७गा० ।

† ऋ० भा० ६, २, १, १ (२भा० १५१ पृ०)—ऋ० वे० ७, ५, १, १ ।

Digitized by Google

श्वित-जयस्य "अन्धसः" अदनीयस्य सोमस्य स्वभूताय "सुताय" अभिषुताय "मादयित्नवे" अत्यन्तं मदकराय रसाय "दीर्घजिह्व्यः" दीर्घा जिह्वा यस्य सः ["दीर्घजिह्वी च छन्दसि (४, १, ५९)"—इति ङीषन्तत्वेन निपातितः] तादृशं श्वानम् "अप श्नथिष्टन" अपश्नथत अपबाध, यथा श्वा राक्षसा वा सुतं सोमं न लिहन्ति तथा कुरुतेत्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
योधारयापावकयापरिप्रस्यन्दतेसुतः।
२ ३ १ ३ २र
इन्दुरश्वोनकृत्व्यः ॥ २ * ॥

"सुतः" अभिषुतः "कृत्व्यः" [कृत्वीति कर्मनाम (निघ॰२, १, २०)] कर्मणि साधुर्यः † इन्दुः सोमः "पावकया" पापानां शोधयित्र्या "धारया" "परि प्रस्यन्दते" परितः चरति। कथमिव ? "अश्वोन" यथा अश्वो वेगेन प्रगच्छति तद्वत् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
तन्दुरोषमभीनरःसोमंविश्वाच्याधिया।
३ १ २ ३ १ २
यज्ञायसन्त्वद्रयः ॥ ३ ‡ ॥ १८

* ऋ॰ वे॰ ७, ५, ६, २। † 'कृत्व्यः कृतिमान् वेगवानित्यर्थः'—इति वि॰।

‡ ऋ॰ वे॰ ७, ४, १, ३।

Digitized by Google

"नरः" कर्मनेतार ऋत्विजः "दुरेष"* [रोषतेर्हिंसार्थस्य (भ्वा० प०) रेफलोपे दीर्घाभावे, घोषतेर्दोहार्थस्य (भ्वा० प०) वा षलि रूपमिति, सन्देहादनवग्रहः] "तन्दुः" बधं दुहंह वा सोमम् "अभि" लक्ष्य "विश्वाच्या" सर्वान् कामानञ्चित्रया, कामान् प्रापयित्र्या† "धिया" बुद्ध्या "यज्ञाय" यज्ञार्थम् "अद्रयः सन्तु" अदारणयुक्ताः‡ भवन्तु॥

"यज्ञायसन्त्वद्रयः"-"यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः"—इति पाठौ॥३॥१८

॥ ग्रावाश्वम्॥ पुरो३१। जौ३तो। वोअ। धा३सः। एह्यिया। ह्व। तायमादा। यि। त्नवा२इ। एह्यिया२। अपस्वानाऽ२आ३थो३। ष्टा२३४ना। ऐ‌ह्वा२इ। एह्यिया२। सखायोदाइ‌र्घा३जी३। क्षा३४५यो६ह्वाइ॥(१)
सखा३१। यो३दी। घजि। क्षा३यम्। एह्यिया। यो। धारयापा। व। कया२। एह्यिया२। परिप्र

---

* 'दुरोषम् अरोषमित्यर्थः'—इति वि०।
† 'विश्वाच्या विश्वगामिन्या'—इति वि०।
‡ 'अद्रयः मेघाः वर्षस्वभावाः, अथवा अद्रयः अभिषवग्रावाणः'—इति वि०।

२ ४ ५ १र १र
ष्यान्दा३ता३इ । ष्व१३४ताः । ऐह्वा२इ । एहिया२ ।
१ २ ४ २ ५ ३ २
इन्दुरश्वोना३का३ । त्वा३४५योर्इहाइ ॥(२) इन्दू३१ः ।
२ ४ ५ २ ४ ५ १ र
आ३श्वो । नक्रु । त्वा३यः । एहिया । ताम् । दुरो
१र १ १र र १ २ ४
षमा । भी । नरा२ः । एहिया२ । सोमंविश्वाची३या
५ २र १र र १ २
३ । धा२३४या । ऐह्वा२इ । एहिया२ । यज्ञायसान्त
४ २ ५
३वा३ । द्रा३४५योर्इहाइ(३) ॥ ११ * ॥ [१]

१ र र १ १र
॥ आन्धीगवम् ॥ पुरोजितीवो१न्धासाः । सुताय ।
र २ १ १ र र २ ३ १
मादा२३या । ऊम्मा२१ऽ२ । तवेऽपश्वानं१श्नथिष्टना२
१११ १ २ २ १ १ १
३४५ । साखा३उवा । यो२दो । धार३जो । ह्रियाम् ।
४ ५ १ र र र २ १र र
चौर३होवा ॥(१) सखायोदीर्घजाऽ१यिह्वायाम् । योधा
र २ १ १ र २ १ २र २ २
र । यापा२३वा । ऊम्मा२१ऽ२ । कयापरिप्रस्यन्दतेसुता१ः ।
२ २ १ १ २ १ २
आइन्दा३उवा । आ२श्वो । ना२३का । त्विया । औ

* ऊ० गा० १प्र० १ध० ११खा० ।

Digitized by Google

४ ५ २ ३ २ १ ३
३चोवा ॥(२) इन्दुरश्वोनकाऽ१त्वीया:। तन्दुरो। षमा
२ १ ३ २१३ १२ २ २
२३भी। ऊम्मा२ऽ१२। नरःसोमंविश्वाचियाधियाऽ१।
१ २ १ २ १ २ ४ ५
याज्ञा२उवा। वा२स। त्व२३वा। इया। औ३होवा।
४
होऽ५इ। डा (३) ॥ १२ † ॥ [२]

॥ नानन्दम् ॥ ४ १र ४ ५र र पुरोजितीवोम्र। ३ २ धसा३:। १ सू२३४।
र ५ र ४ ५ ३ ४ १र ४ ५ ३
तायमादयि। त्वावायि। अपश्वान७अथि। ष्टनो२३
५ ४ १र ४ ५ ३ ५ १ २
४वायि। अपश्वान७अथि। ष्टनो२३४वायि। साखा
१ २ १ ५ ४ ५ ३ ४र ५र र
योदी। घजो२३४वा। क्का५योई६वायि ॥(१) सखायोदी
३ २ १ र ५ र ४ ५
र्घजि। क्रियाश्म्। यो२३४। धारयापाव। काया।
३ ४ ३ ४ ५ र ३ ५ ४ ३ ४ ५र ३
परिप्रस्यन्दते। सुतो२३४हायि। परिप्रस्यन्दते। सुतो
५ १ २१ २ १ ५ ४
२ ३ ४ वायि। आयिन्दूराश्वा:। नको२३४वा। त्वा

† ऊ० गा० १प्र० १ख० १२गा०।

५ ३ ४ ३ ४र ५ ३ २ १
५योर्६हायि ॥(२) इन्दुरश्वोनक्त। त्वियाः। तार२३४म्।

र ५ र ४ ५ ३र ४३ ४र ५ र ३ ५
दुरोषमभी। नाराः। सोमंविश्वाचिया। धियोर२३४हा

४र ३र ४ ५र ३ ५ १ २ १ २
यि। सोम विश्वाचिया। धियोर२३४हायि। याज्ञायास।

१ ५ ४
तुवोर२३४वा। द्रा५योर्६हायि(३) ॥ १८ * ॥ [३]

५ ३ २ ४र ५
॥ गौरीवितम् † ॥ पुरः। जिता३यि। वोग्रन्धसाः।

१ र र १ र २ ४
सुमायमादयित्नवा२३यि। आपश्वामा३१२३म्। अथा

१ र र २ ४ ५ ४
५यिष्टना। साखायोदा३१२३यि। घजोवा। क्रा५यो

५ ५ र ३र २ ४ ५ १र र
र्६हायि ॥(१) सखा। योदा३यि। घजिक्रियाम्। योधा

र १ २ ४
रयापावकया२३। पारिप्रस्वा३१२३। दता५यिसुनाः।

१ २ ४ ५ ४ ५
आयिन्दुरश्वा३१२३ः। नक्तोवा। त्वा५योर्६हायि ॥(२)

३ २ ४ ५ १ र र
इन्दुः। अश्वो३। नक्तत्वियाः। तन्दुरोषमभीनरा२३ः।

* ऊ० गा० २प्र० १अ० १८गा०। † 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

सोम विश्वा३१२३। चियाऽ५धिया। याज्ञायसा३१२३।
तुवोवा। ह्वा५योई३दायि(३)॥ १२ *॥ [४]

॥ कार्त्तयशम् ॥ पुरोजाद्दाउ। जा२३४यिती। वो
आऔ३होइ। धासाः। सुताऔ३होइ। यामाई।
हाउवा। दयिनवे२। उपा। अपस्वान२स्वथा१यिष्टा
इना। सखाऔ३होइ। योदाई। हाउवा। धजि
क्रियम्। उपा२३४५॥(१) सखाहाद्दाउ। यो२३४दी।
धजाऔ३होइ। क्षायाम। योधाऔ३होइ। रायाई।
हाउवा। पावकया२। उपा। परिप्रस्यन्दता१यिद्धइ
ताः। इन्दूरौ३होइयि। आस्वाईः। हाउवा। नक्त
त्वियः। उपा२३४५॥(२) इन्दुर्हाद्दाउ। आ२३४स्वाः।

* ऊ॰ गा॰ ४प्र॰ १ख॰ १२गा॰।

नक्काऔ३होइ। त्वावा:। तन्दूऔहोइ। रोषा६म्। हाउवा। अभीनरा२:। उपा। सोमंविश्वाचियाऽधा३या। यज्ञाऔ३होइ। यासा६। हाउवा। तुवद्रय:। उपा२३४५ (३) ॥ १४ * ॥ [५]

॥ तृतीयं चैत्रम्॥ पुरोजिता। हायि। वोअन्ध सा६ए। सुता२यमा२। दया३४५यि। ना२३४वे। अपश्वानञ्श्नथिष्टना२३४५। सखायो२३दी। घजिह्वा२३या३४३म्॥(१) सखायोदा। हो। घजिह्निया६मे। योधा२रया२। पावा३४५। का२३४या। परिप्रस्यन्द तेसुताऽ:। इन्दुरा२३श्वा:। नक्तत्वा२३या३४३॥(२) इन्दुरश्वा:। हो। नक्रत्विया६ए। तान्दू२रोषा२म।

* ऋ० मा० ४प्र० १ख० १४सा०।

२ १   ३   ५   १र   २१र   २र   २ १
अभा३४५यि। ना२३४राः। सोमंविश्वाचियाधिया१।
२ १र   २   १   २   १
यज्ञायार३सा। तुवद्रार३यां३४३ः। ओ २ ३ ४ ५ ई।
डा(३) ॥ ९* ॥ [६]

२ र   २र र १ २ १
॥ ऊर्द्ध्वइडास्तीसाम ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः। सूता
३ २   ३   ५   १२१र   २
२यमा२। दया३४५यि। ना२३४वे। अपश्वानञ्श्रथि
३१११११   ३ र २र १   २ १   २
ष्टना२३४५। साखायोदायि। घजिह्वा२३या३४३म् ॥(१)
१ र २र र १   २ १   १   १र १
सखायोदीर्घजिह्वियाम्। योधा२रया२। पावा३४५।
३   ५   २   १   १ ३ २   ३   २ १   २ १
का२३४या। परिप्रस्यन्दते सुता१ः। इन्दुरश्वाः। नक्त
२   १२११र१   २ १   १र
त्वा२३या३४३ः ॥(२) इन्दुरश्वोनकृत्वियाः। तान्दू२रोषा
३ २   ३   ५   १र   २१र   १र३
२म्। अभा३४५यि। ना२३४राः। सोमंविश्वाचियाधि
२   ३ र २ १   २ १   २   १
या१। यज्ञायसा। तुवद्रा२३या३४३ः। ओ२३४५ई।
डा(३) ॥ १० ॥ [७]

* ऊ० गा० ६प्र० २ख० ९सा०। † ऊ० गा० ७प्र० २ख० १०सा०।

२र र र २ र
॥ मधुश्चन्निधनम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसा३ए । सुता
र१ १ २ २ २ ५ २ २ १
यमा३दायित्नवा३ । हा३हां । औ३हो३वा । आयिही
र १ २ २ २ ५ २
२ । अपश्वाना७३श्नाथिष्टना३ । हा३हा । औ३हो३
२ १ १ र र १ २ २ ५
वा । आयिही२ । साखायोदा३ । हा३हायि । औ
२ २ १ १ २ ५र र
३हो३वा । आयिही२ । घजि । क्कार्या२३४औहो
२र र र २ र र ५र १ २
वा ॥(१) सखायोदीर्घजिह्वियाउ३मे । योधारया३पावकया
२ २ ५ २ २ १
३ । हा३हा । औ३हो३वा । आयिही२ । परिप्रस्या
१ र २ २ २ ५ २ २ १
३न्दाते सुता३ः । हा३हा । औ३हो३वा । आयिही२ ।
१ २ २ २ ५ २ २ १
आयिन्दुरश्वा३ः । हा३हायि । औ३हो३वा । आयि
१ २ ५र र २ र
ही२ । नक्क । त्वार्या२३४औहोवा ॥(२) इन्दुरश्वोन
२ र १र २ २ २ ५
कृत्वियाउ३ए । तन्दुरोषा३माभौनरा३ः । हा३हा । औ
५ २ १ र र५१ २ २
३हो३वा । आयिही२ । सोमंविश्वा३चायाधिया३ ।

Digitized by Google

हाउहा। औउहोउवा। आयिही २। याज्ञायसा३। हाउहायि। औउहोउवा। आयिही २। तुव। द्रा २या२३४औहोवा। मधश्च्युतार२३४५:(३) ॥ १५ * ॥ [८]

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पुरोऽ५जि। ताउयिवोउअन्धा सा:। श्रुतायमा। दाउयायित्नाउवे। अपा २श्वा। नष्ट श्वा२३था। ऊम्मायि। ष्टाउना। साखायोदीर्घजा२ यिह्नियाउ ॥ (१) साखा। योदीर्घजिह्वायोधारया। पा उवाकाउया। परा २यिप्र। स्यन्दा२३ता। ऊम्मायि। स्रुउता:। आयिन्दुरश्वोनका२ल्वियाउ ॥ (२) आयिन्दू:। अश्वोनकृत्व्यस्तन्दुरोषाम्। आउभायिनाउरा:। सोमा २वि। श्वाचा२३या। ऊम्मायि। धाउया। याज्ञाय सन्तुवा२द्रयाउ। वा३४५ (३) ॥ १६ * ॥ [९]

* ज० गा० ८प्र० २ख० १५गा०। † ज० गा० ८प्र० २ख० १६गा०।

२ १र २र र १ २ १ १ १ २
॥ बृहदाग्नेयम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसः । इयइयाहा

१ १ १ २ २ ५ १ २
यि । सुताय । मा । दायित्ना२३४वायि । आऔ३४

५ ४ ५ १ २ ० २
हो । इयाहायि । अपश्वा । नाम् । श्नथा२यिष्टा२३

५ १ २ ५ ४ ५ १ २ २
४ना । आऔ३४हो । इयाहायि । साखा३उवा । यः ।

१ २ २ ५ १ २ ५ ४ ५
दायि । धाजिह्वा२३४याम् । आऔ३४हो । इयाहा ॥(१)

१ र २र र १ २ १ २ १ २ १र २
सखायोदीर्घजिह्वियम् । इयइयाहायि । योधार ।

१ २ २ ५ १ २ ५ ४ ५
या । पावका२३४या । आऔ३४हो । इयाहायि ।

१ ० २ ५ १ २ ५
परिप्र । स्या । दता२यिन्द्र२३४ताः । आऔ३४हो ।

४ ५ १ २ २ १ १ २
इयाहायि । आयिन्दा३उवा । य । स्वो । नाक्वा२

५ १ २ ५ ४ ५ १ २ १ २र १
३४याः । आऔ३४हो । इयाहा ॥(२) इन्दुरश्वोनक्

२ १ २ १ २ १ २र १ २
त्वियः । इयइयाहायि । तन्दुरो । धाम् । आभायि

३ ५ १ ५ ४ ५ २र
ना२३४राः । आऔ३४हो । इयाहायि । सोमंवि । स्वा ।

Digitized by Google

१ २ १ १ २ ५ ४ ५ १ २
चियार२धार२३४या । आऔ३४हो । इयाहायि । यावा

२ १ २ ३ ५ १ २ ५ ४
इउवा । य । सा । तुवद्रा२३४याः । आऔ३४हो । इया

५ ४
हा । हो५इ । डा(३) ॥ १७ * ॥ [१०]

१ २र १ २ २
॥ औदलम् ॥ पुरोजितायि । वोअ्रा२न्धसाः । सु

१र २ १ २ ३ ५ १ २ र १
तायमा३ । दायित्ना२३४वायि । अपश्वानाम् । श्नथा

१ १ १र ० १ ४ २
२यिष्टना । सखायो२३दी३ । घा२३जा३यि । क्का३४५

५ १ १र र १ १
यो६हायि ॥(१) सखायोदायि । घाजा२यिक्रियाम् ।

२र १र २ १ २ ३ ५ १ २ १
योधारया३ । पावका२३४या । परिप्रस्या । दाता२

१ २ १ २ १ ४ २
यिस्तुताः । इन्दुरा२३श्वा३ः । ना२३का३ । त्वा३४५यो

५ १ १ १ १ १ १ र २
६हायि ॥(२) इन्दुरश्वाः । नाका२त्वियाः । तन्दुरोषा

१ २ ३ ५ १र २ १
३म् । आभायिना२३४राः । सोमंविश्वा । चाया२

* ऊ० गा० ८प्र० २अ० १७गा० ।

१ २१र २ १ ४ २
धिया। यम्नायार२३सा२। ढ२३वा२। द्रा२३४५योई
५
द्धायि(३) ॥ २ * ॥ [११]

१ २ १ २र १
॥ ऐड़मायास्यम् ॥ आयिपुराः । जायिताथि । वोश्रन्ध
र १ २ १ २ १
साः। वनायमा२१। दयिन्नवायि। आपस्वाना२१म्।
२ १ र र २ २ १ २
अथिष्टना। साखायोदा१यि। घजिक्का२३या३४३म् ॥(१)
१ २ १ २ १ र २
आयिसखा। योदायि। घजिक्कियाम्। योधारया२१।
२र १ २ २ १र २
पावकया। पारिप्रस्था२१। दतेसुताः। आयिन्दुरस्वा
२ १ २ १ २ १ २
३१ः। नक्तत्वा२३या३४३ ॥(२) आइन्दूः। आस्वो। न
१ र २ २ १र २
क्वत्वियाः। तान्दुरोषा२१म्। अभीनराः। सोमंविस्वा
२ १र र २ २ १ २
३१। चियाधिया। याम्नायसा३१। तुवद्रा२३या३४३ः।
१
ओ२३४५ई। डा(३) ॥ १७ * ॥ [१२]

---

* ऋ० मा० १०प्र० १ख० ३सा० । † ऋ० मा० १०प्र० १ख० १७सा० ।

१ र र २ १ २ १
॥ निषेधम् ॥ पुरोजितीवो३अन्धसाः। सुतायमा।
२ १ १ २ १ २ ४ ५ २ ३
दयित्नवा२यि। इहा३। आपा३स्वानाम्। हाहो२३
५ २ १ २ १ २ १ २ ४ ५
४हा। श्नथिष्टा२३ना। इहा३। साखा३योदायि।
२ ३ ५ ३ १ ४ १ र र
हाहो२३४हा। यजा३यिहाा५या६५६म् ॥(१) सखायो
र १ र १ २ १ २र १ १ २
दीर्घा३जिह्वियाम्। योधारया। पावकया२। इहा३।
१ २ ४ ५ २ ३ ५ २र१ २ १ २
पारा३यिप्रास्या। हाहो२३४हा। दतेह२३ताः। इहा
१ २ ४ ५ २ ३ ५ ३ २ ४
३। आयिन्दू३रास्वाः। हाहो२३४हा। नका३र्वा५
२ र २ १ २र १
या६५६ः ॥(२) इन्दुरश्वोना३कृत्वियाः। तन्दुरोषाम्।
२र १ १ २ १ २ ४ ५ २ ३
अभीनरा२ः। इहा३। सोमा३वायिश्वा। हाहो२३४
५ २र १ १ ११ १ २ ४ ५ २ ३
हा। चियाधा२३या। इहा३। याज्ञा३यासा। हाहो
५ ३ २ ४ ३११११
२३४हा। तुवा२द्रा५या६५६ः। हे२३४५ (३) ॥ ६ * ॥ [१३]
१ २ १ २ र ५र १
॥ आनूपवाध्रश्वम् ॥ पुराःपुराः। जितीवो३आ

---

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ६गा०।

Digitized by Google

२ १ र २ र १ २ १
न्धा१सा२ः। सूतायमा। इयायिन्ना१वा२यि। आपा

१ १ १ २ १ २
२यि। आपा२श्वाना२म्। अयिष्ठा२३ना। सखायो

२ १ ४ २ ५ १ २
३दी३। घा२३जा३यि। क्ता३४५यो६हायि॥(१) सखा

१ २ र र १ २ १ र २ र र
सखा। योदीर्घा३जायिक्ता१या२म्। योधारया। पा

१ २ १ १ १र २ १
वाका१या२। पारा२यिप्रास्या२। इतेसू२३ताः। इ

२ २ १ ४ २ ५
न्दूरा३श्वा३ः। ना२३का३। त्वा२३४५यो६हायि॥(२)

१ २ १ २ र १ २ १ २र
इन्दूरिन्दुः। अश्वोना३कार्त्वा१या२ः। तान्दुरोषम्।

१ २ १ १ १र
अभायिना१रा२ः। सोमा२ंवायिश्वा२। पियाधा२३

१ १ २ २ १ ४ २ ५
या। यज्ञाया३सा३। हृ२३वा३। द्रा२३४५यो६हायि(३)

॥ ११ * ॥ [१४]

२ र ४ २
॥ वैतहव्यमोकोनिधनम् ॥ पू५५रोजि। ता३यिवो

४ ५ १ र ० २ ५ १
३रन्धसाः। सूतायमा। इयार्यिन्ना२३४वायि। प्र

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ११सा०।

२ ५ २ १ २ २ १ र २र र
पा२श्वा२३४नाम्। आ३थायिष्टा३ना। साखायौंदीर्वं।
१ २ ५र र २ र ४
जायि। क्रा२या२३४औहोवा॥(१) सा५खायः। दा
२ ४ ५ २ र र २ ५
३यिर्वा३जिक्रियाम्। योधारया। पावा२का२३४या।
० २ ५ २ १ २ २ १ २ १ २र
परा२यिप्रा२३४स्या। दा३तायिस३ताः। आयिन्दुरश्वो
१ १ २ ५र र २
न। का। त्वा२या२३४औहोवा॥(२) आ५यिन्दुर।
४ २ ४ ५ १ र ० २
श्वो३ना३क्त्वियाः। नान्दुरोषाम्। अभा२यिना२३४
५ १र २ ५ २ १ २ २ १ र
राः। सोमा२ंवा२३४यिश्वा। चा३याधा३या। याम्रा
२ १ २ ५र र २ १ १ १
यसन्तु। आ। द्रा२या२३४औहोवा। ओ३का२३
१ १
४५ः(३)॥ १२ * ॥ [१५]

१र र १
॥ सोमसाम† ॥ पुरोजिता२यिवोअन्धसाः। सूता२
१ १ १ १
यामा२। दयित्नवायि। आपा२श्वाना२म्। श्नथि
१ १ १
ष्टना। साखा२योदा२यि। र्वजिक्रा२३या३४३म्॥(१)

* ऊ० गा० १२प्र० २ख० १२गा०। † 'बृहत्सोम साम'—इति ख० पु०।

१ २ २ १ १ २ १
सखायोदा २यिर्घंजिक्रियाम्। योधा २राया २। पाव
१ १२
कया। पारा २यिप्रास्या २। दतेसुताः। आयिन्दू २
१ १ २ १ १
राम्वा २ः। नक्तत्वा२३या३४३ः ॥(२) इन्दुरश्वो २नक्तत्वि-
१ १२ १
याः। तान्दू २रोषा २म्। अभीनराः। सोमा २वा
१२ १ १
यिश्वा २। चियाधिया। यास्या २यासा २। तुवद्रा२३
२ १
या३४३ः। ओ२३४५ई। डा (३) ॥ १२ * ॥ [१६]

१ ५ २
॥ त्रासदस्यवम् ॥ पू२३४। रः। जितायि। वो
१ १ २ ५ १२ १ १
अन्धसा२३ः। सू२ ३ ४। ता। यमा। दायित्वा २ ३
१ २ ५ १२ १ १
यि। षा२३४। प। स्वानाम्। स्वायिष्टना२३। सा२
२ २ ५ १२ १ २ १ १
३४। खा। योदायि। घाजिक्रिया३माउ ॥(१) सा
२ २ ५ १२ १ १
२३४। खा। योदायि। घाजिक्रिया२३म्। यो२३४।
२ ५ १२ १ १ ५
धा। रया। पावकया२३। पा२३४। रि। प्रस्या।

† ऋ० मा० ११म० २ष० १२सा०।

२र १र १ ५ १र१
दातेसुता२३ः। षा२३४यि। दुः। अस्वाः। नाक्ष
२ १ र ५ २र १र
त्विया२३ः। ता२३४म्। दु। रोषाम्। आभीनरा
१ ५ १र १र १
२३ः। सो२३४। मम्। विश्वा। चौयाधिया२३। या
र ५ २र१ १ १ १ १ १
२३४। ह्मा। यसा। ढवद्रया३१उ। वा२३४५(३)॥१४*॥[१७]
४ ३र ४ ५र र २ १ ४
॥ जनित्रोत्तरम्॥ पुरोजितीवोअ। धसा३ः। सु
र ५ १ र ७ ३
ताया। होयि। होयि। मादायित्नावा२३४यि। अ
४ ५र २ २ ४ ५ १ र २र र ५र २
पश्वानम्। अथा२यिष्टाना। साखायोदीर्घजौ३। हो
१ ५र र १ ४र ५र र
३१यि। श्ना२या२३४औहोवा॥(१) सखायोदीर्घजि।
१ १ ४र र ५ १ र ७
ह्वया३म्। योधारा। होयि। २। यापावकाया२३४।
३ ४ ५ ३ २ ४ ५ १ २ १ १र ५र २
परिप्रस्य। दता३यिन्द्वताः। आयिन्दुरश्वोनकौ३। हो
३ ५र र २ ४ ३ ४र ५ ३
३१। त्वा२या२३४औहोवा॥(२) इन्दरश्वोनक्त। त्वि
२ ४ ५र १ र १
या३ः। तन्दुरो। होयि। होयि। षामाभी१नारा२३

* ऋ० मा० १२म० २ख० १४सा०।

२र ४ ५ र २ २ ४ ५ १ र २ ५
४ः। सोमंविश्वा। चिथा३धाया। याम्नायसन्तुवौ३।
२ ३ ५र र २ १ १ १
हो ३ १। द्रा२ या२ ३ ४ औहोवा। जनी ३ वा २ ३
१ १
४५म् (३) ॥ ६ * ॥ [१८]

५ र २ ४र५र४ ५
॥ जागतसोमसाम ॥ पुरोजा ३ यितीवोअन्धसाः।
२ र १ र १ ०र २ २र२
सुतायामा२। दायायित्नवे। ओ३४। हाहोयि। अ
र १ ० २ २र २ र र
पश्वानश्ना३थायिष्टन। ओ३४। हाहोयि। सखायो
र १ ३ २ ५र र ५
दीर्घजिह्वियम्। दुरा२। तिना३४औहोवा ॥(१) स
र २ ४र५ ४ ५ २र र १ र १ ०
खायो३दीर्घजिह्वियाम्। योधारायार। पावाकया।
२ २र २ १ ० २
ओ३४। हाहोयि। परिप्रस्यन्दा३तायिसुतः। ओ३४।
२र २ र १ २ २ ५र
हाहोयि। इन्द रस्वोनकत्वियः। दुरा२। तिना३४औ
र ५ २ ४र५४ ५ २ १र
होवा ॥(२) इन्दु रा३स्वोनकत्वियाः। तन्दुरोषा२म्।
र १ ० २ २र २ र
आभायिनरः। ओ३४। हाहोयि। यम्नायसन्त्वद्रयः।
१ २ २ ५र र २ ५
दुरा२। तिना३४औहोवा। उ२३३पा(३)॥ ६†॥ [१९]

* ऊ० गा० १३प्र० १ख० ६गा०। † ऊ० गा० १३प्र० २ख० ६गा०।

१ १र २र र १ २ १
॥ मुद्राम्युद्वीयाद्यम* ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः । सु
र र२ १ २ १ र २१ २
तायमादयित्नार२३वायि । अपश्वानश्नथिष्टार२३ना । स
१र २ १ २ २ ५र र ३ १११११
खायोर२३दीर३ । घार२ । जिह्वा२३४औहोवा । यार२३४५
१ र २र र १ २ १ र र र र २ १
म् ॥(१) सखायोदीर्घजिह्वियाम् । योधारयापावकार
२ १ १ १र २ १ २ १
३या । परिप्रस्यन्दतेसु२३ताः । इन्दुरार२३श्वाऽः । नार
३ २ ५र र ३ १११११ १ २ १ २र १ २
त्वा२३४औहोवा । यार२३४५ः ॥(२) इन्दुरश्वोनकृत्वि
१ र २ १र २ १र र २ १र
याः । तन्दुरोषमभीनार२३राः । सोमंविश्वाचियाधार२३
२ १र २ १ २ २ ५र र ३
या । यज्ञायार२३साइ । हर२ । अद्रा२३४औहोवा । या
१ १ १ १
२३४५ः(३) ॥ ३† ॥ [२०]

२ १र ४र ५ २ ३ ५
॥ आकूपारम् ॥ पुरोजार२३इतीवः । अन्धार२३४साः ।
१ १ २ १ २ १ १
सुता२यमा । दयित्नवायि । अपश्वानार२म् । श्नथिष्ट
२ र १ १ ४ २ ५
ना । सखायोदी२३ । घार२३जा३यि । ह्वा२३४५योद्दा

* 'मद्राम्नः मुद्राम्रद्वीयम्'—इति ख० पु० । † क० गा० १६प्र० १ख० ३सा० ।

२ १र ४र५ २ १ ५ १र
यि ॥(१) सखायो३दीर्घ। जिह्वा२३४याम्। योधा२

१ १र १ २ १ र १ २
रया। पावकया। परिप्रास्या२। दतेसुताः। इन्द्

१ १ ४ २ ५ २ १
राम्रा२३ः। ना२३का३। त्वा३४५योे६हायि ॥(२) इन्द्

४र५ २ ३ ५ १ १र २ र १
रा३स्वोन। कृत्वा२३४याः। तन्दू२रोषाम्। अभीनराः।

१र १ र १ २ र १ १
सोमंवायिस्वा२। चियाधिया। यज्ञायासा२३। दूर

४ २ ५
३वा३। द्रा३४५योे६हायि(३) ॥ ८ *॥ [२१]

५ र २ ४र ५र ४ ५ २ १ २ १
॥ साध्रम्॥ पुरोजा३यितीवोअन्धसाः। सुतायमा

३ १ २ ५ १ २ १र २ २ १ १
२। दया३४५यि। न्ना२३४वे। अपस्वानॅथिष्टना२३

१ १ १ २ २ ५ १ २ ३ ५ ४
४५। साखाओ२३४वा। योदाओ२३४वा। घजा५यि

५ र २ ४र ५ ४ ५ २र १ २ १
च्चियाम्॥(१) सखायो३दीर्घजिह्वियाम्। योधारया२।

३र २ २ ५ २ १ २र ३ २
पावा३४५। का२३४या। परिप्रस्यन्दतेसुता१ः। आयि

२ २ ५ १ २ २ ५ ४
न्द्राओ२३४वा। आस्त्राओ२३४वा। नका५त्त्वि

* ऊ० गा० १६प्र० १ख० ८गा०।

५ २ ४२ ५ ४ ५ १ १ १२ १ २
याः ॥(२) इन्दुरा३श्वोनकृत्वियाः। तन्दुरोषा२म्। अ
२ २ ५ १२ २ १२ १२ १ १
भा३४५यि। ना१२३४राः। सोभंविश्वाचियां। धिया१।
२ २ ५ १ २ २ ५ ४
याश्चाओ२३४वा। यासाओ२३४वा। तुवा ५ इयाः।
४
द्यो५ई। डा (३) ॥ ८ * ॥ [२२]

१ २ २ १ २ २
॥ क्षुल्लककालेयम्॥ पुरोजितीवो१न्धासाः। सुता
१ २ ५ २ १ २
यमा३। दया२यित्नः३३४वायि। अपा। अपा३१उ।
१२ २ १ १ १ १ १ २ १२ २
वा२। श्वानश्रथिष्टना२३४५। सखाद्योयियो२३दी।
१ २ १ २ २ २ २
र्घाजिह्वियम्। इडा २ ३ ॥(१) सखायोदीर्घजा १ यिह्वा
२ २ २ १२ २ ५ २ १
याम्। योधारया३। पावा२का२३४या। परायि।
२ १ १२ २ २ १ १
परा३१उ। वा२। प्रस्यन्दते सुना१ः। इन्दुर्ह्वा आ२३
२ १ २ १ १ २
श्वाः। नाकृत्वियः। इडा२३ ॥(२) इन्दुरश्वोनका१त्वी
२ २ १ २ ५ २२ १
याः। तन्दुरोषा३म्। अभा२यिना२३४राः। सोमाम्।

* ऊ० गा० १६प्र० १ख० ८सा०।

(२०)

Digitized by Google

२र १र १र २ १ २ १र
सोमा३१उ। वा२। विश्वाचियाधिया१। यज्ञाहोयि
२ १ १ १ २ १
यार३सा। त्वबद्रयः। इडा२३भा३४३। ओर३४५ई।
डा (३) ॥ ६ *॥ [२३]

२ र १ र १र १
॥ कौञ्चाद्यम्॥ पुरोजितीहोयि। वोअन्धसाः।
१ र १ १ ४ १ १र र
सुतायमा३। दाया३यिला५वा६५६यि ॥(१) अपश्वानौ
२र १ १ र र १ २ ४
हो। श्नाथिष्टना। सखायोदा३यि। घाजा३यिक्षा५या
१ र १र र १र १ १र र
६५६म् ॥(१) सखायोदौहो। घाजिक्षियाम्। योधा
१ २ ४ २ १ र २र १र
रया३। पावा३का५या६५६। परिप्रस्त्रौहो। दातेसु
२ १ २ ४ २
ताः। इन्दुरश्वो३। नाका३र्ला५या६५६ः॥ (२) इन्दु
१ र १र १ २ र १ २
रश्वौहो। नाकल्वियाः। तन्दुरोषा३म्। आभा३यि
४ १र १ र १र १र १ र
ना५रा६५६ः। सोमंविश्वौहो। चीयाधिया। यज्ञाय
१ २ ४
सा३। तूवा३द्रा५या६५६ः (३)॥ २ *॥ [२४]

* ज० गा० १६प्र० २ख० ६साम। † ज० गा० १०प्र० १ख० ३सा०।

५ र २ २र ३र ४ ५ २ १ २ १
॥ गौतमम्॥ पुरोजितीवोअन्धसाः। सुतायमा।
१ १ २ २ २र ५ १र २
दयित्नवा२यि। अपा। औहोर२३४वा। श्वानᳲश्नथि
३ ११११ २ २ २र ५ २र २ ३२
ष्टना२३४५। सखा। औहोर२३४वा। योदा। औहो
५ ४ ५ र २र २र ३ ५
२३४वा। धजा५यिक्लियाम्॥(१) सखायोदीर्घजिक्लिया
२र १ २ १ २र १ २ २ २र ५
म्। योधारया। पावकया२। परा। औहोर२३४वा।
२ १ २र २ २ २ २ २र ५ २ २ २र
प्रस्यन्दतेसुता१ः। इन्दा। औहोर२३४वा। अश्वा। औ
५ ४ ५ २ २र २ ४ ५
होर२३४वा। नक्ता५ल्वियाः॥(२) इन्दुरश्वोनक्त्वियाः।
२ १ २र १ २ र १ ३र २ १र ५
तन्दूरोषाम्। अभीनरा२ः। सोमा। औहोर२३४वा।
२ १र २र २ २ २ २ २र ५ २ २
विश्वाचियाधिया१। यशा। औहोर२३४वा। यशा।
२र ५ ४ ४
औहोर२३४वा। तुवा५द्रयाः। हो५ई। डा (३)॥ ४*॥[२५]
१ र र १ २ १
॥ आग्नेयम्॥ पुरोजितायि। वोअन्धा२३साः। सु
र २ १र २ १ २ १ र ०
तायमा। दयित्ना२३वायि। अपश्वानम्। श्नथिष्टा

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० ४सा०।

१ २ ० ४ ५ ४ ५
ना२। सखायो३दो३। घजोवा। ह्वा५योऽ६हायि ॥(१)

२ र र १ २ १र र २ र १र २
सखायोदायि। घजिह्वार३याम्। योधारयापा। व

१ २ १ ७र १ २ २
का२३या। परिप्रस्य। दातेहना२ः। इन्दूरा३स्वा३ः।

४ ५ ४ ५ २ १
मकोवा। त्वा५योऽ६हायि ॥(२) इन्दुरस्वाः। नहत्वा२३

२ १ २र१ २ १र २ १र र
याः। तान्दुरोषम्। अभीना२३राः। सोमविश्वा।

७र १ २ २ ४ ५ ४ ५
चायाधाया२। यज्ञाया३सा३। तुवोवा। ह्वा५योऽ६हा

यि (३) ॥ १७ * ॥ [२६]

२ र र र २
॥ घृद्वाघृद्वीयाद्यम्॥ पुरोजितीवोअन्धा३साः। सु

१र २ १ १ २ २
तायमा। दयि। त्नावा२यि। अपास्वा३ना३म्।

१ २ ५ २ १र २ १ २
अथा२यिष्टा२३४ना। सखायो२३दो। घाजिह्वियम्।

१ २ र र र २ र १र २
इडा२३ ॥(१) सखायोदीर्घजिह्वा३याम्। योधारया।

र १ १ २ २ १ २
पाव। काया२। परायिप्रा३स्या३। दता२यिह २ ३ ४

* ऋ० मा० १७प्र० १ख० १७सा० ।

५ ११ २ १ २ १ २
ताः। इन्द्रा२३स्वाः। नाक्तत्वियः। इडा२३॥(२) इन्द्र

२ २ १ २१ २ १
स्त्रोनक्षत्वा३याः। तन्दूरोषाम्। अभी। नारा२ः।

१२ २ २ १ २ ५ २१२ २
सोमांवा३यिस्वा३। चिया२धा२३४या। यज्ञाया२३सा।

१ २ १ २ १
नूषद्रयः। इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई। डा(३॥१८*॥[२७]

॥ हिरण्यस्तत्वाष्ट्रीसाम॥ ५ २ २ २
पुरः। जिता३यि। हा३

२ ३२ २ १ ५२ ३ २ २ २
हायि। वोअन्धासा२३४ः। सुता। यमा३। हा३हा।

३ २ १ ५ ३२ २ २ २ ३
दयित्नावा२३४यि। अप। श्वाना३म्। हा३हा। अ

२ १ ५२ ३२ २ २ २ ३ २
थिष्टाना२३४। सखा। योदा३। हा३हायि। वजा३

१ ५ ४ ५ ५ २ ३२ २
यो२३४। वा। हा५योई६हायि॥(१) सखा। योदा३।

२ २ ३ २ १ २ ५२ ३ २ २
हा३हायि। वजिहाया२३४म्। योधा। रया३। हा३

२ ३२ २ १ ५ ३ २ २ २ ३
हा। पावकाया२३४। परि। प्रथा३। हा३हा। द

३२ १ ५ ३ २ २ २ ३ २ १
तेक्षता२३४ः। इन्दुः। मस्वा३ः। हा३हा। नका३हो

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १८गा०।

५ ४ ५ ५ २ १
२३४। वा। त्वा५योई३हायि ॥(२) इन्दुः। अश्वा३ः।
२ २ ३२१ ५ ३र २ २ २
हा३र्हा। नकुत्वाया२३४ः। तन्दु। रोषा३म्। हा३हा
३२र१ र ५ २१ २ २
यि। अभीनारा२३४ः। सोमम्। विश्वा३। हा३र्हा।
३२र१ ५र ११ २ २ ३२
चियाधाया२३४। यज्ञा। यसा३। हा३हा। तुवा३
१ ५ ४ ५
हो२३४। वा। द्रा५योई३हायि(३)॥१२*॥ [२८]

२१र २र र १ २ १
॥ आ॒ग्निधनत्वाष्ट्रीसाम्॥ पुरोजितीवोअन्धसः। सु
२ऽ रऽ १ ० ३ १ १ ०
ताया३उ। यमा३दायित्नावा२यि। यमा३हो। दया
३ ५ २ र १ ० ३र २
२यित्ना२३४वायि। अपश्वाना३॒श्नायिष्टाना२। श्वाना
१ ० २ ५ २ र र रऽ १ ०
३॒हो। दथा२यिष्टा२३४ना। सखायोदी३र्घाजिह्वाया
३१ १ र ३ ५ १ ३
२म्। सखा३होयि। योदो२३४हायि। घा२जा२३४
५र र २ ११११ १ र २र र १
औहोवा। ह्यिया३मा२३४५॥(१) सखायोदीर्घजिह्वि
२ १र २ऽ रऽ १ ० ३२ १
यम्। योधाया३उ। रया३पावकाया२। रया३हो।

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० ११गा०।

३र २ ५ २ १ ३र ३१ १
पावा२का२३४या । परिप्रस्था३न्दातेस्तता२ः । प्रस्था३हो ।
० २ ५ २ २ऽ १ ० ३ २
दता२यिष्व२३४ताः । इन्दुरश्वो३नाक्लत्वाया२ः । इन्दू
१ ३ ५ १ २ ५र २ २
३र्वोयि । अश्वो२३४वायि । ना२का२३४औहोवा । त्वि
१ ११११ १ २११र१ २ १ १ र
या३आ२३४५ ॥(२) इन्दुरश्वोनक्लत्वियः । तन्दूहाउ । रो
२ऽ १ २ ३र२ १ ० २
षा३माभी१नारा२ः । रोषा३ऌहोयि । अभा२यिना२३
५ २र २ऽ १ ३र ३ २ १ ०
४राः । सोमंविश्वा३चायाधाया२ । विश्वा३होयि । चि
२ ५ २ १० ३ २ १
या२धा२३४या । यज्ञायसा३न्तूवद्राया२ः । यज्ञा३हो
३ ५ १ २ ५र २ २ १
यि । यसो२३४हा । तूर२वा२३४औहोवा । द्रया३आ
१ १११
२३४५(३) ॥ १३ * ॥ [२९]
२ र र र र
॥ क्रौञ्चम् ॥ सखायोदायि । सखायोदायि । धजि
१ २र र १ र १ १ १
क्रियाम् । योधाराया२ । पावकंया । परिप्रास्या२ ।
१ २ १ २ १ २
ओन्दाता१यिष्वता२ः । ओइन्दुरा२३श्वाः । नाक्लत्वियः ।
१ १ १
इडा२३भा३४३ । ओर२३४५ई । डा(२) ॥ १ † ॥ [३०]

---

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० १३गा० । † ऊ० गा० २१प्र० २ख० १गा० ।

४ २ ४ २
ककुबुत्तरं थमायमीयम्॥ पुरोऽ५जि। ता३यिवो३
४ ५ १ र २ १ २ २ १
अन्धासाः। सुतायमा। दा३यायित्ना३वे। अपा२
१र २ १ २ २ १ऽ र र
श्वा। नꣳश्वा२३या। ऊम्मायि। ष्टा३ना। साखायो
र २ २ १ २ १र २ १
दीर्घजा२यिह्नियाउ॥(१) यांथाः। धारया। पा३वा
२ २ १ १ २ १ २
का३या। परा२यिप्र। स्यन्दा२३ता। ऊम्मायि। सु
२ १ र २ २ १ १
३ताः। आयिन्दुरश्वोनक्का२र्त्वियाउ॥(२) यास्ताम्।
१ र २ १ २ २ १र १ र
दुरोषाम्। आ३भायिना३राः। सोमा२वि। श्वाचा
२ १ १ २ १ऽ र २ २
२३या। ऊम्मायि। धा३या। याम्रायसन्तुवा२द्रया
१ १ १
उ। वा३४५(५)॥ ३ *॥ [३१]
४ २र ४ र र ५ १
॥ अभ्यासाकूपारम्॥ पुरोजितीवोअन्धसः। पू२३४।
र र र ४ ३ र ४ र १र १
रोजितीच्चो५यिवोअन्धसाः। सुतायमादयित्नवे। सु२३४।
र र ४ ३ ४ ३र ४ ५ १
तायमौचो५दयित्नवायि। अपश्वानꣳश्नथिष्टनम्। आ

* ऊ० गा० ११प्र० ३ख० ३सा०।

र र ४ ३ र ४र र ५
२३४। पश्वानौचोप्श्रथिष्टना। सखायोदीर्घजिह्वियम्।
१ र र र ४ ५ १ र
सा२३४। खायोदौचोप्घंजि। ह्वा५योई्हायि॥(१) सखा
४र र ५ १ र र र ४
योदीर्घजिह्वियम्। सा२३४। खायोदौहोप्घंजिह्विया
म्। ३र र ४ र र १र १ र र र
योधारयापावकया। यो२३४। धारयौहोप्पा
४ २ ४ २ ४ र ५ १ र
वकया। परिप्रस्यन्दतेसुतः। पा२३४। रिप्रस्यौहोप्न्द
र ४ २ ४ ३ ४र ५ १ र
तेसुताः। इन्दुरश्वोनकृत्वियः। आ२३४यि। दुरश्वौ
४ ५ २ ४ २ ४ ५
चोप्नकृ। त्वा५योई्हायि॥(२) इन्दुरश्वोनकृत्वियः।
१ र ४ २ ४ २र ४ र ५
आ२३४यि। दुरश्वौचोप्नकृत्वियाः। तन्दुरोषमभीनरः।
१ र र र ४ २र ४ ३र र ४
ता२३४म्। दुरोषौचोप्अभीनराः। सोमंविश्वाच्याधि
५र १ र र ४ २र ४
या। सो२३४। मंविश्वौहोप्चियाधिया। यज्ञायसन्त्व
५ १ र र ४ ५
द्रयः। या२३४। ज्ञायसौचोप्न्तुव। द्रा५योई्हा
यि(३) ॥ ६ * ॥ [३२]

* ऊ० गा० २१प्र० १खं० ६सा०।

Digitized by Google

४ १र ४ ५र र २ २ ३र ४र ५ १
॥ श्यैतम् ॥ पुरोजितीवोअ। धसा३४औहोश्रा। सू
र२ र १ ७ ५ ५ १
तायमा। दयायित्नवा२३४यि। श्रोई्हा। श्र। पाश्वा
२ १ ३ ५ १ र र २
२३नाम्। श्रथा२यि। ष्टा२३४ना। सखायोदायिर्घा३
२ १ ३ ५र र
जा। ऊम्मायि। श्कारया२३४औहोवा(३) ॥ ७ * ॥[३३]
१ र ५र र ४ ५
॥ नौधसम् ॥ पू२३४। रोजितीवोश्र। धासाः।
२ १र २ १ २ १ १ २ १र
सुतायमा। दा३यायित्ना३वे। श्रा२३पा। स्वा। नाम्।
२ ३ ५ १ २ १ २ १ ५ ३
श्नाथिष्टा२३४ना। सा२३खा। योदीर्घजो२३४वा। श्री
५
२३४याम्(३) ॥ ८ † ॥ [३४]
१ १ १ १र १
॥ महादैर्घतमसम् ॥ हाउपुराः। जायिती। वो। श्रन्ध
२ १ २ १ र र र र
सा३ः। श्रन्धसाः। सुतायमादयित्नवेश्रपस्वानꣳश्नथा
२ १ १ र र २
यि। ष्टा१ना२। ष्टाना२। सखायो। दीर्घजा३यि।
१ ३ ५र र १ २ १ २र १
श्नूा२या२३४श्रौहोवा ॥(१) हाउसखा। योदी। घा।

---

* ज० गा० १२प्र० १ख० ७गा०। † ज० गा० १२प्र० १ख० ८गा०।

Digitized by Google

२ १ २ १२ २ २२ २
जिह्वियाऽ३म् । जिह्वियाम् । योधारयापावकयापरिप्र
२ १ १ २ २
स्यन्दताथि । सू१ता२ः । सूता२ः । इन्दुरा । श्वोनका
१२ २ १ २ ५२ २ १ २
३ । श्वोनका२ । त्वा२या२३४औहोवा ॥(२) हाविन्दूः ।
१ २ १ २ १ २ १ २
श्वाश्वः । ना । ह्वात्वियाऽ३ः । ह्वात्विया: । तन्दुरोषम
२ २ २ २ २ १ १ २
भीनरस्सोमंविश्वाचिया । धा१या२ । धाया२ । यशा
१ १ २ १ २ ५२ २
या । सन्तुवाऽ३ । सन्तुवाऽ३ । द्रा२या२३४औहोवा ।
२१ १ १ १
ई२३४५(३) ॥ १२ * ॥ [३५]

१ २ १ २ २२
॥ मरायम् ॥ पूराः । जायितीवोअन्धसः । सः । सः ।
१ २ १ २ २ १
सूता । यमा । दयित्नवेअपश्वानꣳश्नथिष्टननन । सा
२ १ २ २ १ २
खा । योदीर्घंजिह्वियम् । यम् । यम् ॥(१) साखा ।
१ २ २ १ २ १
योदीर्घंजिह्वियम् । यम् । यम् । योधा । रया ।
२ २ २ १ २
पावकयापरिप्रस्यन्दतेसुतः । तः । तः । आयिन्दूः । अ

* ऊ० गा० ११प्र० २अ० १२गा० ।

१ २ १ २ १
ष्वो। नक्षत्वियः। यः। यः॥(२) ष्वायिन्दूः। अश्वो।
२ १ २ १ २र र र
नक्षत्वियः। यः। यः। तान्दू। रोषमभीनरस्सोमंविश्वा
र र र र १ २ १ २
च्याधिया। या। या। याज्ञा। यसा। तुवद्र्यः। यः।
ऽ ऽ ऽ १ १ १ १
यः। हाउहाउहाउ। वा३। ई२३४५(३)॥ १५ *॥ [३६]
२र र र १
॥ महावात्सप्रम्॥ हाउहाउहाउ। चो। होहो
२ २र २ १ र र
वा। (एवन्विः)। पुरोजितायि। वो। अन्धसो। धसो।
र र २ऽ १ र र
धसः। सुतायमा। दा। यित्नवे। यित्नवे। यित्न
र र २ऽ १
वे। अपश्वानम्। श्ना। थिष्टन। थिष्टन। थिष्टन।
र र र २ऽ १
सखायोदी। घा। जिह्नियम्। जिह्नियम्। जिह्नि
र र र २ऽ १
यम्॥(१) सखायोदी। घा। जिह्नियम्। जिह्नि
र र र २ऽ १ र
यम्। जिह्नियम्। योधारया। पा। वकया। वक
र र २ऽ १र र र
या। वकया। परिप्रस्य। दा। तेसुतः। तेसुतः। ते

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ष० १५सा०।

सुतः। इन्दुरश्वः। ना। हृत्वियः। हृत्वियः। हृत्वि
यः॥(२) इन्दुरश्वः। ना। कृत्वियः। कृत्वियः। कृ
त्वियः। तन्दुरोषम्। भा। भीनरः। भीनरः। भी
नरः। सोमंविश्वा। चा। याधिया। याधिया। या
धिया। यज्ञायस। ह्ठ। अद्र्यो। द्र्यो। द्र्यः। हा
उ३। ओ। होहोवा। २। ओ। हो। हो२। वा२
३४। औहोवा। ई२३४५(३)॥ ८ *॥[३७] १८

अथ पञ्चमसूक्ते—

प्रथमा।

अभिप्रियाणिपवतेचनोहितो
नामानियह्वोअधियेषुवर्धते।
आसूर्यस्यबृहतोबृहन्नधि
रथंविष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः॥ १ †॥

---

* उ० गा० २२प्र० १का० ९सा०।

† छ० आ० ६, २, ९, १ (२ भा० १७१ प०) = ऋ० वे० ७, १, २२, १।

"चनोहित:" [चन इत्यन्ननाम, चायतेरसुनि चन इत्यौणादिक-सूत्रेण निपातित:] चनसे अन्नाय हित:, यद्वा आहितान्न: सोम: "प्रियाणि" जगत: प्रीणयितृणि "नामानि" नमनशीलानि, तान्युदकानि "अभि पवते" अभित: करोति। "येषु" अन्तरिक्षस्थितेषु उदकेषु "यह्व:" महानयं सोम: "अधिवर्द्धते" अधिकं प्रवृद्धो भवति, अपां मध्ये सोमो वसति खलु। तत: "वृहत्" महान् सोम: "बृहत:" महत: परिवृढस्य "सूर्य्यस्य" विष्वञ्चं" विष्वग् गमनम् "अधि रथम्" उपरि रथं "विचक्षण:" सर्वस्य विद्रष्टा "अरुहत्" आरोहति "अग्नौ प्रास्ताहुति: सम्यगादित्य मुपतिष्ठते (मनु० ३अ०७६श्लो०)"-इति॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १२ ३१ २ ३१२३१
ऋतस्यजिह्वापवतेमधुप्रियं
३१ २र ३१ ३१ २र
वक्तापतिर्धियोअस्याअदाभ्य:।
१२ ३२ ३१२३ २ १२
दधातिपुत्र:पित्रोरपीच्याऽ३न्नाम-
३२३१ २३१ ३२
तृतीयमधिरोचनन्दिव:॥ २ * ॥

---

* ऋ० वे० ७, २, ३३, २।

"ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "जिह्वा" मुखत्वेन जिह्वास्थानीयः सोमः "प्रियं" प्रियकरं "मधु" मदकरं रसं* "पवते" क्षरति। कीदृशः? "वक्ता" शब्दकृत्; यद्वा, स्तोतृभिः क्रियमाणाः स्तुतयः साधीयस्य इति प्रतिश्रवणस्य कर्त्ता "अस्या धियः" एतस्य कर्म्मणः "पतिः" पालयिता "अदाभ्यः" रक्षोभिर्हिंसितु मशक्यः "पुत्रः" यजमानः "पित्रोः" पिता माता उभयोः † "अपीच्यम्" अन्तर्हितं यत् "नाम" तौ न जानीते नाम कर्मवेलायां तस्मात्तयोरपरिज्ञायमानं "दिवः" द्युलोकस्य "रोचनं" दीप्यमानं "तृतीयं" नाम सोमेऽभिषूयमाणे हिरण्मयेति "अधि दधाति" अत्यन्तं धारयति; "नक्षत्र-व्यावहारिक-नाम्नी प्रथाम्य सोमयाजी तृतीय मस्य नाम"—इति भगवता बौधायनेनोक्तम्॥

"अधिरोचनम्"--"अधिरोचने"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २   ३ २ ३ १ २   ३
अवद्युतानःकलशाꣳअचिक्रद

१ २   ३ १ ७   ३ १   २ ३ १ २
नृभिर्येमाणःकोशआहिरण्यये।

* 'मधु स्वादुतमं द्रवम्'—इति वि०।

† 'मातापित्रोर्नाम, अथवा मातापित्रोः पृथिव्यन्तरिक्षयोः'—इति वि०।

३ २ १ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभीऋतस्यदोहनाअनूषताधि
१ २ ३ २ १ १ २
त्रिपृष्ठउषसोविराजसि ॥ ३ * ॥ १९

"द्युतानः" [द्युतदीप्तौ (भ्वा० आ०)] दीप्यमानो "नृभिः" कर्म्मनेतृभिर्ऋत्विग्भिः "हिरण्यये" हिरण्मयकोशे अभिषवण-चर्म्मणि; तस्य हिरण्मयत्वं "हिरण्यपाणिरभिषुणोति"—इति हिरण्य-सम्बन्धात्; तादृशे "कोशे" "येमानः" [छान्दसे कर्म्मणि लिटि कानचि रूपम्] नियम्यमानः सोमः † "कलशान्" द्रोणाभिधान् प्रति "अवाचिक्रदत्" अवक्रदति शब्दायते। ततः "ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "दोहनाः" दोग्धार ऋत्विजः "इमं" सोमम् "अभ्यनूषत" अभिष्टुवन्ति ["ग्रावाणो वत्सा ऋत्विजो दुहन्ति"—इति तैत्तिरीयक-ब्राह्मणे एषां दोग्धृत्व मभिहितम्] "त्रिपृष्ठः" त्रीणि सवनानि तान्येव पृष्ठानि यस्य स तथोक्तः ‡ [त्रिषु च सवनेषु सोमस्य विद्यमानत्वात्। त्रिवक्रादित्वादुत्तरपदान्तोदात्तत्वम्] हे सोम ! तादृशस्त्वम् "उषसः अधि" यागाहनि "विराजसि" ["अधिरीश्वरासाम्

* ऋ० वे० ७, २, ३१, ३।

† 'येमानः सूयमानः'—इति वि०।

‡ 'त्रिपृष्ठः त्रिस्थाने त्रिलोकावस्थानः; अथवा त्रिपृष्ठः ऋग्यजुःसामभिः; अथवा त्रिभिर्वेदैः; सवनैर्वा।'—इति वि०।

(१,४,४६)"—इति द्वितीया] तेष्वहस्सु विशेषेण दीप्यसे । यद्वा राजिरन्तर्णीतण्यर्थः ; अहानि प्रकाशयसि ॥

"येमाणः"-"येमान"—इति, "अभीकृतस्य"-"अभीमृतस्य" —इति, "विराजसि"-"विराजति"—इति पाठाः ॥ ३ ॥ १९

॥ कावम् * ॥ अभ्योवा । प्रियाणिपवताइ । चनोहा इता२ः । नामानियह्वोअधियाइ । युवह्वीता२इ । आ सूर्य्यस्यबृहतो । बृहन्नाधीर२३ । राथा२ँवाइस्वा । चमरु हा२३त् । वाइचा३वा५ऽणा६५६ः ॥(१) ऋतोवा । सृजि ह्वापवताइ ।• मधुप्राया२म् । वक्तापतिर्द्धियोअस्याः । अदाभाया२ः । दधातिपुत्रःपित्रोः । अपीचाया२३म् । नामा३तार्त्ती । यमधाइरो२३ । चाना३न्दा५ऽयिवा६५ ६ः ॥(२) अवोवा । द्युतानःकलशा९ । अचिक्रादा२ त् । नृभिर्य्येमाणकोशआ । हिरण्याया२इ । अभीकृ

° 'सारकावम्'—इति ख० पु० ।

Digitized by Google

तस्यदोहना: । अनूषातार२३ । आधीइचाइपा । उउभा
सो२३ । वाइराउजा५सा६५६इ (३) ॥ १२ * ॥ [१]

॥ ऐडकावम् ॥ ए५ । अभिप्रिया२ । णिपवताथि ।
ए५ । चनोहिता: । ए५ । नामानियार२ । यह्वोअधिया
यि । ए५ । युवर्द्धताथि । ए५ । आसूरियार२ । अवृ
हता: । ए५ । बृहन्नधी । ए५ । रथंविश्वार२ । चमरु
हात् । ए५ । विचक्षणा: ॥(१) ऋतस्यजार२यि: । ह्वा
पवताथि । ए५ । मधुप्रियाम् । ए५ । वक्तापतार२यि: ।
धियोअस्या: । ए५ । अदाभिया: । ए५ । दधातिपूर२त् ।
र:पित्रो: । ए५ । अपीचियाम् । ए५ । नामतृतार२
यि । यमधिरो । ए५ । चनन्दिवा: ॥(२) ए५ । अवद्यु

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १२सा० ।

२ ४ ५ ४ ४ ५ ४ ४
तार। नःकवआ०। ए५। अधिक्कदात्। ए५। नृभि

४र २ ४र ५ ४ ४ ५ ४ ४
र्य्येमार। यःक्रोमभा। ए५। हिरण्ययायि। ए५। अ

५ २ ४र ५ ४ ४ र ५ ४ ४
भिद्युतार। स्वदोहना। ए५। अनूषता। ए५। अ

५ २ ४ ५ ४ ४ र ५ ४
धित्रिपार। ष्टुतवसाः। ए५। विराजसायि। हो५

ई। डा(३)॥ २ *॥ [२]

५ १ ४र ५ ४ ५ २ १ २
॥ वैखानसम्॥ अभिप्रीऽयाणिपवतायि। चनोहि

१ २र २र २ १ २र ३ २ १ २ १
ताः। नामानियार२३। ह्वोअधियायि। युवार्द्धतायि।

२र २ २ १ ० १ २ ३ २ १
भासूरिया। स्वभृ२हतोर२३। वृहन्नधायि। रथांवि

१ २ २ २ १ २ ३ २ ५ २
घा। अमरुहा२३त्। विचक्षणा३४३ः॥(१) अतस्था३

४ ५र४ ५ २ १ २ १ २ ३र २ १ २ ३र
जिह्वापवतायि। मधूप्रियाम्। वक्तापता२३यिः। धियो

२ १ २ १ २ ३र २ १ ० १
अस्याः। अदाभियाः। दधातिपूत्। त्रःपा२यित्रो२३ः।

---

* ऊ० गा० ९प्र० १अ० १गा०।

१ २र २ २ १ २ १ १ २ १ २ १ १ २
अपोचियाम् । नामाह्वताायि । यमधिरो२३ । अनन्दि

२ ५ २ ४र५ ४ ५ २ १ २ १
वा३४३ः ॥(२) अवद्यू३तानःकलशान् । अचायिक्रदात् ।

१ १ २र १ २ २र २ १ २ १ १ २र २
नृभिर्य्येमार२३ । णःकोशआ । हिराण्ययायि । अभीऋ

१ ० १ १ २र २ १ २ १ २
ता । स्वदो२हनार२३ः । अनूषता । अधायित्रिपा । ष्ठ

३ २ १ २ २र २ १
उषसो२३ । विराजसा३४३यि । ओ२३४५ई ।

डा(३) ॥ १८* ॥ [३]

४ ३ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ अभाऽ५यिप्रि । या३णा३यिपव

५ १ २ २ २ २ २ २ १
तायि । चाऽनोहितोनामानियाह्वोअधियायि । षू३वा

२ २ १र १ २ २
ह्वा३तायि । आसू२र्यस्यबृहतोबृहन्न । धिरा२३याम् ।

१ २ २ १ २ २ १
ऊम्मायि । वा३यिश्वा । च । मद्द्वद्विचा२क्षणाउ ॥(१) पा

२ १ २ २ २ २ २
आ । तस्यजिह्वापवतेमधुप्रियंवक्तापतिर्द्धियोअस्याः । आ

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० १८गा० ।

१ २ २ १ १ र र
दाभा३याः। दधा२तिपुत्त्रःपित्रोरपीचि। यज्ञा२३

२ १ १ १ १ र १ २
मा। ऊम्मायि। ता३र्त्ता। यामधिरोचना२न्दिवाउ ॥(२)

१ २ १ र र र र र
वाचा। वद्युतानःकलशाँ ऽअचिक्रदन्नृभिर्य्येमाणःकोशआ।

२ १ २ १ १ १ र र र
वा३विरोष्या३यायि। अभी२ऋतस्यदोहनाअनूष। त

२ १ २ २ १ र २
आ२३धा। ऊम्मायि। वा३यिपा। ष्ठाउषसोविरा२ज

२ १ १ १ १
साउ। वा२३४५ (३) ॥ १५ * ॥ [४]

१ २ १ १
॥ वैधृतवासिष्ठम् ॥ अभिप्रियाणी२। प। वता२यि।

२ २ २ ५ १र१र २ १ १
चनोहा२३४यिताः। नामानियाह्वो२। अ। धियार

३ १ २ ५ २र१र २ १ १
यि। षुवह्वा२३४तायि। आसूरियास्या२। बृ। हतो

२१ २ ५ २ १ २ १ १
२। बृहन्ना२३४धायि। रथंविषाञ्चा२म्। अ। रुहा

२ ४ २ १
२३त्। विचा३क्षा५णाई ५ ईः ॥(१) ऋतस्यजायिह्वा२।

* ऊ० गा० १६प्र० १ख० १५गा०।

१ २ ३ १ २ ५ २ १र २ १
प। वतार्श्यि। मधुप्रा२३४याम्। वज्रापतायिवो२।
१ ३ २ २ ५ १ १र ११
यः। अस्थार:। मदाभार२३४याः। दधातिपूषा२ः।
१ ३ १ २ ५ १र १ २ १
पि। चोरः। अपायिचा२३४याम्। नामहतायिया२
१ २ ४ २
म्। अ। धिरो२३। चना३न्दा५यिवा६५६ः॥(२) च
१ १ २ १ २ ५
वद्युताना२ः। क। लशा८२। मधायिक्षा२३४दात्।
२ १र १ २ १ ३ २ २ ५
नृभिर्य्यमाणा२ः। को। श्रां२। हिरण्या२३४यायि।
२ १र २ १ २ १ २ २ २ ५ २
मभीकृतास्था२। दो। इना२ः। मनू षा२३४ता। म
१ २ १ १ २ ४
धित्रिपाष्ठो२ः। ङ। मसौ२३। विरा३जा५सा६५६
यि(३)॥१४*॥[५]

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य
पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

---

* ऋ० मा० १८प्र० १ख० १४मा०। † 'उत्त चार्भवः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ षष्ठे खण्डे,

प्रथमसूक्ते प्रगाथे—प्रथमा ।

१ १ २　　१ १ २ ३१　२　३ १ १
यज्ञायज्ञावोअग्नयेगिरागिराचदक्षसे ।
१ २३ २ ३ १ १ २　१ २　　३ १ ३ १　२र
प्रप्रवयमम्टतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशꣳसिषम॥१*॥

हे स्तोतारः! "वः" यूयं "यज्ञायज्ञा" यज्ञे यज्ञे सर्व्वेषु यागेषु "दक्षसे अग्नये" प्रवृद्धाग्नये "गिरा गिरा" स्तुतिरूपया वाचावाचा स्तोत्रं कुरुतेति शेषः। च शब्दो भिन्नक्रमो वः-इत्यस्मात् परो द्रष्टव्यः। यूयं "च" स्तोत्रं कुरुत। "वयम्" अपि "प्रप्रशंसिषम्" ["प्रसमुपोदः पादपूरणे (८, १, ६०)"—इति प्र-शब्दस्य द्विरुक्तिः पादपूरणार्था; व्यत्ययेनैकवचनम् (३, ४, ९८); छान्दसोलुक् (७, १, ३९)] प्रशंसाम कीदृशम्? "अमृतम्" मरणरहितं "जातवेदसम्" जातानां वेदितारं जातप्रज्ञं जातधनं वा "मित्रं न" सखिभूतमिव "प्रियम्" अनुकूलम्। यद्वा, व्यत्ययेन (३, ४, ९८) त्वमित्यस्य वसादेशः; अग्नय इति च कर्म्मणि चतुर्थी, "क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम्"—इति कर्म्मणः सम्प्रदानत्वात्; च-शब्दश्च चणिति निपातः, चेदर्थे वर्त्तते; दक्षस इति च दक्षेर्वृद्धिकर्म्मणः (भ्वा० आ०) अस-

* ऋ० आ० १, १, ४, १ (१ भा० १४७ पृ०) = ऋ० वे० ४, ८, १, १। 'अग्निर्वैश्वानरयार्ष अग्निः छोतदेवता'—इति वि०।

भावितव्यर्थाल्लिङि रूपम् ; चण्-योगात् "निपातैर्यद्यदिहन्त० (८, १, ३०)"—इति निघात-प्रतिषेधः । तथाय मर्थः—हे स्तोतः ! त्वं यज्ञे यज्ञे इम मग्निं गिरा गिरा स्तुत्या स्तुत्या च दक्षसे च वर्द्धयसि चेत् वयमपि अमृतत्वादिगुणकं तं प्रशंसामः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १र २र३ २ ३ १र २र३१र ३र ३ १ २
ऊर्ज्जोनपातꣳसहिनायमस्मयुर्द्दाशेमहव्यदातये ।
२ ३१ २ ३ १र २र३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
भुवद्वाजेष्ववितांभुवद्वृधउतत्रातातनूनाम् ॥२*॥२०†

"ऊर्जः" अन्नस्य बलस्य "नपातं" पुत्रं प्रशंसिष मित्यनुषङ्गात् प्रशंसामेत्यर्थः ‡ । "हिना" [—इति निपात-द्वय-समुदायो हीत्यस्यार्थे ¶] "सः" खलु "अयम्" अग्निः § "अस्मयुः" अस्मान् कामयमानो भवति । वयञ्च "हव्यदातये" हव्यानां हविषां देवेभ्यो दात्रे तस्मा अग्नये "दाशेम" हवींषि दद्याम ।

* ऋ० वे० ४, ८, १, २ । † 'अत्र अग्निष्टोम साम'—इति वि० ।

‡ 'ऊर्जः अन्नानि । न पातं, न शब्द उपमार्थीयः यथा, अन्नानि । पिबन्तं पालयन्तं भक्षयन्तं वा'—इति वि० ।

¶ 'हिनः, हिनो मनुष्यः ; हीनायुर्वा नष्टनिर्वी नष्टो वा'—इति वि० ।

§ 'अयं यजमानः'—इति वि० ।

Digitized by Google

तम् "उत" अपिच "तनूनाम्" तनयानां मस्मत्पुत्राणाञ्च* "त्राता" रक्षिता "भुवत्" भवतु ॥ २ ॥ २०

४ २ ४ २ ५ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ यज्ञाऽ५य। ज्ञा२वो३ग्नायाइ।
१ २ २ १ २ २ १ १
आइराइरा। चा३दा३क्षा३साइ। पग्नो२वयममृतम्।
२ २ १ २ २ १
जाता२३वा। ऊम्माइ। दा३साम्। प्रायन्मित्र९सुशा
३ २ १ २ १ २ १ २
२९सिषाउ ॥(१) प्रायाम्। माइत्राम्। सू३शा९सी
२ २ १२ १ २ २ १
३षाम्। ऊर्ज्जोनपा२त९सचि। नाया२३मा। ऊम्मा
२ २ १ २ ३ २ १ २ १
इ। स्मा३यूः। दाशेमहव्यदा२तयाउ ॥(२) दाशे। मा
२ १ २ २ १ २ १ २ २
हा। व्या३दाता३याइ। भुवद्वाजे२षवि। ताभू२३वा
१ २ २ १ २ २
त्। ऊम्माइ। वा३र्द्धाइ। ऊतत्रातातन्२नाउ। वा
१ १ १
३४५(३) ॥ १४ † ॥ [१]

२ २ २ २ २
॥ विश्वोविश्वीयम् ॥ यज्ञायज्ञाऽम्। वो३अग्नयायि।

* 'तनूनां शरीरिणाम्'—इति वि०।

† ऊ० गा० १प्र० १ख० १४गा०।

१र २ १ २ २ १ १ र
इराइरा। चा३दाश्वा३साथि। पप्रो२वयमम्नतम्। जा

२ १ २ २ १ ५
तार३वा। ऊम्नाथि। दा३सा३म्। प्रा२३४यꣳहाथि।

१ ११ २ ५ १ २
श्रो। ऊवाथि। मा२३४यित्वाम्। ऊम्माथि। सू३

२ १ ५र ५ २
श्रा३। सा२३४यिषाम्। एहियाई्हा॥(१) प्रियम्मित्रम्।

र २ १ २ २ १ र
इम्। सू३शꣳसिषाम्। ऊ३र्ज्जोना३पा। तꣳसहि। ना

२ १ २ २ १ र५
या२३मा। ऊम्माथि। स्वा३यू३ः। दा२३४म्रेहाथि।

१ ११ २ ५ १ २ २
श्रो। ऊवाथि। मा२३४हा। ऊम्माथि। व्या३दा३।

१ ५र ५ १रर र र
ता२३४याथि। एहियाई्हा॥(२) दाश्वेमहाऽम्। व्या३

५र १ २ २ १ र २ १
दातयाथि। भू३वाद्वा३जे। षवि। ताभू२३वात्। ऊ

२ १ १ ५ १ ११
म्माथि। वा३र्ज्जा३यि। ऊ२३४तहाथि। श्रो। ऊवा

३ ५ १ २ २
यि। चा२३४ता। ऊम्माथि। ता३नू३१२३४नाम्।

५र ५ ४
एहियाई्हा। हो५ई। डा(३)॥ ५ *॥ [२]

---

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ५सा०।

२र र र १ २

॥ वारवन्तीयोत्तरम्॥ यज्ञायज्ञाऔहोहायि। वो

३ ५ २र र १ १ १र

अग्ना२३४यायि। इराइराचदक्षासो२३४हायि। प्रप्रो

र र २ २र ४र ५ १ २ ५

वयममृतञ्जातवेदा३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

२ २ ५ २१ २ १ ० २ ३र

उऊवा२३४साम्। प्रियम्मि। त्रा७ंशुसा७ंसा३४। औ

४र ५ १ २ ५ ३र २ ५र

होवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४५। षाम्। ए

५ २ र र १ र २

हियाहा॥(१) प्रियम्मित्राऔहोहायि। सूश७ंसा२३४

५ २र १ ५ १र र २

यिषाम्। ऊर्ज्जोना२३४हा। पात७ंसहिनायमस्मा३४।

३र ४र ५ १ २ ५ २ २ ५ २र१र२

औहोवा। इहा२३४हायि। उऊवा२३४यः। दाशेम।

१ ० र २ ३र ४र ५ १ २ ५ ३र

हव्यदाता२३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औ

२ ५र ५ ३र र र र १

हो३१२३४। यायि। एहियाइहा॥(२) दाशेमहाऔहो

२ २ ५ २१ ५ १र

हायि। व्यादाता२३४यायि। भुवाद्दा२३४हा। जेष

र २ ३र ४र ५ १ २ ५ २ २

विताभुवद्दा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उऊवा

Digitized by Google

२३४द्वायि। उतत्वा। तातन्२३४। औहोवा। द्दा
२३४द्वायि। औहो३१२३४। नाम्। एहियाऽ६हा ३)

॥११*॥ [३]

॥ महावैश्वामित्रम्॥ हयायि। हया३। ओहाओ
हा। हयायि। हया३। ओहाओहा। हयायि। ह
या३। ओहाओहा। यज्ञायज्ञा। वोअग्नाया२यि।
दूराद्दूरा। चदक्षासा२यि। पप्रीवयममृतञ्जा। तवे
दासा२म्। प्रियम्मित्राम्। सुशꣳसायिषा२म्॥(१)
प्रियम्मित्राम्। सुशꣳसायिषा२म्। ऊर्ज्जः। नापा
२। नापा२। तꣳसहिना। यमस्मायू२ः। दाशेम
हा। व्यदाताया२यि॥(२) दाशेमहा। व्यदाताया२
यि। भुवत्। वाजा२यि। ष्वविता। भुवद्वार्द्धा२यि।

* ऊ० गा० १३प्र० १ख० ११म०।

उतन्वाता। तनूना२म्। उतनौ। तातनूना२म्।
हयायि। हया३। ओहाओहा। हयायि। हया३।
ओहाओहा। हयायि। हया३। ओहाओहा।
होऽइडा। होऽइडा। हो२३४५ई। डा(३)॥ २० *॥[४]

॥ दैर्घश्रवसम्॥ यज्ञायज्ञावो अग्नय ओहाओहा३ए।
इराइराचदक्षसे। ओ३हा। ओ३हा३ए३४। प्रप्रौ ३४
वयाम्। अमृतम्। जातावेदसाम्। ओ३हा।
ओ३हा३ए३४। प्रिया३४म्मित्रा३म्। सुशो२३४वा।
सा५यिषोऽहायि॥(१) प्रियाम्मित्रꣳसुशꣳसिषमोहाओ
हा३ए। ऊर्ज्जोनपा। ओ३हा। ओ३हा३ए३४। तꣳ
सा३४चिना। यामस्मयुः। ओ३हा। ओ३हा३ए३४।
दाशा३४यिमहा३। व्यदो२३४वा। ता५योऽहायि॥(२)

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० २०सा०।

१र र र र र १ १ र १ ५
दाशेमहव्यदातयओहाओहा३ए। भुवद्वाजायि। ओ
२ ५ २ २ २ २ २ २ १ १र ५
३हा। ओ३हा३ए३४। ध्रुवा३४विता। भुवद्वृधे। ओ
२ ५ २ २ १ १ २ २ १ ५
३हा। ओ३हा३ए३४। उता३४त्रूनाना३। नो२३४वा।
४ ५
नूऽपुनो६हायि(३)॥ २१ *॥ [५]

२र र र १ र १ २
॥ कण्वबृहत्॥ औहोयग्नायग्ना३ए। वोआग्ना१या
३र २ १ र २र र १ २
२३४यि। हाहोयि। आयिराइराचदक्षसे। पप्रीवा१
३र र ३ २ १ ५
या२३४म्। हाहो। सुग्ना३। सा२३४यिषाम्। उ
५ २र र २ १ २
हुवा६हाउ॥(१) औहोप्रियम्मित्रा३मे। सुग्रा९सा१यि
३र २ १ र २र १ २
षा२३४म्। हाहोयि। ऊर्ज्जोनपा। तऽसाहा१यिना
३र २ १ २ ३र १ १र
२३४। हाहोयि। यमास्मा१यू२३४ः। हाहोयि। दा
२ ३र २ ३ २ १
ग्नायिमा१हा२३४। हाहो। व्यदा३। ता२३४यायि।
५ ५ २र र र र १ १
उहुवा६हाउ। वा॥(२) औहोदाग्नेमहा३ए। व्यदा

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० ११सा०।

२   १र २   १ १र र   १ २
ता१या२३४यि । हाद्योयि । भूवद्वाजे । षुत्रा३ा१यिता

१र २   १ २   १र २   १
२३४ । हाद्योयि । भुवाद्वा१र्द्धा२३४यि । हाद्योयि । उ

२   १र २   २ २   ५
तान्ना१ता२३४ । हाहो । तनू३१२३४नाम् । उद्धवा६

५
हाउ । वा(३) ॥ ८* ॥ [६] २०

अथ तृचात्मक-द्वितीये सूक्ते†—प्रथमा ।

२ ३ १   १र   ३ १ २ ३ १   २ ३   १ २
एह्यू षुब्रवाणि तेग्न इत्थेतरा गिरः ।

३ १ २   ३ १ २
एभिर्वर्द्धास इन्दुभिः ॥ १ ‡ ॥

हे "अग्ने !" "एहि" आगच्छ "ते" तुभ्यं च तदर्थं "गिरः" स्तुतीः "इत्था" इत्थ मनेन प्रकारेण "सु ब्रवाणि" सुष्ठु ब्रवाणीत्याशास्यते । ताः स्तुतीः शृणिवत्यर्थः । "ऊ"—इत्येतत् पूरकम् । "इतराः" असुरैः कृताः स्तुतीः शृणिवति शेषः । तथा च ब्राह्मणम्—"अग्निरित्थेतरा गिर इत्यसुरा हि वा इतरा गिरः"—इति । अपिच आगतस्त्वम् "एभिः" एतैः इन्दुभिः सोमैः "वर्द्धसे" वर्द्धस्व ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० १ आ० ८गा० ।

† 'उक्तोऽग्निष्टोम इदानीं शुक्रोऽभिधीयते'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० १, १, १, ७ (१ भा० १०४ पृ०) = ऋ० वे० ४, ५, २४, १ । ऋ० शाकमश्वः । छ० गायत्री । एवमेवोत्तरत्र ।

अथ द्वितीया ।

१ २क २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यत्क्वचते मनो दक्षन्दधस उत्तरम् ।
१ ३ १ २
तत्रयोनिङ्कृणवसे ॥ २ * ॥

हे अग्ने ! "ते" तव "मनः" अनुग्रहात्मक मन्तःकरणं "यत्र" यस्मिन् देशे "क्वच" कस्मिंश्चिद् यजमाने वर्त्तते, "तत्र" तस्मिन् यजमाने वर्त्तमाने "उत्तरम्" उद्गततरं श्रेष्ठं "दक्षं" बलकर मन्नं वा "दधसे" धारयसि तथा "योनिं" स्थानं च "कृणवसे" तस्मिन् यजमाने करोषि ।

"तत्र योनिं"-"तत्रासदः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २र३ १ २ ३ १ २र ३
नहि ते पूर्त्तमक्षिपद्भुवन्नेमानाम्पते ।
३ २ १ २
अथादुवो वनवसे ॥ ३ † ॥ २१

हे अग्ने ! "ते" त्वदीयं "पूर्त्तं" पूरकं तेजः ‡ "अक्षिपत" अक्ष्णोः पातकं विनाशकं "न हि भुवत्" न भवतु सर्व्वदा

---

* ऋ० वे० ४, ५, २४, २ ।   † ऋ० वे० ४, ५, २४, ३ ।

‡ विवरणमये "पूतम्"—इति पाठः । अतएव 'पूतं पावनात्मकम्'—इति व्याख्यातम् ।

Digitized by Google

अस्माकं दर्शनसामर्थ्यं करोतु। हे "नेमानां पते" नेमशब्दो-ऽल्पवाची, मनुष्याणां मध्ये कतिपयानां यजमानानां * पते पालक! "अथ" अतः कारणात् "दुवः" [दुवस्यतिः परिचरण-कर्मा (निघ० ३, ५, ५)] अस्माभिर्यजमानैः कृतं परिचरणं "वनवसे" सम्भजस्व ॥ ३ ॥ २१

५र र १ ४ र ५ ५ १ र
॥ साकमश्वम् ॥ एह्यूषू३ब्रवाणा६इताइ। अग्नइत्थे

र १ २र १ २ १
तरागा२इराः। एभा२इर्वर्द्धा। सया२३हा३४३इ। दू२

५ ५ ५ २ ४ र ५ ५ १
३४ओ६हाइ। यत्रकूइवचतेमा६नाः। दधन्वसउत्मा

१ २ १र ० २ १
२राम्। तवा२यानाइम्। कृणा२३हा३४३इ। वा२३

५ ५ ५ २ ४र ५ ५ १ र
४सो६हाइ ॥(२) नहिताइपूर्त्तमक्षाइपात्। भुवन्ने

र र १ २ १ १
माना२ताइ। अथा२दुवाः। वना२३हा३४३इ। वा

५ ५
२३४सो६हाइ(३) ॥ १५ † ॥ [१]

५र र र र १ २ २
॥ साकमश्वम् ॥ एहियूषाओहोहायि। ब्रवाणा२

५ २ १ ५ १र र १ २र
३४यितायि। अग्नाआ२३४यिष्ठायि। थेतरागा३४। औ

---

* 'नेमानां अर्द्धो रक्षाम इन्द्रियाणां वा'—इति वि०।

† ऊ० गा० १प्र० १ अ० १५गा०।

Digitized by Google

४र ५ १ २ ५ २ २ ५ २र १ २
होवा । इहा२३४हायि । उञ्जवा२३४राः । एभिर्व ।
१ ७ २ २र ४र ५ १ २ ५ २र २
र्धसदिन्दू३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । औहो३१२
५र ५ २ र र १ २
३४ । भोः । एहियाह्वा ॥(१) यन्नकुवाऔहोहायि ।
२ ५ २ १ ५ १ २
वार्तायिमा२३४नाः । दहान्द्रा२३४हा । धसउता३४ ।
२र ४र ५ १ २ ५ २ २ ५ १ १
औहोवा । इहा२३४हायि । उञ्जवा२३४राम् । तत्
२र १ ७ २ २र ४र ५ १ २ ५
यो । नायिकृणवा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि ।
२र २ ५र ५ २ र र र
औहो३१२३४ । सायि । एहियाह्वा ॥(२) नहितेपूर्वो
१ २ २ ५ २ १ ५
होहायि । तामञ्चा२३४यिपात् । भुवान्ना२३४यिहायि ।
१र र २ २र ४र ५ १ २ ५ २ २
मानापा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उञ्जवा२३
५ २ १र १ १ ७ २ २र ४र ५ १ २
४तायि । मथाद्रु । वोवमचा३४ । औहोवा । इहा
५ २र २ ५र
२ ३ ४ हायि । औहो ३ १ २ ४ ५ । साई । एहियाह्
५
वा(३) ॥ १२ * ॥ [२] २१

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० ११गा० ।

अथ तृतीयसूक्ते, प्रगाथे—

प्रथमा ।

३ १ २ ३ १ २ २ ३उ ३ १ २ ३ १ २
वयमुत्वामपूर्व्यस्थूरन्नकच्चिद्भरन्तोवस्यवः ।

१ २ ३ १ २
वज्रिञ्चित्रꣳहवामहे ॥ १ * ॥

हे "अपूर्व्य" पिषु सवनेषु प्रादुर्भूतत्वादभिनव ! हे "वज्रिन्" वज्रवन्निन्द्र ! "भरन्तः" सोमलक्षणैरन्नैस्त्वां पोषयन्तः "वयम्" "चित्रं" चायनीयं विविधरूपं वा "त्वामु" त्वामेव "अवस्यवः रक्षणमात्मन इच्छन्तः सन्तः "हवामहे" आह्वयामः। तत्र दृष्टान्तः—"स्थूरं न" यथा भरन्तः ग्रीष्मादिभिस्तैहं पश्यन्तो जनानां स्थूरं स्थूलं गुणाधिकं "कच्चित्" कञ्चित् पुरुषं यथाह्वयन्ति तद्वत् ।

"वज्रिन्"-"वाजः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उपत्वाकर्मन्नूतयेसनोयुवोग्रश्चक्रामयोधृषत् ।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
त्वामिद्ध्यवितारंववृमहेसखायइन्द्रसानसिम् ॥ २ † ॥ २२

* ऋ० आ० ५, १, २, १ (१ भा० ८१० पृ०) = ऋ० वे० ६, २, १, १ ।
† ऋ० वे० ६, २, १, २ ।

प्रथमपादः प्रत्यक्षकृतः। हे "इन्द्र!" "कर्मन्" अग्निष्टोमादि कर्मणि * "ऊतये" रक्षणाय "त्वा" त्वाम् "उप" गच्छामः†। द्वितीयः पादः परोक्षकृतः। "यः" इन्द्रः "धृषत्" धृष्णोति शत्रूनभिभवति ["ञि धृषा प्रागल्भ्ये (स्वा० प०), "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शप्रत्ययः] "युवा" तरुणः "उग्रः" उद्गूर्णः स इन्द्रः "नः" अस्मान् प्रति "चक्राम" आगच्छतु; यद्वा, चक्राम अस्मानुत्साहयुक्तान् करोतु [क्रमतेः सर्गार्थे व्यत्ययेन परस्मैपदम्]॥ परोऽर्द्धर्चः प्रत्यक्षकृतः। "सखायः" समानख्याना बन्धुभूता वा वयं "सानसिं" ["वनषण सम्भक्तौ (भ्वा० प०] सम्भजनीयम् "अवितारं" सर्वस्य रक्षितारं "त्वामित्" त्वामेव "ववृमहे" वृणीमहे सम्भजामहे। "हि" प्रसिद्धौ [हि-प्रयोगादनिघातः (८, १, ३४)॥ २॥ २२

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ २र १
॥ सौभरम्॥ वया३मू३त्वामपूर्विंयोवा। स्थूरन्नक

७ १ ७ १ २ ५ १
चिद्भरा२न्ता३अवा२३। हो। स्या२३४वाः। वज्रिञ्चित्रम्।

ऽ २ १ २ ५र र ४ २
हवाऽहवा३ह। मा२हा२३४औहोवा॥(१) वज्रा२इन्द्रा३

४ ५र ४ ५ १ र र १ ७
इन्द्रंऽहवामहोवा। उपत्वाकर्मन्नूता२२याइसना २ ३ः।

१ २ ५ १ र ऽ २ १
होइ। यू२३४वा। उग्रश्चक्रा। मयोऽहा३इ। धार

* 'कर्मन्, कर्मणा यः सम्भजते तस्य सम्बोधनं हे कर्मन्'—इति वि०।

† 'उप, समीपे स्थिता'—इति वि०।

Digitized by Google

२ ५र र ५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १र
षा२३४औहोवा ॥(२) उग्रा३स्त्रा३क्रामयोधृषोवा । त्वा
१ १ २ ५ १ र
मिध्यविता२रांववा२३ । हो । मा२३४हाइ । सखाय
ऽ २ १ २ ५र र २ १ १
इ । द्रसा३हा३इ । ना२सा२ ३ ४ औहोवा । ऊ २ ३
१ १
४ ५(३) ॥ १६ * ॥ [१]

५ २ ४र ५ ४र ५ १र १ २ १
॥ कालेयम् ॥ वयमू३त्वामपूर्विया । स्थूरान्नकात् ।
२ १ २ १ ५ २ २ १
चिद्भरा२३ । ता३ः । ञ्चा२३४ । व । स्था३वाः । वज्रा
२ २ २ ५ ४ ५
यिच्चित्रौ । वा ३ ४ ३ ओ३४वा । हवा५महायि ॥(१) व
२ ४ ५ ४र ५ २ १ २र १ २र १
ज्रिच्चा३यिञ्च्रं हवामहायि । उपात्वाका । मनूता२३ ।
२ १ ५ २ २ १ २ २
या३यि । सा२३४ः । नः । यू३वा । उग्राश्वक्रौ । वा
२ ५ ४ ५ २ ४र ५ ४
३४३ओ३४वा । मयो५धषात् ॥(२) उग्रश्वा३क्रामयो
५ २ १ २ १ २ १ २ १
धृषात् । तुवामिद्धायि । अविता२३ । रा३म् । वा
५ २ २ १ २ २ २
२३४ । वृ । मा३हायि । सखायऔ । वा३४३ओ ३ ४
५ ४ ४
वा । द्रसा५नसायिम् । हो५इ । डा(३) ॥ १० † ॥[२]२२

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १६सा० । † ऊ० गा० २१प्र० १ख० १०सा० ।

Digitized by Google

अथ चतुर्थंदृचे—प्रथमा।

१ २क २र २ १ २ ३ १ २ १ १ २ १ १ २

अधाहीन्द्रगिर्वणउपत्वाकामइमहेससृग्महे।

१२ ३ १ २ ३ २ २

उदेवग्मन्तउदभिः॥ १ *॥

"अधाहि" सम्प्रति हि "त्वा" त्वां "कामे" काम मभिलषितमर्थम् "ईमहे"। यद्वा, "कामे" कामान् कमनीयान् स्तोमान् "उपससृग्महे" उपसृजामः त्वां प्रापयाम इत्यर्थः। तत्र दृष्टान्त माह—"उदेव" यथा उदकेन "ग्मन्तः" गच्छन्तः पुरुषाः "उदभिः" अञ्जलिनोत्क्षिप्योदकैः समीपस्थान् पुरुषान् क्रीडार्थं संसृजति तद्वदित्यर्थः॥

"कामईमहेससृग्महे"-"कामाग्महस्सउमहे"—इति च पाठाः। "उदेवग्मन्तः"-"उदेवयन्तः"—इति च पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २

वार्णत्वायव्याभिर्वर्द्धन्तिशूरब्रह्माणि।

३ १ २ ३ १ २

वावृध्वाꣳसञ्चिदद्रिवोदिवेदिवे॥२ †॥

* ऋ० आ० ४, १, १, ८(१ भा० ८२६ पृ०)= ऋ० वे० ६, ७, २, १।

† ऋ० वे० ६, ७, २, २।

हे "अद्रिवः" वज्रिन्! "शूर" इन्द्र! "वार्ण" यथोदक-मुदकस्थानं "यव्याभिः" नदीभिः ['अवनयः', 'यव्या'—इति (निघ० १,१३, १-२) नदीनामसु पाठात्] "वर्धन्ति" वर्धयन्ति, तथा "ब्रह्माणि" स्तोत्रैः* "वावृध्वांसं" "चित्" यथा निरुदकं देशं नदीभिः तथा न किन्तु प्रवृद्धमेव "त्वा" त्वां "दिवेदिवे" अन्वहं वर्धयन्ति स्तोतारः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ ३२ ३ १ २ ३ १ २
युञ्जन्तिहरीइषिरस्यगाथयोरौरथउरुयुगेवचोयुजा ।

३ १ २ ३ १ २
इन्द्रवाहास्वर्विदा ॥ ३ † ॥ २३ ‡

"इषिरस्य" गमनशीलस्येन्द्रस्य "उरुयुगे" महायुगे "उरौ" महति "रथे" "इन्द्रवाहा" इन्द्रस्य वाहनभूतौ "वचोयुजा" वचनमात्रेणैव युज्यमानौ "स्वर्विदा" स्वर्गस्य मिन्द्रस्य स्थानं जानन्तौ "हरी" एतन्नामकावश्वौ "गाथया"¶ स्तोत्रेण स्तोतारः "युञ्जन्ति" योजयन्ति ॥

---

* 'ब्रह्माणि धनानि, वेदिवचनवाणि वा, स्तोत्र-ब्रह्माणि कर्माणि वा'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, ७, २, ३ ।   ‡ "वत्स नामैषम्"—इति वि० ।

¶ 'गाथया, एकवचनं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, गाथाभिः'—इति वि० ।

"उरुयुगेवचोयुजाइन्द्रस्यवाहास्वर्विदा"-"इन्द्रवाहावचोयुजा" —इति पाठौ ॥ ३ ॥ २३

॥ नाम्नं धम ॥ अधाहीन्द्रगिर्वणा३ए। उपत्वाइका। मई२मार३४हाई। सह्मम्माहा। औहौहोर३४वा। ऊ२३४देहाइ। वम्मान्ताऊ। औहौहोर३४वा। हा२ ३४भोः। एहियाह्द्दा ॥(१) वार्णत्वायव्यामी३रे। वद्मी न्तौ३भू। रब्रा२ह्मा२३४णी। वावृध्वा॰सा। औहौहो २३४वा। चा२३४इदहाइ। द्रिवोदाइवा। औहौहो २३४वाइ। एहियाहा ॥(२) युञ्जन्तिहरीइषिराहर। स्य। गा। थ। या। उरौरा३याइ। उरुयू२३४ गाइ। वचोयूजा। औहौहोर३४वा। चा२३४इन्द्रहा इ। वाहावा। औहौहोर३४वा। वा २ ३ ४ इदा। एहियाह्द्दा। होऽ५इ। डा(३) ॥ १७ * ॥ [१]

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १७साम।

॥ द्यौतानम् ॥ हा३। ओ३हा३। ओ३हा३। हा यि। अधाह्यियार२यि। द्रुगिर्वा२३४णाः। उपत्वाका२। मईमा२३४हायि। सा३। हम्मा२३४हायि। उदेवग्मा २। तऊदा२३४भायिः॥(१) वार्णत्वा२। यवीया२३४ भौः। वर्द्धन्तिघ्नू२। रभ्राह्मा२३४णो। वा३। वृष्वा २३४९साम्। चिदद्रिषो२। दिवंदा२३४यिवायि॥(२) युञ्जन्तिहा२। रीआयिषा२३४यिरा। स्सगाथया२। उरौरा२३४थायि। उरुयुगे२। वचोयू२३४जा। इन्द्र वाहा२। सुवर्वा२३४यिदा। हा३। ओ३हा३। ओ ३हा३। हा३४। औहोवा। आओ३हो२३ ४५॥ ८ *॥ [२] २३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः †।

---

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० ८गा०।

† 'अग्निष्टोम उक्थ्योक्तः। षोडशी च ब्राह्मण-समाम्नायेन छन्द-समाम्नायेन चाम्नातः। इदानीं मतिरात्रो वक्तव्यः'—इति वि०।

Digitized by Google

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ १ ॥

॥ इत्युत्तरार्च्चिके प्रथमस्यार्द्ध-प्रपाठकः ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीरबुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे प्रथमोऽध्यायः* ॥

---

* मूले तमार्द्धप्रपाठकः समाप्तः, नतु प्रपाठकः ; विवरणग्रन्थेऽपि तथैव ।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्म्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥

तत्र,

पान्तमाव इति प्रथम-खण्डे—

तृचात्मके प्रथमे सूक्ते,

प्रथमा ।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
पान्तमावोअन्धसइन्द्रमभिप्रगायत ।
२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विश्वासाहꣳशतक्रतुम्मꣳहिष्ठञ्चर्षणीनाम् ॥ १* ॥

हे ऋत्विजः ! "वः" युष्मदीयं "अन्धसः" सोमलक्षणमन्नं "आ पान्तम्" आभिमुख्येन पिबन्तं [पा पाने (भ्वा० प०); छान्दसः शपोलुक् (२, ४, ७२); 'सर्वे विधयश्छन्दसि विकल्प्यन्ते'—इति "न लोकाव्यय (२, ३, ६५)"—इति षष्ठी-प्रतिषेधाभावः; ततोऽन्धस इत्यस्य "कर्त्तृकर्मणोः (२, ३,

* छ० आ० २, २, २, १ (१ भा० २५५ पृ०) = ऋ० वे० ६, ६, १५, १ ।

६५)"—इति षष्ठी। षष्ठी] सोम माभिमुख्येन पिबन्त मेतादृशम् "इन्द्रम्" "अभि प्रगायत" प्रकर्षेण अभिष्टुत। कीदृशम्? "विश्वासाहं" सर्वेषां शत्रूणामभिभवितारं सर्वेषां भूतजातानां वा, अतएव "शतक्रतुं" बहुविधप्रज्ञानं बहुविध-कर्माणं वा "चर्षणीनां" मनुष्याणां "मंहिष्ठं" धनस्य दातृतमम्। यद्वा, यजमानानां यष्टव्यत्वेन पूजनीय मिन्द्रं प्रगायतेत्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
पुरुहूतम्पुरुष्टुतङ्गाथान्याऽ२ऽ१सनश्रुतम्।
२ ३ १ २
इन्द्रइतिब्रवीतन॥ २*॥

हे ऋत्विग्यजमानाः! "पुरुहूतं" यज्ञेषु बहुभि राहूतं "पुरुष्टुतं" बहुभिः स्तोत्रशस्त्रादिभिः स्तुत मतएव "गाथान्यं" गानयोग्यं गातव्यं† "सनश्रुतं" सनातनया प्रसिद्धम्,‡ एवंविधं देवम् "इन्द्रइति" यूयं "ब्रवीतन" ब्रुवीध्वम् ['ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा० उ०)'—इत्यस्य लङि व्यत्ययेन (३, ४, ८८) ध्वमस्तनबादेशः, अतएव गुणः॥ २॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, १५, २।

† 'गाथानि स्तोत्र-शस्त्र मन्त्राणि, ताभिः नीयते यः स गाथान्यः तं गाथान्यम्'—इति वि०।

‡ 'सनशब्दः सदावाची, सदैव विश्रुतम्'—इति वि०।

अथ तृतीया।

१ २ १ २ ३१ २ ३ १र २र ३ १
इन्द्रइन्नोमहोनान्दातावाजानान्नृतुः।
२ १ २ ३ १ २
महाँ२॥अभिज्ञ्वायमत्॥ ३*॥ १

"इन्द्रइत्" पूर्वोक्तलक्षण इन्द्रएव "नः" अस्मभ्यं "महोनां" मघोनां धनवतां पश्वादि-लक्षण-धन-युक्तानां "वाजानाम्" अन्नानां "दाता" भवतु। कीदृशम्? "नृतुः" ["नृतिश्योःक्रूः"—इति क्रूप्रत्ययः, छत्वम्छान्दसः] सर्वस्य नर्त्तयिता†; यद्वा [नृ नये, (क्रमा० पा० प०) औणादिक-तु-प्रत्ययः, धातोऋत्वम्छान्दसः] स्तोतृभ्यो गवादिनेता; अतएव "महान्" स इन्द्रः "अभिज्ञु" अभिगत-जानुकम्‡ अस्मभ्यम् "आ यम त्" आयच्छतु ददातु¶। यद्वा स इन्द्रः अभिज्ञु अस्मदभिमुख मागच्छत धनं स्वहस्तयोः परिगृह्य अस्मान् नयतु,—धनं गृहीत्वा अस्मभ्यं ददात्वित्यर्थः॥

"मघोनाम्"-"महोनाम्"—इति पाठौ॥ ३॥ १

२ ४ २
॥वैतहव्यमोकोनिधनम्॥ पाऽ५न्तम्। आ३वो
४ ५ १र ७ २ ५ १
३अन्धसाः। आइन्द्रामभाइ। प्रगारयार२३४ना। विश्वा

---

* ऋ० वे० ६, ६, १५, २।

† 'नृतुः नृत्योचितः'—इति वि०।

‡ 'अभिज्ञु सर्वस्य ज्ञाता'—इति वि०।

¶ 'आयमत्—यमु बन्धने, सर्वं जगत् कर्मभवैः पाशैर्बध्नाति'—इति वि०।

२ ५ २ १ २ २ १ २ १ २
२सा२३४वाम् । आ३ताका३हूम् । म९हिष्ठच्चर्ष

१ २ ५२र २ र ४ २
णाइ । ना२मा२३४औहोवा ॥(१) पू५रूहू । ता३म्पू३

४ ५ १ र ७ २ ५ १र
रुहूताम् । पूरुहूताम् । पुरू२हू२३४ताम् । गाथा

२ ५ २ १ २ २ १ २ १ २ १
२ना२३४याम् । सा३नाश्रू३ताम् । आइन्द्रइतिब्र । वा

३ ५२र २ ४
इ । ता२ना२३४औहोवा ॥(२) आ५इन्द्रइत् । नो३

२ ४ ५ १ ३ ५ १र
मा३होनाम् । माइन्द्रइनो । मा२हो२३४नाम् । दा

२ ५ २ २ २ १ २र १ २ १र
ता२वा२३४जा । ना३१ना२र्त्तूः । माहा९अभिज्ञु । आ ।

२ ५२र २ १ १ १ १
या२मा२३४औहोवा । ओ३का२३४५ः ॥ १८* ॥ [१] १

अथ द्वितीयदृचे, प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रवइन्द्रायमादन९हर्यश्वायगायत ।

१ २ ३ १ २
सखायःसोमपाव्ने ॥ १† ॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १८साम ।

† छ० आ० १, २, २, १ (१आ० ३५८पृ०) = ऋ० वे० ५, ३, १५, १ ।

हे "सखायः" स्तोतारः! "वः" यूयं "हर्यश्वाय" हरिनामकाश्वोपेताय "सोमपाव्ने" सोमानां पात्रे "मादनं" मदकरं हर्षकरं स्तोत्रं प्रगायत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३ २उ ३ १ २
शꣳसेदुक्थꣳसुदानवउतद्युक्षंयथानरः ।
२ ३ १ २
चकृमासत्यराधसे ॥ २* ॥

"उत" अपि च हे स्तोतः! "सुदानवे" शोभन-दानाय "सत्यराधसे" सत्यधनायेन्द्राय† "उक्थं" स्तोमं,‡ "यथा नरः" अन्ये स्तोतारः¶ "द्युक्षं" दीप्तेः साधनभूतं स्तोत्रं शंसति, तद्वत् त्वमपि "शंस" उच्चारय। इदिति पूरणः§। वयमपि "चकृम" स्तोत्रं करवाम ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ५, ३, १५, २ ।

† 'सत्यराधसे—राधः अन्नं धनं वा, सत्यं वा। सत्यान्नाय, सत्यधनाय, सत्यस्वाय वा'—इति वि० ।

‡ 'उक्थं—उक्थानि सामानि, हे उद्गातः! गायस्व सामानि। अथवा उक्थं शस्त्रमुच्यते तच्छंस होतः! एकवचनं जात्यपेक्षम्, उक्थजातिं शंस।'—इति वि०।

¶ 'यथा नरः—यथा मनुष्याः। प्रथमैषा षष्ठीस्थाने द्रष्टव्या यथा मनुष्यस्य स्तुतिः क्रियते'—इति वि० ।

§ "अथ ये प्रवृत्तेऽर्थेऽमिताक्षरेषु ग्रन्थेषु वाक्य-पूरणा आगच्छन्ति पद-पूरणास्ते मिताक्षरेष्वनर्थकाः कमीमिद्विति"—इति निरु० नै० १, ९ ।

अथ तृतीया।

१ २ १२उ १ १ २
त्वन्न इन्द्र वाजयुस्त्वङ्गव्युःशतक्रतो।

१ १ ३ १२
त्वꣳ हिरण्ययुर्वसो॥ ३*॥ २†

हे "इन्द्र!" "त्वं" "नः" अस्माकं "वाजयुः" अन्नकामो भव। हे "शतक्रतो" बहुविध-कर्म्मवन्निन्द्र! ‡ "त्वं" "नः" अस्माकं "गव्युः" गोकामो भव। हे "वसो" वासयितरिन्द्र! त्वं "हिरण्ययुः" हिरण्यकामोऽपि भव। ["छन्दसि परेच्छायामपि दृश्यते (वा० ३, ३, ८)"—इति क्यच्॥ ३॥ २

१ ३२३ ५ १
॥ शात्यम्॥ प्रवइन्द्रा२। यमादा२३४नाम्। प्रवा

१ २ २ ३ ५ २ २
२इन्द्रा। औ३चो। या२३४मा। दा३नाम्। हरा

१ २ २ ३ ५ २ २
२अश्वा। औ३हो। या२३४गा। या३ता। सखा२

१ २ २ १ ५ ४ ५
यासो। औ३हो३। मायो२३४वा। आऽ५वोऽ६हा

१ ८ ३२३ ५ २
इ॥(१) शꣳसीदुक्था२म्। सुदाना२३४वाइ। शꣳसा

* ऋ० वे० ५, ३, १५, ३।

† 'गौरीवितेः तद्देवार्षम्'—इति वि०।

‡ 'शतक्रतो—बहुभिः क्रतुभिरिष्टवान् यः स शतक्रतुः। अथवा क्रतुरिति कर्म्मनाम प्रज्ञानाम वा, बहुकर्म्मा बहुप्रज्ञोवा'—इति वि०।

१ २ १ ३ ५ २ १
२इदुक्था। औ३होइ। ख२३४दा। ना३वाइ। उ

१ २ २ ३ ५ २ १ २
ता२युत्ता। औ३होइ। या२३४था। मा३राः। च

१ २ १ १ ५ ४ ५
क्रम। सा। औ३होइ। त्यारो२३४वा। धा५सो६हा

१ ३ १ २ ५ २ १
इ ॥(२) तुवन्नआ२इ। इवांजा२३४यूः। तुवा२न्नआ।

१ २ २ ५ १ २ १ २
औ३होइ। द्रा२३४वा। जा३यूः। तुवा२क्ष्व्यूः। औ

२ २ ५ २ १ १ २
३होइ। आ२३४न। क्रा३ताउ। तुवा२ऽहिरा। औ

२ १ ५ ४ ५
३होइ। त्यायो२३४वा। वा५सो६हाइ(३) ॥१८*॥[१]२

अथ तृतीयतृचे, प्रथमा।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तःसखायः।

१ २ ३ २ ३ १ २
कण्वाउक्थेभिर्जरन्ते ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र!" "त्वायन्तः" त्वामात्मनइच्छन्तः "सखायः" समानख्याना वयं "तदिदर्थाः" यद्विषयं स्तोत्रं तत्तदित्, तदेवार्थः

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १९सा०।

† छ० आ० २, २, २, २ (१भा० ८३० पृ०)=ऋ० वे० ५, ७, २०, १।

प्रयोजनं येषां ; तादृशाः सन्तः "त्वा" त्वां "जरामहे" स्तुमहे। "उ"—इति पूरणः। "कण्वाः" कण्वगोत्रोत्पन्नाः अस्मदीयाः पुत्रादयश्च "उक्थेभिः" उक्थैः शस्त्रैः "जरन्ते" त्वां स्तुवन्ति॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ १ २ १र २र ३ १ २ ३ ३ ३ १ २
नघेमन्यदापपनवज्रिन्नपसोनविष्टौ।
२उ ३र १ २
तवेदुस्तोमैश्चिकेत॥ २ *॥

हे "वज्रिन्" वज्रवन्निन्द्र! "अपसः" अपस्विनः कर्म्मवतः† "तव" सम्बन्धिनि‡ "नविष्टौ" अभिनवे यागे वर्त्तमानोऽहं "अन्यत्" त्वद्विषयादन्यत् स्तोत्रं "नघेम्"¶ नैव "आपपन" अभिष्टौमि [पनतेः स्तुतिकर्म्मणः (भ्वा० आ०) उत्तमे णलि रूपम्]; "तवेदु" तवैव "स्तोमैः"§ स्तोमं स्तोत्रं "चिकेत" अभि जानामि‖ त्वामेव सर्वदा स्तौमीत्यर्थः॥ २॥

---

* ऋ० वे० ५, ७, २०, २।

† "अपस्"—इति कर्मनामसु प्रथमं नैघण्टुकम् (२, १, १)।

‡ 'तव—षष्ठी वा द्वितीयार्थे द्रष्टव्या त्वां ० ० ० चिकेत'—इति वि०।

¶ 'अ, घ, ईम्'—इति त्रयोऽप्येते उपसर्गाः'—इति वि०।

§ 'स्तोमैः—क्रतुभिः'—इति वि०।

‖ 'चिकेत—चेतनां कुर्म्मः'—इति वि०।

अथ तृतीया।

२१ १३१ २ २ ३ १२ ३२
इच्छन्तिदेवाःसुन्वन्तन्नस्वप्नायस्पृहयन्ति।

१ २३१ ३११
यन्तिप्रमादमतन्द्राः॥ ३ * ॥ ३ †

"सुन्वन्तं" सोमाभिषवं कुर्वन्तं यजमानं "देवाः" इन्द्रादयः सर्वे "इच्छन्ति" रक्षितुम्, "स्वप्नाय न स्पृहयन्ति" स्वप्नावस्थामस्य सुन्वतो नेच्छन्ति सर्वदा प्रबुद्धमेव कुर्वन्तीत्यर्थः ["स्पृहेरीप्सितः (१, ४, ३६)"—इति कर्म्मणि चतुर्थी; स्पृहईप्सायां चुरादि रदन्तः]। यतएव मतः कारणात् "अतन्द्राः" अनलसा देवाः "प्रमादं" प्रकर्षेण मदकरं‡ तदीयं सोमं "यन्ति" शीघ्रं प्राप्नुवन्ति॥ ३॥ ३

५ २ ३२ ५ १२
॥ काण्वम्॥ वयमूऽत्त्वातदिदर्थाः। ऐहिहा२

१ २ २ २ २१ १ ३
इ। वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तःसखार३याः। कार

५ १ २१ ५ १
३४ण्वाः। ऊ। क्थाइ। भिऊर्जो२३४वा। रन्ता३या

१११ ५२२ ४२ ५ १२ १२
र३४५॥(१) नघेमाऽन्यदापपना। ऐहिहा२इ। नघे

* ऋ० वे० ५, ०, २०, ३।
† 'अथ काण्वं साम। कण्वस्यार्षम्'—इति वि०।
‡ 'प्रमादं—मदमोदनृप्तावित्यस्येदं रूपम्। प्रकर्षेण तप्यम्'—इति वि०।

Digitized by Google

२ २ ३१ २ ३ ५
मन्यदापपनवज्रिन्नपसोनवा२३इष्टाउ। ता२३४वेत्।

१ २ २२१ ५ ३२ १११ १
ऊ। स्तो। मैंखो२३४वा। वोता३या२३४५॥(२)

५ २ ४२२ ५ १२ १ २२
इच्छन्ता३इदेवाःसुन्वन्ताम्। ऐहिया२इ। इच्छन्तिदेवाः

२ २१ २ ३ ५ १ २
सुन्वन्तन्नस्वप्नायस्पृहया२३न्ती। या२३४न्ती। प्रा। मा।

२१ ५ २ ११११
दमो२३४वा। तन्द्रा३या२३४५(३)॥ २० *॥ [१] ३

अथ चतुर्थतृचे, प्रथमा।

१२ ३१२ ३१२ ३२ ३ १२
इन्द्रायमद्वनेसुतम्परिष्टोभन्तुनोगिरः।
३१२ ३ १२
अर्कमर्चन्तुकारवः॥ १ †॥

"मद्वने" [माद्यतेः (दि०, प०) क्वनिप्] मदनशीलाय "इन्द्राय" तदर्थं "सुतं" सोमं "नः" अस्मदीयाः "गिरः" स्तुतिलक्षणा वाचः परिष्टोभन्तु [स्तोभतिः स्तुतिकर्म्मा (निघ० ३, १४, ४)] सोमं स्तुवन्तु। ततः "कारवः" स्तुतिकारिणः स्तोतारश्च "अर्कं" सर्वैरर्चनीयं सोमम् "अर्चन्तु" पूजयन्तु॥ १॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० २० सा०।

† छ० आ० २, २, २, ४ (१भा० ३६२ पृ०)—ऋ० ७, ९, १८, ४।

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
यस्मिन्विश्वा अधिश्रियोरणन्तिसप्तसꣳसदः।

१ २ ३ १ २
इन्द्रꣳसुतेहवामहे॥ २ * ॥

"यस्मिन्" इन्द्रे "विश्वाः" सर्वाः "श्रियः" कान्तयः "अधि" अधिकं भवन्ति अतिशयेन तेजस्वीत्यर्थः†। किञ्च "सप्त" सप्तसङ्ख्याकाः "संसदः" सम्यग् यज्ञेषु कर्म्मकरणार्थं सीदन्तीति संसदो होत्रकाः‡ यस्मिन् "रणन्ति" सोमप्रदानार्थं रमन्ते; यद्वा यं शब्दयन्ति स्तुवन्ति तं पूर्वोक्तलक्षणम् "इन्द्रं" "सुते" सोमेऽभिषुते सति "हवामहे" वयं सोमपानायाह्वयामः॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिकद्रुकेषुचेतनन्देवासोयज्ञमत्नत।

१ २र ३ १ २
तमिद्वर्द्धन्तुनोगिरः॥ ३ ¶ ॥ ४ §

---

* ऋ० वे० ६, ६, १८, ५।

† 'अधिश्रियः—ये अधिश्रिताः मनुजाः'—इति वि०।

‡ 'सप्तसंसदः—सप्तर्त्विजः; यथ उद्गातारः, होता, मैत्रावरुणः, ब्राह्मणाच्छंसि, अच्छावाकः—एते ऋत्विजः'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, ६, १९, १।

§ 'अत्र श्रौतकक्षं साम'—इति वि०।

"देवासः" देवाः इन्द्रादयः "त्रिकद्रुकेषु" आभिप्लविकेष्वहःसु ज्योतिर्गौरायुरिति त्रिकद्रुकाः, * तेषु "चेतनं" [चिती सञ्ज्ञाने (भ्वा॰, प॰)] चेतन्ति जानन्ति अनेन स्वर्गादिकमिति चेतनो ज्ञानसाधनो यज्ञः तम् "अत्नत" अतन्वत स्वैः स्वैः कर्म्मभिः पालनैश्च विस्तारितवन्तः [तनु विस्तारे (तना॰, उ॰) लङि "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति विकरणस्य लुक्, "तनिपत्योश्छन्दसि (६, ४, ९९)"—इति उपधालोपः "तमित्" तमेव यज्ञं "नः" अस्माकं "गिरः" स्तुतिलक्षणा वाचः "वर्द्धन्तु" वर्द्धयन्तु ॥ ३ ॥ ४

१ र १ १ १र १ १र १ १
॥ शौतकक्षम् ॥ इन्द्रायमद्वनेसुतम्। इन्द्रायमोवा।
१ १ १ १ १र १ १ १
हा३नायिन्ह३ताम्। परिष्टो। भा२३। हा३हा३।
१ २ ५ १ १ १ १ १र
हुनो२गा२३४इरा:। आमर्का३। हा३हा। तुका
२ १ २ १र २ १ २ १
रा२३वा३४३: ॥(१) यस्मिन्विश्वाअधिश्रियः। यस्मिन्विश्वो

* ज्योतिर्गौरायुरितीति चतुर्थ-पञ्चम-षष्ठानां आभिप्लविकानां मध्ये नाम्नां प्रतीकमात्रम्। अस्ति गवामयनादिकं सत्रम्; तच, एकषष्ठ्युत्तरत्रिशतदिननिर्वर्त्यं भवति। तत्र, प्रायणीयोऽतिरात्रनाम प्रथमोऽहः, चतुर्विंशनाम द्वितीयोऽहः, उक्थनाम तृतीयम्, ज्योतिर्गौः चतुर्थोऽहः, आयुर्गौः पञ्चमोऽहः, आयुर्ज्योतिरितिनामकं षष्ठोऽहः, एतान्येव षडहानि आभिप्लविकान्युच्यन्ते; तेष्वेव शेषाण्यहानि चतुर्थादीनि त्रीणि त्रिकद्रुकाणीति।

Digitized by Google

वा । आ३धायिआ३याः । रणन्ति । सा२३ । हा३हा
३ । मासा२ँसा२३४दाः । आइन्द्र२ँसुते३ । हा३हा
यि । ववामा२३हा३४३यि ॥(२) त्वकद्रुकेषुचेतनम् * ।
ट†कद्रुकोवा । पू३वायिता३नाम् । देवासः । या२३ ।
हा३हा३ । मामा२त्ता२३४ता । तामिदर्ब्ब३ । हा३
हा । तुनोगा२३यिरा३४३ः । औ२३४५इ । डा (३)॥१‡॥[१]४

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य
प्रथमः ¶ खण्डः ॥ १ ॥

०, † "मि"—इति ख० पु० पाठः ।
‡ ऋ० मा० २म० १ख० १सा० ।
¶ 'उक्तः प्रथमपर्य्यायः'—इति वि० ।

अथ द्वितीयखण्डस्य*—

प्रथम-तृचे, प्रथमा ।

३१ २ ३ २ ३ १२३ १ २३ १ २
अयन्त इन्द्र सोमो निपूतो अधिबर्हिषि ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
एहीमस्य द्रवा पिब ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र!" "ते" तुभ्यं त्वदर्थम् "अयं सोमः" "बर्हिषि अधि" वेद्यामास्तीर्णे दर्भे "निपूतः" नितरां दशापवित्रेण शोधितः अभिषवादिसंस्कारैः संस्कृत इत्यर्थः । "ईम्" इदानीम् "अस्य" इमं सोमं प्रति "एहि" आगच्छ । आगत्य च यत्र रसात्मकः सोमो हूयते तं देशं "परिद्रव" शीघ्रं गच्छ, तदनन्तरं सोमं "पिब" ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २३ १ २ ३ १र २र ३ २
शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः ।
१ २ ३ १ २
आखण्डल प्र हूयसे ॥ २‡ ॥

"शाचिगो" [शाचयः शक्ता गावो यस्यासौ शाचिगुः; यद्वा, शच व्यक्तायां वाचि (भ्वा०,आ०), अस्मादौणादिक इञ् प्रत्ययः]

* 'इह मौं मध्यमोऽभिधीयते'—इति वि० ।

† उ० आ० २, १; १, ५ (१भा० ३६५पृ०)=ऋ० वे० ६, १, २४, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, १, २४, २ ।

Digitized by Google

आचयः अश्वाः प्रख्याता गावो रश्मयो वा यस्य तादृश ! * हे "आचिपूजन" [पूज्यतेऽनेनेति पूजनम्] स्तोत्रादि-प्रख्यात-पूजन ! † "ते" तव "रणाय" रमणाय सुखजननाय "अयं" सोमः "सुतः" अभिषुतः; अतः कारणात् हे "आखण्डल" अनूनामाखण्डयितः इन्द्र ! ‡ "प्रहूयसे" प्रकृष्टाभिः स्तुतिभि-राहूयसे। इत आगत्य इमं सोमं पिबेत्यर्थः॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
यस्ते शृङ्गवृषोणपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः।

१र ३ १र २र
न्यस्मिन्दध्र आमनः॥ ३ ¶॥ ५ §

हे "शृङ्गवृषोणपात्" [शृङ्गवृष्नामा कश्चित् ऋषिः तस्य चेन्द्रः स्वयमेव पुत्रतया जज्ञे—इत्याख्यायिका। नपादित्य-पत्यनाम] हे शृङ्गवृष-पुत्र ! [शृणन्ति हिंसन्तीति शृङ्गाणि-रश्मयः, तैर्वर्षतीति शृङ्गवृड़ादित्यः, तस्य न पातयितः स्वकीये
१ ऽवस्थानेऽवस्थापयितः ! । "सुबामन्त्रिते (२, १, २)"—इति षष्ठ्यन्तस्य पराङ्गवद्भावेनामन्त्रितानुप्रवेशात् समुदायस्याष्टमिकं

---

* 'अचीति कर्मनाम, कर्मणि प्रयुक्ता गावः प्रदीयन्ते यस्य असौ आचिगुः'—इति वि०।

† 'आचिपूजनः—कर्मणि पूज्यते आचिपूजनः'—इति वि०।

‡ 'आखण्डलः—इन्द्रस्य नामैतत्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, १, २४, ३।

§ 'अत्र देवोदासीर्द्वचनौ। देवोदासमतीने, चौर्द्वचनं सर्वे एकारे।' —इति वि०।

Digitized by Google

सर्वानुग्राहकत्वम् । ईदृश !] हे इन्द्र ! "ते" तव सम्बन्धि "प्रणपात्" प्रकर्षेण नपातयिता रक्षिता, "कुण्डपाय्यः" [कुण्डैः पीयते अस्मिन् सोम इति कुण्डपाय्यः क्रतुविशेषः । "क्रतौ कुण्डपाय्य-सञ्चाय्यौ (३, १, १३०)"—इति पिबतेरधिकरणे यत्-प्रत्ययो युगागमश्च निपात्यते—एतत्संज्ञो यः] क्रतुरस्ति ; "अस्मिन्" कुण्डपाय्य-क्रतौ "मनः" स्वान्तं "आ नि दध्रे" अभितो वर्त्तमानाः कुण्डपायिनामान ऋषयः पुरा निदधिरे सम्यक् त्वद्दैवत्यं क्रतुमनुष्ठितवन्त इत्यर्थः । [दधातेर्लिटि "इरयोरे (६, ४, ७६)"—इति रे-भावः* ॥ ३ ॥ ५

४ ३ ४ ३ ५ १
॥ रात्रिर्दैवोदासम् † ॥ अयन्तइन्द्रसो ऽ४मः । नार३

२५र ४ ५ ४ ५ १ र र २ १ २
४यि । पूतोअधिबर्हिषी । निपूतोअधिबर्हा २ ३ षिषी ।

र १ १ १र ३र ४
ऐहीयिमार३स्या । द्रवापार३४५यिबाई५६ ॥(१) आचि

र ३र ४ ५र ३ २ १ ५र र ४ ५
गोआचिपू । जना३ । आ२३४ । यन्तरणायतेसुताः ।

---

* अत्रैवं व्याचष्टे विवरणकार-माधवः—"यः" "ते" तव हे सोम ! "नपात्" न पिबति तस्य इव्या अन्न ; "प्रणपात्" प्रणिपत्य श्रद्धया पातव्यः । "कुण्डपाय्यः" यत्र कुण्डाकाराः कुण्डप्रतिरूपाः तैः पीयते कुण्डपाय्यः । अथवैतानीन्द्र-विशेषणानि । प्रकृत्याम् इव: प्रधानभूतो गौः, तादृश इन्द्रः ; तस्य यः प्रकर्षेण सोमपानं कल्पयति कुण्डाकारैश्चमसैरितरैश्च । नि अस्मिन् दध्रे, नि-शब्दो न-शब्दस्यार्थे द्रष्टव्यः ; न अस्मिन् यजमाने दध्रे धारयति इन्द्रः आत्मीयं मनः अनुपहाय ?"—इति ।

† 'रात्रीश्चदैवोदासम्'—इति अ० पु० पाठः ।

Digitized by Google

२१ र २१र २ र १ २ १र
अयꣳरणायतेह्व२३ता:। आखण्डा२३ला। प्रह्रया२३४५

३४र ५ ३२ १
सा६५६यि॥(२) यस्तेश्टङ्गवृषः। नपा३त्। प्रा२३४।

५र र ४५ १ र २१र २ १
णपात्कुण्डपायियाः। प्रणपात्कुण्डपाया२३याः। निय

२ १र २
स्मा २ ३ यिन्दा। धृश्मामा २ ३ ४ ५ ना ६ ५ ६:। ई २

५
३ ४ द्वा(३)॥२*॥ [१]

२१ २ १र २ १ २
॥ और्ध्वसद्मनम्॥ अयन्तइन्द्रसोमः। उवाद्दायि।

१रर १ रर
निपूतोअधिबर्हिष्युवा२३द्दोयि। निपूतोअधिबर्हिष्युवा२३

१ २र १ २ ३
द्दोयि। आयिद्दोमस्या। द्रावापा२३४५यिबा६५६॥(१)

१र १र १र २र १ १ १ र र
आचिगोआचिपूजन। उवाद्दायि। अयꣳरणायतेसुत

१ २ १ २ १
उवा२३द्दोयि। (वार२)। आखण्डला। प्राह्रया२३४५

१र २ र र १ २ १
सा६५६यि॥(२) यस्तेश्टङ्गवृषोणपात्। उवाद्दायि। प्रण

र र १ २ १
पात्कुण्डपाय्यउवा२३द्दोयि। (वार२)। नायस्मिन्दा।

* ऊ० गा० १प्र० २ख० २सा०

२, ३ १ १ २ १२ २ १ २ १
धाश्चामा२३४५नाद्६५६ः। सुवृक्तिभिर्नमादनम्भरे२षुवा
१६(३) ॥ ३ * ॥ [२] ५

अथ द्वितीयतृचे, प्रथमा।

१२ १२ २ १ २ ३ २ ३ १२ १२
आतून इन्द्र द्युमन्तञ्चित्रङ् ग्राभंसङ्गृभाय।
३ १२ १२
महाहस्तीदक्षिणेन॥ १ † ॥

हे "इन्द्र!" त्वं "महाहस्तो" महाहस्तवान्, तदानीमेव "नः" अस्मदर्थं "द्युमन्तं" शब्दवन्तं स्तुत्यमित्यर्थः। "चित्रं" चायनीयं "ग्राभं" ग्राहकं ग्रहणार्हं वा धनं "दक्षिणेन" हस्तेन "तु" क्षिप्रं "आ सङ्गृभाय" आभिमुख्येन सङ्गृहाण॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १२ १२ ३ २ ३ १ २ २ ३ १
विद्माहित्वातुविकूर्मिन्तुविदेष्णन्तुवीमघम्।
३ १२ १२
तुविमात्रमवोभिः॥ २‡ ॥

---

* ऊ० गा० १प्र० २ख० ३सा०।

† ऊ० आ० १, २, ३, ३ (१भा० ३०८ पृ०)=ऋ० वे० ६, ५, ३७, १।

‡ ऋ० वे० ६, ५, ३७, २।

Digitized by Google

हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "विद्म हि" जानीमः खलु। कीदृशम्?—इति, "तुविकूर्म्मिं" बहुकर्म्माणं, * "तुविदेष्णं" बहुप्रदेयं, † "तुविमघं" बहुधनं "तुविमात्रं" बहुप्रमाणम् "अवोभिः" रक्षणैर्युक्तम्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २र ३ १र २र ३ १ २
नहित्वाशूरदेवानमर्त्तासोदित्सन्तम्।
३ २उ ३ १ २
भीमन्नगांवारयन्ते॥ ३ ‡॥ ६¶

हे "शूर!" "दित्सन्तं" दातुमिच्छन्तं "त्वा" त्वां "देवाः" "न हि वारयन्ते" न निवारयन्ति खलु; तथा "मर्त्तासः" मनुष्या अपि न वारयन्ते "भीमं न गां" भयजनकं दृप्तं वृषभं यद्वत् प्रवृत्तमिव, तं यथा वारयितुं न शक्नुवन्ति तद्वत्॥ ३॥ ६

१र २ ३ १ २ १
॥ आकूपारम्§॥ आतूनइ। द्रत्तुमाउन्ताम्। चि

---

* 'तुविकूर्म्मिं' तुविशब्दो बहुवाची, कूर्म्मिशब्दो मनुष्यवाची कर्मवाची वा इति वि०। "तुवि"—इति निघण्टौ बहुनामसु द्वितीयं पदम् (३, १)। कूर्म्मिशब्दस्तु मनुष्यनामसु कर्मनामसु वा पठितो न दृश्यते।

† 'तुविदेष्णं'—देष्णं दानं बहुदानम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ५, ३७, ३।

¶ 'अथाकूपारं साम। आकूपाराङ्गिरसौ गोधा च आर्षम्'—इति वि०।

§ 'राज्ञ्याकूपारम्'—इति ख० पु० पाठः।

Digitized by Google

१ र १ २ १ र १
त्वङ्ग्राभꣳसङ्गृभा२या। चित्वङ्ग्राभꣳसम्। गृ। औ३

२ ३ ५ २र १ र र १
होयि। भा२३४या। ऐहोयि। महाहस्तीदत्ता२३हो

२र १ ३र ५ ४ ५
यि। औहो। वाहो२३४वा। णा५यिनो६हायि॥(१)

२ १र र २ २ १र र १
विद्माहित्वातुवि। कू३र्मीम्। तुविदेष्णन्तुवीमा२घाम्।

२ १ र २ २ ३ ५
तुविदेष्णन्तु। वा। औ३होयि। मा२३४घाम्। ऐ

१ र १ २र १ ३र
होयि। तुविमात्रमा२३होयि। औहो। वाहो२३

५ ४ ५ १ र र २
४वा। वो५भो६हायि॥(२) नहित्वाशूर। दा३यि

२ १ र र १ र २
वाः। नमर्त्तासोदित्सा२न्ताम्। नमर्त्तासः। दा। औ

२ ३ ५ २र १ र र २
३होयि। त्सा२३४न्ताम्। ऐहोयि। भीमन्नगांवारा२

१ २र १ ३र ५ ४
३होयि। औहो। वाहो२३४वा। या५न्तो६

५
हायि(३)॥ ४ *॥ [१] ६

---

* ऊ० गा० १प्र० २ख० ४सा०।

अथ तृतीयतृचे, प्रथमा।

२ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २
अभित्वावृषभासुतेसुतꣳसृजामिपीतये।
२ १ २ ३ १ २
तृम्पाव्यश्नुहीमदम्॥ १ * ॥

हे "वृषभ" हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "सुते" सोमेऽभिषुते सति "सुतम्" अभिषुतं सोमं "पीतये" पानाय "अभिसृजामि"। "तृम्प" तृप्य। "मदं" मदकरं सोमं "व्यश्नुहि" च॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३१ २ ३ २ ३ १ ३ २ २ ३ १ २
मात्वामूराअविष्यवोमोपहस्वानआदभन्।
१ २ ३ १ २
माकींब्रह्मद्विषंवनः॥ २ † ॥

हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "मूराः" मूर्खा मूढाः, मनुष्याणाम‡ "अविष्यवः पालनकामाः "मा दभन्" मा हिंसन्तु। "उपहस्वानः" उपहसनपराश्च "मा" भवन्तु। "ब्रह्मद्विषं" ब्राह्मणानां द्वेष्टारं "मा कीं वनः" मा भजेथाः ¶॥

"ब्रह्मद्विषं"-"ब्रह्मद्विषः"—इति पाठौ॥ २ ॥

---

* छ० आ० १, २, २, ७ (१भा० ३३८ पृ०)=ऋ० वे० ६, ३, ४६, १।

† ऋ० वे० ६, ३, ४६, २। ‡ आत्मपरिवारमात्राणामिति भावः।

¶ 'वनः—यद्यपि वनतिः स्तुति-कर्मा तथाप्यत्र सम्भजने द्रष्टव्यः; मा यष्टेन सम्भज्यताम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

२ १ २ १ २   २ १ २   २ १ २
इहत्वागोपरीणसम्महेमन्दन्तुराधसे ।
१ २ ३ १२ २२
सरोगौरोयथापिब ॥ ३ * ॥ ७ †

हे इन्द्र ! "त्वा" त्वाम् "इह" अस्मिन् यज्ञे "गोपरीणसं" गव्येन पयसा सम्मिश्रं सोमं ‡ "महे" महते "राधसे" धनाय ¶ "मन्दन्तु" मनुष्या मादयन्तु । त्वञ्च सोमं "यथा" "गौरः" मृगः "सरः" § पिबति, तथा "पिब" ‖ ॥

"परीणसं"-"परीणसा"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ७

२ १ २२   २ १२   २   १ २
॥ आर्षभम् ॥ अभित्वावृषभासुते । सुतꣳसृजामीपा ।
२ १   १ २२   १२   २.   १
मिपीतायारयि । सुतꣳसृजामि । पीता२३यायि । त्वा

* ऋ० वे० ६, ३, ४६, ४ । † 'अथ आर्षभं साम'—इति वि० ।

‡ 'गोपरीणसम्—गावः परि समन्तात् नीयन्ते दक्षिणा यस्य स गोपरीणस इन्द्रः'—इति वि० ।

¶ राधसे—राधः अन्नं सोमलक्षणं तस्मिन् सन्निधानभूते सोमे—इति वि० ।

§ 'सरः सरणं कृत्वा'—इति वि० । "सरः"—इति निघण्टौ उदकनामसु षड्‌विंशतमं पदम् (१, १२) ।

‖ 'गौरः यथापिब—तथाच ब्राह्मणे—"गौरमृगो ह स्म भक्ष्या अरण्यादाकाशं पिबति"—इति'—इति वि० ।

Digitized by Google

१ १ १ ५ र १ र १ २ १ १ १ १
२३म्याइ। वा२या२३४ औहोवा। श्रुधीमदा२३४५म्॥(१)
१र र २र१र २ १ २र १ २ र १
माल्वामूराअविष्यवः। मोपह्वस्वोवा। नआदाभा२न्।
१र २ १ १र १र २ १ २ १
मोपह्वस्वानः। आदा२३भान्। मा२३कौ३म्। आ२
३ ५र र २ १२११११ २ १ २र१र १र
ह्वा२३४औहोवा। द्विषवना२३४५ः॥(२) इहत्वागोपरो
र १ २ र १ १र २
णसम्। महेमन्दोवा। तुराधासा२यि। महेमन्दन्तु।
१र २ १ २ १ ३ ५र र
राधा२३सायि। सा२३रा३ः। गौ२रा२३४औहोवा।
२ र १ २ १ १ १ १
यथापिबा२३४५(३)॥ ५ *॥ [१] ७

अथ चतुर्थखण्डे—प्रथमा।

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इदंवसोसुतमन्धःपिबासुपूर्णमुदरम्।
१ २ ३ १ २
अनाभयिन्नरिमाते॥ १ †॥

हे "वसो" वासयितरिन्द्र! "इदं" पुरोवर्त्तमानं "सुतम्" अभिषुतम् "अन्धः" अन्नं सोमलक्षणं "पिब"। यथा—"उदरं"

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ५सा०।

† छ० आ० २,१,२,१० (१आ० २०५ पृ०)=ऋ० वे० ५,०,१०,१।

"त्वदीयं" जठरं "सुपूर्णम्" अतिशयेन सम्पूर्णं भवति तथे-त्यर्थः। हे "अनाभयिन्" [आ समन्तात् बिभेति—इत्याभयी; बिभेतेरौणादिक इनिः; न आभयी अनाभयी तादृश!] हे इन्द्र! "ते" तुभ्यं त्वदर्थं "रयिम्" उज्ज्वलवर्णं सोमं दधुः [दाधाने (जुहो०, प०) छान्दसो (३,२,१०५) लिट्॥१॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ २ २ २ ३ १ १
नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्यावारैः परिपूतः।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
अश्वो न निक्तो नदीषु॥२*॥

"नृभिः" अध्वरस्य नेतृभिः ऋत्विग्भिः "धौतः" तृणाद्य-पनयनेन शोधितः [यद्वा; धौतः धूतः आधूतः, अदाभ्यग्रहे†-आधूननेन संस्कृतः, तदनन्तरम् "अश्नैः" अश्मभिर्ग्रावभिः करण-भूतैः "सुतः" अध्वर्युभिष्टुतः ततः "अव्यावारैः" अविमेषः

* ऋ० वे० ५, ७, १७, २।

† ग्रहः=गृहीतसोमं सोमपानपात्रम्। ते च प्रातःसवने उपांश्वादयः, माध्यन्दिने सवने मरुत्वतीयादयः, तृतीयसवने त्वादित्यादयः। किञ्चैतदतिरिक्ताः षोडश्यादि-यागविशेषे नियुक्ताश्च सन्ति ग्रहाः षोडशीत्यादयः। तत्सर्वातिरिक्त एकोऽदाभ्यनामकः; स च खदिरौदुम्बरे पात्रे अंशुमद्गृहीतव्यः सोमपानसंख्या निग्राभ्यास्वप्स्वाप्य चानीय तस्मिंस्त्रिः सोमलताः प्रक्षिप्याग्नये त्वादिभिस्त्रिभि र्मन्त्रैः क्रमेण गृह्यते विहितञ्चैतत् कात्यायनेन "अदाभ्यं गृह्णात्याधिषव निग्राभ्याः पात्रे तस्मिंस्तूष्णीं त्रीनंशूनवधायाग्नये त्वा गायत्रच्छन्दसमिति (श० ब्रा० ८, ४७) प्रतिमन्त्र मुपयामः सर्वत्राविशेषात् (१२, ५, १२-१५)"—इति।

Digitized by Google

तत्सम्बन्धिभिः वालैः "परिपूतः" शोधितः, दशापवित्रस्य नाभि-पूततया अर्णास्तुकया हि सोमः परिपूयते ; तदुक्तम् भगवता आपस्तम्बेन—"शुक्लामूर्णास्तुकां यजमानाय प्रयच्छति तां प्रकटे दशापवित्रस्य नाभिं कुरुते शुक्लस्य लक्ष्माः पवित्र मोतं भवति"—इति *। "नदीषु" नदनाशब्दस्तु † "अश्वोन" अश्व इव "निक्तः" निर्णिक्तः शोधितः ‡ ; यथा अप्सु स्नातो अश्वः अपगतमलः सन् दीप्तो भवति, एवं वसतीवर्याख्याभिरद्भिरभि-षुतः सोमो दीप्तो भवतीत्यर्थः । ईदृशो यः सोमः "तन्तेयवम्"—इत्युत्तरया सम्बन्धः ॥

"धौतः"-"धूतः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ ३ २३ १ २ १ २ ३ १२ ३ १ २
तन्तेयवंयथागोभिःस्वादुमकर्मश्रीणन्तः ।
१ २३ १ २ ३१ २
इन्द्रत्वास्मिन्त्सधमादे ॥ ३ ¶ ॥ ८ §

"तं" पूर्वोक्तगुणं सोमं हे इन्द्र ! "ते" त्वदर्थं "यवं यथा" यवमयं सवनीय-पुरोडाशमिव "गोभिः" गवि भवैः क्षीरादिभिः

---

* अष्टमेतत् समस्तं यजुर्वेदसम्बन्धि-संहितायां सप्तमाध्यायचतुष्टये ।

† 'नदीष—वञ्चिकरबभूताद'—इति वि० ।

‡ 'निक्तः—स्नातः'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ५, ७, १७, ३ ।　　　§ 'यत गारंगाल'—इति वि० ।

अपत्यद्रव्यैः "श्रीणन्तः" मिश्रीकुर्वन्तः "स्वादु" रसवत्त्वेनास्वादनीयम् "अकर्म्म" अकार्ष्म * [करोतेर्लुङि "मन्त्रे घस (२,४,८०)"—इति च्लेर्लुक्] । यस्मादेवं तस्मात् हे "इन्द्र!" "त्वा" त्वां तादृशं सोमं पातुम् "अस्मिन्" वर्त्तमाने "सधमादे" सहमादने यज्ञे आह्वयामीति शेषः॥ ३॥ ८

१ २ १ २ २ १
॥ गारम्॥ इदंवसोसुतमन्धा३ए। पिबासुपू३र्णा
० १२ १ १ २ २ ० १२ १ १
मुदरौ। हो३वा। पिबासुपूर्णामुदरौ। हो३वा। आ
२ २ १ १२ १ २ ४ ५ २ २
नाभा३यीन्। ररिमाता। औ३होवा॥(१) नृभिर्धौ
२ २ २ २ २ ३ १ ७२ १२ २
तःसुतोअश्ना३यिरे। अव्यावारै३ःपारिपूतौ। हो३वा।
१ २ २ २ ७ २ १२ २ १ १ २ १२
अव्यावारैःपारिपूतौ। हो३वा। अश्वोना३नौ। क्तो
१२ १ १ ४ ५ १ २ २ २ २ २
नदीषू। औ३होवा॥(२) तन्तेवयंयथागोभी३रे। स्वा
१ ७२ १२ २ १२ ७२ १२
दुमका३र्मा श्रीणान्तौ। हो३वा। स्वादुमकर्मा श्रीणान्तौ।

---

* 'वयं यथा गोभिः स्वादुम् अकर्म्म इतवन्तः। गोभि रिति तृतीया-बहुवचनं चतुर्थी-बहुवचनस्य स्थाने दृष्टव्यम्। गोभ्यः वयं यथा, गोभ्यः स्वादुमाघासयति तद्वत् तथापि सोमम् अकर्म्म करवाम। श्रीणन्तः मोचयन्तः, अथवा...।'—इति वि०।

२ १ २ १ १ २र १ २ ४
होऽवा। आइन्द्रात्वाऽस्मीन्। सधमादा। औऽहो

१ ४
वा। होऽ५ई। डा॥६*॥[१]८

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य

द्वितीयः खण्डः॥२॥

अथ तृतीय-खण्डे—

प्रथमतृचे, प्रथमा।

२ १र २र ३ १ २
इदꣳह्यन्वोजसासुतꣳराधानाम्पते।

२ ३ २ १ २
पिबात्वाऽ३स्यगिर्वणः॥१†॥

हे "राधानां पते" धनानां स्वामिन्! "गिर्वणः" गीर्भिः स्तुतिभिः वननीय! हे इन्द्र! "ओजसा" बलेनावहितः त्वम् "इदम् अनु" अनेनानुक्रमेण उद्देशानुक्रमेणेत्यर्थः; "सुतम्" अभिषुतम् "अस्य" इमं सोमं "नु" क्षिप्रं "पिबहि"॥१॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ६सा०।

† छ० आ० २, २, ३, १ (१भा० २०१पृ०)=ऋ० वे० ३, ३, १६, ५।

अथ द्वितीया।

१ २ १ २ ३ १२ १२ ३ १२ १२ ३क २२
यस्तेअनुस्वधामसत्सुतेनियच्छतन्वम्।
१ २
सत्वाममत्तुसोम्य* ॥ २ † ॥

हे इन्द्र! "ते" त्वदर्थं "यः" सोमः "स्वधाम्" अन्नम् "अनु" लक्ष्य ग्रावभिः अभिषुतः "असत्" भवेत् [अस्तेर्लेटाडागमः। यद्वृत्तयोगान्न निघातः (८,१,६६), आगमस्यानुदात्तत्वे धातुस्वरः (६,१,१६२)]। "सुते" तस्मिन् सोमे "तन्व" ‡ स्वकीयं शरीरं "नियच्छ" प्रेरय "सः" सोमः हे "सोम्य" सोमार्ह ¶! "त्वा" त्वां "ममत्तु" मादयतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १उ २ १ २ ३ १ २
प्रतेअश्नोतुकुक्ष्योःप्रेन्द्रब्रह्मणाशिरः।
२ ३ १ २ ३ १
प्रबाहूशूरराधसा ॥ ३ § ॥ ९ ‖

---

* "सोम्यम्"—इति ऋ-पाठः। † ऋ० वे० १, ७, १६, ६।

‡ "अन्येषामपि दृश्यते (६, ३, १३७)"—इति सूत्रेण "तन्वादीनां छन्दसि बहुलम्" —इति वार्त्तिकवचनेनोवङोवैकल्पिकत्वं बोध्यम्।

¶ "सोम्य—सोमानां स्वामिन् पते!"—इति वि०। "सोममर्हति यः (४, ४, १३७)"—छान्दसो यो ऽत्र सामर्थ्यमते प्रयुज्यते।

§ ऋ० वे० २, ३. १६, ७।

‖ 'अत्र अमयाप्रिधनं साम'—इति वि०।

हे "इन्द्र !" "सः" सोमः "ते" तव "कुक्ष्योः" कुक्ष्योरुभयोः पार्श्वयोः "प्राप्नोतु" प्रकर्षेण व्याप्नोतु [अशू व्याप्तौ विल्व्यस्य (स्वा०,आ०) लोटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् (३,१,८५) निघातः (८,१,७०)] तथा "ब्रह्मणा" स्तोत्रेण सहितः * स सोमः "शिरः" शरीरम् [अवयविना अवयवो लक्ष्यते] त्वच्छरीरं प्राप्नोतु। हे "शूर" विक्रान्तेन्द्र ! "राधसा" धनेन निमित्तेन तव "बाहू" अपि प्राप्नोतु॥

"राधसा"–"राधसः"—इति पाठौ॥ ३॥ ९

॥ घृतश्चुन्निधनम्॥ इ॒दᳫं॒ह्यन्वो॒३जसा। सुतᳫं राधा। नाम्पातौ। होवा३हायि। पिबातुव। स्युगा यिर्वाणौ। होवा३हायि। पिबातुवौ। होवा३हा। स्युगायिः। वा२ना२३४औहोवा॥(१) यस्ते अनुस्वा३धा मसात्। सुतायिनिय। च्छतानुवमौ। होवा३हायि।

* 'ब्रह्मणा अन्नेन, शिरः; अथवा ब्रह्मणा वैविध्यधनेन शिरः। ०.०.०। बाहू०.०.०। प्राप्नोतु०.०.०। एतदुक्तं भवति समस्तात् मद्दीयेन अन्नेन'—इति वि०।

१ २ १ १२ २ २ १ १२
सत्वामम। तुसोमायौ। होवा३हायि। सत्वाममौ।

२ २ १२ ३ ५र र १ र
होवा३हा। तुसो। मा२या२३४औहोवा ॥(२) प्रतेअ

र २ १ २ १ १२ र
श्नोत्व३कुक्षियोः। प्रायिन्द्रब्र। ह्मणाआयिरौ। होवा

२ १ २ १ १२ र २
३हायि। प्रवाअष्ठ। रराधासौ। होवा३हायि। प्र

१ १२ र २ १२ ३ ५र र
वाअऔ। होवा३हा। ररा। धा२सा२३४औहोवा।

२ १ ३ १ १ १ १
घृतश्चु२ता२३४५ः(३) ॥ ७ * ॥ [१] ९

अथ द्वितीय-तृचे, प्रथमा।

२उ ३ १ १२ ३१ २ ३ १र १र
आत्वेतानिषीदतेन्द्रमभिप्रगायत।

१ २ ३ १ २
सखायस्तोमवाहसः ॥ १ † ॥

"तु"[-शब्दः क्षिप्रार्थो निपातः, ताभ्यां माङ्भ्याम् एतमिति शब्दोऽध्याहरणीयः]। हे "सखायः" ऋत्विजः! क्षिप्रम् अस्मिन्

---

* ऊ० गा० १प्र० २अ० ७गा०।

† छ० आ० २, २, २, १० (१भा० ३७२ पृ०)=ऋ० वे० १, १, १९, १।

Digitized by Google

कर्मणि आगच्छत आगच्छत [आदरार्थोऽभ्यासः]। आगत्य च "निषीदत" उपविशत। उपविश्य च "इन्द्रम्" "अभिप्रगायत" सर्वतः प्रकर्षेण स्तुत। कीदृशाः सखायः? "स्तोमवाहसः" त्रिवृत्पञ्चदशादिस्तोमानस्मिन् कर्मणि वहन्ति प्रापयन्तीति॥ ["अर्त्ति-स्तु-सु-हु-सृ धृ-क्षि-क्षु-भा-या-वा-पदि-यक्षि-नीभ्यो मन् (उ०,१,१३७)"—इति स्तौतेर्मन्-प्रत्ययान्तः स्तोमशब्दो नित्वादाद्युदात्तः (६,१,१९७)। स्तोमं वहन्तीति स्तोमवाहसः "वहि-हा-धाञ्-भ्यश्छन्दसि"–इत्यसुन् प्रत्ययः, तत्र णिदित्यनुवृत्तेः "अत उपधायाः (७,२,११६)"-इत्युपधाया वृद्धिः; कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वे (६, २, १३९) प्राप्ते "गतिकारकयोरपि पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (उ०, ४, २२६)"—इत्यौणादिकसूत्रात् समासस्याद्युदात्तः॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
पुरूतमम्पुरूणामीशानं वार्य्याणाम्।

१ २ ३ १ १ २ १ २
इन्द्रꣳसोमेसचासुते॥ २ *॥

सखायोऽभिप्रगायतेति पदद्वयमत्रानुवर्त्तते। हे "सखायः" ऋत्विजः! "सचा" यूयं सर्वे सह यद्वा सचा परस्परसमवायेन

* ऋ० वे० १, १, १९, २।

"सुते" अभिषुते सोमे प्रवृत्ते सति "इन्द्रम्" अभिप्रगायत। कीदृशमिन्द्रम्? "पुरूतमं" पुरून् बहुन् शत्रून् तामयति ग्लापयतीति पुरूतमः [तमु ग्लानौ (दि०,प०)—इति धातोरन्य-न्तात् पचाद्यचि चित्वादन्तोदात्तेऽपि (६, १, १६३) कृदुत्तरपद-प्रकृतिस्वरं (६, २, १३) बाधित्वा "परादिश्छन्दसि बहुलम्* (६, २, १९९)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्], "पुरूणां" बहूनां "वार्याणां" वरणीयानां धनानाम्† "ईशानं" स्वामिनम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ २ २ ३ २ १ २ २ ३ १ २ ३ २
सघानोयोगआभुवत्सरायेसपुरन्ध्या।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
गमद्वाजेभिरासनः ॥ ३ ‡ ॥ १० ¶

घ-शब्दोऽवधारणार्थो निपातः,§ सर्वैस्तच्छब्दैः सम्बध्यते। "स घ" स एवेन्द्रः पूर्वमन्त्रोक्तगुणविशिष्टः "नः" अस्माकं‖ "योगे" पूर्वमप्राप्तपुरुषार्थस्य सम्बन्धे** "आ भुवत्" आभिमुख्येन

* अनेन सूत्रेण तु सक्थ-शब्दस्यैवाद्युदात्तो विकल्प्यते, परमत्र पठितवार्त्तिक-श्लोकेनैवान्यत्रापि सर्वत्र दृष्टानुविधयः कल्प्यन्ते। तथाच—"परादिश्च परान्तश्च पूर्वान्तश्चापि दृश्यते। पूर्वादयश्च दृश्यन्ते व्यत्ययो बहुलन्ततः"—इति।

† 'वार्याणाम् उदकानाम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, १९, ३।

¶ 'अत्र देवातिथं साम'—इति वि०।

§ 'घ—इति पदपूरणः'—इति वि०।

‖ 'नः—अस्माकम्'—इति वि०।

** 'योगे—यत्र देवता युज्यन्ते असौ योगः यज्ञे'—इति वि०।

भवतु पुरुषार्थं साधयत्वित्यर्थः [भवते रायीर्लिङि परतो "लिङ्याशिष्यङ् (३, १, ८६)"—इत्यङ् प्रत्ययः, तस्य ङित्वेन गुणाभावात् उवङादेशः], स एव "राये" धनार्थम् "आभुवत्" आभवतु ; स एव "पुरन्ध्या" योषित्या * भुवत् [यद्वा, बहुविधायां बुद्धावाभुवत् "पुरन्धिर्बहुधीः"—इति यास्कः (६, १३)] स एव "वाजेभिः" देवैः अन्नैः सह "नः" अस्मान् † "आगमत्" आगच्छतु [गमेर्लेट् तिप्, "इतश्चलोपः परस्मैपदेषु (३, ४, ८७)"—इति इकार-लोपः, "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शपोलुक्, "लेटोडाटौ (३, ४, ९४)"—इत्यडागमः, आगमाअनुदात्ताः इति तस्यानुदात्तत्वे धातुस्वरएव (६, १, १६२) शिष्यते ॥ ३ ॥ १०

१र२ र र ५र ५
॥ हैवातिथम् ॥ आढ३४। एतानि। षीदा६ता।
२ १ २ र १ २र १र २
इन्द्रमभायि। प्रगायता। साखायस्तोम। वा। औ
२ १ १ ५ २ १ २र १र
३हो। व३ार२हार२३४साः। हयायि। साखायःस्तोम।
२ २ १ २ ५
वा। औ३हो। ऊम्मा२३। हा३४५सो६हायि ॥(१)

---

* 'पुरन्ध्या—रथ्या'—इति वि०। "पुरन्धिर्बहुधीस्तत्कः पुरन्धिर्भगः पुरस्तान्नस्यादध्य इत्येक मिन्द्र इत्यपरं स बहुकर्मतमः पुरां च दारयितृतमो वरुण इत्यपरम्"—इति निरु० नै० ६, १३।

† 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि० ।

३ २ ५ ५ २२२ १ २ १२
पुरु३४। तम्पु। रुईणाम्। ईशानंवा। रियाणा

२ १२ २२१ २ २ १ ३
म्। इन्द्र॒सोमेस। चा। औ३हो। ववा२हु२

५ २ १ २ १२२२१ २ २
३ ४तायि। हयायि। इन्द्र॒सोमेस। चा। औ३हो।

१ २ ५ ३ १ २ २ २
ऊम्मा२३। हु३४५तोईहायि॥(२) सघा३४। नोयोगे।

५२ ५ २ २ १२ २ १ २ १२ १२ १
आभूईवात्। सरायेसाः। पुरन्धिया। गमद्वाजेभिः।

२ २ १ २ २ १ २
आ। औ३हो। ववा२सा२३४नाः। हयायि। गम

१२२२ १ २ १ २
द्वाजेभिः। आ। औ३हो। ऊम्मा२३। सा३४५

५
नोईहायि(३)॥ ८ *॥ [१] १०

अथ तृतीयतृचे, प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
योगेयोगेतवस्तरंवाजेवाजेहवामहे।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
सखायइन्द्रमूतये॥ १ †॥

---

* ऊ० गा० १प्र० २ख० ८सा०।

† छ० आ० २, २, १, ९ (१भा० ३७१ पृ०)=य० वे० ११, १४=ऋ० वे० १, १, २९, १।

"योगेयोगे" प्रवेशे प्रवेशे तत्तत्कर्मोपक्रमे [युजिर् योगे (रु०, उ०) "हलश्च (३, ४, १२१)"--इति घञ्, "चजोः कु घिण्ण्यतोः (७, ३, ५२)"—इति कुत्वम्, घञोञित्वादाद्युदात्तत्वम् (६, २, १९७), "नित्यवीप्सयोः (८, १, ४)"—इति वीप्सायां द्विर्भावे सति, आम्रेडितानुदात्तम् (८, १,३)] "वाजे वाजे" कर्मविघातिनि तस्मिन् सङ्ग्रामे "तवस्तरं" अतिशयेन बलिनम् "इन्द्रम्" "ऊतये" रक्षार्थं "सखायः" सखिवत् प्रियाः वयं "हवामहे" आह्वयामः* ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ २ १ २ २ २ १ २ १ २ २
अनुप्रत्नस्यौकसोहुवेतुविप्रतिन्नरम्।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २
यन्तेपूर्वम्पिताहुवे ॥ २ † ॥

---

* कात्यायनेन त्वयं मन्त्रोऽग्निचयनेऽजाभिमन्त्रणे नियुक्तः (१६, २,१०) महीधरस्त्वेवं व्याचख्यौ—"अजदेवत्या गायत्री शुनःशेपदृष्टा, अजं मन्त्रयते। "सखायः" परस्परसख्यं प्राप्ता ऋत्विग्यजमाना वयम् "इन्द्रम्" इन्द्रियवन्तं वीर्यवन्त मिन्द्रियप्रदं वा अजम् "ऊतये" अवनाय रक्षणाय "हवामहे" आह्वयामः ह्वः अपि सम्प्रसारणम् (६, १, ३४)। क्व सति? "वाजे-वाजे" तत्तदन्ने मनुष्याणां देवानाञ्च दातव्ये सति तत्तदन्न-प्राप्ति-निमित्तं वा। किम्भूतमजम्? "योगे-योगे तवस्तरं" युज्यते अनुष्ठीयते इति योगः कर्म, तस्मिन् तत्तत्कर्मणि तवस्तरं बलवत्तरमुत्साहवन्तम्। तव इति बलनाम (निघ० २, ९, ४,)। तवो बलमस्यास्तीति तवस्वी। अस्मायेत्यादिना विन् (५, २, १२१)। अत्यन्तं तवस्वी तवस्वितरस्तम् अतिशये तरप् विन्मतोर्लुगिति (५, ३, ६५) तरपि विनो लुक्॥"—इति॥

† ऋ० वे० १, २, २९, २।

"प्रत्नस्य" पुरातनस्य "ओकसः" स्थानस्य स्वर्गरूपस्य* सकाशात् "तुविं प्रतिं" बहून् यजमानान् प्रतिगन्तारम्† [अत्र प्रतिशब्दो भीमसेनो भीमइतिवत् प्रतिगन्तृ-शब्दं लक्षयित्वा तद्द्वारा तदर्थं लक्षयति, अतः प्रति प्रतिनिधि-प्रतिदानयोरिति-वत् सत्त्ववचनत्वेनानिपातत्वादनव्ययत्वे "पूरणगुणेत्यादिना (२, २, ११) न षष्ठी-समास-निषेधः]। "नरं" पुरुष-मिन्द्रम् "अनुहुवे" अनुक्रमेण कर्मस्वाह्वयामि [ह्वेञो लिटि "बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति पूर्ववत्। सम्प्रसारण-पर-पूर्वत्वे द्विर्वचन-प्रकरणे "छन्दसि वा (६, १, १ वा०)"—इति वक्तव्यमिति द्विर्वचनाभावः। "यद्वृत्तयोगादनिघातः (८, १, ६६)]। "यं" "ते" त्वामिन्द्रं "पिता" अस्मदीयो जनकः "पूर्वं" पुरा स्वकीयानुष्ठानकाले "हुवे" आहूतवान्, तमाह्वया-मीति पूर्वत्रान्वयः‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आघागमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
वाजेभिरुपनोहवम् ॥ ३ ¶ ॥ ११ §

---

* 'ओकसः—स्थानात्, उदकात्, बहुस्थानात् वा'—इति वि०।

† 'तुविप्रतिं—तुविपुर्विति बहुनाम, बहुप्रतिम्, प्रतिशब्देनात्र भवनो स्थानम्, बहुभवनमिन्द्रम्'—इति वि०।

‡ 'यं ते पूर्वं पिता हुवे—अस्माकमनुग्रहाय मदीयाकाराणाम्! तम् इन्द्रं हुवे, यं ते तव पूर्वतने काले त्वदीयः पिता आह्वयते।'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० १, १, २९, ४। § 'अत्र सौमेधं साम'—इति वि०।

Digitized by Google

“यदि श्रवत्” यद्ययमिन्द्रो “नः” अस्मदीयं “हवम्” आह्वानं शृणुयात्, तदानीं स्वयमेव “सहस्रिणीभिः ऊतिभिः” बहुभिः पालनैः “वाजेभिः” अन्नैश्च “उप” समीपे “आ व” अवश्यम्* “आगमत्” आगच्छेत् ॥ ३ ॥ ११

२र र र र र र १ २ १ र
॥ सौमेधम् ॥ योगेयोगेतवाह्वाउस्ताराम्। वाजे
२र र १ २ ५
वाजे। हवा२माहायि। हवायि। औ३हो२३४वा।
१ २र १ १ २
साखायइ। इमू२तायायि। हवायि। औ३हो२३४
५ ३ र २ १ ऽ
वा। सखायआ। हवा२यि। औ३हो२३४५वा६५६।
२ १ ११११ २ र र १ २ १ र २
इमू३तये२३४५ ॥(१) अनुप्रत्नस्यौहाउकासाः। हवेतु
१ २ ५
वि। प्रता२यिन्नाराम्। हवायि। औ३हो२३४वा।
१२र१र२ १ १ २
यान्तेपूर्वम्। पिता२हवायि। हवायि। औ३हो२३४
५ ३र२र१ ऽ
वा। यन्तेपूर्वाम्। हवा२यि। औ३हो२३४५वा६५६।
२ १ १ १ १ १ २र र र र १ २
पिता३हुवे २३ ४ ५ ॥(२) आघागमद्यदीहाउश्रावात्।

---

* ‘आ व—इति पदपूरणौ’—इति वि०। मन्त्रे “आ”—इति दीर्घपाठः। तत्र “निपातस्य च (६, ३, १३६)”—इति दीर्घः।

१ २ २ १ २
साद्यस्त्रिणी। भिद्द२तायिभायिः। इवायि। औ३हो
५ १ २र १ १ २
२३४वा। वाजेभिद्द। पनो२द्दावाम्। इवायि। औ
५ २र र १ १ ६
३हो२३४वा। वाजेभिद्द। इवा२यि। औ३हो२३४५
२ १ १ १ १ १
वा६५६। पनो३इवा२३४५म् (३)॥ ८* ॥ [१] ११

अथ चतुर्थर्च्चे, प्रथमा।

१ २ ३ १ ३ १ २ १ १ २ ३क २र
इन्द्रसुतेषुसोमेषुक्रतुम्पुनीषउक्थ्यम्।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
विदेवृधस्यदक्षस्यमहाꣳहिषः॥ १† ॥

"सोमेषु" "सुतेषु" अभिषुतेषु सत्सु हे "इन्द्र!" त्वं तान् पीत्वा "क्रतु" कर्मणां कर्त्तारम् "उक्थम्" स्तोतारञ्च "पुनीषे" शोधयसि। यद्वा सोमेष्वभिषुतेषु उक्थ्याख्यं "क्रतु" यागं तैः सोमैः पुनीषे यजमानैः पूतं कारयसि। किमर्थम्? "वृधस्य" वर्द्धकस्य "दक्षस्य" बलस्य "विदे" लाभाय "सः" तादृशस्त्वं "महान्" "हि" खलु; अतएवं कर्त्तुं शक्नोषीत्यर्थः॥

"इन्द्रसुतेषु"-"इन्द्रः सुतेषु"—इति, "पुनीषे"-"पुनीते"—इति, "दक्षस्यमहाꣳहिषः"—"दक्षसोमहान्हिषः"—इति च पाठौ॥ १॥

* ऊ० गा० १प्र० २अ० ८सा०।

† ऋ० आ० ४, १, ५, १ (१ भा० ७८२ पृ०) = ऋ० वे० ६, १, ७, १।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २   २ २ ३   १ २ १ २
स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः ।

३ १ ३ १ २ ३ १ २ १ २
सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित् ॥ २* ॥

"सः" इन्द्रः "प्रथमे" प्रथिते विस्तीर्णे मुख्ये वा † "व्योमनि" विशेषेण रक्षके च "देवानां" "सदने" सीदन्त्यस्मिन्निति सदनं स्थानं स्वर्गाख्यं तत्र ‡ स्थितः सन् "वृधः" यजमानानां वर्द्धयिता च भवति । तथा "सुपारः" सुष्ठु पारयिता प्रारब्धस्य सम्यक् परिसमापयिता ¶ "सुश्रवस्तमः" अतिशयेन शोभनं श्रवोऽन्नं यशो वा यस्य स तथोक्तः, "समप्सुजित्" सम्यक् अप्सूदकेषु प्राप्येषु सत्सु यत् तद्विघातिनो वृत्रादेर्जेता ; यद्वा, आप इत्यन्तरिक्षनाम (निघ० १, ३, ८) अन्तरिक्षे वर्त्तमानानामसुराणां जेता § तमु हुवे इत्युत्तरत्र सम्बन्धः ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ६, १, ७, २ ।

† 'प्रथमे श्रेष्ठे'—इति वि० ।

‡ 'देवानां सदने स्थाने यज्ञे'—इति वि० ।

¶ 'सुखेन पार्यते यद्गु यः सः सुपारः'—इति वि० ।

§ 'समप्सुजित्—सङ्ग्रामेषु जेता'—इति वि० । "समत्सु"—इति सङ्ग्रामनामसु निघण्टौ दृश्यते (२, १७, २१) तदेव पाठभेदात् समप्सु—इत्येवाच विवरणकाराशयः ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
तमुह्वेवाजसातयइन्द्रम्भरायशुष्मिणम् ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
भवानःसुम्नेअन्तमःसखावृधे ॥ ३* ॥ १२ †

"तमु" पूर्वोक्तगुणमेव "शुष्मिणं" बलवन्तम् "इन्द्रं" "वाजसातये" बलाना मन्नानां वा साति र्लाभो यस्मिन् तादृशाय "भराय" सङ्ग्रामाय ; यद्वा, [ध्रियन्ते तस्मिन् हवींषीति भरो यज्ञः, प्रायेण सङ्ग्रामनामानि यज्ञनामत्वेन च दृश्यन्ते] भराय यज्ञार्थं "हुवे" आह्वयामि। हे इन्द्र! त्वं "सुम्ने" सुखे धने वा लिप्सिते सति "नः" अस्माकम् "अन्तमः" अन्तिकतमः सन्निकृष्टतमो भव [तमेतादेश्वेति अन्तिकशब्दस्य तादि लोपः] ; "वृधे" वर्द्धनार्थञ्च "सखा" समानख्यानो मित्रभूतो भव ॥

"तमुहुवे"—"तमुह्वे—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १२

२ र र १ २ १ १ २
॥ कौत्सम् ॥ इन्द्रसुतेषुसोमेषू । क्रतूरम्पुनायि । घ
१ २ र १ १ २ र १
उक्थियाम् । विदेवार्द्धा२ । स्यदत्तस्या । महाऽ२हा
१ २ २ र र १
यिषा२ः । महाऽ२३हिषा३४३ः ॥(१) सपूर्व्यमेवियोमा

* ऋ० वे० ६, १, ७, ३ ।

† 'अथ कौत्सं साम'—इति वि० ।

Digitized by Google

२ १र १र २र१ २र १
नी। देवा२नाꣳसा। दनवृधाः। सुपाराःसु२। अ
१ २ १ १ २
वस्तमाः। समप्सुजो२त। समा२३प्सुजो३४३त॥(२)
२ रर र१ १ १ २ १
तमुत्त्वेवाजसातायायि। इन्द्रा२भरा। यश्शुष्मिणाम्।
२र१ र १ २र१ १
भवाजाःह्व२। नेअन्तमाः। सखावार्द्धा२यि। स
र १ १ २ १
खावार्द्धा२यि। सखा२३वृधा३४३यि। ओ२ ३ ४ ५ई।
डा(३)॥ १० *॥ [१]

१ २१र२ १र २र१ र
॥ उद्वꣳशीयम्॥ इन्द्रसुतेषुसोमेषा। क्रतुम्पुनीषउक्था
१ १ २ १ २ २
२३याम्। विदा२होश्यि। वा२३र्द्धा। स्यदा१चा३
२ र २ ५ १ ऽ २ २
स्या। मच्चाꣳचा२३४यिषाः। माचा३उवा३। उप्।
१ १ १ ११रर २१ रर र
हा॥२यिषो३५चायि॥(१) सप्रथमेव्योमनिया। देवानाꣳ
र २ १ २ १ २ २
सदने वा२३र्द्धाः। सुपा२रो१। रा२३ःह्व। अवा१स्ता
२ ३ ५ १ ऽ २ २ १
३माः। समप्स्व२३४जीत। सामा३उवा३। उप्। पद्ध

* ज॰ गा० १प्र० २ श्व० १०गा०।

१ १ २र१र २र१२१ र
ऽ२जो३४५हायि ॥(२) तमुह्वेवाजसातयआ। इन्द्रम्भरा
२ १ २ १र २
यम्‌इम्आ२३यिणाम्। भवा २हो१ ना२३ःवृ। स्वेआ
२ २ र३ ५ १ ऽ २
१न्ता३माः। सखावा २ ३ ४ ह्वायि। साखा३उवा३।
२ १ २
उप्। वा ऽ२र्द्धो३४५हायि(३) ॥ २ * ॥ [२] १२

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य
तृतीय-खण्डः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थे खण्डे, प्रगाथरूपे—

प्रथमसूक्ते, प्रथमा।

३१ २ ३१ २र३ १ २र३१२
एनावोअग्निन्नमसोर्जोनपातमाहुवे।
३१ २र २१ २३१ २र ३२३१२
प्रियञ्चेतिष्ठमरतिंस्वध्वरं विश्वस्यदूतममृतम्॥ १ † ॥

---

* ऊ० गा० १९प्र० १ध० २वा०।

† छ० आ० १, १, ५, १ (१ भा० १९७ पृ०) = ऋ० वे० ५, २, २१, १।
'इदानीं प्रगाथैर्व्रतः, तत्र द्व-दैवत्यः अग्निरग्निनाविति'—इति वि०।

"ऊर्जः" बलस्य "नपातं" [नपादित्यपत्यनाम (निघ०२, २,१३)] पुत्रं "प्रियम्" अस्माकम् "चेतिष्ठम्" अतिशयेन ज्ञातारं प्रज्ञापकं वा "अरतिं" गन्तारं स्वामिनं वा "स्वध्वरं" शोभनयज्ञं "विश्वस्य" सर्वस्य यजमानस्य "दूतम्" "अमृतं" नित्यम् "अग्निम्" "एना" एतेन "नमसा" स्तोत्रेण हे ऋत्विग्यजमानाः ! "वः" युष्मदर्थम् "आहुवे" आह्वयामि ॥१॥

अथ द्वितीया ।

१ २   ३ २ ३ १ २   ३ १ २ ३क २र

सयोजतेअरुषाविश्वभोजसासदुद्रवत्स्वाहुतः ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २

सुब्रह्मायज्ञःसुशमीवसूनान्देवꣳराधोजनानाम् ॥२*॥१३†

"सः" अग्निः "अरुषा" आरोचमानो "विश्वभोजसा" विश्वस्य पालयितारा वह्नी "योजते" स्वकीये रथे "युनक्तु" [यद्वा, "विश्वभोजसा" विश्वस्य रक्षकेण "अरुषा" आरोचमानेन तेजसा "योजते" अयुज्यत]। तदनन्तरं यः अग्निः "स्वाहुतः" स्तोतृभिः सुष्ठु आहुतः सन् "दुद्रवत्" आनेतुं देवान् प्रति भृशं द्रवतु गच्छतु । कीदृशः ? सुब्रह्मा शोभनस्तुतिकः शोभनान्नोवा "यज्ञः" यष्टव्यः "सुशमी" शोभनकर्मा च भवति ; ततः "वसूनां" वासकानां "जनानां" यजमानानां सम्बन्धि "राधः" हविर्लक्षणं धनं "देवं" द्योतमानमग्निम्प्रति गच्छत्विति शेषः ॥ २ ॥ १३

---

* ऋ० वे० ५,२,२१,२ ।   † 'अथ चारवणीयम्'— इति वि० ।

Digitized by Google

१र २र र र २ १ २

॥ वारवन्तीयम् ॥ एनावोअ्न । औहोहायि । ग्ना

२ ५ २र र र र १ ५ १

यिन्नामा२३४सा । ऊर्ज्जोनपातमाहुवो२३४हायि । प्रिय

र २ ३र ४र ५ १ २ ५

श्चेतिष्ठमरतिꣳस्वध्वा३४ । औहोवा । हुहा२३४हायि ।

२ २ ५ २ १ २ १ ० २ ३र ४र ५

उहुवा२३४राम् । विश्वस्य । दूतममा३४ । औहोवा ।

१ २ ५ ३र २ ५र

हुहा२३४हायि । औहो३१२३४ । ताम् । एहियाः६

५ २ र र १ २ ३ ५

हा ॥(१) विश्वस्यदूऔहोहायि । तामामा२३४ताम् ।

२ १ ५ १र र र २ ३र ४र ५

सयोजा२३४हा । तेऋत्षाविश्वभोजा३४ । औहोवा ।

१ २ ५ २ २ ५ २ १ २ १ ० र १

हुहा२३४हायि । उहुवा२३४सा । सदुद्र । वाऌवा२

३र ४र ५ १ २ ५ ३र २ ५ऽ

३४ । औहोवा । हुहा२३४हायि । औहो३१२३४ । ताः ।

र ५ २ र र १ २ २ ५

एहियाः६हा ॥(२) समुद्रवाऔहोहायि । स्ववाह्र२३४ताः ।

२ १ ५ १ र २ ३र ४र ५

सुब्राह्मा२३४हायि । यज्ञःसुप्रमीवसू३४ । औहोवा ।

१ २ ५ २ ३ ५ ३र १ १र १

हुहा२३४हायि । उहुवा२३४नाम् । देवꣳरा । धोज

२ २र ४र ५ १ ३ ५ ३र २
ना३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । औहो३१२३४ ।
५ऽ र ५
नाम् । एहियाईहा(३) ॥ ८ * ॥ [१]

४ र र ४ २ ४
॥ महावामदेव्यम् † ॥ आऽ५यिना । वोआ३आ३यिन्न
५ १ र र र र १ २ १
मसा । ऊ । जोनपातमाङ्कवेप्रियश्चेतिष्ठमरतिᳬसुवध्व ।
र २ १ २ ३ र २
राम् । औ२३होहायि । विस्वा२३स्यदू । तमौहो३ ।
१ १ २ ३ ४ २
ऊम्मा२ । माऽ२र्त्तो३५हायि ॥(१) वाऽ५यिश्व । स्यदू३ना
४ ५ १ र र र २र १
इमन्टताम् । साः । योजतेषत्पाविश्वभोज । सा ।
२ र २ १ २ ३ र २ १
औ३होहायि । सदू२३द्रवात् । सुवौहो३ । ऊम्मा२ ।
१ २ ३ ४ २ ४र ५
ऊऽ२तो३५हायि ॥(२) सा५ऽदु । द्रवा३त्सू३वाङ्गताः ।
१ र र २र १ र २
ह । ब्रह्मायज्ञःसुष्मीवस् । नाम् । औ२३होहायि ।
१र र २ ३ र १ १ १
देवा२३ᳬराधाः । जनौहो३ । ऊम्मा२ । नाऽ२मो३५
२
हायि ॥ ११ ‡ ॥ [२]

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० ८सा० । † 'वामदेव्यम्—इति ख० पु० पाठः ।
‡ ऊ० गा० ११प्र० २ख० ११सा० ।

Digitized by Google

१ २ २ १ २२ १२
॥ अध्यम् ॥ एनावोआ२ग्निम् । नमसोवा । ऊर्ज्जो

२१ २ ३२ २ १ २ १ २२ १ २ १
नपा । तमाहुवायि । प्रियञ्चेतिष्ठमरतिंस्वध्वरं विश्व

२ २ १ २ १२ १
स्यदूतम् । आ२३ । मृताउवा । अधिया२ ॥(१) वि

१ २ १२ २ १ २ १ १२ १
श्वस्यदू२तम् । अमृतोवा । सयोजते । अरुषावायि ।

२ २ २ १ २ १ २ १२
अभोजसासन्दूद्रवत्सु । आ२३ । हुताउवा । अधिया

१ २ १ २ १ २२ १ २
२ ॥(२) सदुद्रवा२त्सु । आहुतोवा । सुब्रह्माया । यः

३ १ १ २ १२ २ १ २ २ २ १ २
सुम्नमायि । वसूनान्देवंराधोज । ना२३ । नाउवा ।

१२
अधिया२ ॥ १४ * ॥ [३] १३

अथ द्वितीय-प्रगाथे—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ १ २ ३ १ ३ १
प्रत्यु अदृश्र्यायत्यू३च्छन्तीदुहितादिवः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अपोमहीवृणुतेचक्षुषातमोज्योतिष्कृणोतिसूनरी ॥ १ † ॥

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १४सा० ।

† छ० आ० ४, १, २, १ (१भा० ६११ प०)=ऋ० वे० ५, ६, १, १ ।

"आयती" आगच्छती "उच्छन्ती" तमांसि विवासयन्ती वर्जयन्ती "दिवः" द्युलोकस्य सूर्य्यस्य वा "दुहिता" पुत्री, एवम्भूता उषाः "प्रति अदर्शि" सर्वैः प्रति दृश्यते ; "उ"—इति पूरणः ; सैषा "मही" महत् "तमः" नैशमन्धकारं "चक्षुषा" दर्शनेन "अप उ" [—इति निपातद्वय समुदायः अपेत्यस्यार्थे] "वृणुते" निवारयति। एवं कृत्वा "सुनरी" जनानां सुष्ठु नेत्री उषाः "ज्योतिः" प्रकाशं "कृणोति" करोति ॥

"वृणुतेचक्षुषा"-"व्ययतिचक्षुषे"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ १ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३२ ३१
उदुस्रियाःसृजतेसूर्य्यःसचाउद्यन्नक्षत्रमर्चिवत्।

१ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
तवेदुषोव्युषिसूर्यस्यचसम्भक्तेनगमेमहि ॥ २ * ॥ १४ †

"सूर्यः" सर्वस्य प्रेरकआदित्यः "उस्रियाः" रश्मीन् "सचा" सह युगपदेव "उत्सृज्यते" उद्गमयति। तथा "उद्यत्" उद्गच्छत् प्रादुर्भवन् "नक्षत्रं" नभसि दृश्यमानं ग्रहनक्षत्रादिकम् "अर्चिवत्" दीप्तिमत् करोति ; ["सौरेण तेजसा हि नक्तं चन्द्रप्रभृतीनां नक्षत्राणि भासन्ते", "सुषुम्नः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः"—इति हि निगमान्तरम्। एवञ्च सति हे "उषः"

* ऋ० वे० ५, ६, १, २। † त्रयोदशसूक्ते यत्सामद्वयमानि तत्रापितस्याभान्येव।

Digitized by Google

उषोदेवते ! "तव" "सूर्यस्य" च "व्युषि" विवासने प्रकाशने सति "भक्तेन" अन्नेन "सङ्गमेमहि" वयं गच्छेमहि। "इत्"-शब्दः पूरकः ॥ २ ॥ १४

२ र र १ र ३
॥ वारवन्तीयम् ॥ प्रत्युवदाऔहोहायि। श्रीआया२३४
५ २ र र १ ५ १ र र
तायि। उच्छन्तीदुहितादायिवो२३४हायि। अपोमही
र र २ २र ४र ५ १ २ ५ २
वृणुतेचक्षुषाता३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उक्ष
२ ५ २र १ २ १ ३र २ २र ४र ५
वा२३४माः। ज्योतिष्कृ। णोतिसूना३४। औहोवा।
१ २ ५ २र २ ५ र
इहा२३४हायि। औहो३१२३४। रायि। एहियाइ
५ २र र र १ २ ३ ५
हा ॥(१) ज्योतिष्कृणोऔहोहायि। तायिसूना२३४रा
१ १ ५ १र र र २ ३र
यि। उदूस्रो२३४हा। याःसृजतेसूरियःसा३४। औ
४र ५ १ २ ५ २ २ ५ २ १ २
होवा। इहा२३४हायि। उक्षवा२३४चा। उद्यन्न।
१ ० २ २र ४र ५ १ २ ५ २र २
क्षात्रमर्चा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३
५र ५ २ र र १ २
१२३४। वात्। एहियाइहा ॥(२) उद्यन्नक्षाऔहोहा

यि। आमर्च्चो२३४यिवात्। तविदू२३४हायि। षोवियु

षिसूरियस्या३४। औहोवा। दूहा२३४हायि। उक्त

वा२३४चा। सम्भक्तो। नागमेमा३४। औहोवा। दू

हा२३४हायि। औहो ३१२३४। हायि। एहिया६

हा(३) ॥ ८* ॥ [१]

॥ वामदेव्यम् ॥ प्रा॒ऽ५त्यु। अदा३र्शा३यायताायि। ऊ।

च्छन्तीदुहितादिवोअपोमहोवृणुतेचक्षुषात। मा। औ३

होहायिं। ज्योता२३यिष्कृणो। तिसौहो३। ऊम्मा

२। ना॒ऽ२रो३५हायि ॥(१) ज्यो॒ऽ५तिः। क्रणो३ता३यि

सूनरायि। ऊत्। उस्रियाःसृजतेसूरियस्साचा। औ

३होहायि। उद्या२३नक्षा। त्रमौहो३। ऊम्मा२।

चा॒ऽ२यिवो३५हायि ॥(२) ऊ॒ऽ५द्यत्। नक्षा३त्रा३मर्चिवात्।

* ऊ० गा० २१प्र० २ख० ९गा०।

१ २ २ २ १ १ २ २ २
ता। वेङ्कषोवियुषिसू रियस्य। चा। औ३होवायि।

१ २ २ ३ २ १ १ १
सम्भा२३क्ता ना। गमौहो३। ऊम्मा२। माऽ२हो३५

२
वायि(३)॥ १२ *॥ [२]

१ २ १ २ १
॥ अध्यम्॥ प्रत्युवदा२र्शि। आयतोवा। उच्छ

२२ १ २ २२ २ १ २ २ १२ २२ १ २२ १ १२ १२
न्तीदू। हिताद्दिवाः। अपोमहीवृणुतेचक्षुषातमोज्यो

१ २ १ २ १२
तिष्कृणोति। सू२३। नराउवा। अधिया२॥(१)

१२ २ १ २ १ २ १ २ २ १२
ज्योतिष्कृणो२ति। सूनरोवा। उदुस्रियाः। सृजते

१ १२ १ २१ २
सू। रयिःसचाउद्यन्नक्षत्रम्। आ२३। विवाउवा।

१२ १ १ २ १२ २ १
अधिया२॥ उद्यन्नक्षा२त्रम्। अर्चिवोवा। नवेदुषो।

२ ३२ २ १ २ १ १२ १ २
वियुषिसू। रियस्यचसम्भक्तेनग। मा२३यि। महाउ

१२
वा। अधिया२(३)॥ १५ †॥ [३] १४

---

* ऊ० गा० २१प्र० २अ० १२सा०।

† ऊ० गा० २१प्र० २अ० १५सा०।

अथ तृतीये प्रगाथे—

प्रथमा ।

२१ २ ३ १ २   २१ १
इमाउवान्दिविष्टयउस्राहवन्तेअश्विना ।
३१२ ३ १२   ३ १२ ३ १र २र
अयंवामह्वेवसेशचीवसूविशंविश्ंहिगच्छथः ॥ १ * ॥

"इमाः" "दिविष्टयः" दिवमिच्छन्त्यः प्रजा ऋत्विजोऽपि "उ"—इति चार्थे ; हे "अश्विना !" "उस्रा" वासकौ उस्रौ वा "हवन्ते" आह्वयन्ति "अयं" स्तोतापि हे "शचीवसो" कर्म्मधन ! "वां" युवाम् "अवसे" अस्मद्रक्षणाय युवयोस्तर्पणाय वा "अह्वे" आह्वयामि । किमर्थम् ? एवं प्रजा अपि, अयमपीत्यादरोक्तिरिति "विशं विशं हि गच्छथः" सर्वाः स्तुतिकर्त्रीः प्रजाः प्रति युवां गच्छतः खलु, तस्मादेवमुच्यत इति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३२ ३ १ २ ३१ २   ३१ २   ३१ २
युवञ्चित्रन्ददथुर्भोजनन्नराचोदेथाꣳसूनृतावते ।
२ ३उ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र
अर्वाग्रथꣳसमनसानियच्छतम्पिबतꣳसोम्यम्मधु॥२†॥१५‡

* ऋ० अा० ४, १, ९, २ (१भा० ६१३पृ०)=ऋ० वे० ५, ५, २१, १ ।

† ऋ० वे० ५, ५, २१, २ । ‡ त्रयोदश-चतुर्द्दशस्थयोर्यन्नामानि सामानि इहापि तन्नामान्येव ।

हे "नरा" नेतारावश्विनौ ! "युवं" युवां "चित्रं" चायनीयं "भोजनं" धनं "ददथुः" धारयेथे, तद्वन् "सूनृतावते" स्तुतिमते स्तोत्रे "चोदेथां" प्रेरयतम्,* तदर्थं "समनसा" समानमनस्कौ सन्तौ "रथं" युवयोः सम्बन्धिनम् "अर्वाग्" अस्मदभिमुखं "नियच्छतं" नियमतम्, तथा कृत्वा "सोम्यं" सोमसम्बन्धिनं "मधु" मधुरसञ्च † "पिबतम्" ॥ २ ॥ १५

॥ वारवन्तीयम् ॥ इमाउवाऔहोवाहायि। हायिविष्टा२३४याः। उस्राइवन्तेअश्वायिनो२३४हायि। अयंवामङ्के अवसेप्रचोवा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उरु वा२३४सू। विशंवि। आ२ऽहिगच्छा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। थाः। एहियाईहा ॥(१)

विशंविशाऔहोवाहायि। हायिगच्छा२३४थाः। युवाञ्चा

---

* 'चोदेथां सूनृतावते—एवं चोदनां कुरुतां यथा सूनृता वयं भवेम !'—इति वि०।

† 'सोम्यं मधु—सोमे भवं स्वादुद्रव्यम्'—इति वि०। "मये च (४, ४, १३८)—इति पा०। "सोममर्हन्तीयः शाम्यमयडर्थे। सोम्यं मधु सोममयमित्यर्थः॥"—इति च तत्र दीक्षितः।

५ १ र २ ३र ४र ५ १ २
२३४यिद्दायि। नन्ददयुर्भोजनन्ना३४। औहोवा। इद्दा
५ २ २ ५ २र१र२र १ ७ र २
२३४द्दायि। उद्भवा२३४रा। चोदेथाम्। द्दनृतावा३४।
३र ४र ५ १ २ ५ ३र २ ५र
औहोवा। इद्दा२३४द्दायि। औद्दो३१२३४। तायि। एद्दि
५ २र र र र र १ २ ३ ५
याईद्दा॥(२) चोदेथा॒सूऔद्दौद्दायि। नाऽत्तीवा२३४तायि।
२ १ ५ १ र २ ३र ४र ५
अर्वाग्रा२३४द्दा। थ॒समनसानियच्छा३४। औहोवा।
१ २ ५ २ २ ५ २ १ १ १ ०
इद्दा२३४द्दायि। उद्भवा२३४ताम्। पिबतम्। सौमि
२ ३र ४र ५ १ २ ५ ३र २
यम्मा३४। औद्दोवा। इद्दा२३४द्दायि। औद्दो३१२३
५र ५ ४
४। धू। एद्दियाईद्दा। द्दो५ई। डा(३)॥१०*॥[१]
२ र ४ २ ४ ५
॥वामदेव्यम्॥ आऽ५यिमाः। उवा३न्दा३यिविष्टयाः।
१ र र र र र र २१ १
ऊ। स्ताहवन्तेअश्विनाअयंवामङ्के अवसेशचीव। द्द।
२ र २ १ २ ३ र २ १
औ३द्दोद्दायि। विश्वा२३ विश्वाम्। द्दिगौद्दो३। ऊम्मा
१ २ २ ४
२। द्दाऽ२थो३५द्दायि॥(१) वाऽ५यिश्वम्। विश्वा३॒

* ऊ० गा० ११प्र० २ अ० १०सा०।

२ ४ ५ १ र २ १
हा३यिगच्छथाः। यू। वश्चित्रन्ददथुर्भोजनन्न। रा।
२ र २ १र र २ १ र १ १
औ३होवायि। चोदे२३था२सू। नृतौहो३। इम्मा
१ २ २ र ४ १
२। वा२तो३५वायि॥(२) चो५दे। था२सू३ना३
४र ५ १ र र २ १
त्तावतायि। आ। वांग्रथ२समनसानियच्छ। ताम्।
र २ १ २ २ र २ १
औ२३होवायि। पिबा२३त२सो। मियौहो३। इम्मा
१ २
२। मा२धो३५हायि३॥ १२ *॥ [२]

१ र १ २ १र
॥ अध्यम्॥ इमाउवा२न्दि। विष्टयोवा। उस्रा
२ १ १र ३ २ १ २ १र २ १र २र१ र २२ १ २
हवा। तेअश्विना। अयवामह्वेवसेशचीवहविशंविश२
१ २ १र १
हि। गा२३। च्छथाउ। वा। अधिया२॥(१) वि
१ २ १ २ १ २२ २ १
शंविशा२हि। गच्छथोवा। युवश्चित्राम्। ददथुर्भो।
२ र १र र २र र १ २ १र
जनन्नराचोदे्था२हन्। ता२३। वताउवा। अधिया
१र र र र १ २ १र२ १
२॥(२) चोदे्था२म्२न्। तावतोवा। अर्वाग्रथाम्।

---

* ऋ० मा० २१म० २अ० १२वा०।

२ ३ १ २ १　　२　१ २ र १　　२
समनसा । नियच्छतम्पिबतꣳसोमि । या२३म् । मधा
१र　१　२　१
उवा । अूधिया२ । ए२३हिया ३ ४ ३ । श्रो२३४५ई ।
डा ॥ १६ * ॥ [३] १५

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डे‡—

अस्यप्रत्नेति नवर्चसूक्ते, प्रथमा ।

२ ३ २ ३उ　२ ३ १ २　२ १ २　२ ३ २
अस्यप्रत्नामनुद्युतꣳशुक्रन्दुदुह्रे अह्रयः ।
३ २　३ १र　२र
पयःसहस्रसामृषिम् ॥ १ ¶ ॥

"अस्य" सोमस्य "प्रत्नां" पुरातनां "द्युतं" द्योतमानां तनुम् "अनु" "शुक्रं" दीप्तं "सहस्रसां" अभिलषितस्यापरि-

---

* ऊ० गा० १प्र० २ख० १६सा० ।

† 'समाप्त अग्निः । अथ षोड़शिकोऽतिरात्रो ब्राह्मण-समाम्नायेऽथ ऋक्समाम्नाये न तथा कल्पकारः क्रमशो ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रः षोड़शिकः । तथा च लक्षणकारः—अतिरात्रो ० ० ०'—इति वि० ।

‡ 'इदानीं द्वादशाहस्य प्रथमाहस्य बहिष्पवमानम्'—इति वि० ।

¶ ब० पा० ३, १६=ऋ० वे० ७, १, २, १ ।

मितस्य फलस्य दातारम् "ऋषिम्" अतीन्द्रियकर्म्मफलद्रष्टारं "पयः" पातव्यं * "अह्रयः" कवयः † "दुह्रे" दुहन्ति ‡॥ १॥

---

* 'पयः—क्षीरम्'—इति वि०।

† 'अह्रयः—अह्रीकाराः'—इति वि०।

‡ अत्र महीधरः—"गायत्र्यवत्सारदृष्टा गोऽग्निपयोदेवत्या। अस्याग्नेः प्रत्नां चिरन्तनकालभवां घृतमनु दीप्तिमनुसृत्य। अह्रयः नास्ति ह्रीर्येषामीदृशा लज्जारहिता दोग्धारः ऋषिं गां शुक्रं शुद्धं पयो दुदुह्रे दुदुहिरे। दुहेर्लिटि इरयो रे इति रे आदेशे रूपम्। ऋष गतौ। अर्षति दोहनस्थाने गच्छतीति ऋषिर्गाः। तां होमार्थं दुग्धवन्तः। सायं दोहनकालेऽग्निप्रकाशाभावे दुह्यमानं पयो भूमौ पतिष्यतीति शङ्कया दोग्धॄणां लज्जा भवति। सत्यामग्निदीप्तौ स्कन्दनशङ्कानुदयाल्लज्जाभावादह्रयो दोग्धारः। किम्भूतामृषिं सहस्रसाम्। षोऽन्तकर्म्मणि। सहस्रसङ्ख्याकानि कर्म्माणि स्यति समापयति क्षीरदध्याज्यहविःप्रदानेनेति सहस्रसा ताम्। स्यतेः क्विप्। तदास्या ऋचोऽर्थान्तरम्। गामुक्त्वाग्निहोत्रब्राह्मणे श्रूयते। तामु हाग्निरभिदध्यौ मिथुन्येनया स्यामिति तां सम्बभूव तस्यां रेतः प्रासिञ्चत्तत्पयोऽभवदित्यादि (२,२,४,१५)। तदभिप्रायमेषा ऋग्वदति। अह्रयः गावः नास्ति ह्रीर्लज्जा यासां ता अह्रयः अलज्जा उज्ज्वलाः प्रशस्ता इत्यर्थः। मलिनो हि लज्जते। अह्रयो गावोऽस्याग्नेः प्रत्नां चिरन्तनीमात्मानुषक्तां घृतं दीप्तिं शुक्रं शुक्ररूपमापन्नां घृतमेव पयो दुग्धं दुदुह्रे दुहन्ति क्षरन्ति। अग्निना शुक्ररूपेण सिक्तां स्वकान्तिमेव गावो दुग्धरूपेण क्षरन्तीत्यर्थः। सहस्रसामृषिमिति विशेषणद्वयं पयसः। सहस्रं सनोतीति सहस्रसास्ताम्। चातुर्मास्यपशुसोमानां सम्भक्तारम्। पुंस्त्वमार्षम्। जनसनखनक्रमगमो विडिति विट्प्रत्यये विड्वनोरनुनासिकस्यादित्याकारे वेर्लोपे सहस्रसा इति रूपम्। तथा ऋषिं द्रष्टारम्। गवि वर्त्तमानं द्रष्टृत्वं पयस्युपचर्य्यते। सा ऐनानुदीक्ष्य हिङ्कारेत्युपक्रम्य ते देवा विदाञ्चक्रुरेष साम्नो हिङ्कार इत्यादिना मन्त्रेण गोभिर्हिङ्कारो दृष्ट इति प्रत्यपादि। यद्वा सहस्रसामृषिमिति विभक्तिलिङ्गवचनव्यत्ययेन अह्रय इत्यस्य विशेषणद्वयम्। किम्भूता अह्रयः सहस्रसाः ऋषयः। पूर्ववदर्थो वा"—इति॥

अथ द्वितीया।

२ १   २ १र   १ २ ३ १र   २र
अयꣳ सूर्य्य इवोपदृगयꣳ सराꣳसि धावति।
३ २३१र३ १र २र
सप्त प्रवत आ दिवम्॥ २*॥

“अयं” सोमः “सूर्य्य इव” यथा सूर्य्यः सर्व्वस्य लोकस्योपद्रष्टा, तथा कर्म्मणाम् “उपदृक्” उपद्रष्टा; अपिच “अयं” सोमः “सरांसि” त्रिंशत् उक्थपात्राणि [—इति केचिद् वदन्ति, अपरेतु त्रिंशदहोरात्राणि सरांसीति], तानि “धावति” प्रति गच्छति [तथाच यास्कः—“तत्रैतद् याज्ञिका वेदयन्ते त्रिंशदुक्थपात्राणि, माध्यन्दिने सवने एकदेवतानि, तान्येतस्मिन् काल एकेन प्रतिधानेन पिबन्ति, तान्यत्र सरांस्युच्यन्ते—त्रिंशदपरपक्षस्याहोरात्राः त्रिंशत् पूर्व्वपक्षस्येति नैरुक्ताः (५, ११) इति †]। अपिचायं सोमः “दिवम्” अधिकृत्य “सप्त प्रवत” सप्त नदीरातिष्ठति‡॥ २॥

---

* ऋ० वे० ७, १, २, २।

† “तद्यथा एतास्यान्द्रमसस्य आमामित्र आपो भवन्ति रश्मयश्चा अपरपक्षे पिबन्ति। तथापि निम्नमो भवति। यमक्षितिमक्षितयः पिबन्तीति तं पूर्व्वपक्ष आप्याययन्ति। तथापि निम्नमो भवति। यथा देवा अंशुमाप्याययन्तीति”—इति च तच्छ्रुत्यंशः।

‡ ‘सप्त प्रवत—सप्त लोकान् प्रवत। अथवा सप्त छन्दांसि’—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ १र २र १ १र २र ३ १ १
अयंविश्वानितिष्ठतिपुनानोभुवनोपरि ।
१ २ ३ १र २र
सोमोदेवोनसूर्यः ॥ ३* ॥ १६ †

"पुनानः" पूयमानः "अयं" "सोमः" "विश्वानि" सर्वाणि "भुवना" भुवनानि सर्वेषां भुवनानाम् "उपरि" "तिष्ठति"। तत्र दृष्टान्तमाह—"देवो न सूर्यः" यथा सूर्यो देवः सर्वेषां भुवनानामुपरि तिष्ठति तद्वदयं सोमोऽपीत्यर्थः ॥ ३ ॥ १६

१ २ र
॥ सत्रासाहीयम् ॥ अया३उ । पुनामनुद्युतम् ।
५ ५ १ र १ १
ओ६वा । प्राक्रन्दुद्रेअद्दा२याः । पा२याः । सा२३
२ १ ऽ २र १र २ १ ५ ५
हा । स्वसौ३हो वाहा३४३यि । आ२३४र्वो६हायि ॥
३ २ र र ५ ५ १
(१) अया३४म् । सूर्य्यइवोपदृक् । ओ६वा । अयं
र र १ १ १ १ ऽ
सरा२ंसिधावा२तायि । सा२प्ता । प्रा२३वा । तस्वौ
२र ३र २ १ ५ ५ ३ २
३हो । वाहा३४३यि । दा२३४यिवो६हायि ॥(२) अया

* ऋ० व० ७, १, १, ३ ।

† मूलेत्येतदन्त मेव षोड़शं सूक्तम्, विवरणादि-मतेप्येवमेव । 'उक्तः प्रवक्तप-र्य्यायः'—इति वि० ।

र ५ ५ १ र र र
३४म्। विश्वानितिष्ठति। ओ६वा। पुनानोभुवनो
१ १ २ १ ऽ १र १र
पा२राथि। सो२मो। दा२३यिवाः। नसौ३द्दो। वा
२ १ ५ ५
हा३४३यि। रा२३४योऽ६हायि(३)॥ ८*॥ [१]

५ २ ४र ५ २
॥ आमहीयवम्॥ अस्यप्रा३त्नामनुद्युताम्। शु
१ २ १र २ १ २१
क्रान्दू१दू२। ह्र आ२३ह्रयाः। पयःसहा। सहा२३
२ ५ २ ४ ५र २ १ २
मुषाउ। वा३॥(१) अयꣳस्रू३र्य्य इवोपदृक्। अयꣳसा
१ २ १२१ २
१रा२। सिधा२३वतायि। सप्तप्रवा। तआ२३दिवाउ।
५ २ ४र ५ २ १ २ १
वा३॥(२) अयंवा३यिश्वानितिष्ठतायि। पुनानो१भू२। व
२ र १र १र१ २
नो२३परायि। सोमोदेवाः। नसू२३रियाउ। वा३।
२र १ १ १ १
स्तोषे३४५(३)॥ २†॥ [२]

२ १ २ १ २ १
॥ जराबोधीयम्॥ अस्यप्रत्नोवा। आनुद्यु ताम्।
१ १ २ र २ ४ ५र १ २
शुक्रान्दू२३दू। ह्र याःसा१हा२३सा। साम्। कषो३

* ऊ० गा० ८प्र० १अ० ८सा०। † ऊ० गा० ८प्र० १अ० ३सा०।

२ २ १ १ १ २ १ १
४५ई। डा ॥(१) अयꣳसूर्य्योवा। मायिवोपदृक्।
२ १ २ २ १ २ ४
अयाꣳसार२३रा। सिधावातायि। सप्ताप्रा१वार२३ताः।
५र १ १ १ १ १ १
आ। दिवो३४५ई। डा ॥(२) अयंविश्वोवा। नायि
२ १ २ १ २ २ १ २ २
तिष्ठतायि पुनानोर२३भू। वनोपारायि। सोमोदा१
४ ५र २ १
यिवार२३ना। सू। रियो३४५ई। डा(३) ॥ १० ॥ [३]
२र २ १
॥ हाविष्मतम् ॥ हावस्यप्रत्नामनुद्युतꣳहाउ। शुक्र
२ १ २ २ ५ २ १ १
न्दुदू३। ह्वे अह्वार२३४याः। ऐ२ होऽ१आ२३यिही। प
२ २ १र २ ५र र २र
याःसा३हा। स्साम्। आर२षा२३४औहोवा ॥(१) हा
र र १ १ १ २१
वयꣳहर्य्य३वोपदृग्घाउ। अयꣳसरा३। सायिधावार२३
५ १ १ २ २ १र
४तायि। ऐ२होऽ१आ२३यिही। सप्ताप्रा३वा। तया।
१ ५र र २र र
दार२यिवा२३४औहोवा ॥(२) हावयंविश्वानितिष्ठतिहाउ।
२र र २ १ २ २ ५ २
पुनानोभु३। वानोपार२३४रायि। ऐ२होऽ१आर२३यिही।

° ऋ० मा० ९म० ६ष० १०मा०।

१र २ २ १र ३ ५र र २ १
सोमोदा३यिवाः । नद्व । रा२या२३४औहोवा । दधि
२ १ १ १ १
यते२३४५ ॥ ८ * ॥ [४]

२ १ १ १ र २ २
॥ आष्ट्रभार्गवम् ॥ अस्यप्रत्नाम । नुद्यू३ताम् ।
१ २ १ ३ ५ १ २
शुक्रन्दुदू३ । हे आ२ह्रा२३४याः । पयाःसा१हा२ ।
२ २ १ ५ ५ २ १ र १र
हसा३म् । आ२३४र्षी६हायि ॥ (१) अयᳪसूर्यः । दूवो
२ १ २ १ ३ ५ १
पा३हक् । आयᳪसरा३ । सायिधा२वा२३४तायि । स
२ २ २ १ ५ ५ २ १
प्राप्रो१वा२ । तआ३ । दा२३४यिवोई६हायि ॥ (२) अयं
र २ २ १ र र २ १ ३
विश्वानि । तिष्ठा३तायि । पूनानोभू३ । वानो२पा२३
५ १र २ २ २ १ ५ ५
४रायि । सोमोदा१यिवा२ः । नद्व३ । रा२३४योई६हा
यि ॥ १८ † ॥ [५]

१ र १ २ १ २
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ अस्योहोवा । प्रत्ना२म् । अ
२ ३ ५ २ १ २ र १ २ १
नूद्यू२३४ताम् । शुक्रन्दुदू । हे आह्रा१या२ः । पयः ।

* ऋ० मा० ११प्र० २भा० ८सा० । † ऋ० मा० १४प्र० १भा० १८सा० ।

Digitized by Google

२ २ २ ५ १ २ ५र र
हा । औ३होयि । सा२३४हा । सा२सा२३४औहो
१ १ १११११ २ र १ २ १
वा । ए३ । ऋषा२३४५यिम् ॥(१) अयौहोवा । सू
२ १ ३ ५ २ १ २र १ २
र्य्या२ः । दृवोपा२३४हक् । अयःसरा । सिधाबा१ता२
१ २ २ ३ ५ १ २
यि । सप्त । हा । औ३होयि । प्रा२३४वा । ता२ना
५र र १ १ ११११ २ २ १ १
२३४औहोवा । ए३ । दिवा२३४५म् ॥(२) औयौहोवा ।
१ ३ २ ३ ५ १ र२र १
वायिश्वा२ । निता्यिष्ठा२३४तायि । पुनानोभु । वनो
२ २र २ २ २
पा१रा२यि । सोमः । हा । औ३होयि । दा२३४यि
५ १ २ ५र र २ १ १ १
वाः । ना२स२३४औहोवा । ए३ । रिया२३
१ १
४५ः(३) ॥ २० * ॥ [६]

२ र २ १
॥ सौमित्रम् ॥ अस्यप्रत्नामनुद्युता३मे । शुक्रन्दु
२र २ १ २
दुह्रे । आ२१२३ । ह्रया३४३ः । पा२३याः । सहा
१ ४ ५ ४ ५ २ र
२ओ२३ । स्रसोवा । आ५र्षीई६हायि ॥(१) अयःसूर्य्य

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० २०गा० ।

२ १ १ १२ २
इवोपह३गे। अयꣳसराꣳसि। धा२१ऽ२३। वता३४

१ २ १ ४ ५ ४
३यि। सार३मा। प्रवा२औ३र२३। नघोवा। दा५यिवो

५ २ २ २ १२१२
६हायि॥(२) अयंविश्वानितिष्ठता३ए। पुनानोभुव।

२ १ २ २ १
नो२१ऽ२३। परा३४३यि। सोर३माः। देवा२औ३र२

४ ५ ४ ५
३। नघोवा। रा५योई६हायि(३)॥ १ *॥ [७]

१२ १ २ २
॥ ऐटतम्॥ चक्र। एमास्था। प्रतमाम। नू३।

१ २ १२ २ २ ५ २१ २ ५
आ२नू२३४औ३होवा। द्यू२३४ताम्। भ्रुक्रान्दू२३४दु।

१२ २ १ २ ५२ २ २ ५ २
ऋ३धा३। ऋ२आ२३४औ३होवा। द्युा२३४याः। पयाः

२ ५ २१ १ २ ५२ २ २
सा२३४द्धा। स्वसा३। स्वा२सा२३४औ३होवा। भा२३

१२ १ २ २
४र्षीम्॥(१) अयम्। एमायाम्। सूर्य्यइ। वा३।

१ २ ५२ २ २ ५ २ २
आ२यिवा२३४औ३होवा। पा२३४हक्। पया꣯सा२३४

* ऊ० गा० १४प्र० २ख० १सा०।

Digitized by Google

५ ३१ १ २ ५र र २ ३
रा । मिधा३ । मा२विधा२३४औहोवा । वा२३४ती ।
२ ३ ५ ३१ १ २ ५र र ३
सप्राप्रा२३४वा । तआ३ । ता२आ२३४औहोवा । दी
५ १२ १ २ र
२३४वाम् ॥(२) अयम् । एआयाम् । विश्वानि । ता
१ ३ ५र र ३ ५ २ ३
३यि । ना२यिता२३४औहोवा । ष्ठा२३४ती । पुनानो
५ ३१ १ ३ ५र र ३ ५
२३४भू । वनो३ । वा२नो२३४औहोवा । पा२३४री ।
१र २ ५ ३१ १ ३ ५र र
सोमोदा२३४यिवाः । नस् ३ । ना२स् २३४औहोवा ।
२ ५
री२३४याः ॥ २ * ॥ [८]

१ २ ऽ २
॥ धुरासाकमश्वम् ॥ अस्यप्रत्ना३म् । हौ३हो३१यि ।
२ ऽ २ २ ऽ २
अनुद्युता३म् । हौ३हो३१यि । शुक्रन्दुदू३ । हौ३हो
र २ ऽ २ २ ऽ
३१ । ह्रे अह्वया३ः । हौ३हो३१यि । पयःसहा३ । हौ
२ र २ ऽ २
३हो३१ । ससाम्रषा३यिम् । हौ३हो१२३४५ई । डा ॥(१)

* ऊ० मा० १४प्र० २ख० २सा० ।

१ र २ ५ १ र २ ५ १
अयꣳसूर्य्यो३ः। हौ३होऽ३१यि। इवोपदृ३क्। हौ३हो

१ ५ १ र २
३१। यि। अयꣳसरा३। हौ३हो३१। सिधावता३

४ ३ ४र ५ र १ १ १ ५
यि। अयꣳसराꣳसिधा। हा३हा३यि। वा२३४ता

१ १ १ १ ३ ५र र २ र
यि। साप्ता३उवा३। प्रा२वा२३४औहोवा। तआदि

५ १ १ ५ १ र
यि। हौ३हो३१यि। सप्तप्रवा३। हौ३हो३१। तथा

२ ५ १ १ १
दिवा३म्। हौ३हो३१२३४५ई। डा॥(२) अयंविश्वा३।

५ १ १ ५ १ १ र र १
हौ३हो३१। निर्तिष्ठता३यि। हौ३होयि। पुनानोभू

५ १ र २ ५ १ र
३। हौ३हो३१। वनोपरा३यि। हौ३हो३१यि। सो

र र १ ५ १ र १ ५ १
मोदेवा३ः। हौ३हो३१। नसूरिया३ः। हौ३हो३१२

३४५ई। डा॥३*॥[९]

१ १२१र १ १ २१
॥विलम्बसौपर्णम्॥ अस्यप्रत्नामनुद्युतम्। इयइ

१ ४ ३ ४ ५र र १ १ १
याहायि। शुक्रन्दुदुह्रेआ। हा३हा३। ह्रा२३४

* ऋ० अ० १४अ० २व० २३।०।

५ १ २ २ १ ३ ५र र २ र
याः। पाया३उवा३। सा२हा२३४औहोवा। ससाम्ने

३ १ १ १ १ १ २ १ र २ र १ २ १ २
षा२३४५यिम्॥(१) अयंसूर्य्यइवोपदृक्। ईयइयाहा

४ ३ ४र ५र १ २ १ ५
यि। अयꣳसराꣳसिधा। हा३हा३वि। वा२३४नायि।

२ २ २ १ ३ ५र र २ र
सात्रा ३ उवा ३। प्रा २ वा २ ३ ४ औहोवा। तस्मादि

३ १ १ १ १ २ १ र २ १ १ १ २
वा२३४५म्॥(२) अयंविश्वानितिष्ठति। ईयइयाहायि।

४ र १र ४५र २ २ १ ५ १ २
पुनानोभुवनो। हा३हा३यि। पा२३४रायि। सोमा३

२ १ ३ ५र र २ र ३
उवा ३। दा २ यिवा २ ३ ४ औहोवा। नसूरिया २ ३

४ ५ः॥ ४*॥ [१०] १६

अथ चतुर्थी†।

३१२३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
एषप्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यःसुतः।

१ २ ३ १ २
हरिःपवित्रेअर्षति॥ १‡॥

---

* ऊ० आ० १४प्रा० २च० ४सा०।

† मूलेलियं चतुर्दशसूक्तस्य प्रथमा, विवरणादि-मतेप्येवमेव। तथैवानोत्तरत्र बोध्यम्।

‡ इयमत्रैव पुनः श्रोतव्या पञ्चम-द्वितीय-द्वितीय-मवने। ऊ० वे०६, ७, ११, ४।

Digitized by Google

"हरिः" हरितवर्णः "देवः" द्योतमानः "एषः" सोमः "प्रत्नेन" पुराणेन "जन्मना" जननेन* "देवेभ्यः" देवार्थं "सुतः" अभिषुतः सन् "पवित्रे" "अर्षति" आरोचते ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी।

२ ९ ३ २ ३ १ २   ३ २ ३ १ ३ १ २
एषप्रत्नेनमन्मनादेवोदेवेभ्यस्परि।
३ १२ १२
कविर्विप्रेणवावृधे ॥ २ ॥

"प्रत्नेन" पुराणेन "मन्मना" साधनेन स्तोत्रेण युक्त इति शेषः† "देवः" द्योतमानः "एषः" सोमः "देवेभ्यः" देवार्थं "कविः" मेधावी सन् "विप्रेण" मेधाविना यजमानेन ऋत्विजा "परिवावृधे" परिवर्द्धते ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी‡।

३ २ ३ १२   १२ ३ २ ३ १ २
दुहानःप्रत्नमित्पयःपवित्रेपरिषिच्यसे।
१ २ ३ १ २
क्रन्दन्देवाँअजीजनः ॥ ३ ¶ ॥ १७

---

* 'जन्मना—कर्मणा, आत्मना वा'—इति वि०।

† 'मन्मना—मन्म बलमभिधीयते, बलेन'—इति वि०।

‡ मूले त्वेतदृगेव षष्ठदशं सूक्तम्, विवरणादि-लयेऽप्येवमेव।

¶ ऋ० वे० ६, ८, ११, ४।

"प्रत्नमित्" पुराणमेव "पयः" रसं * "दुहानः" हे सोम! पवित्रे परिषिच्यसे। हे सोम! त्वं "क्रन्दन्" शब्दं कुर्वन् "देवान्" इन्द्रादीन् "अजीजनः" स्वसमीपे जनयति। यत्र सोमोऽभिषुते तत्र देवा नियतं प्रादुर्भवन्तीत्यर्थः॥

"अजीजनः"-"अजीजनत्"—इति पाठौ †॥६॥१७

अथ सप्तमी ‡।

१ २ २ १ २ ३ २ ३ १ १ २ ३ १ २
उपशिक्षापतस्थुषोभियसमाधेहिशत्रवे।
१ २ ३ १ २ २
पवमानविदारयिम्॥ १ ¶॥

हे "पवमान" सोम! "उपशिक्ष" त्वं समीपे कुरु। कान्? "उपतस्थुषः" उपक्रम्य स्थितानस्मदभिमतानित्यर्थः। "शत्रवे" शत्रुषु अस्मद्विरोधिषु "भियसं" भयम् "आधेहि" कुरु जय। किञ्च तेषां शत्रूणां "रयिं" धनं "विदाः" § अस्मभ्यं विद्धि देहीत्यर्थः॥७॥

---

* 'पयः—स्वादु-द्रव्यम्, अथवा पय उदकं क्षीरं वा'—इति वि०।

† "सिच्यसे"-"सिच्यते"—इत्यपि पाठभेदः।

‡ मूले लियमहादशसूक्तस्य प्रथमा, विवरणादिसमतेऽप्येव मेव। तथैवानोचरम बोध्यम्।

¶ ऋ० वे० ९, ८, ९, ५।

§ 'विदलाते, विद्लृलाभे, विदसत्तायामित्यस्येदं रूपम्'—इति वि०।

अथ अष्टमी-नवम्योर्ऋचोः प्रतीकमेव माम्नातम्—"उपोषु-जातमप्तुरम्"—इति, "उपास्मैगायतानरः"—इति च॥

तेष्वष्टमी प्रदेशान्तरे* आम्नाता—

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र

उपोषुजातमप्तुरं(गोभिर्भङ्गम्परिष्कृतम्।

१ २ ३ १ २

इन्दुन्देवाअयासिषुः)॥ २ †॥

"जातं" सम्यक् प्रादुर्भूतम् "अप्तुरम्" वसतीवरीभिः अद्भिः प्रेरितं "भङ्ग" शत्रूणां भञ्जकं "गोभिः" गोविकारैः पयोभिः "परिष्कृतम्" अलङ्कृतं संस्कृतम् "इन्दुं" सोमं "देवाः" इन्द्रादयः "उप उ"—इति निपातद्वयसमुदायः उपेत्यस्यार्थे वर्त्तते सुष्ठु "उप अयासिषुः" उपागच्छन्ति॥ ८॥

नवमीत्वेव मन्यत्राम्नाता‡—

१ २ ३ १ २ ३ १ २

उपास्मैगायतानरः(पवमानायेन्दवे।

३ १ ३ १ २र

अभिदेवाँइयक्षते)॥ ३ ¶॥ १८

* अत्रैव पञ्चमे इति बोध्यम्। परमाश्चर्यमेतत्—भविष्यत्पाठस्य पूर्वम्प्रतीकग्रहणमिति।

† छ० आ० ६, १, १, १ (२भा० ४२ पृ०)— अत्रैव ५, २, १०, १—ऋ० वे० ७, १, २०, ३।

‡ उत्तरामन्त्रारम्भो वा।

¶ अत्रैव १, १, १, १ (२भा० ४पृ०)—ऋ० वे० ६, ७, ३९, १।

Digitized by Google

हे "नरः" नेतारः! यज्ञस्य "देवान्" इन्द्रादीन् "अभि इयक्षते" आभिमुख्येन यष्टुमिच्छते यजमानाय क्षरते "अस्मै" अभिषूयमाणाय "इन्दवे" सोमाय "उप गायत" उपगानं कुरुत॥ ८॥ १८

१ र १ २र १
॥ अध्यम्॥ उपोषुजा२तम्। अप्तुरोवा। गोभि

२ १ २ ३ १ १ २र १र २
र्भङ्गाम्। परिष्कृताम्। इन्दुंदेवाअ। या२३। सि

२ १र १ २र १
षाउवा। अूधिया२॥(१) तमिद्वर्धा२न्तु। नोगिरो

२ १ २ १ २ ३र २ १ २ १
वा। वत्सꣳसꣳशायि। अवरीरिवा। यइन्द्रस्यहृ। दा

२ १र १ र
२३म्। सनाउवा। अूधिया२॥(२) अर्षानःसो२म।

१ २ १ २ १ २ ३र १ १ र २
शङ्गवोवा। धुक्षस्वपायि। प्युषीमिषाम्। वर्द्धासमु

१ २ १र २
द्रम्। ऊ२३। क्थियाउर्वा। अूधियार। ए२३हिया

१
३४३। ओ२३४५ई। डा॥ ५*॥ [१]

१ र २ र
॥ प्रतीचीनेडङ्काम्ऽऔ॥ उपोषुजातम्। आ२प्तु

* ऊ० गा० ६प्र० २ख० ५गा०।

राम्। गोभिर्भङ्ग्म्। परायिष्कृता२३४म्। हाहो
यि। इन्दुन्देवाअ्आ३या। सिषू। औ २ ३ होवा॥(१)
तमिद्दर्द्धन्तु। नो२गिराः। वात्स५सर्५शि। स्वरायि
रिवा२३४। हाहोयि। यदिन्द्रस्याद्वा३र्द्दीम्। सनायिः।
औ२३होवा॥(२) अर्षानःसोम। आ२ङ्वायि। धू
न्वस्वपि। प्युषायिमिषा२३४म्। हाहोयि। वर्द्धास मूद्रा
३मू। क्षियशा। औ३होवा। ई२डा(३)॥ ११॥ [२]

॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ उपाऽ५स्मै। गा३याऽ३तानाराः।
पा३वामा३ना। या२३आ। ऊम्मायि। दा३वायि।
आभिदेवा५इयार२क्षताउ॥ ते(१)आ। भितेमा। धू३
नापा३याः। आथा२र्वा। णोआ२३आ। ऊम्मायि।
आ३यूः। दायिवन्देवायदा२यिवयाउ॥ यू(२)साः। नः

* ऊ० गा० १९प्र० २ख० ११गा०।

२ १ २ २ १ १२ २
पवा। स्वा३या्क्वा३वायि। भ्रम्भ्रा२ना। यशा२३मा।
१ २ २ १ ट ट २ २
कुष्वायि। वाँ३तायि। या॰राजन्नोषधा२यिभ्य॰प्राउ।

॥ ११ * ॥ [३]

२ १ २ ४ ट ५ २ २ ५ २ १
॥ सप्तम॥ उपश्रो३ताप। तस्यु२३४षा:। भिया
ट १ २ ४ २ ५ २ १
सा२म्। आधायिहो३याह्। चा३२३४वायि। पवा।
ट २ ४ २ ५
मानावी३दाह:। रा३४५योह्हायि ॥ २ † ॥ [४] १८

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायन्यस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

पञ्चम: खण्ड:‡ ॥ ५ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० २अ० ११गा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १अ० २गा०।

‡ 'प्रथमस्याक्रोशविध्यमानमुक्तम्। नु एतत्सौभिमरवे इमत्र: प्रथमोऽभिक्रोपकर्मी भिश्च वविध्यकमानम्'—इति वि०।

षष्ठे खण्डे *—

प्रथमतृचे, प्रथमा।

१ २र २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रसोमासोविपश्चितोपोनयन्तऊर्मयः।
१ २ ३ १ २
वनानिमहिषाइव॥१†॥

"विपश्चितः" मेधाविनः "ऊर्मयः" प्रवृद्धाः "सोमासः" सोमाः "अपः" वसतीवर्याख्याः "प्र नयन्ते" प्राप्नुवन्ति। तत्र दृष्टान्तः— "वनानि महिषा इव" यथा प्रवृद्धा मृगा वनानि प्राप्नुवन्ति तद्वत्॥

"अपोनयन्त"-"अपानयन्ति"—इति पाठौ॥१॥

अथ द्वितीया।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभिद्रोणानिबभ्रवःशुक्राऋतस्यधारया।
२ ३ १ २
वाजंगोमन्तमक्षरन्॥२‡॥

---

* 'इदानीं माध्यन्दिनः पवमानो वक्तव्यः, स च त्रिच्छन्दा उक्तः। स च उच्यते— प्रसोमास इति'—इति वि०।

† छ० ब्रा० ५, २, ५, २ (२आ० २१पृ०)=ऋ० वे० ६, ८, २३, १।

‡ ऋ० वे० ६, ८, २२, १।

"अभि" अरन्तीति शेषः अभि शब्दश्रुतेरुचित-क्रियाध्याहारः । किम्प्रति? "द्रोणानि" द्रोणकलशान् * [यद्यपि द्रोणकलश एक एव तथापि तत्प्राधान्यादितराण्यपि पात्राणि द्रोणानीत्युच्यन्ते । अथवैकस्मिन्नेव पूजार्थं बहुवचनम् । के "बभ्रवः" बभ्रुवर्णाः सोमाः "शुक्राः" दीप्ताः । केन प्रकारेण? "धारया" धाराकारेण । कस्मै प्रयोजनाय? † ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ २र ३ १२१२ ३ १ २
सुताइन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः ।

१ २ ३ १ २
सोमाअर्षन्तुविष्णवे ॥ ३ ‡ ॥ १८ ¶

"सुताः" अभिषुताः सोमाः इन्द्रादिदेवार्थम् "अर्षन्तु" गच्छन्तु§ ॥

"अर्षन्तु"-'अर्षन्ति"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १८

* 'द्रोणानि—द्रोणकलश सम्बन्धानि पव-चमसादीनि पात्राणि, तानि'—इति वि० ।

† परतोऽन्वयः ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ११, १ ।

¶ 'अत्र गायत्री भवति'—इति वि० ।

§ पूर्वर्चान्वयः ।

१ २ १ १ २१२
॥ आश्वम् * ॥ अभिद्रोणा २ निबभ्रवाः। पुनाकाश्रतस्य
२ १ १२१२ २ १ ५ २
धारा २ या। वाजङ्गोमार३ न्ताम्। आच्छा ३ उवा ३।
१ १ १ १
रा२३४५न् (२) ॥ ११ † ॥ [१]

१ २ ५ २ २ १
॥ सोमसाम‡ ॥ सुताइन्द्रा। यवायवायि। वाह्व
२ २ १ २ २ १ २ ५ ५
णायाश्माइ। रुद्भियाः। सोमाआर्षा३४। च्चाउ। तु
४
वा५यिष्णवायि। चोपुई। डा(३) ॥ १२ ¶ ॥ [२]

१२ २ १ २ १२
॥ आश्वम् ॥ प्रसोमासो २ विपश्चिताः। अपोनयन्त
२ १ १ १२ २ ५ २ १ १
ऊर्म्मा २ याः। वनानिमा२३च्ची। षा३उवा३। वा२३
१ १ १ २ १ २ १२ २
४५ ॥(१) अभिद्रोणा २ निबभ्रवाः। पुनाकाश्रतस्यधारा
१ १२ १ २ २ १ ५ २ १
२या। वाजङ्गोमा२३न्ताम्। आच्छा३उवा३। रा२
१ १ १ १ २ २ १ २
३४५न् ॥(२) सुताइन्द्रा २ यवायवायि। वरुणायमरुद्भ्या

* "आश्वसूक्तम्"—इति ख० पु० पाठः। † ज० गा० १प्र० २ख० ११गा०।

‡ "आयपौर्णोमसाम"—इति ख० पु० पाठः। ¶ ज० गा० १प्र० २ख० १२गा०।

१ २र१र २ १ ऽ २ ११
२याः । सोमाश्चर्षा२३ह्य । वायिष्वा३उवा३ । वा२३
११
४५यि(३) ॥ १२ * ॥ [३]

१ र २र१र २ २
॥ श्राप्युभार्गवम् ॥ प्रसोमासोवि । पश्चा३यिताः ।
१र २ १ २ ५ १ २
श्रापोनया३ । ताऊ२र्म्मा२३४याः । वनाना१यिमा२ ।
१२ १ ५ ५ २ १र र
षिषा३ः । श्रा२३४यिवो६हायि ॥(१) श्रभिद्रोणानि ।
२ २ १ र २ १ २ ५ १र
बभ्रा३वाः । पुत्रुकाश्चता३ । स्य्मधा२रा२३४या । वाजा
२ २१ १ ५ ५ २ १र र
क्रो१मा२ । तमा३ । श्चा२३४रो६हायि ॥ सुताइन्द्रा
१र २ १ र१ १ २ ५
य । वाया३वायि । वारुणाया३ । मारु२ह्रा२३४याः ।
१र २ २१ १ ५
सोमाश्रा१र्षा२ । तुवा३यि । श्चा२३४वो६हायि(३)॥११ †॥[४]

१र र१ २ १ २१ २१
॥ जराबोधीयम् ॥ प्रसोमासोवा । वायिपश्चिताः । श्रपो
२ र१ २ ४ऽ ५र
ना२३या । तऊर्म्मायाः । वनाना१यिमा२३हायि । षाः ।

* ऋ० मा० ६प्र० २ष० ११वा० ।

† ऋ० मा० ११प्र० २ष० ११वा० ।

Digitized by Google

इवो३४५ई। डा॥(१) अभिद्रोणौवा। नायिवभ्रवाः।

पृक्काआर३र्त्ता। स्वधारायाः। वाजाङ्गो१मार२३न्ताम्।

प। वरो३४५ई। डा॥(२) सुताइन्द्रोवा। यावाय

वायि। वरुणा२३या। मरुद्भायाः। सोमाआर१र्षा

२३न्तू। वि। आवो२३४ई। डा(३)॥ १२ *॥ [५]

॥ सोमसाम† ॥ प्रसोमासाः। विपश्चिताः। आपो

नाया३न्ता३यि। ऊर्म्मयः। वानानायिमा३४। हाउ।

हिषा५इवा॥(१) अभायिद्रोणा। निबाभ्रवाः। पृक्का

आर्त्ता३आ३। धारया। वाजाङ्गोमा३४। हाउ।

तमा५अरान्॥(२) सुताइन्द्रा। यवायवायि। वारु

णाया३मा३। रुद्भियाः। सोमाआर्षा३४। हाउ। तु

वा५यिष्णावायि। होपुई। डा(३)॥ १३ ‡॥ [६]

---

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० १२सा०। † "गायत्रीसोमसाम"—इति ख० पु० पाठः।

‡ ऊ० गा० १४प्र० १ख० १३सा०।

१ र २र र १ २
॥ रौहितकुलीयम् * ॥ प्रसोमासोविपाः । चिना२ः ।
१ र २ १र २ १ १ २ १
अपोनयन्तऊर्म्मा२३याः । वाना२नायिमा२३ । हिषो२
५ ४ ५ २ १ र २र १ २
३४वा । आ५यिवोई्हायि ॥(१) अभिद्रोणानिबा । भ्रवा
१ र २ १र २ १ १
२ः । शुक्राऋतस्यधारा२३ या । वाजा२ङ्गोमा २ ३ ।
२ १ ५ ४ ५ २ १र २र १
तमो२३४वा । आ५रो ई हायि ॥(२) सुताइन्द्रायवा ।
२ १ र २ १ २ १ १
यवा२यि । वरुणायमरुद्भ्या२३याः । सोमा२आर्षा२३ ।
२ १ ५ ४ ५
तुबो२३४बा । आ५वोई्हायि ॥ १४ † ॥ [७]

१र १ २ १ ३ २
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ प्रसौहोवा । मासो२ । विपा
३ ५ १ र २ १ २ १ र
श्चा२३४यिताः । अपोनय । तऊर्म्मा१या२ः । वना ।
२ २ ३ ५ १ ३ ५र
हा । औ३होयि । ना२३४यिमा । हा२यिषा२३४वो
र २ १ ११११ २ र १ २ १
हावा । ए३ । दूवा२३४५ ॥(१) अभौहोवा । द्रोणा
२ २ ३ ५ १ र २ १ २
२ । निवाभ्रा२३४वाः । शुक्राऋत । स्याधा१राया२ ।

---

* "रौहित कुलीयोत्तरम्"—इति अ०पु०पाठः । † उ० आ० १४प्र० १ख० १ः५७० ।

Digitized by Google

वाजम्। हा। औ३होयि। गो२३४मा। ता२मा२
३४औहोवा। ए३। नरा२३४५न्॥(२) सुतीहोवा।
सायिन्द्रा२। यवाया२३४वायि। वरुणाय। मरुद्भ्या१
या२ः। सोमाः। हा। औ३होयि। आ२३४र्षा।
तू२वा२३४औहोवा। ए३। ष्णुवा२३४५यि (३)॥ ११*॥[८]

॥ आभीकम्॥ प्रा२३४सोमासो५। विपौहोश्चायि
ताः। अपोनयन्तऊ१र्म्मा३याः। वनामा २ ३ ४ यिमा।
हायिषा३उवा२३४३। आ३४५यिवो६हायि॥(१) आ२३४
भिद्रोणा५। निबौहोभ्रावाः। शुक्रातस्थधा१रा३या।
वाजक्नो२ ३ ४ मा। तामा३उवा२३४३। हा३४५रो६हा
यि (२)॥ १५ †॥ [९]

॥ ऐडसौपर्णम्॥ प्रसोमासोवा। वायिपश्चा२३४यि

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० ११गा०। † ऊ० गा० १९प्र० १ख० १५गा०।

Digitized by Google

५ २ १ १ १ ७ ३ ५ १
ताः। अपोनया। तऊ२र्म्मा२३४याः। वा२ना। ना
१ १ १२ १ २ ४५ २ २ १
२३यिमा। हायिषाद्वा। औ३होवा॥(१) अभिद्रोणो
२ १ १२ ५ २ १ २ १ ७ ३
वा। नायिबभ्रा२३४वाः। पृक्राक्रता। स्वधा२रा२३
५ १ २ १ २ १
४या। वा२जाम्। गो२३मा। तामत्वरान्। औ२
४ ५ १२ १२ १२३ ५ २१
३होवा॥(२) सुताइन्द्रोवा। याथाया२३४वायि। वरु
२ १ ७ ३ ५ १ २
णाया। महु२क्षा२३४याः। से२माः। भा२३र्षा।
१ २ १ २ ४ ५
द्वविष्णवा। औ३होवा। होऽ५ई। डा (३)॥१६*॥[१०]१९

अथ प्रगाथात्मके—

द्वितीयसूक्ते, प्रथमा।

१ २ ३१२ ३ २ २१ २३ १२
प्रसोमदेववीतयेसिन्धुर्नपिप्येअर्णसा।
३ १२ १२ ३ १२ १२ ३१२ १ १ ३१२
अ᳕ शोःपयसामदिरोनजागृविरच्छाकोशम्मधुश्चुतम्॥१†॥

---

* ऊ० गा० १९प्र० २ख० १६गा०।

† ऋ० मा० ६, १, ३, ४ (२भा० ८६पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १४, १।

हे "सोम!" त्वं "देववीतये" देवानां पानाय तदर्थम् "अर्णसा" वसतीवर्य्याख्येन "प्रपिप्ये" प्राप्यायसे । तत्र दृष्टान्तः— "सिन्धुः न" यथा सिन्धुः उदकेन प्रपिप्ये प्रप्यायते तद्वत् [प्यायतेर्लिटि "लिड्यङोश्च(६,१,२९)"—इति पी-भावः], स त्वं "मदिरो न" मदकरः सुरादिरिव "जागृविः" जागरणशीलः । यद्वा, नेति सम्प्रत्यर्थे । इदानीं मदकरो जागरणशीलस्त्वम् । "अंशोः" लताखण्डस्य "पयसा" रसेन "मधुश्चुतं" मधुर-रसस्य क्षारयितारं "कोशं" द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि गच्छसि ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १र २र

आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः ।

१ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १र २र

तमीꣳहिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥ २*॥ २०†

"हर्यतः" स्पृहणीयः "प्रियः" प्रीणयिता "सूनुर्न" सूनुरिव "मर्ज्यः" मार्जनीयः "अर्जुनः" श्वेतवर्णः ‡ सोमः "अत्के" रूपे विचित्रे ¶ "आ अव्यत" आप्नोति "तम्" "ईम्" §

---

* ऋ० वे० ७, ५, १४, २ ।

† 'अत्र यौधाजयं साम'—इति वि० ।

‡ 'अर्जुनः—तृणसवर्णः । "एतानि अर्जुनानि सोमप्रतिनिधौ" तस्मादर्जुन इत्युक्तम्'—इति वि० ।

¶ 'अत्के—निक्ते, सोमप्रक्षालिते'—इति वि० ।

§ 'तम् ईम्—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

एनं सोमम् अङ्गुलयः "नदीषु" नदमानासु वसतीवरीषु "गभस्त्यो." वाह्वोः "आ" आभिमुख्येन "हिन्वन्ति" प्रेरयन्ति। तत्र दृष्टान्तः—"अपसः यथा" वेगवन्तः शूराः जनाः "रथं" सङ्ग्रामेषु प्रेरयन्ति तद्वत् ॥

"अर्जुनः"-"अर्जुन"—इति पाठौ ॥ २ ॥ २०

॥ यौधाजयम् ॥ प्रसो३१। मा३दे। व। वायि तार२३४यायि। सायिन्धू३ः। नपार्यि। प्येषा३४५। णा२३४सा। अ॒ग्ॅशोःपया। सा। मदिरोर। नजा ३४५। गृ२३४वीः। अक्का२। कोशार्म्। मधू३४५। स्रू२३४ताम्॥(१) अच्छा३१। को३शम्। म। धूसूर ३४ताम्। आच्छा३। कोशार्म्। मधू३४५। स्रूर ३४ताम्। आचार्यतो। प। र्जुनोषार। ल्कोषा३ ४५। व्या२३४ता। प्रिया२ः। ह्वनूरः। नमा३४५। जी२३४याः ॥(२) प्रिया३१ः। ह्व३नुः। न। मांर्ज्जा

२३४याः। प्रायाइः। ह्वन्२ः। नमा३४५। जौ२३४
याः। नमायि॒हिन्वा। ति। अपसो२। यया३४५।
रा२३४थाम्। मदा२यि। षूवा२। गभा३४५। स्तौ
२३४योः(३) ॥ १३ * ॥ [१]

॥ वज्रम् ॥ प्रसो४म। दा४यिववो। तया३यि।
सायिन्धूः। नपायि। प्यॆमाणासाइ। आ॒शोःपया
३। सामा२दा२३४यिराः। नजा। गृवौवाओ२३४वा।
अक्का। कोशौवाओ२३४वा। मधूपुस्नुताम् ॥(१) च
क्का४को। शा४म्मधु। स्नुता३म्। चाक्का। कोशाम्।
मधूस्नूता३म्। आदर्य्यजौइ। अर्जू२नो२३४आ। त्कि
अ। व्यजौवाओ२३४वा। प्रियः। ह्वनौवाओ२३४वा।
नमा५र्जियाः ॥(२) प्रिया४ःह्व। न्४म्नम। जिया३ः।

* छ० आ० १प्र० १ख० १२गा०।

४ ५ १र १ १ १ र
प्रायाः। प्रायाः। ह्वनूः। नमार्ज्जायाइः। जामीॅ
१ १ १ ५ र ३१ ३
त्विन्वाइ। तियारपारइ४साः। यथा। रथीवाश्वौरइ
५ र ३१ ३ ५ ४ ४
४वा। नदी। घुवौवाभोरइ४वा। गभापूस्तियोः। दो
पुई। डा (३)॥ १२* ॥ [२]

५ ४ १ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तः॥ प्रसोइमाइदेववीतयोवा। सायिन्धु
१ र १ १ १ र १ १र
र्न्नपि। प्येश्चार्णा१सा२। आॅंशोःपयाइ१२२३४। सा
४ ५ २ १ २ १ २ २ २
मदिरः। नजागृ१वी२ः। अच्छाको१शा२म्। मधुइ।
१ २ १ १ १ १
स्रू२३४५। ता२३४५म्(१) ॥ १२ † ॥ [३]

५ र २ ४र ५ ४र ५ १
॥ गौगवम्॥ प्रसोमाइदेववीतयायि। सायिन्धू२ः।
१ र २ ४ ५ २ १र र १
नपिप्येश्वाइ। णासा। अॅंशोःपयसामन्दारइयिरोर।
३ २ ४ ५ २ १र ३ २ ४ ५
नजाइगृवीः। अॅंशोःपयसामदिरः। नजाइगृवीः।

* ऊ० गा० ६प्र० २अ० १२सा०।

† ऊ० गा० ५प्र० १अ० १३सा०।

१ र २र १ २ २ १ ५ ४
आच्छाको । शा । औ३हो । मधो२३४वा । सू५तो

६हायि(१) ॥ १७ * ॥ [४]

१ र १ २ १ र २ १
॥ शुद्धाशुद्धीयाद्यम् † ॥ प्रसोमदेववीतयायि । सि

२र १ २ १ र र २ १र
न्धुर्न्न पिप्ये अर्णा२३सा । अ७ंशोपयसामदिरोनजागृ२३

२ १र २ १ ३ २ ५र र
वीः । अच्छाको२३शा३म् । मा२ । धुसू३४औहोवा ।

२ १ १ १ १
ता२३४५म्(१) ॥ १८ ‡ ॥ [५]

५ र २ ४र ५ ४र ५ १
॥ गौङ्गवम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि । सायिन्धू

१ २र २ ४ ५ २ १र र
२ः । नपिप्ये अा३ । र्णासा । अ७ंशोःपयसामदा२३यि

१ २ २ ४ ५ २ १र र २ १
रो२ । नजा३गृवीः । अ७ंशोःपयसामदिरः । नजा३

४ ५ १ र २र १ २ २ १ ५
गृवीः । आच्छाको । शा । औ३हो । मधो२३४वा ।

४ ५ ५ र २ ४ ५ ४ ५ १
सू५तो६हायि ॥(१) अच्छाको३शम्मधुसुताम् । आच्छा

१र २ २ ४ ५ २र १ र
२ । कोशम्मधू३ । सुताम् । आहर्य्यंतोअर्ज्जुनो२३

* ज० गा० ९प्र० २ख० १७सा० । † "पदान्तःशुद्धाशुद्धीयम्"—इति ख०पु० पाठः ।
‡ ऊ० गा० ९प्र० २ख० १८सा० ।

१ ३र २ ४ ५ २र १ र र र
अ।२। त्वका३व्याजा। आहय्यतौअज्ज्नोअ। त्वक

२ ४ ५ १ १र १ २ २ १
आ३व्याता। प्रायःह्व। ना। औ३हो। नमो२३४

५ ४ ५ ५ २ ४ ५ ४ ५ १
वा। जा५योई३हायि॥(२) प्रियःह्व३नुन्नमर्जियाः। पा

१र ३ २ ४ ५ २ १र
या२ः। ह्वनुन्नमा३। जायाः। तमौ३च्छिन्वन्त्यपा२३

१ ३ २ ४ ५ २ १र ३ २
सो२। यथा३राथाम्। तमौ३च्छिन्वन्त्यपसः। यथा३

४ ५ १ र २ १ २ २ १ ५
राथाम्। नाईषु। आ। औ३हो। गभो२३४वा।

४ ५
स्ता५योई३हायि(३)॥ १७ *॥ [६]

३ २ २ ४५ ५
॥ यौधाजयेत्वाराम्तम्॥ प्रहो३१। मा३हे। व।

२ २ ५ १ २ १ र
वायिता२३४यायि। सायिन्धू३ः। नपा५२यि। प्येअ

३ १ १ १ १ २ १ २ १ २र १
णो३४५। सा२३४५। अ३ओःपया। सा। मदिरा५२।

र ३ १ १ १ १ २ १
नजागृ३४५। वी२३४५ः। अच्छा२। कोशा५२म्।

३ १ १ १ १ ३ २ २ ४
मधुश्चू३४५। ता२३४५म्॥(१) अच्छा३१। को३शम्।

* उ० गा० ११प्र० १ख० १०वा०।

५   २ २   ५   १ २   १र
म । धुक्ष्व२३४ताम् । आच्छा३ । कोशा ऽ२म् । मधु

२ १ १ १ १   १र १ २ १   २   १ र
श्चू३४५ । ता२३४५म् । आचार्य्यतो । अ । जुनोआ

र   २ १ १ १ १   १   १
ऽ२ । त्कोअव्या३४५ । ता२३४५ । प्रिया२ः । इन्नू ऽ२ः ।

२ १ १ १ १   २ १   २ ४ ५
नमर्ज्जा३४५ । या२३४५ः ॥(२) प्रिया२१ः । इ३नुः । न ।

२ २ ५   १ २   १र
मार्ज्जा२३४याः । पाया३ः । इन्नू ऽ२ः । नमर्ज्जा३४५ ।

२ १ १ १ १   २ १   २ १   २   १   र
या२३४५ः । तमायिर्ण्हिन्वा । ति । अपसो ऽ२ । यया

२ १ १ १ १   १   १   २
रा३४५ । या२३४५म् । नदा२यि । पूवा ऽ२ । गभ

२ १ १ १ १
स्ता३४५ । यो२३४५ः(३) ॥ १५ * ॥ [७]

५ र २   ४र५४र   ५   १   २
॥ दैर्गतम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि । सायिन्धुर्न्न

र १ २   ३ २   ऽ २ १ १
पि । प्येआर्णा१सा२ । अंशोः३ः । होइ३हो२वा । पय

र   र   २   १   १ २   ५र
सामदिरोनजागृ१वीरः । अच्छा२३ । को२शा२३४औ

२ १ ३ १ १ १ १ ५ र २
होवा। ए३। मधू२श्चुता२३४५म् ॥(१) अच्छाको३

४ ५ ४ १ १ र २र १ १
३ग्रम्मधुश्चुताम्। आच्छाकोशम्। मधूश्चु१ता२म्।

२र २ ३ २ २ १ र र ०
आहा३। हौ३हो३। वा। यंतोअर्जुनोअत्केअव्याता

१ १ २ ५र र २ १
२। प्रिया२३:। ह२ना२३४औहोवा। ए३। नमा२

१ ३ १ १ १ १ ५ २ ४ ५ ४ ५ १ २र
ञ्जिया२३४५: ॥(२) प्रियःहः नुर्न्नमर्जिया: । प्रायःहनु: ।

१ २ ३ २ ३ २ २ १
नमाञ्जा१या२:। तमा३यिम्। हौ३हो३वा। हिन्व

र २ १ १ ३ ५र
न्त्यपसोयया१रा१था२म्। नदा२३यि। षू२वा२३४औ

र २ १ ३ १ १ १ १
होवा। ए३। गभा२स्तियो२३४५:(३) ॥ १२ * ॥ [८]

५ र २ ४र५ ४ ५ १
॥ पौरुहन्मनम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि। सायि

२ र १ २ १ १ र २
न्धुर्नपि। प्येआर्णा१सा२। णासा२। आ२ऽशोःपय।

१३ २ १ २ १ २ ३ ५ १
सा। मदिरो३। मदिरो३। नाजागृ२३४वी। आ

* ऊ० गा० १८प्र० १खा० १२ष०।

१ २ १ २ १ ५ ४
च्छाकोशाम्। माधुश्चू२३४ताम्। मधू५श्चुताम्॥(१)

५ २ २ ४ ५४ ५ १ २ १२ १ १
अच्छाको३शम्मधुश्चुताम्। आच्छाकोशम्। मधूश्चू

१ १ १ १२ २
१ता२म्। श्चूता२म्। आवर्य्यतः। आ। जुनो

२ १ २ १ १ २ १ ५ १ २२ १
आ३। जुनोआ३। त्वेअव्या२३४ता। प्रायःसूनूः।

१ १ २ ५ ४ ५ २ ४ ५
नमाउर्जा२३४याः। नमा५उर्जयाः॥(२) प्रियःसू३नुर्न

४ ५ १ १२ १ १ १
मजिंयाः। प्रायःसूनुः। नमाउर्जा१या२ः। जाया२ः।

१ २ २ १२ २ १ २ १ १
तामी१हिन्व। तायि। अपसो३। अपसो३। याथा

२ ५ १ १२ १ २ १ ५ ४
रा२३४थाम्। नादीषुवा। गाभस्ता२३४योः। गभा

४
५स्तियोः। औ५ई। डा(३)॥ १३ *॥ [९]

१ २ २ २ १
॥ वारायणम्॥ प्रसोमदेवा२यिववीतयायि। सा

२ २ १ २ १२
यिन्धुर्न्नपिप्येअर्णसा। शोःपा३या। सामदिरो। न

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० १२सा०।

Digitized by Google

जा३ष्वा। गृवी२ः। अच्छाकोशम्मधोवा३ओ२३४वा।

श्चूतोइहायि ॥(१) अच्छाकोशौहो२यिमधुश्चुताम्। आ

च्छाकोशम्मधश्चुतम्। आहार्याहितो। अज्जनोआ।

त्केआ३ष्वा। व्याता२। प्रियःसूनुर्नमोवा३ओ२३४वा।

जा५योइहायि ॥(२) प्रियःसूनौहो२यिनमज्जियाः। प्रा

यःसूनुर्नमज्जियः। तमायिंहा३यिन्वा। तियपसो।

यथा३हायि। राया२म्। नदीषुवागमोवा३ओ२३४वा।

स्ता५योइहायि(३) ॥ १४ * ॥ [१०]

॥ हिहिङ्कारंवामदेव्यम् ॥ प्रसोमा२३देववीतयायि।

सायिन्धुर्नपिप्ये अर्णसांओः पयसामदिरोऽनजीहो ३।

ऊम्मा२। गृ२३वीः। अच्छाकोशाम्मधौहो३। ऊम्मा

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १४गा०।

१ ४ ५ २ १र ४
२। स्वुताम्। औ२३होवा ॥(१) अच्छाको ३ २ ३ अ
५ १ र र र र र
म्मधुस्वुताम्। आच्छाकोअम्मधुस्वुतमाद्वर्य्यंतोअजुर्नो
५ २ २र २ १ १ २ १ र१ २र
आत्कऔहो३। ऊम्मा२। व्या२३ता। प्रियस्वनुर्न्नमौ
२ १ १ २ ४ ५ २१
हो३। ऊम्मा२। जिया। औ३होवा ॥(२) प्रियःस्व२
४ ५ १ र र
३नुर्नमर्ज्जियाः। प्रायःस्वनुर्न्नमर्जियस्तमीॱहिन्वन्त्यपसो
२ ३र २ १ १ २ १र २ ३र
ऽयथौहो३। ऊम्मा२। रा२३थाम्। नदीषुवाऽगभौ
२ १ १ ४ ५ ४
हो ३। ऊम्मा२। स्तियोः। औ २ ३ होवा। हो५
ई। डा(३)॥ १७ ॥ [११]

२र र १ ३र १र २ १ २ १
॥ कण्वरथंतरं ॥ प्रासोमदेववीतयायि। सिन्धुर्न्न
२ १ २ २ र र र र
पायि। ष्ये३भार्णा३सा। अॱशोःपयसामदिरोनजागृ
२ ३र २ १र ५ २
वा२३४ऐहि। अच्छाको२३४आम्। मधा३१उवा२३।
२ २ ३ २ २र र १र २ १ २ १ २ १र
ए३। स्वतमा ॥(१) आच्छाकोअम्मधुस्वुताम्। अच्छा

* ज० आ० १८प्र० २ख० १७गा०।

कोशाम्। माइधुश्चूइताम्। आहर्य्यतोअर्जुनोअत्के
अव्यता२३४ऐही। आइहार्य्योइतो। अर्जुनोअत्केअ
व्यता२३४ऐही। प्रियःसू२३४नूः। ममा३१उवा२३। ए३।
जियश्चा॥(२) प्रायःसूनुर्न्नमर्जियाः। प्रियःसूनूः। ना
इमार्ज्जीइयाः। तमीᳪहिन्वन्त्यपसोयथा२३४मैही। ना
इमायिᳪहाइयिन्वा। तियपसोयथारथा२३४मैही। नदी
षू२३४वा। गभा३१उवा२३। ए३। स्तियोवा॥६*॥[१२]२०

अथ तृतीयतृचे, † प्रथमा।

प्रसोमासोमदच्युतःश्रवसेनोमघोनाम्।
सुताविदथेअक्रमुः॥ १ ‡॥

---

* ऊ० गा० २२प्र० २ख० ६सा०।

† 'उक्थोमाध्यन्दिनः पवमानः, उक्थानि गायत्राणि ०००। आर्भवः पवमानो यज्ञ्यः तस्य ज्योतिष्टोमवत् छन्दांसि साम्नाञ्च नामधेयैरिवोपाते'—इति वि०।

‡ छ० आ० ५, २, १ (१भा० २०पृ०)=ऋ० वे० ९, ८, २२, १।

Digitized by Google

"सोमासः" सोमाः "मदच्युतः" मदस्राविणः "सुताः" अभिषुताः सन्तः "विदथे" यज्ञे "मघोनां" हविष्मतां "नः" अस्माकं "अवसे" अन्नाय कीर्त्तये वा "प्र अक्रमुः" प्र गच्छन्ति ॥

"मघोनां"-"मघोनः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
आदीँ हँसोयथागणंविश्वस्यावीवशन्मतिम् ।
१ २ १ २र
अत्योनगोभिरज्यते ॥ २ * ॥

"आत्" अपिच "ईम्" अयं सोमः "हंसो† यथा" "गणं" जनसङ्घं स्वगतिविशेषेण स्वनेन वा प्रविशति, तद्वत् "विश्वस्य" सर्वस्य स्तोतृजनस्य "मतिं" स्तुतिं बुद्धिं वा "अवीवशत्" वशं नयति; स च सोमः "अत्यो न" अश्व इव "गोभिः" गव्यैरुदकै र्वा "अज्यते" सिच्यते स्निग्धीक्रियते ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ ३ १ १ ३ १ २ ३ १ २
आदीन्त्रितस्ययोषणोहरिँहिन्वन्त्यद्रिभिः ।
३ २ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये ॥ ३ ‡ ॥ २१

* ऋ० वे० ६, ८, २२, २ ।

† 'हंसः—आदित्यः'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, २२, ३ । अत्रैव च पुनः ५, १, ४, २ । परं तत्र तु "त्रितस्य मन्या"—इति पाठः ।

Digitized by Google

"आत्" अपिच "ईम्" एनं "हरिं" हरितवर्णम् "इन्दुम्" सोमं "त्रितस्य" ऋषेः "योषणः"* अङ्गुलयः "अद्रिभिः" ग्रावभिः "हिन्वन्ति"। किमर्थम्? इन्द्राय इन्द्रस्य "पीतये" पानार्थम्॥ ३ ॥ २१

१ र २र र १ २
॥ सᳫंहितम्॥ प्रसोमासोम। दा२च्युताः। अ
१ २ १ २
वा२। सा २ ३ यिनो। मा२घोनाम्। सू२ ३ ताः।
१ ७र २
वा२यिदा। थेषा २ ३। हाउवा ३। क्रा २ ३ ४
५
मूः (१) ॥ १४† ॥ [१]

१ र २र १र २ २
॥ आष्ठुभार्गवम्॥ प्रसोमासोम। दच्यूश्ताः।
१ र२ १ २ ५ १ २
आवसेनो३। मा२घो२३४नाम्। सुतावा१यि। दा२।
३र २ १ ५ ५
थेषा३। क्रा२३४मोदाायि(१) ॥ २० ‡ ॥ [२] २१

---

* 'योषणः—युमिश्रणे, मिश्रणकर्तारः ऋत्विजः,—इति वि०।

† ऊ० गा० १प्र० १ख० १४गा०।

‡ ऊ० गा० ११प्र० १ख० १०गा०।

अथैकर्चं चतुर्थसूक्ते*—प्रथमा।

२ १ २ ३ १र २र १ २ ३ १ १
अयापवस्वदेवयूरेभन्पवित्रंपर्येषिविश्वतः।

२ ३ १ २
मधोर्धाराअसृक्षत ॥ १ ॥ †

हे सोम! "देवयुः" देवान् कामयमानः त्वम् "अया" अनया धारया "पवस्व" क्षर। ततः "रेभन्" शब्दायमानः "पवित्रं" "विश्वतः" "पर्येषि" परिगच्छसि। अनन्तरं "मधोः" मदकरस्य तव "धाराः" आत्मीयाः "असृक्षत" सृज्यन्ते ॥

अत्र द्वितीय-तृतीय-पादौ व्यत्ययेन ‡ पाठौ ॥ १ ॥

अथैकर्चं पञ्चमे—प्रथमा ¶।

१ २ ३ १उ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
पवतेहर्यतोहरिरतिह्वराꣳसिरꣳह्या।

२क २र ३ १ २ ३ १ ३ १ २
अभ्यर्षस्तोतृभ्योवीरवद्यशः ॥ २ ॥ §

---

* मूले, गानग्रन्थे, पदकारमते, विवरणमते चेदमपि सूक्तं तुर्यं; तथाचेदमेव सूक्तमस्य प्रपाठकस्यान्त्यमिति।

† ऋ० वे० ७, ५, ११, ४।

‡ तथाच—"अयापवस्वदेवयुर्मधोर्धाराअसृक्षत। रेभन्पवित्रंपर्येषिविश्वतः"—इति ऋ० पाठः।

¶ मूलादिमते त्रियमक द्वाविंशति-सूक्तस्य द्वितीयेति।

§ छ० आ० ६, २, ३, ११ (२ भा० २२० पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, ११, ३।

Digitized by Google

"इर्य्यत:" स्पृहणीय: "हरि:" हरितवर्ण: सोम: "रंह्या" तृतीयाया आकार: साधुवेगेन "ह्वरांसि" कुटिलानि अनृजूनि पवित्राणि "अति पवते" अतीत्य गच्छति। किं कुर्व्वन्? स्तोतृभ्य: "वीरवत्" पुत्रयुक्तं "यश:" "अभ्यर्षन्" अभिगमयन् पवते ॥ २ ॥

अथैकर्चं षष्ठं प्रथमा *।

१ २ ३ १२ २र ३ २ ३ १ २ ३ १र २र
प्रसुन्वानायान्धसोमर्त्तोनवष्टतद्वच:।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र १र
अपश्वानमराधसꣳहतामखन्नभृगव: ॥ ३ † ॥ २२

॥ इति प्रथम: प्रपाठक: ॥

"सुन्वानाय" [षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (२,३,६२वा०)] सुन्वानस्य अभिषूयमाणस्य "अन्धस:" अदनीयस्य सोमस्य "तत्" प्रसिद्धं "वच:" वचनं घोषं "मर्त्त:" मारक: कर्मविघ्नकारी "न प्र वष्ट" न भजतां न शृणोत्विति यावत्। तथा हे स्तोतार:! "अराधसं" साधककर्म-रहितं "श्वानम्" "अपहत"। तत्र दृष्टान्त:—"मखं न" यथा पुरा अपराद्धं मखम् एतन्नामानं "भृगव:" अपहतवन्त: तथा अपहतेत्यर्थ: ॥

"प्रसुन्वानाय"-"सुन्वानस्य","वष्ट"-"हत"—इति पाठौ ॥१॥२२

* मूलादिमये निधनवत् द्वाविंशति-स्तवस्य तृतीयेति।

† छ० आ० ६, २, १, ८ (२भा० १६८ पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, ७, १= अर्चीनाराणां पुन: ६, २, ३, १।

Digitized by Google

५ १र २ ३ ४ र ४
॥ आष्कारम् ॥ पव। तेद्दा३४। औद्दोपुर्य्यतोहरा
१ र २१ २ ३२ र
यिः। अतिह्वराᳩसिरᳩ। द्दा२३या३४। अर्षा। स्तो
१र २ ४५ २ ११११
तृभ्योवायि। रा३वद्य। ष्मा२३४५ः(३) ॥ १६ * ॥ [१]

५ १र २ ४ ५ १
॥ गौरोवितम् ॥ प्रस्तु। न्वाना ३। यषन्धसाः। म
र १ र २ ४
र्त्तोनवष्टतद्वचा२३ः। अःपस्वाना३१२३म्। अरा५धसा
१ र २ ४ ५ ४ ५
म्। हातामखा३१२३म्। नभोवा। गा५वोइद्दायि ॥
(३)॥ १७ † ॥ [२]

२ र र १ २ १
॥ सुष्मानम् ॥ पवतेद्दा। र्य्यतोहरायिः। अजिह्वा
१ २ १ र
रा२। सिरᳩद्दिया। अभियार्षा२। स्तोतृ। भ्यो
२ ५र र १ २ १ ११११
२र्वा२३४औद्दोवा। रवद्यमय३उपा२३४५(२) ॥१५ ‡॥[३]

२ र १र २
॥ काश्रीजम् ॥ पवतेद्दा। र्य्यतोद्दा२३रा३४यिः।

* ऊ० गा० १६प्र० २ख० १६सा०।

† ऊ० गा० १प्र० २ख० १७सा०।

‡ ऊ० गा० ६प्र० २ख० १५सा०।

२ र १ १ र र
अजिक्षरा। सिर७्हार२३या३४। अभियर्षा। स्तोतृभ्यो

र १ ३ ५र र ३
वीरवत्। या२। श्रा२३४। औहोवा। ऊ२३४

५
पा(२)॥ १६ *॥ [४]

२ १ २ ४ ५ १ २ ५
॥ पौष्कलम्॥ पवते३हर्य्य। तोहा२३४रायिः।

२ १ २ १ २ ३ ५ २ १ ७र
अतिक्षरा। सायिर७्हा२३४या। अभाअर्षा। स्तोतृ

३ २ १ ३ १ १ १ १
२भ्यो२३४५वा६५६यि। रवद्यश्रा२३४५ः॥ २ †॥ [५]२२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य
षष्ठः खण्डः‡॥ ६॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरोदेयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः॥ १॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे द्वितीयोऽध्यायः¶॥

---

* ऊ० गा० ६प्र० २ख० १६सा०।

† ऊ० गा० ६प्र० २ख० २सा०।

‡ 'विहत्स्तोमिकं प्रथममहः समाप्तम्'—इति वि०।

¶ 'समाप्तश्च प्रथमः प्रपाठकः'—इति वि० मूलादिसर्वसम्मतश्चैतदिति भम्।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्म्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः आरभ्यते * ॥

तत्र,

पवस्ववाच इति पञ्चतृचात्मके प्रथमखण्डे—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

१ २ २ १ १ २ १ २ २ १ २ १ १ २ २ १ १
पवस्ववाचोअग्रियःसोमचित्राभिरूतिभिः ।
२ १ १ २ २ १ २
अभिविश्वानिकाव्या ॥ १ ॥ †

हे "सोम !" "अग्रियः" मुख्यः‡ त्वं "चित्राभिः" पूजनीयैः¶ "ऊतिभिः" रक्षणीयैः सह "वाचः" अस्मदीयाः स्तुतीः

---

* 'इदानीं द्वितीयमक्षरारभ्यते द्वितीयश्च प्रपाठकः। पञ्चदशसौमिकं द्वितीयमहः'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, १, २८, ५ ।

‡ 'अग्रियः प्रधानभूताः'—इति वि० । अग्रिय शब्दमेवं व्याचष्टे भगवान् यास्कः—"अग्रमग्रं नयतीति वाग्रगरणं भवतीति वाग्रसम्पादिन इति वा। अपिवाप्रमित्येतदनर्थकमुपबन्धमाददीत"—इति ६, १५।

¶ 'चित्राभिः विचित्राभिः नानाप्रकारैः'—इति वि० ।

Digitized by Google

प्रति "पवस्व"। [उत्तरार्द्धं उक्तमेवार्थं विशदयति—] "विश्वानि" सर्वाणि "काव्या" काव्यानि स्तुत्यात्मकानि वाक्यानि "अभि" पवस्वेति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र ३ १ २
त्वंसमुद्रिया अपोग्रियोवाचईरयन्।
१ २
पवस्वविश्वचर्षणे ॥ २ ॥ *

हे "विश्वचर्षणे" सर्वस्य द्रष्टः सोम! "अग्रियः" मुख्यः त्वं "वाचः" † "ईरयन्" प्रेरयन् "समुद्रियाः" आन्तरिक्षाणि‡ "अपः" उदकानि¶ "पवस्व" धारया क्षर॥

"विश्वचर्षणे"-"विश्वमेजय"—इति छन्दोग-बहृचानां पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ ३१र २र ३ १ २
तुभ्येमाभुवनाकवेमहिम्नेसोमतस्थिरे।
१ २ ३ १ २
तुभ्यन्धावन्तिधेनवः ॥ ३ § ॥ १

* ऋ० वे० ७, १, २९, १।

† 'अग्रियो वाचः—प्रधानभूताः अभ्यनुःसामलक्षणाः'—इति वि०।

‡ "समुद्रः"—इत्यन्तरिक्षनामसु निघण्टौ पञ्चदशं पदम् (१, ३)।

¶ 'समुद्रिया अपः—समुद्रे भवाः आपः समुद्रियाः। द्रोणकलशः समुद्रः'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, २९, २।

Digitized by Google

हे "कवे" क्रान्तकर्म्मन् सोम! "तुभ्यं" तव "महिम्ने" "इमा" इमानि "भुवना" भुवनानि "तस्थिरे" तिष्ठन्ति त्वामेव पुरस्कुर्वन्तीत्यर्थः। किञ्च "धेनवः" नवप्रसूतिकाः देवानां हविःप्रदानेन प्रीणयित्र्यो गावः * "तुभ्यं" त्वदर्थमेव 'आशिरं प्रयच्छ मे'—इति "धावन्ति" आगच्छन्ति॥

"धावन्तिधेनवः"—इति छन्दोगाः, "अर्षन्तिधेनवः"—इति बह्वृचाः॥ ३॥ १

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा।

१२ ३१२ ३२३१ २३२ ३१२
पवस्वेन्दोवृषासुतःकृधीनोयशसोजने।
१ २ १२१२
विश्वाअपद्विषोजहि॥ १॥ †

हे "इन्दो" सोम! "सुतः अभिषुतः "वृषा" कामानां वर्षिता "पवस्व" धारया क्षर "जने" जनपदे "नः" अस्मान् "यशसः" यशस्विनः "कृधि" कुरु; "विश्वा" विश्वान् सर्वान् "द्विषः" द्वेष्टॄन् शत्रून् "अपजहि" मारय च॥ १॥

---

* 'धेनवः—गावः। अथवा धेनव आदित्यरश्मयः'—इति वि०।

† ऋ० आ० ५, १, ५, ३ (१भा० ३२३८०) = ऋ० वे० ७, १, १३, १।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ ३ १ १ २ ३ १ २ ३ २
यस्यतेसख्येवयꣳसासह्यामपृतन्यतः ।
१ २ ३ १ २ ३ २
तवेन्दोद्युम्नउत्तमे ॥ २ ॥ *

हे "इन्दो" सोम ! "यस्य" † अस्मिन् यागे वर्त्तमानस्य "ते" तव "सख्ये" सखित्वे सति वयं स्तोतारः "तव" त्वदीये "उत्तमे" श्रेष्ठे "द्युम्ने" अन्ने तृप्तिं प्राप्ताः [तथाच यास्कः— "द्युम्नं द्योततेर्यशो वान्नं वा (निरु० नै० ५, ५)"—इति] "पृतन्यतः" युद्धमितः शत्रून् ‡ "सासह्याम" अभिभवेम ¶ ॥

द्वितीय-तृतीयपादौ व्यत्ययेन पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १२ ३२ ३ १ ३ २ ३ १ २
यातेभीमान्यायुधातिग्मानिसन्तिधूर्वणे ।
१ २ ३ २
रक्षासमस्यनोनिदः ॥ ३ § ॥ २

* ऋ० वे० ७, १, १२, ४ ।

† मूलपाठस्तु "यस्य"—इति ; विवरणकृतापि तथैव व्याख्यातम्, पदपाठ-मानग्रन्थादावपि तथैव श्रूयते ।

‡ 'पृतन्यतः—पृतनाः सेनाः, ताभिर्ये यान्त्यर्थ ते स्थिताः वीरपुरुषाः'—इति वि० । "पृतनाः"—इति सङ्ग्रामनामसु निघण्टौ षष्टादशं पदम् (२, १७ ।

¶ 'सासह्याम—सहेम'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, २२, ५, ।

हे "सोम!" "ते" तव "या" यानि "भीमानि" शत्रूणां भयङ्कराणि "तिग्मानि" तीक्ष्णानि "आयुधा" आयुधानि * "धुर्वणे" शत्रुवधार्थं सन्ति तैः "आयुधैः" "समस्य" सर्वस्य शत्रोः "निदः" निन्दायतः† "नः" अस्मान् "रक्ष" पालय ॥३॥ २

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा ।

१ २　२ १　२ ३ १ २　३ १ २
वृषासोमद्युमाᳫँअसिवृषादेववृषव्रतः ।

२ ३ १ १
वृषाधर्म्माणिदध्रिषे ॥ १ ॥‡

हे "सोम!" "वृषा" कामानां वर्षिता त्वं "द्युमान्" दीप्तिमान् "असि" । अपिच हे "देव" द्योतमान सोम! "वृषा" त्वं "वृषव्रतः" वर्षणशीलकर्मासि । किञ्च हे सोम! "वृषा" त्वं "धर्माणि" देवानां मनुष्याणाञ्च हितानि कर्माणि "दध्रिषे" धारयसि ॥

"दध्रिषे"-"दधिषे"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'शत्रुहिंसासतोमरादीनि'—इति वि० ।

† 'निदः--नितरां दृणाति निदः, तस्य सम्बोधनं निदः'—इति वि० ।

‡ छ० आ० छ० ६, १, २, ८ (२भा० ६३ ४०) = ऋ० वे० ७, १, ३८, १ ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ ३ १ २ ३ १ २
वृष्णस्तेवृष्ण्य॒ᳪशवोवृषावनंवृषासुतः।
१२ ३१२ ३ १२ ३१२
सत्वंवृषन्वृषेदसि॥ २ ॥*

हे "वृषन्" कामानां वर्षक सोम! "वृष्णः" वर्षितुः † "ते" तव "शवः" बलं ‡ "वृष्ण्यं" वर्षणशीलं भवति "वनं" तव भजनमपि, "वृषा" वर्षणशीलं "सुतः" अभिषुतः तव रसोऽपि "वृषा" वर्षणशीलः "स त्वं" "वृषेदसि" वर्षणशील एवासि भवसि॥

"सुतोमदः"—इति, "सत्वंसत्यम्"—इति च पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३१२ ३ १२ ३१२
अश्वोनचक्रदोवृषासङ्गाइन्दोसमर्वतः।
१ २ ३ १२ ३१२
विनोरायेदुरोवृधि॥ ३ ¶॥३

हे "इन्दो" सोम! "वृषा" त्वं "अश्वोन" अश्वइव "सञ्चक्रदः" सङ्क्रन्दसे। अपिच "गाः" पशून् "अर्वतः" अश्वांश्च अस्मभ्यं

---

* ऋ० वे० ७, १, २९, २।

† 'वृष्णः—वृषु सेचने (भ्वा० पर०) सेचन-समर्थस्य ते'—इति वि०।

‡ "शवः"—इति बलनामसु निघण्टौ तृतीयं पदम् (२, ९)।

¶ ऋ० वे० ७, १, २९, ३।

Digitized by Google

सम्प्रयच्छसीति शेषः। किञ्च "नः" अस्माकं * "राये" धनाय "दुरः" द्वाराणि "विदुधि" विवृतानि कुरु ॥ ३ ॥ ३

अथ चतुर्थतृचे—प्रथमा ।

१ २ १ २ ३ १ १ २ ३ १ २
वृषाह्यसिभानुनाद्युमन्तन्त्वाहवामहे ।

१ २ ३ १ २
पवमानस्वर्दृशम् ॥ १ ॥ †

हे सोम! त्वं "वृषासि हि" अभिमत-फलानां वर्षिता भवसि खलु। तस्मात् हे "पवमान" पूयमान वा सोम! "स्वर्दृशं" सर्वस्य [सूर्यस्य वा] द्रष्टारं [सर्वैर्देवैर्द्रष्टव्यं वा] "भानुना" तेजसा "द्युमन्तं" दीप्तिमन्तम् अतिशयेन तेजस्विनमित्यर्थः [स्तुतिमन्तं वा], "त्वा" त्वां वयं "हवामहे" यज्ञेषु आह्वयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यदद्भिःपरिषिच्यसेमर्मृज्यमानआयुभिः ।

१ २ ३ १ ३ १ २
द्रोणेसधस्थमश्नुषे ॥ २ ॥ ‡

* 'नः-अस्मभ्यम्'—इति वि० ।

† ऋ० आ० ५, २, ५, ४ (२भा० ३२पृ०) = ऋ० वे० ७, २, १, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, २, २, १ ।

Digitized by Google

हे सोम! त्वम् "आयुभिः" मनुष्यैः * ऋत्विग्भिः "मृज्य-मानः" अतिशयेन शोध्यमानः सन् "अद्भिः" वसतीवर्याख्याभिः "यद्" यदा "परि सिच्यसे" परितः सिच्यमानो भवसि, तदानीं "द्रोणे" द्रोणकलशेन गृह्यमाणः सन् "सधस्थं" सह तिष्ठन्त्यत्रेति सधस्थं स्थानं ग्रहचमसादिकम् "अश्नुषे" व्याप्नोषि॥

"मृज्यमानआयुभिः"-"मृज्यमानोगभस्त्योः"—इति, "द्रोणे"-"द्रुणा"—इति च पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ २
आपवस्वसुवीर्य्यम्मन्दमानःस्वायुधः।
३ १ २ ३ १ २
इहोष्विन्दवागहि॥ ३ †॥४

हे "स्वायुध"! यत्र 'स्फ्य-कपालादीनि दशायुधानि-इत्यभि-धीयन्ते, शोभनानि तानि यस्य स तथोक्तः। यद्वा धनुरादीन्या-युधानि यस्य सः, तादृश हे सोम! त्वं "मन्दमानः" मोदमानः सन् [अन्तर्णीतण्यर्थः] देवान् स्वयं मादयन् ‡ "सुवीर्यं" शोभनवीर्योपेतं पुत्रादिकमस्माकम् "आ पवस्व" पवतिर्गत्यर्थः, आ प्रापय। किञ्च हे इन्दो! ग्रहेषु चमसेषु रक्षणशील सोम!

* "आयवः"—इति निघण्टौ मनुष्यनामसु सप्तदशं पदम् (२ ३)।

† ऋ० वे० ७, १, १, ५।

‡ 'मन्दमानः—शोध्यमानः तप्यमानोवा'—इति वि०।

"इह उ" इहैव * अस्मदीये यज्ञे "सु आगहि" सुष्ठु † आगच्छ ॥ ३ ॥ ‡

अथ पञ्चमतृचे—प्रथमा ।

१ २　　२ २ ३ १ २　　३ २
पवमानस्यतेवयम्पवित्रमभ्युन्दतः ।
२　१　२र
सखित्वमावृणीमहे ॥ १ ॥ ‡

हे सोम ! "पवित्रम् अभ्युन्दतः" पवित्रमभिद्यतः ¶ "पवमानस्य" क्षरतस्य "ते" तव "सखित्वं" सख्यं वयम् अस्मदीयवः आङ्गिरसाः स्तोतारः "आ वृणीमहे" प्रार्थयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १　२　३ १ २ ३ १　२
येतेपवित्रमूर्मयोभिक्षरन्तिधारया ।
१ २
तेभिर्नःसोममृडय ॥ २ ॥ §

हे सोम ! "ते" तव "ये" ऊर्मयः तरङ्गाः ‖ "पवित्र"

---

*,† 'उ, सु—इति द्वावपि पदपूरणौ,—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, १८, ४ ।

¶ 'अभ्युन्दतः—आर्द्रं कुर्वन्—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, १८, ५ ।

‖ 'ऊर्मयः—त्वदीयाः, सोमतरङ्गाः—इति वि० ।

Digitized by Google

"धारया" "अभि चरन्ति" तेभिः तैः ऊर्मिभिः "नः" अस्मान् "मृड़य" सुखय ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २   ३ १२   ३२ ३ २ ३ १ ३ ३ १ २

सनःपुनानआभररयिंवीरवतीमिषम्।

१ २   ३ १ २

ईशानःसोमविश्वतः ॥ ३ * ॥ ५

हे सोम! "विश्वतः" सर्वस्य जगतः "ईशानः" ईश्वरः "सः" अभिषुतः "पुनानः" पूयमानः त्वं "नः" अस्मभ्यं "रयिं" धनं "वीरवतीं" पुत्राद्युपेतम् "इषम्" † तम् "आभर" आहर ॥ ३ ॥ ५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः ‡ ॥ १ ॥

——000——

* ऋ० वे० ७, १, १९, १।

† 'इषं—इष्टिमन्नं वा—इति वि०।

‡ 'उक्तं वक्ष्यमाणम्'—इति वि०।

अथ द्वितीयखण्डे *—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

३ २ ३१ २ ३ २ ३१२
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्।
२ ३२३१२ ३१२
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥ १॥ †

[अग्नेर्दूतत्वमेतन्मन्त्रव्याख्याने तैत्तिरीयब्राह्मणे समाम्नायते—'अग्निर्देवानां दूत आसीदुशनाकाव्योऽसुराणाम्'—इति] तादृशं देवं "दूतम्" अग्निम् अस्मिन् कर्म्मणि वृणीमहे भजामः। कीदृशं "होतारं" देवानामाह्वातारं "विश्ववेदसं" सर्वधनोपेतं [बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् (६, २, १०६)"—इति पूर्वपदान्तोदात्तत्वम्] "अस्य" प्रवर्त्तमानस्य यज्ञस्य निदानत्वेन "सुक्रतु" शोभन-कर्म्माणं शोभन-प्रज्ञं वा॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निमग्निꣳ हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्।
३ १ २ ३ २
हव्यवाहं पुरुप्रियम्॥ २॥ ‡

---

* 'इदानीमाख्यामि'—इति वि०।

† छ० आ० १, १, १, २ (१भा० ८७ पृ०) = ऋ० वे० १, १, १२, १।

‡ ऋ० वे० १, १, १२, २।

[यद्यप्यग्निः स्वरूपेणैक एव तथापि प्रयोगभेदादाहवनीयादिस्थानभेदाद्वा बहुविधत्वमभिप्रेत्य] "अग्निम्-अग्निम्"—इति वीप्सा तं "हवीमभिः" आह्वानकरणैर्मन्त्रैः "सदा हवन्त" निरन्तरमनुष्ठातार आह्वयन्ति *। कीदृशम्? "विश्पतिं" विशां प्रजानां होत्रादीनां पालकं "हव्यवाहं" यजमान-समर्पितस्य हविषः देवान् प्रति वोढारम् अतएव "पुरुप्रियं" बहूनां देवानां प्रीत्यास्पदम्॥ [अग्निमग्निम्—"नित्यवीप्सयोः (८, १, ४)"—इति वीप्सायां द्विर्भावः; "तस्य परमाम्रेडितम् (८, १, २)"—इत्युत्तरस्य आम्रेडित-सञ्ज्ञायाम् "अनुदात्तञ्च (८, १, ३)"—इत्यनुदात्तत्वम्। हवीमभिः—'ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०, उभ०); आह्वानकरणभूतेषु मन्त्रेषु स्वव्यापार-स्वातन्त्र्यात् कर्त्तृत्वविवक्षया "अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते (३, २, ७५)"—इति कर्त्तरि मनिन्; तस्य छान्दस ईडागमः; बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति धातोः सम्प्रसारणम्; पर-पूर्वत्वं; गुणावादेशौ; नित्त्वादाद्युदात्तत्वं (६, १, १९७)। सदा—"सर्वैकान्येत्यादिना (५, ३, १५)" सर्वशब्दाद्दाप्रत्ययः "सर्वस्य सोऽन्यतरस्याम् (५, ३, ६)"—इति सभावः; व्यत्ययेनाद्युदात्तत्वम् (३, १, ८५)। हवन्त—ह्वेञो लट् झस्य अन्तादेशः (७,१,३); टेरेभावश्छान्दसः (६, ४, ७६) अपि "बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति सम्प्रसारणम्; "तिङ-

---

* 'हवीमभिः—होतव्यैः सदा हवन्तः आह्वयन्तः; यानि होतव्यानि हवींषि, तैः पुरतोऽवस्थितैः सदाह्वयन्ते इति वि०।

Digitized by Google

तिङः (८, १, २८)"—इति निघातः। विश्पतिं—"पत्यावैश्वर्य्ये (६, २, १८)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरे प्राप्ते, "परादिश्छन्दसि (६, २, १९९)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्। हव्यवाहम्—'वह प्रापणे (भ्वा०, उभ०), "वहश्च (३, २, ६४)"—इति ण्वि प्रत्ययः; कृदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३९)। पुरूणां प्रियं—समासान्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३) ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ ३ २ १ २

अग्नेदेवाꣳइहावहजज्ञानोवृक्तबर्हिषे ।

२ ३ १ २ ३ १ २

असिहोतानईड्यः ॥ ३ * ॥ ६ †

हे "अग्ने !" "जज्ञानः"‡ अरण्योरुत्पन्नः त्वं "वृक्तबर्हिषे" आस्तरणार्थं छिन्नेन बर्हिषा युक्ताय। तं 'यजमान मनुग्रहीतुम् "इह" कर्मणि हविर्भुजो देवानावह—"नः" अस्मदर्थं "होता" देवानामाह्वाता त्वम् "ईड्योसि" स्तुत्यो भवसि ॥ ३ ॥ ६

द्वितीयतृचे¶—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ १ २ १ २

मित्रंवयꣳहवामहेवरुणꣳसोमपीतये ।

२ ३ १ ३ १ २

याजातापूतदक्षसा ॥ १ ॥ §

---

* ऋ० वे० १, १, २२, ३। † "आग्नेय माज्यमुक्तम्"—इति वि०।

‡ 'जज्ञानः—जायमानः, अथवा यजमानः'—इति वि०।

¶ 'इदानीं मैत्रावरुणमुच्यते—इति वि०। आज्यमिति शेषः।

§ य० वे० ३३, ४६=ऋ० वे० १, २, ८, ४।

"वयम्" अनुष्ठातारः "सोमपीतये" * सोमपानाय ["दासीभारादित्वात् पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्] "मित्र" "वरुणं" च उभावाह्वयामः। कीदृशावुभौ ? "या जाता" यौ जातौ सन्तौ प्रदेशं प्रादुर्भवन्तौ, "पूतदक्षसा" प्रवृद्धौ † । [पूञ् पवने (क्र्या०, उभ०) ; "निष्ठा (३, २, १०२)"—इति क्तः, "श्र्युकः किति (७, २, ११)"—इति इट् प्रतिषेधः। पूतं दक्षो ययोस्तौ "बहुव्रीहौ प्रकृत्या (६, २, १)"—इति पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम् ॥

"याजाता"-"जज्ञाना"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ १ २ १ १ २ १ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
ऋतेनयावृतावृधावृतस्यज्योतिषस्पती ।
२ ३ १र २र
तामित्रावरुणाहुवे ॥ २ ‡ ॥

"यौ" मित्रावरुणौ "ऋतेन" सत्यवचनेन¶ यजमानानुग्रह-कारिणा "ऋतावृधौ" ऋतमवश्यम्भावितया सत्यं कर्मफलं तस्य वर्द्धकौ "ऋतस्य" सत्यस्य प्रशस्तस्य "ज्योतिषः" प्रकाशस्य "पती" पालकौ § [श्रुत्यन्तरे मित्रावरुणयोरदिति-पुत्रत्वेन श्रुतत्वात्

* "मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः"—इति पा० ३। ३। ९६।

† "पूतदक्षौ—पूतत्वेन दक्षत्वेन च सम्पन्नौ"—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, २, ८, ५।

¶ 'ऋतेन—यज्ञेन—इति वि०।

§ 'ज्योतिषः नक्षत्रजातस्य ज्योतिष्टोमस्य वा पती'—इति वि०।

Digitized by Google

हादशादित्येष्वन्तर्भूतत्वेन ज्योतिषः पालकत्वं युक्तम्, श्रुत्यन्तरे च अष्टौ पुत्रासो अदितेरित्युपक्रम्य मित्रश्च वरुणश्चेत्यादिकमाख्यातम् तौ मित्रावरुणौ । तथाविधैर्मित्रावरुणैः "सुपां सुलुमिति (७, १, ३९) पूर्वसवर्णदीर्घ आकारः] "हुवे" आह्वयामि । [ह्वेञ आत्मनेपदोत्तमपुरुषैकवचने सम्प्रसारणे (६, १, ३४) पूर्वरूपत्वे च (६, १, १०८) "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शपोलुक्; टेरेत्वम् (३, ४, ७९); "गुणे प्राप्ते "क्ङिति च (१,१,५)"—इति प्रतिषेधः; उवङादेशः (६, ४, ७७); "तिङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २   ३ १ २   ३ १र   २र   ३ १ २
वरुणःप्राविताभुवन्मित्रोविश्वाभिरूतिभिः ।
१ २   ३ १ २
करतान्नःसुराधसः ॥ ३ * ॥ ७

अयं "वरुणः" देवः अस्माकं "प्राविता भुवत्" प्रकर्षेण रक्षको भवतु । "मित्रः" च "विश्वाभिः ऊतिभिः" सर्वाभिः प्राविता भुवत् । तावुभावपि "नः" अस्मान् "सुराधसः" प्रभूतधनयुक्तान् "करतां" कुरुताम् । [डुकृञ् करणे (उभ०) भौवादिकः, लोटस्तस्, तसस्ताम्, अकर्त्तरि शप्, गुणोरपरत्वम्,

* ऋ० वे० १, २, ८, ९ ।

श्पः पित्त्वादनुदात्तत्वम् (३, १, ४); तिङश्च लसार्वधातुक-स्वरेण (६, १, १८६) धातुस्वरं (६,१, १६२) शिष्यते ॥३॥ ७

इन्द्रमिद्गाथिनइति चतुर्ऋचं तृतीयं सूक्तम् *,

तत्र प्रथमा।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रमिद्गाथिनोबृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः।
२ ३ १ २
इन्द्रंवाणीरनूषत ॥ १ † ॥

"गाथिनः" गीयमान-सामयुक्ता उद्गातारः "इन्द्रमित्" इन्द्रमेव "बृहत्" "त्वामिद्धिहवामहे (छ० आ० ३, १, ५, २)" —इत्यस्यामृच्युत्पन्नेन बृहन्नामकेन (आ० गा० १, १, २७) साम्ना "अनूषत" स्तुतवन्तः। [णु स्तुतौ (तु०, प०) ; "णो नः (६, १, ६५)"—इति नत्वम् ; लुङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् (३, १, ८५) ; झस्य अदादेशः (७, १, ५) ; सिच इडभावः उकारस्य दीर्घत्वं छान्दसम् (६, १, १३३) ; धातोः कुटादित्वात् सिचो ङित्त्वेन (१, २, १) गुणाभावः (१, १, ५)] "अर्किणः" अर्चन-हेतु-मन्त्रोपेता होतारः "अर्केभिः" उक्थ-रूपैर्मन्त्रैरनूषत। ये त्ववशिष्टा अध्वर्यवः ते "वाणीः" वाग्भिः" यजूरूपाभिः इन्द्रम् अनूषत [अर्कस्य मन्त्रपरत्वं यास्केनोक्तम् (५, ४) 'अर्कोमन्त्रोयदनेनार्चन्तीति'] ॥ १ ॥

---

*'ऐन्द्रमाद्यमिदम्—इति वि०।

† छ० आ० ३, १, १, ५ (१भा० ४१७ पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २२उ २ २ ३ १ २ ३१ २३१ २
इन्द्र इद्धर्य्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा ।
१ २३१ १३१ २
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ २ * ॥

"इन्द्र इत्" इन्द्र एव "हर्य्योः" हरिनामकयोरश्वयोः "सचा" सह युगपत् "आ सम्मिश्लः" सर्वतः सम्यक् मिश्रयिता । कीदृ-शयोर्हर्य्योः ? "वचोयुजा" इन्द्रस्य वचनमात्रेण रथे युज्यमानयोः सुशिक्षितयोरित्यर्थः । अयम् "इन्द्रः" "वज्री" वज्रयुक्तः "हिर-ण्ययः सर्वाभरणभूषित इत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च ।
३१ ३१ २३ १ २
उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ ३ † ॥

हे "इन्द्र !" "उग्रः" शत्रुभिरप्रधृष्यः त्वम् "उग्राभिः" अप्रधृष्याभिः "ऊतिभिः" अस्मद्द्वेष्यपरपक्षाभिः "वाजेषु" युद्धेषु "नः" अस्मान् "अव" रक्ष । तथा "सहस्रप्रधनेषु च" सहस्र-सङ्ख्याक-गजाश्वादि-लाभयुक्तेषु महायुद्धेष्वपि रक्ष ॥ ३ ॥

---

* छ० आ० प० १, २, ३ (२भा० २६७पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, २ ।

† छ० आ० प० १, २, ४ (२भा० २६८पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, ३ ।

Digitized by Google

अथ चतुर्थी।

१ २ ३ २ ३१ १ २ ३ १२ ३२ ३ १
इन्द्रोदीर्घायचक्षसआसूर्य्यं रोहयद्दिवि।

२उ ३ १ २
विगोभिरद्रिमैरयत्॥ ४ *॥ ८ †

अयम् "इन्द्रः" "दीर्घाय" प्रौढाय निरन्तराय "चक्षसे" दर्शनाय "दिवि" द्युलोके "सूर्य्यमारोहयत्" पुरा वृत्रासुरेण जगति यदापादितं तमस्तन्निवारणेन प्राणिनां दृष्टिसिध्यर्थम् आदित्यं द्युलोके स्थापितवानित्यर्थः। स च सूर्य्यः "गोभिः" स्वकीय-रश्मिभिः "अद्रिम्" मेघम् "व्यैरयत्" विशेषेण दर्शनार्थं प्रेरितवान् प्रकाशितवानित्यर्थः [अथवा इन्द्रएव "गोभिः" जलैर्निमित्तभूतैः "अद्रिं" मेघं "व्यैरयत्" विशेषेण प्रेरितवान्। पञ्चदश-सङ्ख्याकेषु रश्मि-नामसु 'खेदयः' (१) 'किरणाः' (२) 'गावः' (३)—इति पठन्ति (निघ० १, ५); त्रिंशत्सङ्ख्याकेषु मेघनामसु 'अद्रिः'(१) 'ग्रावा'(२)—इति पठितम् (निघ० १, १०)॥ ४॥ ८

* ऋ० वे० १, १, १३, ४।
† 'इहाभीमेन्द्राम्नमाध्यम्'—इति वि०।

अथ तृचात्मके चतुर्थसूक्ते—

प्रथमा।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रेअग्नानमोबृहत्सुवृक्तिमेरयामहे।

३ १र २र ३ १ २
धियाधेनाअवस्यवः॥ १ *॥

"अवस्यवः" रक्षणकामाः वयम् "इन्द्रे" देवे "अग्ना" अग्नौ च "बृहत्" महत् वर्द्धकं † "नमः" हविर्लक्षणमन्नं ‡ "सुवृक्तिं" सुप्रवृत्तां स्तुतिञ्च ¶ "आईरयामहे" प्रेरयामः। तथाच "धिया" कर्मणा युक्ता § "धेनाः" ‖ [वाङ्नामैतत् (निघ० १, ११, २८)] स्तुतिरूपा वाचश्च अभिप्रेरयामः॥ १॥

अथ द्वितीया।

१र २र ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
ताहिशश्वन्तईडतइत्थाविप्रासऊतये।

३ २ ३ १ २
सबाधोवाजसातये॥ २ **॥

---

* ऋ० वे० ५, ६, १७, ४।

† 'बृहत्—महत्'—इति वि०।

‡ 'नमः—नमस्कारम्'—इति वि०।

¶ 'सुवृक्तिं—शोभनां स्तुतिं वचनम्'—इति वि०।

§ 'धिया बुद्ध्या'—इति वि०। "धीः"—इति कर्मनामसु निघण्टौ एकविंशतितमं पदम् (२, १)।

‖ 'धेनाः—धेट् पाने (भ्वा० प०), पानसमर्थाः'—इति वि०।

** ऋ० वे० ५, ६, १७, ५।

Digitized by Google

"ता हि" तौ खलु * इन्द्राग्नी "अवन्तः" बहवः "विप्रासः" मेधाविनः जनाः "ऊतये" रक्षणाय "इत्थम्" अनेन प्रकारेण "ईडते" स्तुवन्ति। तथा "सबाधः" समानं परस्परं बाध्यमाना जनाः "वाजसातये" अन्नसातये अन्नलाभाय ताविन्द्राग्नी ईडते। यद्वा 'वाजसातिः'—इति सङ्ग्रामनाम (निघ० २, १७, ३६) सङ्ग्रामार्थम्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
ता वाम्गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वन्तो हवामहे।
३ १ २ ३ १ २
मेधसाता सनिष्यवः॥ ३ †॥ ६

"विपन्यवः" स्तोत्रमिच्छन्तः "प्रयस्वन्तः" हविर्लक्षणेनान्नेनोपेताः ‡ "सनिष्यवः" सनिं धनमात्मन इच्छन्तः वयं "मेधसाता" मेधानां यागानां ¶ "सातौ" सम्भजने निमित्तभूते

* 'वौति यत्माद्यर्थे'—इति वि०।

† ऋ० वे० ५, ६, १०, ६।

‡ 'प्रयस्वन्तः—प्रकर्षेण यजमाना ब्रह्मान् प्रति गच्छन्तः'—इति वि०।

¶ "मेधः"—इति निघण्टौ यज्ञनामसु चतुर्थं पदम् (३, १७)।

Digitized by Google

सति हे इन्द्राग्नी! "ता" तौ "वां" युवां "गीर्भिः" स्तुतिभिः "हवामहे" ॥

"विपन्यवः"-"विपन्यवे"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः * ॥ २ ॥

वृषापवस्वेति तृतीयखण्डे †—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १

वृषापवस्वधारयामरुत्वतेचमत्सरः ।

२ १ १ २ ३१ २

विश्वादधानओजसा ॥ १ ‡ ॥

हे सोम ! त्वं "वृषा" स्तोतृणामभिमत-फलस्य वर्षकः सन् "धारया" त्वदीयया "पवस्व" द्रोणकलशमागच्छ [पवतिर्गति-कर्मा (निघ० २, १४, १०८) आगतस्त्वं यदा अस्माभिः इन्द्राय दीयसे तदा "मरुत्वते" सहाया मरुतो यस्य सन्ति तस्मै इन्द्राय "मत्सरः" मदकरश्च भव । कीदृशः ? "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि व्याप्तानि वा धनानि "ओजसा" आत्मीयेन बलेन

---

* 'उक्त प्रातःसवनम्'—इति वि० ।

† 'इदानीं माध्यन्दिनं सवनमभिधीयते'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० ५, २, ४, ३ (१भा० १०४०) ऋ० वे० ७, १, २, ४ ।

युक्तः सन् स्तोतृभ्यः तानि "दधानः" प्रयच्छंस्त्वं मादयिता भवेति समन्वयः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
तन्त्वाधर्त्तारमोण्योऽ३ऽव्यवमानस्वर्दृशम्।
३ १२ ३२ ३ १ २
हिन्वेवाजेषुवाजिनम् ॥ २ * ॥

हे "पवमान" पूयमान पुनान वा सोम! "ओण्योः" [द्यावापृथिवी नामैतत् (निघ० ४, ३०, १५)] तयोः "धर्त्तारं" धारकम् अतएव "स्वर्दृशं" सर्वस्य सर्वेव द्रष्टारं, सर्वै र्द्रष्टव्यं वा। "वाजिनं" बलवन्तं तं पूर्वोक्तगुणं प्रसिद्धं "त्वा" त्वां "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु त्वां प्रेरयामि [यद्वा "वाजेषु" विषयेषु प्रेरयामि, अन्नादिकं प्रयच्छेत्यर्थः † ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ १ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
अयाचित्तोविपानयाहरिःपवस्वधारया।
२ ३ १ २
युजंवाजेषुचोदय ॥ ३ ‡ ॥ १० ¶

---

* ऋ० वे० ७, १, ३, १।

† 'वाजेषु—अन्नेषु। सङ्ग्रामेषु वा, चित्तकरणभूतेषु। वाजिनं अन्नवन्तं वेगवन्तं वा'—इति वि०।

‡ ऋ० वे०७, १, ३, २।

¶ 'इद यौक्ताश्वं साम'—इति वि०। 'यौक्ताश्व-प्रभृतीनि सामानि तेषां नाम्नो नार्थप्रतिपत्तिः'—इति च वि०।

Digitized by Google

हे "पवमान" सोम ! "अया" * [अय पय गतौ (भ्वा०, आ०) पचाद्यच् (३, १, १३४), तृतीयाया आकारः (७, १, ३९)] कर्माणमितस्ततो गच्छन्तीभिः "विपा" [विप प्रेरणे (चु०, उभ०) हवींष्यन्नो प्रेरयन्तीति विपा अङ्गुलयः । एकवचनं छान्दसं प्रत्येक-विवक्षया वा] एताभिर्मदीयाभिरङ्गुलिभिः "चितः" स्रातः निर्गतः अभिषुतः "हरिः" हरितवर्णः त्वं "धारया" सन्ततया "पवस्व" द्रोणकलशं प्रहांश गच्छ । किञ्च "युजं" † सहायम् इन्द्रं "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु ‡ "चोदय" प्रेरय । यदाऽऽभिरिन्द्रार्थं सोमा दीयन्ते तदानीमिन्द्रः सुत्यानेन हृष्टः सन् शत्रून् हन्तीत्यर्थः ॥ ३ ॥ १०

॥ यौक्ताश्वम् ॥ औहोहोहायि । वृषा । पवस्वा३ धारायाइ । मारुत्वा२३४तायि । चोयि । चमा२३ । चमारत्मार२३४राः । औहोहोहायि । विश्वा । दधार२ नार२३४ओ । जाहार२३४औहोवा ॥(१) औहोहोहायि । तन्वा । धर्त्तारा३मोणायोइः । पावा२ मा २ ३ ४ ना ।

---

* 'अया—अनया विपा विप्रस्य प्राज्ञपिप्रया'—इति वि० ।

† 'युजं—योजम्'—इति वि० ।

‡ 'वाजेषु—यज्ञेषु'—इति वि० ।

Digitized by Google

१ ७ १ ३ ५ २र १ २
ओयि । सुवा२३ । सुवा२र्हू२३४शाम् । औहोहोहा
१ २ १र २ ५ २ २
यि । हिन्वायि । वाजा२यिषू२३४वा । जायिना२३४
र ५र २र १ २ १ २ र २
औहोवा ॥(२) औहोहोहायि । यया । चित्तोवी३पा
२ १ २ ५ १ ७
नाया३ । द्धारा२यिः । पा२३४वा । ओ । स्वधा२३ ।
१ ३ ५ २र १ २ १ २ १र
स्वधा२रा२३४या । औहोहोहायि । युजाम् । वाजा२यि
३ ५ २ २ ५र र २ २
षू२३४चो । दाया २ ३ ४ औहोवा । ओयि । ज्वर
२
आ(३) ॥ १८ * ॥ [१]

१ २ १ २
॥ सन्तनि ॥ वृषाहाउ । पावस्वधा३१उवा२३ । रा
५ २१ २र २ १ २ १ र २
२३४या । मरुत्वतेचमत्सरा१ः । विश्वाहाउ । दाधान
१ ५ १ र १ १र २र १र
ओ३आउवा२३ । जा२३४सा ॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमोस्योः
२र १ ३ २१ ११ १ २ १ र २
पवमानस्वर्हृशा२३४५म् । हिन्वेहाउ । वाजेषु वा३
५ २ १र २ १र २ १र २र
१उवा२३ । जा२३४यिनाम् ॥(२) अयाचित्तोविपानया

* ऊ० गा० १प्र० २अ० १८गा० ।

१ २ १र २१११ १ २ १ र १ १
हरिःपवस्वधारया२३४५। युजाऽ२न्वाउ। वाजेषुचो३वा।
५
उवा२३। दा२३४या(३) ॥ १ * ॥ [२]

२र १ २ १ २ १ ५
॥ ऐडसौपर्णम् ॥ वृषापवोवा। स्वाधारा२३४या।
२ १ २ १ ७ २ ५ १
महत्वतायि। चमा२त्सा२३४राः। वा२यिस्वा। दा२
२ १ २र १ २ ४ ५ २ र १ २
३धा। नाम्रोजसा। औ३होवा ॥(१) तन्त्वाधर्तोवा।
१ २ ३ ५ २१ २र १ ७ ३ ५
रामोणा२३४योः। पवामाना। स्वा२र्हं २ ३ ४ ग्राम्।
२ १ २र १ ४ ५
दा२यिन्वे। वा२३जायि। षूवाजिनाम्। औ३होवा॥(२)
२र १२ १ १ २ ५ २१ २१
अयाचित्तोवा। वायिपाना२ ३ ४ या। हरायिःपवा।
७ ३ ५ १ २ १ २र १
स्वधा२रा२३४या। यू२जाम्। वा२३जायि। षूचोद्या।
२ ४ ५ ४
औ३होवा। हो५ई। डा(३) ॥ २ † ॥ [३]

१ २र १ २ १ २
॥ रोहितकूलीयोत्तरम् ॥ वृषापवस्वधा। रया२।
१ र२१ २ १ १ २ १
महत्वतेचमत्सा२३राः। वायिस्वा२दाधा२३। नस्रो२३४

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० १सा०। † ऊ० गा० ४प्र० १ख० २सा०।

५ ४ ५ १ २ १ १२ १ १ २
वा। जा५सो६हायि ॥(१) तन्वाधर्त्तारमो। णियो

१ २ २ १ २ १ १
२ः। पवमानसुवर्दृ२३शाम्। हायिन्वे२वाजा२३यि।

२ १ ५ ४ ५ १ १२ २ २ २ १
प्रुवो२३४वा। जा५यिनो६हायि ॥(२) अयाचित्तोविपा।

२ १ १ १२ २ १ १
नया२। हरिःपवस्वधारा२३या। यूजा२वाजा२३यि।

२ १ ५ ४ ५
प्रचो२३४वा। दा५योई६हायि(३) ॥ ३ * ॥[४]

५ २ १ ४ ५२ २ १ २
॥ आमहीयवम् ॥ वृषोपा३वस्वधारया। मरुत्वा१

१ १२ २ १ २
जा२यि। यमा२३त्सरा:। विश्वादधा। नओ२३जसा

५ २ २ ४२ ५२ २ १
उ। वा३ ॥(१) तन्वाधा३र्त्तारमोणियो:। पवामा१

१ २ १२ १२ १
ना२। सुवा२३र्दृशाम्। हिन्ववाजायि। प्रुवा २ ३

२ ५ २ २ ४२ ५२ २ १
जिनाउ। वा३ ॥(२) अयाचा३यित्तोविपानया। हरा

२ १ २ १ १२ १
यि:पा१वा२। स्वधा२३रया। युजंवाजायि। प्रचोर

२ २२ १ १ १ २
३दयाउ। वा३। स्तौषे२३४५(३) ॥ १ † ॥ [५]

---

* ऊ० गा० ४प्र० १अ० ३सा०। † ऊ० गा० ६प्र० १अ० १सा०।

॥ हाविष्मतम्॥ हाउवृषापवस्वधारयाहाउ। मरु
त्वताइयि। चामत्सा२३४राः। ऐ२हो१आ २ ३ यिही।
विश्वादा३धा। नचो। जा२सा २ ३ ४ औहोवा॥(१)
हाउतन्त्वाधर्त्तारमोण्योर्हाउ। पवमाना३। सूवर्ह२३
४शम्। ऐ२हो१आ२३यिही। हिन्वेवा३जायि। षु
वा। जा२यिना२३४औहोवा॥(२) हावयाचित्तोविपान
याहाउ। हरिःपवा३। स्वाधारा२३४या। ऐ२हो१आ
२३यिही। युजांवा३जायि। पृचो। दा२या२३४औहो
वा। हविष्मते२३४५(३)॥ १ *॥ [६]

॥ यौक्ताश्वोत्तरम्॥ वृषाऔहोहोहायि। पवा३
स्वाधा१राया३। मारुत्वा२३४तायि। चमा३। चोयि।
चमा२त्सा२३४राः। विश्वाऔहोहोहायि। दधा२ना

* ऊ० गा० अ० १ख० १गा०।

५ १ २ ५र र २ र र १
२३४ओ । जा२सा२३४औहोवा ॥(१) तन्वाऔहोहो

२ २र १ २ २ १ २ ५
हायि । धर्त्ता३रामो१णायो३ः । पावा२मा२ ३ ४ ना ।

२ २ १ ७ २ ५ २ र र १
सुवा३ । ओयि । सुवा२ई २ ३ ४ याम् । हिन्वाऔहो

२ १र २ ५ १ २ ५र र
होहायि । वाजा२यिषू२३४वा । जा२यिना२३४औहो

र र १ २ र २ १ २
वा ॥(२) अयाऔहोहोहायि । चित्ता३वायिपा१ना

२ १ २ ५ २ १ ७
या३ । हारा२यिःपा२३४वा । स्वधा३ । ओ । स्वधा

२ ५ २र र १ २ १र २
२रा२३४या । युजाऔहोहोहायि । वाजा२यिषू२३४

५ १ २ ५र र २ २
वो । दा २ या २ ३ ४ औहोवा । ओयि । जू २ ३ ४

५
वा(३) ॥ २ * ॥ [७]

१ १ १ २ १
॥ आजिगम् ॥ वृषापावा । स्वधाराया । मरुत्व

१र १ ७ २ १ २ १र २
ते । चामत्सा२३राः । विश्वादाधा । नओजा२३सा३

१ २ १ १ १ २र १७
४३ ॥(१) तन्वाधार्त्ता । रमोणायोः । पवमान । स्वव

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० २षा० ।

२ २ १र २
हुँ२३शाम् । हिन्वेवाजायि । षुवाजार३यिना३४३म् ॥(२)
१ २ १ २ १ २ १ २
अयाचायित्ता । विपानाया । हरिःपव । स्वाधा१रा२
२ १ २ १र २ १
३या । युजांवाजायि । षुचोदा२३या३४३ । ओ२३४५
ई । डा(३) ॥ १४ * ॥ [८]

२ र र २ ४ ३ ४र ५
॥ स्वारसौपर्णम् ॥ वृषापवस्वधारा३या । मरुत्वतेच
र १ ३ ५ १ २ १ १र
मा । ऊम् । त्सा२३४राः । वायिश्वा३उवा । दधा ।
२ १ ५ ४ ५ २ र र र
नओ२३४वा । जा५सोऽ६हायि ॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमोणा
२ ३ ४ ५र र १ ३ ५ १
३या३योः । पवमानस्तुवा । ऊम् । हु२३४आस् । हायि
२ २ र १र २ १ ५ ४ ५
न्वा३उवा । वाजे । षुवो२३४वा । जा५यिनोऽ६हायि ॥(२)
१ र र र २ ३ ४ ३ ४ ५र १ ३
अयाचित्तोविपाना३या । हरिःपवस्वधा । ऊम् । रा२
५ १ २ २ र १र २ १ ५ ४
३४या । यूजा ३ उवा । वाजे । षुचो२३४वा । दा५
५
योऽ६हायि(३) ॥ १५ † ॥ [९]

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १४सा० ।   † ऊ० गा० ११प्र० २ख० १५सा० ।

Digitized by Google

२ १ २ २ १
॥ सुरूपोत्तरम्॥ वृषापवौहोर२। इया। स्वधारा
२ १ १ २ १ २
या२। मरुत्वतौहो२। इया। चमत्सारा२ः। विश्वा
१ १ २ १२ २ २ २
दधौहो२। इया। नओजा२३सा३ ४ इ॥(१) तन्त्वा
१ १ २ २ १ २ १२
धत्ताहो२। इया। रमोणाये२ः। पवमानौहो२।
१ २ १ २१२ १ २
इया। सुवर्दृशा२म्। हिन्वेवाजौहो२। इया। पु
१२ २ २ २ १ १
वाजा२३यिना ३ ४ ३म्॥(२) अयाचित्तौहो२। इया।
२ २ १ १ १ २ २ १
विपानाया२। हरिःपवौहो२। इया। स्वधाराया२।
१२ १ २ १२ २ १
युजंवाजौहो२। इया। घुचोदा२३या३४३। यो २ ३
४५ई। डा(३)॥ १८ *॥[१०]

२२२ २ २
॥ ऋषभःपावमानम्॥ हाहाउवृषापवा। हा३। हा
१ ३ ५ १ २ २ २ १
३यि। स्वाधा२रा २ ३ ४ या। मरुत्वतेचमा१त्सा३राः।
२ ३ ३ १ २ ४ ४ ४ ५
विश्वादा२३४धा। योमो३। नओवा। जा५सोई।

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० १८सा०।

Digitized by Google

१ २ ५ १ र २ २ २
यि ॥(१) रामो२णा२३४यो:। पवमानसुवा१र्द३श्राम्।

र २ ५ १ २ ४ ५ ४
हिन्ववा२३४जायि। श्रोमो२। सुवोवा। जा५यिनो६

५ २र र र २ १
हायि ॥(२) हाहाक्याचित्ताः। हा३। हा३यि। वा

२ ५ १ २ २ २
यिपा२र्ना२३४या। हरि:पवसुधा१राया। युर्जवा२३४

५ १ २ ४ ५ ४ ५
जायि। श्रोमो३। सुवोवा। दा५यो६हायि(३)॥१८*॥[११]

१ २र १ २ १र २र १ २र १
॥ हरिश्रीनिधनम् ॥ वृषापवसुधारया। वृषापवा।

र १ र २ १ १ २ऽ
सुधारया२। मरुत्वतेचमाहो२। त्सारा२३ः। हाउ

१ २ १र १ ५र र
वा। विश्वादा२३धा। नश्रो। जा२सा२३४श्रौहोवा ॥(१)

१ र २ १र र १र २र १ २र १ र
तन्त्वाधर्त्तारमोणियोः। तन्त्वाधर्त्ता। रमोणियो२ः।

१ र २ १ १ २ऽ १
पवमानसुवाहो२। इश्रा२३म्। हाउवा। हिन्वेवा

२ १र २ ५र र १
२३जायि। सुवा। आ२यि। ना२३४श्रौहोवा ॥(२) श्र

१र २ १र २ १र २र १ २र १ र १
याचित्तोविपानया। श्रयाचित्ताः। विपानया२। हरि:

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १८सा०।

२ १ १ १ऽ १ २
पवस्वधाहो२। राया२३। हाउवा। युजांवा२३जा

१र २ ५ र १ १ १ १
यि। षुचो। दा२ या२३४औहोवा। हरी३श्री२३

१ १
४ पूः(३)॥ १ *॥ [१२]

१ २र १ २ १र र २ १
॥ गौषूक्तम् ॥ वृषापवस्वधौ। हौहोवाहायि। रया।

२ १ १ १
महत्वतेचमौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। त्सारा२ः। वि

र र १ १ १
श्वादधानश्रौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। जासा२३।

१ २ ५र र १ र २ १र२ १र र
हो२वा२३४औहोवा ॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमौ। हौहोवा

२ १ र २ १
हायि। णियोः। पवमानसुवौ२। ऊवायि। ऊवा२

१ १ र र र २ १
यि। दृशा२म्। हिन्वेवाजेषुवौ२। ऊवायि। ऊवा

१ १ २ ५र र २ १र
२यि। जासा२३। हो२वा२३४औहोवा ॥(२) षया

२ १र २ १र र २ १ २
चित्त्राविपौ। हौहोवाहायि। नया। हरिःपवस्वधौ

१ १ १ र र २
२। ऊवायि। ऊवा२यि। राया२। युजंवाजेषु

* ऊ० गा० १०प्र० १खं० १गा०।

चौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। दाया२३। चा२वा२३४औहोवा। अग्निराऊता२३४५ः(३) ॥ ९ * ॥ [१३]

॥ आकलम् ॥ वृषापवा२स्वधारया। मरुत्वतेचमत्सा२३राः। वायिस्वा२। दाधानओ२३। ऊम्। जा३४५ सोइहायि ॥(१) तन्त्वाधर्त्ता२रमोण्यो: । पवमानस्ववहृ२३आम्। हायिन्वे२। वाजेषुवा२३। ऊम्। जा३४५यिनाइहायि ॥(२) अयाचित्ता२विपानया। हरि:पवस्वधारा२३या। यूजा२म्। वाजेषुचो२३। ऊम्। दा३४३योइहायि(३) ॥ १० † ॥ [१४] १०

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा।

वृषाशोणोअभिकनिक्रदद्गा
नदयन्नेषिपृथिवीमुतद्याम्।

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० ९सा०। † ऊ० गा० २०प्र० २ख० १०सा०।

१ २   ३ १र २र ३ १
इन्द्रस्येववग्नुराशृण्वआजौ
२ ३ १ २   ३ २ ३ २
प्रचोदयन्नर्षसिवाचमेमाम् ॥ १ * ॥

"श्येनः" श्येनवर्णः † "वृषा" कश्चिद् वृषभः "गाः" पशून् "अभि" लक्ष्य "कनिक्रदत्" ‡ शब्दं करोति [एवं "गाः" स्तुतीः "अभि कनिक्रदत्" अभिशब्दायमानः]। तदेवाह— "नदयन्" शब्दमुत्पादयन् हे सोम! त्वं "पृथिवीम्" "उत" अपिच "द्याम्" एतौ लोकौ "एषि" गच्छसि। किञ्च "वग्नुः" [वग्नु वाङ्नामैतत् (निघ० १, ११, २५) तस्य] वाक्यस्य शब्दः "आजौ" सङ्ग्रामे "इन्द्रस्येव" इन्द्रशब्द इव "शृण्वे" सर्वैः श्रूयते। ततः "प्रचेतयन्" आत्मानं सर्वेषां प्रज्ञापयन् "इमां" "वाचम्" "अर्षसि" समन्तादागमयसि उच्चैः शब्दायत इत्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३२ ३ १ २ ३ १ २
रसाय्यःपयसापिन्वमान
३ १ २   ३ १ २३   ३ २
ईरयन्नेषिमधुमन्तमंशुम् ।

---

* ऋ० वे० ७, ४, १२, २।   † 'श्येनः—वज्रवर्णः'—इति वि०।

‡ "दाधर्ति-दर्धर्ति-दर्धर्षि-बोभूतु-तेतिक्ते-ऽलर्ष्या-ऽऽपनीफणत्-संसनिष्यदत्-करिक्रत्-कनिक्रदद्-भरिभ्रद्-दविध्वतो-दविद्युतत्-तरित्रतः—सरीसृपतं—वरीवृजन्-मर्मृज्या-ऽऽगनीगन्तीति च (७, ४, ६५)"—इति पाणिनिस्मरणात् क्रन्दे र्लुङि पूर्वेऽह्

१२　　२१२　　२१
पवमानसन्तनिमेषिकृण्व
१२　　३१२
न्निन्द्रायसोमपरिषिच्यमानः ॥ २ * ॥

हे सोम! "रसाय्यः" [रसेरौणादिक आय्य-प्रत्ययः (उ०, ३, ८६)] आस्वाद्यः † "पयसा" "पिन्वमानः" क्षरंस्त्वम् "ईरयन्" "मधुमन्तं" माधुर्य्योपेतम् "अंशुम्" रसभावम् "एषि" प्राप्नोषि ["अंशुमश्टमात्रो भवति"—इति यास्कः (निरु० ,)]। अनेन सोमरसोऽभिधीयते। किञ्च हे सोम! "परिषिच्यमानः" अद्भिः परिषिक्तो भवंस्त्वं "पवमानः" पवित्रे पूयमानः सन् "सन्तनिं" [तनु विस्तारे (त०, प०) इ-प्रत्ययः] सन्ततां धारां "कृण्वन्" कुर्वन् "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "एषि" गच्छसि ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३१२　　३१२　२१२
एवापवस्वमदिरोमदायो
३१२३१२　　३१
दग्राभस्यनमयन्वधस्नुम् ।
१२१२३१२　　३१२
परिवर्णम्भरमाणोरुशन्तं
३१२　३१२　　३२
गव्युर्नोअर्षपरिसोमसिक्तः ॥ ३ * ॥ ११

द्विर्वचनमभ्यासस्य चुलाभावो निपातनम्‌ । लुङ् चात्र "छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः (३, ४, ६)"—इति धात्वर्थ-सम्बन्धमात्रे सार्वकालिकः ।

* ऋ० वे० ७, ४, १३, ४ ।　　† 'रसाय्यः—रसवान्'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १३, ५ ।

हे सोम ! "मदिरः" मदकरः त्वम् "उदग्राभस्य" * ["क्रिया ग्रहणं कर्त्तव्यम्"—इति कर्मणः सम्प्रदानसंज्ञा । चतुर्थ्यर्थे बहुलमिति षष्ठी] उदग्राभम् उदकग्राहिणं मेघं "नमयन्" वृष्ट्यर्थं प्रह्वीकुर्वन् । कीदृशम् ? "वधस्नुम्"† हननवधेन प्रस्नवन्तम् "मदाय" मदार्थमेव "पवस्व" पात्रेषु क्षर । किञ्च "दृशन्तम्" आरोप्यमानं श्वेतं "वर्णं" "परि भरमाणः" परितो बिभ्रत् "सिक्तः" पवित्रे सिच्यमानः त्वं "गव्युः" अस्माकं गा इच्छन् "पर्येषि" परिगच्छ ॥

"वधस्नुं"-"वधस्नैः"—इति पाठौ । ३ ॥ ११

॥ इन्द्रवद्वासिष्ठम् ॥ औहोवाहा ३ होयि । इहा । वृषाशोणो । अभिक । निक्रदङ्गाः । नदयन्नायि । यो ३ पृथि । वीमुतद्याम् । इन्द्रस्येवा । वग्नुरा । शृणव आजाउ । प्रचोदयान् । अर्षसि । वा३४३ । चा३मा ५ यिमा ई५ईम् ॥(१) रसायियाः । पयसा । पिन्वमा नाः । ईरयन्नायिषी३मधु । मन्तमꣳशूम् । पवमाना ।

---

* 'उदग्राभस्य—उदक-सङ्घातस्य वधस्नुम्, उदकसङ्घातस्य वधः येन क्रियते भवति परिवर्त्तः सोमेन स वधस्नुः'—इति वि० ।

† मन्त्रे तु प्रायो वधोऽत्ययत्वकारादिर्दृश्यते ।

२ १ २ ३ ४ ५ २ १र २ १ २
सन्तनिम्। एषिक्तणवान्। इन्द्रायसो। मा३परि। षा

२ ४ २र १र २
३४३यि। च्या३मा५ना६५६ः॥(२) एवापवा। स्वा३

१ १ २ ३ ४ ५ २ १ र २ १ २ र २
मदि। रोमदाया। उदग्राभा। स्या ३ नम। यन्वध

५ २ १ २ १ र १ २ ३ ४ ५ २र २र
स्नुम्। परिवर्णाम्। भरमा। णोरुशन्ताम्। औहो

१ २ १ ३ २ १ र २ १ ४
वा हा३होयि। इन्दा। गव्युर्नोंआ। षा३परि। सो३

२ ४
४३। मा५सा५यिक्ता६५६ः(३)॥ २ *॥ [१]

२ २ २ र १र २ १
॥ पार्थम्॥ ओ३हो३होयि। वृषाशोणो। अभिक।

१ २ ४ ५ २ १ २ १ १ २ ४ ५
निक्रदद्गाः। नदयन्नायि। षी३पृथि। वीमुतद्याम्।

२ १र २ १ र २ १ ४ ५ २ र १ २
इन्द्रस्येवा। वग्नुरा। शृणवआजाउ। प्रचोदयान्। अ

१ २ २ ४ २ र १
षसि। वा३४३। चा३मा ५ यिमा६५६म्॥(१) रसायि

१ १ र १ २ ४ ५ २र १ २ १
याः। पयसा। पिन्वमानाः। ईरयन्नायि। षी३मधु।

१ २ ४ ५ २ १र २ १ १ २ ४ ५
मन्तमꣳशूम्। पवमाना। सन्तनिम्। एषिक्तणवान्।

* ऊ० गा० २प्र० १अ० २सा०।

२ र १ २ १ २ २ ४
इन्द्रायसो । मा२परि । षा३४३यि । च्या३मा५नाई

२र र १ २ १ २ ३ ४ ५ २
५ई: ॥(२) एवापवा । स्वा३मदि । रोमदाया । उद

१र २ १ २ ३ ५ २ १ २१
आभा । स्वा३नम । यन्वधस्नूम् । परिवणाम् । भर

र १ २ ३ ४ ५ २ २ २ १र
मा । णोरुग्रताम् । ओ २ हो २ होयि । गव्युर्नोआ ।

२ १ २ २ ४
षा३परि । सो३४३ । मा२सा५यिक्ता६५ई:(३) ॥ ६* ॥[२]११

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य
तृतीय: खण्ड: † ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थखण्डे ‡ प्रमाथरूपे—

प्रथमसूक्ते—प्रथमा ।

१र २र ३ १ २र ३ १ १
त्वामिद्धिहवामहेसातौवाजस्यकारव: ।

१ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १र ३ १ १
त्वांवृत्रेष्विन्द्रसत्पतिन्नरस्त्वाङ्काष्ठास्वर्वत: ॥ १ ¶ ॥

---

* ऊ० गा० ७प्र० १ अ० ६ गा० ।

† "उक्तो माध्यन्दिन:"—इति वि० ।

‡ 'या ज्योतिष्टोमे देवता परिभाषा साम्नां सैवात्रापि"—इति वि० ।

¶ छ० आ० ३, १, ५, २ (१भा० ४८१ पृ०)=ऋ० वे० ६, ७, १७, १ ।

"कारवः" स्तोतारो वयं "वाजस्य" अन्नस्य "सातौ" सम्भजने निमित्तभूते सति, हे "इन्द्र!" "त्वाम् इत् हि" त्वामेव "हवामहे" स्तुतिभिराह्वयामहे। हे इन्द्र! "सत्पतिं" सतां पालयितारं श्रेष्ठं त्वां "नरः" अन्येऽपि मनुष्याः "वृत्रेषु" आवरकेषु शत्रुषु सत्सु "हवन्ते" आह्वयन्ति, तज्जयार्थम्। अपिच "अर्वतः" अश्वस्य सम्बन्धिनीषु "काष्ठासु" यथा अश्वः क्रान्त्या तिष्ठति तासु "काष्ठासु" सङ्ग्रामेषु युद्धकामाश्च त्वामेवाह्वयन्ति, अतो वयं त्वामेवाह्वयाम इत्यर्थः॥

"सातौ"-"साता"—इति पाठो॥ १॥

अथ द्वितीया।

१२ ३ २ ३ २ ३१ ३ २ १ २

सत्वन्नश्चित्रवज्रहस्तधृष्णुयामहस्तवानो अद्रिवः।

१ २२ ३ १२ ३ १ २ ३ १उ ३ १ ३ १ २

गामश्वꣳरथ्यमिन्द्रसङ्किरसत्रावाजन्नजिग्यषे॥२*॥ १२

हे "चित्र" चायनीय! "वज्रहस्त" वज्रबाहो! "अद्रिवः" वज्रवत्† [यद्वा आदृणात्यनेनेत्यद्रिरशनिस्तद्वत्] एवम्भूत हे इन्द्र! "धृष्णुया" धृष्णुः शत्रूणां धर्षयिता‡ "महः" महान्

---

* ऋ० वे० ४, ७, २७, २।

† 'अद्रिवः—वज्रवन्। अथवा अद्रयः पर्वताः। अथवा अभिषवग्रावाणः। ते अद्रिवः'—इति वि०। अत्र "मतुवसो रुः सम्बुद्धौ छन्दसि (८, ३, १)"—इति रुत्वम्।

‡ 'धृष्णुया—धारणशीलया बुद्ध्या प्रज्ञया वा'—इति वि०।

न तादृशस्त्वं "स्तवानः" अस्माभिः स्तूयमानः सन् "गाम्" "रथ्य" रथवाहम् "अश्व" च "सं किर" सम्यक् प्रयच्छ । "जिग्युषे" जितवते पुरुषाय भोगार्थं "सना" महत् प्रभूतं * "वाजं न" अन्नमिव यथा प्रचूरं जितवते भोगार्थं बहु प्रयच्छसि तद्वत् † ॥ २ ॥ १२

२र र र १ २ २
॥ वारवन्तीयम् ॥ तुवामिद्धाऔहोहायि । हावामा२३
५ २ र र र १ ५ १र र
४हायि । सातौवाजस्यकारावो२३४हायि । त्वांवृत्रेषि
२ १र ४र ५ १ ३ ५ २
न्द्रसत्पतिन्ना३४ । औहोवा । हुहा२३४हायि । उऊ
२ ५ २१र २र १ ७ २ १र ४र ५
वा२३४राः । तुवाङ्का । ष्ठासुअर्वा ३ ४ । औहोवा ।
१ ३ ५ १र २ ४र ५
हुहा२३४हायि । औहो३१२३४ । ताः । एहियाईहा । (१)
२ र र र १ २ २ ५ २ १
तुवाङ्काऔहोहायि । सूअर्वा२३४ताः । सत्वाना२ ३ ४
५ १ २ १र ४र ५ १ ३
हायि । चित्रवज्रहस्तधृष्णू३४ । औहोवा । हुहा२३४
५ २ ३ ५ २ १ १ १ ७र २
हायि । उऊवा२ ३ ४ या । महस्त । वानोअद्रा ३ ४ ।

* 'सना—सदा'—इति वि० ।

† 'वाजम्—अन्नम् । न जिग्युषे—न शब्द उपमार्थीयः, यथा जिग्युषे ; समनशीलाय वणिजि यथा धनमुत्पद्यते तद्वत् त्वमस्मासु देहीत्यर्थः ।

Digitized by Google

२र ४र ५ १ २ ५ २र २
औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। वाः।
५र ५ २ र र १ २ २
एहियाइहा ॥(२) महस्तवाऔहोहायि। नोअद्रा२३४
५ २र १ ५ १ २
यिवाः। गामाश्वा२३४ऽहायि। रथियमिन्द्रसश्चा३४।
२र ४र ५ १ २ ५ २ १ र २ १र २र
औहोवा। इहा२३४हायि। उऊवा२३४रा। सनावा।
१ ७ २ २र ४र ५ १ २ ५ २र २
जान्नजिग्यू३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो
५र ५ ४
३१२३४। षायि। एहियाइहा। होपुइ। डा(३) ॥१ ३*॥[१]
२र र र १ १ २
॥ काण्वबृहत् ॥ औहोतुवामिद्धा३ए। हवामा१हा
२र २ १ र २र र २ २
२३४यि। हाहोयि। सातौवाजस्यकारवः। तुवांवा१
२र २ १ २ १ २
त्रा२३४। हाहोयि। षूइन्द्रसत्। पतायिन्ना१रा२३४ः।
२र २ १ २ २र २ २ १ १
हाहोयि। तुवाङ्का१ष्ठा२३४। हाहो। सुआ३। वा
५ ५ २र र र र
२३४ताः। उऊवाइहाउ। वा ॥(१) औहोतुवाङ्काष्ठा
२ १ २ २र २ १ २
३ए। सुआर्वा१ता२३४ः। हाहोयि। सात्वनश्चि। च

* ज० गा० २२प्र० १ख० १२सा०।

१ २ ३र २ १ २ ३र २
वाज्रा१हा२३४। हाहो। स्तधाष्णू१या२३४। हाहो

१ २ ३र २ ३र १ १
यि। महास्ता१वा२३४। हाहो। नोत्रा२। द्रा२३४

५ ५ ३र र २
यिवाः। उहुवा६हाउ। वा॥(२) औहोमहस्तवा३१।

र १ २ ३र २ १ २ १
नोत्राद्रा१यिवा२३४ः। हाहोयि। गामश्रुवम्। रथा

२ ३र २ १ २ ३र
यिया१मा२३४। हाहोयि। द्रमाङ्का१यिरा२ ३ ४। हा

२ १ २ ३र २ ३ २ १
होयि। सत्रावा१जा२३४म्। हाहो। नजा३यि। ग्यू

५ ५
२३४षायि। उहुवा६हाउ। वा(३)॥ १७ *॥ [२] १२

अथ द्वितीयसूक्ते प्रगाथे—

प्रथमा।

३ १र २र ३ १ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
अभिप्रवःसुराधसमिन्द्रमर्च्चयथाविदे।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
योजरितृभ्योमघवापुरूवसुःसहस्रेणेवशिक्षति॥ १ ‡॥

„पुरूवसुः" पश्वादिबहुधनोपेतः, यद्वा बाहुल्यात् बहूनि वासको वा "मघवा" धनवान् "यः" इन्द्रः "जरितृभ्यः"

* ऊ० गा० २२प्र० १ख० १०सा०।

‡ छ० आ० ३, १, ५, १ (१भा० ४८३ पृ०)=ऋ० वे० ६, ४, १४, १।

स्तोतृभ्यः अस्मभ्यं "सहस्रेणेव" सहस्रसङ्ख्याकेन धनेनेव "शिक्षति" [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघ० ३, २०,८)], पश्वादि-बहु धनम् अस्मभ्यं प्रयच्छतीत्यर्थः। स इन्द्रः "यथाविदे" यथा-स्माभिर्विज्ञायते तथा हे ऋत्विजः! "वः" यूयं "सुराधसं" शोभनधनोपेतम् "इन्द्रम्" ऐश्वर्य्ययुक्तं देवम् "अभि" आभि-मुख्येन "प्र अर्च्च" प्रकर्षेणार्च्चत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ १ २ १ १ २ २ १ १२ ३ १ २ ३ १ २
शतानीकेवप्रजिगातिधृष्णुयाहन्तिवृत्राणिदाशुषे।
३ १ २ ३ १२ २२ २ १ २ ३ १ २
गिरेरिवप्ररसाअस्यपिन्विरेदत्राणिपुरुभोजसः ॥ २* ॥१३†

"धृष्णुया" ‡ धृष्णुः धर्षणशीलः पुरुषः "शतानीकेव" यथा शतसङ्ख्याकानि शत्रुसैन्यानि "प्रजिगाति" जयार्थं प्रक-र्षेण गच्छति, तद्वत्; इन्द्रः "दाशुषे" यजमानार्थं "वृत्राणि" यज्ञविघातकान् शत्रून् प्र जिगाति ततस्तान् "हन्ति"। किञ्च "पुरुभोजसः" बहुधनस्य "अस्य" इन्द्रस्य सम्बन्धीनि "दत्राणि" दत्तानि धनानि "प्र पिन्विरे" यजमानार्थं प्रकर्षेण वर्त्तन्ते। तत्र दृष्टान्तः—"गिरेरिव" यथा गिरेः सकाशात् "रसाः" उदकानि पिन्विरे प्रवर्त्तन्ते तद्वत् ॥ २ ॥ १३

---

* ऋ० वे० ६, ४, १४, २।

† 'वामदेव्यं, मैत्रावरुणं साम। शैत्यं, ब्रह्मसाम'—इति वि०।

‡ 'धृष्णुया—धारणस्वभावया'—इति वि०।

Digitized by Google

४ २ ४ ५र २ १ ३र ४र५
॥ श्येतम् ॥ अभिप्रवःसुरा । धसा ३ ४ औहोवा ।

१ २ १ ७ ५ ५ १र २
आयिन्द्रमर्च्च । यथाविदा२३४यि । ओ६हा । योजरि

१ १ १ २ १ ३ ५ २ १ र
तृभ्यः । माघा२३वा । पुरू२ । बा२३४सूः । सहस्रेणा

२ २ १ ३ ५र र
यिवा३शा । ऊम्मायि । चा२ता २ ३ ४ औहोवा ॥(१)

४ २ र ४र५ ३ २ ३र ४र ५ १ ३र र १
सहस्रेणेवशि । क्षता३४औहोवा । सहस्रेणे । वशा

७ ५ ५ २ १र र १र १
यिचता२३४यि । ओ६हा । शतानीकेव । प्राजा २ ३

२ १ ३ ५ १ २ २
यिगा । तिधार२ । ष्णू२ ३ ४ या । हन्तिवृत्राणी३दा ।

१ २ ५र र ३ ४ ३र ४५र
ऊम्मायि । शूर२षा२३४औहोवा ॥(२) हतिवृत्राणिदा ।

२ २ ३र ४र ५ १ २ र १ ७
शुषा३४औहोवा । हान्तिवृत्रा । णिदाशुषा२ ३ ४ यि ।

५ ५ २ १र २ १ २ १
ओ६हा । गिरेरिवप्र । रासा२३आ । स्यपा २ यि ।

२ ५ १र २ २ १
न्वा२३४यिरायि । दत्राणिपूरू३भो । ऊम्मायि । जा२

२ ५र र २ ५
सा२३४औहोवा । वा२३४हू(३) ॥ २* ॥ [१]

* ऊ० गा० २प्र० १अ० १सा० ।

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तः ॥ अभा३यिप्रा ३ वःसुराधसोवा । आ

२ १ १ १ २
यिन्द्रमर्च्च । यथावा १ यिदा २यि । योजरितृ३१२३४ ।

१र ४ ५र २ १ २ २ १ २
भ्योमघवा । पुरूवा१सू२: । सहास्रे१णा२यि । वशा

१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४
३यि । चा२३४५ । जा२३४५यि ॥(१) सहा३स्रे३णेऽव

५ ४ ५ १ १र र १ २ १र
शिक्षतोवा । साहस्रेणे । वशायिक्षा१ता२यि । शाता

र २ २ ४ ५र २ १ २ १
नीका३१२३४यि । वप्रजिगा । तिधार्षू१या२ । इन्ता

२ १ २ १ २ १ १ १ १
यिवा१र्त्रा २ । णिदा ३ । शू२३४५ । षा२३४५यि ॥(२)

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १ २र १ २
इन्ता३यिवा३र्त्राणिदा३शुषोवा । हान्तिवृत्रा । णिदाशु

१ र २ २ ४र ५ २ १ २
१षा २यि । गायिरेरिवा३१२३४ । प्ररसाअ । स्यपायिन्वा १

१ २ २ २ १
यिरा २यि । दत्राणा१यिपू २ । रूभो ३ । जा२३४५ ।

२ १ १ १ १
सा२३४५:(३) ॥ ७ * ॥ [२]

४ ३ ४ ५र ३ २ ३र ४र ५
॥ श्यैतनौधसम् ॥ अभिप्रवःसुरा । धसा३४ओहोवा ।

---

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ७सा० ।

१ २ १ ७ ५ ५ ८
आयिन्द्रमर्च। यथाविदा२३४यि। औ६हा। यो२३

२ १ २ १२ १ २ ३ ५ १
जा। रीतृभ्यः। मघ। वा। पूरूषा२३४सूः। सा२३

२ १ ८२ १ ५ ३ ५ ४ ३८ ४८५
ना। स्रेणेवशो२३वा। सा२३४ती॥(१) सत्रस्रेणेवशि।

३ २ ३८ ४८ ५ १ १८ ८ १ ७
क्तना३४औहोवा। सात्रस्रेणे। वशायिक्तना२३४यि।

५ ५ १ २ १८ २ १ २ १
औ६हा। शा२३ता। नौकेव। प्रजि। गा। तायि

२ ३ ५ १ २ १ ८ २ २ ५
धाष्णु२३४या। चा२३न्तायि। वार्त्राणिदो२३४वा।

३ ५ ३ ४ ३८ ४ ५८ ३ २ ३८ ४८ ५
पू२३४षे॥(२) हन्तिवृत्राणिदा। शुषा३४औहोवा।

१ २८ १ ७ ५ ५ १
हान्तिवृत्रा णिदाशुषा२३४यि। औ६हा। गा२३यि

२ १ २ १ २ १ २ २ ५
रेः। आयिव। प्रर। साः। आ। स्रापिन्वा२३४यिरा

१ २ १ २ १ ५ ३
यि। दा२३त्रा। णायिपुरुभो२३४वा। जा२३४

५
साः(३)॥ ११ *॥ [३]

२ १ २ ५८
॥ वाङ्निधनं क्रौञ्चम्॥ अभायिप्रावा३१२३४ः। सुरा।

* ऊ० गा० २२प्र० १अ० ११खा०।

२ २ २ १ २ ५र ३ १ २र १
धसा३म्। इन्द्रमर्चा३१२३४। यथा। विदा३यि। योजा
२ २र ४ ५र र २ २ २ १ २
रितू३१२३४। भ्योमघवापुरू। वसू३ः। सहास्रे णा३
४ २ १ २
१२३यि। वशापुयिच्चताउ॥(१) सहास्रे णा३१२३४यि।
५ ३ १ २ १ २ ५ २ २
वशि। च्चता३यि। सहस्रे णा३१२३४यि। वशि। च्चता
२ १ २ ३ ४ ५र २ २
३यि। शतानीका३१२३४यि। वप्रजिगातिधृ। ष्णु या
२ १ २ ४ २ १
३। हन्तायिवार्त्रा३१२३। णिदा५प्रुषाउ॥(२) हन्ता
१ ५र ३ १ २ १ २
यिवात्रा३१२३४। णि। दा। प्रुषा३यि। हन्तिवृत्रा
५र ३ १ २ १ २
३१२३४। णिदा। प्रुषा३यि। गिरेरायिवा३१२३४।
२ ४र ५ ३ २ २ १ २ ४
प्ररमाग्रस्यपि। न्विरा३यिदत्राणायिपू३१२३। ह्नभोपुज
साउ। वा॥(३) ॥ १५ ॥ [४] १३

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० ५सा०।

अथ तृतीयप्रगाथे—

प्रथमा ।

२ ३१२ २२ ३ १ २
त्वामिदाह्यो नरोऽपीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः ।
१ २ ३ १ २ ३२ ३२ ३ १ २ ३ १ २
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमागहि ॥ १ * ॥

हे "वज्रिन्" वज्रवन्निन्द्र ! यं "त्वाम्" "भूर्णयः" हविर्भरणशीलाः "नरः" कर्मणां नेतारो यजमानाः "इदा" अद्य "ह्यः" पूर्वद्युश्च "अपीप्यन्" सोममपाययन् । हे इन्द्र ! "सः" त्वं "स्तोमवाहसः" स्तोत्रवाहकस्य मम स्तोत्रम् "इह" यज्ञे "श्रुधि" शृणु "स्वसरं" गृहञ्च ["दुर्याः"(९) "स्वसराणि"(१०)—इति (निघ० ३, ४) गृहनामसु पाठात्] "उपागहि" उपागच्छ ॥

"स्तोमवाहसः"—इति छन्दोगाः, "स्तोमवाहसाम्"†—इति बह्वृचाः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मत्स्वा सुशिप्रिन्हरिवस्तमीमहे त्वया भूषन्ति वेधसः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्य सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ २ ‡ ॥ १४

---

* छ० आ० ४, १, १, १० (१भा० ६१० पृ०) ऋ० वे० ६, ७, ३, १ ।

† अतएव छन्दआर्चिक व्याख्यावसरे 'अस्माकम्'—इति बहुवचनान्त' व्याख्यातम् ।

‡ ऋ० वे० ६, ७, ३, २ ।

Digitized by Google

हे "सुशिप्रिन्" शोभनहनो ! "हरिवः" हरिनामकाश्वोपेत: !" "गिर्वणः" गीर्भिर्वननीयेन्द्र ! "त्वया" त्वयि "वेधसः" परिचारकाः "आ भूषन्ति" * आभवन्ति, "मत्स्व" सोमेन मादय आत्मानम् किञ्च "तम्" त्वा वयम् "ईमहे" याचामहे । किं वाच्यम्? इत्यत्राह—"सुतेषु" सोमेषु अभिषुतेषु सत्सु "तव" "श्रवांसि" अन्नानि † "उपमानि" उपमानभूतानि, हे "उक्थ्य" प्रशस्य ! ‡ तव प्रसादात् सन्त्विति ॥

"सुशिप्रिन्"-"सुशिप्र"—इति पाठौ ॥ २ ॥ १४

३र ४ ५र २ ३ ४र
॥ माधुच्छन्दसम् ¶ ॥ त्वामिद्दा । ह्वोयि । ह्वियोन
५ ५ १ १ १ १ २ ३ ५ १
राइए । अपायिप्यन्वा । ज्ञायिन्भूर्णा२ ३ ४ याः । स
२ १र २र १ १ ३र २ ३र २
इन्द्रस्तोमवाहसः । इहाश्रुधा । औहो ३ ४ वाहायि ।
१ २ ३र २ ३र १ १र २
उपास्वासा । औहो३४वाहा । रमागा२३हा३४३यि ॥(१)
३ ४ ५ र २ ३ ४र ५ ५ १ १ १ १ २
उपस्वसा । हो । रमागहोइए । उपास्वसा । रामा
३ ५ १ र १ १ २
गा २ ३ ४ हो । मस्वासुशिप्रिन्हरिवः । तमायिमाहा ।

* 'स्वाधां कुर्वन्ति'—इति वि० ।

† 'श्रवांसि—अन्नानि पयांसि वा'—इति वि० ।

‡ 'उक्था—उक्थैः सम्भजनीयैः'—इति वि० ।

¶ 'माधुच्छन्दसं मामाच्छावाकस्य'—इति वि० ।

Digitized by Google

२र २ २र २ १ २ २र २ २र २
औहोइ४वाहायि। त्वयाभूषा। औहो३ ४ वाहा। नि

१र २ ३ ४र ५र र २ ३४र ५ ५
वेधा२३सा३४३ः॥(२) त्वयाभूषा। हो। निवेधसा६ए।

२ १ २र १ २ ३ ५ १ २ १ र २ १र २
त्वयाभूषा। निवेधा२३४साः। तवश्रवा्ँस्युपमा। नि

१ २ ३२ २ २र २ १ २ ३र
यूक्थाया। औहो २ ३ ४वाहायि। सुतायिषूवा। औ

२ २र २ १ २ १
होइ४वाहायि। द्रगिर्वा२३णा ३ ४ ३ः। ओ२३ ४ ५ई।

डा (३) ॥ ४ * ॥ [१]

१ र २१र र २ १
॥ मानवोत्तरम्॥ होवायि। त्वामिदाह्योनरः। हो

र र ३ २ र १३ र
वायि। आपीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः। साइन्द्रस्तो। मावा

२ ३ २ ५ २ १ २ १
हसा३१ः। इहा२२३४भूधायि। उपास्वा२३सा३। रा२

२ ५र र ३ ५ १ २ १
मा२३४औहोवा। गा२३४ही॥(१) होवायि। उपस्व

१ १र२ १ र र २
सरमागहि। होवायि। ऊपस्वसरमागहि। मात्स्वासु

३ २ ३ २ ५ २ १
शि। प्रायिन्द्रहरिवा३१ः। नमा२यिमा२३४हायि। त्वया

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० ४सा०।

भूर३षा३ । ता२यिवे२३४औहोवा । धा२३४ साः ॥(२)

होवायि । त्वयाभूषन्तिवेधसः । होवायि । त्वायाभूष

न्तिवेधसः । तावश्रवा । साउपमा३१ । नियू२श्या२३४

या । सुतायिषू२३वा३यि । द्रा२गा२३४औहोवा । वा२

३४णाः (३)॥ ८ * ॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयाध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

पञ्चमखण्डे‡—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

यस्तेमदोवरेण्यस्तेनापवस्वान्धसा ।
देवावीरघश᳘ᳪसहा ॥ १¶ ॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० २खा० ८सा० ।

† 'उत्त' माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

‡ 'तृतीयसवनमभिधीयते'—इति वि० ।

¶ छ० आ० ५, २, ४, ४ (२भा० १४ पृ०)=ऋ० वे० ८, १, २१, ४ ।

हे सोम! "ते" तव "देवावीः" देवकामः "अघशंसहा" राक्षसानां हन्ता "वरेण्यः" सर्ववरणीयः "मदः" मदकरः "यः" रसः विद्यते, "तेन" "अन्धसा" अदनीयेन "पवस्व" चर ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २३ १ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३ १ २
जघ्निर्वृत्रममित्रियꣳसस्निर्वाजन्दिवेदिवे।
१ २ ३ १ २
गोषातिरश्वसाअसि ॥ २ * ॥

हे सोम! त्वम् "अमित्रियं" अमित्रभवं † "वृत्रं" शत्रुं "जघ्निः असि" हन्ता भवसि। किञ्च "दिवे दिवे" प्रतिदिनं "वाजं" ‡ सङ्ग्रामं "सस्निः" सम्भक्तोऽसि ¶। अपिच "गोषातिः" गवां सातिर्दातासि, "अश्वसाः" अश्वानां दाता चासि।

"गोषातिः"-"गोषाउ"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ८, १, २१, ५।

† 'अमित्रियम्—अमित्रकर्मकर्त्तारम्'—इति वि०।

‡ 'वाजमिति द्वितीयैकवचनम्, षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्; वाजस्य अन्नस्य'—इति वि०।

¶ 'सस्निः—साधनस्वभावः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सम्मिश्लोअरुषोभुवःसूपस्थाभिर्नधेनुभिः ।
१ २ ३ २उ ३ १
सीदञ्छ्येनोनयोनिमा ॥ ३ * ॥ १५ †

हे सोम ! त्वं "सूपस्थाभिः" शोभनोपस्थानाभिः "धेनुभिः" गोभिः [गोविकारैः पयोभिरित्यर्थः] "सम्मिश्लः" सम्मिश्रितः "श्येनः न" यथा श्येनः शीघ्रमागत्य स्थानमासीदति तद्वत् "योनिं" स्वकीयं स्थानम् "आसीदन्", "न" [—इति सम्प्रत्यर्थे] इदानीम् "अरुषः भुवः" आरोचमानो भव ॥

"भुवः"-"भवः"—इति वा पाठौ ॥ ३ ॥ १५

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

३ १ २ ३ २ ३उ ३ १ २ ३ १ २
अयम्पूषारयिर्भगस्सोमःपुनानोअर्षति ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २
पतिर्विश्वस्यभूमनोव्यख्यद्रोदसीउभे ॥ १ ‡ ॥

"पूषा" पोषकः सर्वेषां "भगः" भजनीयः "रयिः" धनहेतुः "अयं" सोमः "पुनानः" पवित्रे पूयमानः सन् "अर्षति" कलश-

* ऋ० वे० ८, १, २२, १ ।   † 'उष्णा गायत्री'—इति वि० ।

‡ छ० आ० ६, १, १, २ (२भा० १५१७०)=ऋ० वे० ७, ५, २, २ ।

मभिगच्छति। तथा "विश्वस्य" सर्वस्य "भूमनः" भूतजातस्य "पतिः" पालयिता "सोमः" "उभे रोदसी" द्यावापृथिव्यौ "व्यख्यत्" स्वतेजसा प्रकाशयति। अनेन लोकद्वयवर्त्तित्वं सूचितम्॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
समुप्रियाअनूषतगावोमदायघृष्वयः।

१ २ ३ १र २र ३ १ २
सोमासःकृण्वतेपथःपवमानासइन्दवः॥ २ *॥

"प्रियाः" प्रियतमाः "घृष्वयः" अत्यन्तदीप्ताः, [यद्वा 'अहं प्रथमतः स्तौमि', 'अहं पुरस्तात् स्तौमि'—इति परस्परं संहृ-मानाः] "गावः" स्तुति-लक्षणा वाचः † "मदाय" सोमस्य मदार्थं "समनूषत" संस्तुवन्ति; "उ" प्रसिद्धौ ‡ [यद्वा गावो धेनवः सोमस्य मदाय अब्दायन्ते]। ततः "पवमानासः" पूयमानाः "इन्दवः" दीप्ताः "सोमासः" सोमाः पथः मार्गान् "कृण्वते" चरणार्थं कुर्वन्ति॥ २॥

---

* ऋ० वे० ७, ५, २, ३।

† 'गावः—० ० ०मोसम्भवानि क्षीराणि उदकानि वा'—इति वि०।

‡ 'उ—इति पदपूरणः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २र ३ १र २र३ १ २ ३ १ २
यओजिष्ठस्तमाभरपवमानश्रवाय्यम्।
१ २र ३ १ ३१२ र७ ३१ २
यःपञ्चचर्षणीरभिरयिंयेनवनामहे॥ ३ *॥ १६ †

"ओजिष्ठः" ओजस्वितमः "यः" तृतीयो रसोऽस्ति तं "श्रवाय्यं" श्रवणीयं रसम् "आभर" अस्मभ्यमाहर। किञ्च "यः" रसः "पञ्च चर्षणीः" ‡ पञ्चजनान् निषादपञ्चमान् चतुरो-वर्णान् "अभि तिष्ठति"। अपिच "येन" रसेन वयं "रयिं" धनं च "वनामहे" सम्भजामहे ¶ [यद्वा येन त्वां रयिं याचा-महे] तमाभर॥ ३ ॥ १६

५ ३र २ ४ ५ १र
॥ गौरीवितम्§॥ अयम्। पूषा ३। रयिर्भगाः। सो
र र १ २ ४
मःपुनानोअर्षता२३यि। पतिर्विश्वा३१ २ ३। स्वभूपम
१ २ ४ ५ ४ ५
नाः। वायस्व्यद्रो३१२३। दसोवा। ऊ५भो६हायि।(३)

॥ ८ ॥ ॥ [१]

* ऋ० वे० ७, ५, २, ४। † "ज्योतिष्टोमौ ककुब्णिहौ"—इति वि०।

‡ 'पञ्चचर्षणीः—चर्षणयो मनुष्याः। चत्वारो महर्त्विजः, पञ्चमो यजमानः।

¶ 'रयिं—धनं। येन वनामहे—येन सोमेन ऊतेन रयिं धनं लभामः। वनति र्यद्यपि स्तुत्यर्थे तथाप्यत्र लाभार्थे द्रष्टव्यः—इति वि०।

§ 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु०। ‖ ऊ० गा० १२प्र० १ख० ८सा०।

Digitized by Google

॥ तृतीयंक्रौञ्चम् ॥ अयम्पूषा। हो। रयिर्भगा ६ ए। सोमा२ःपुना२। नओा३४५। षा२३४ती। पतिर्विं श्वस्यभूमना२३४५ः। वियख्या२३द्रो। दसीउ२३भा३४ ३यि ॥(१) समुप्रियाः। हो। अनूषता ६ ए। गावो२ मदा२। यघा३४५। षा२३४याः। सोमासःकृण्वतेप था ऽ१ः। पवमा२३ना। सइन्दा२३वा३४३ः ॥(२) यओ जिष्ठाः। हो। तमाभरा६ए। पावा२माना२। श्रवा ३४५। यो२३४याम्। यःपञ्चचर्षणीरभीऽ१। रयिंया२ ३यिना। वनामा२३हा ३ ४ ३ यि। ओ२३४५ई। डा।(३)

॥ ८ * ॥ [२]

॥ गौरीवितम्† ॥ अयम्। पूषा३। रयिर्भगाः। सो मःपुनानोअर्षता२३यि। पातिर्विश्वा३१२३। स्यभूपूमनाः।

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० ६गा०।   † 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

१ २ ४ ५ ४ ५
वायख्यद्रो ३ १ २ ३ । दसोवा । ऊ ५ भो ६ हायि ॥(१)
५ ३ १ ५ २ ५ १२ २ २
समु । प्रिया३ः । अनूषता । गावोमदायधृष्वया२३ः ।
२ २ ४ १ २ १
सोमासःका३१२३ । एवता५यिपथाः । पावमाना३१२३ ।
४ ५ ४ ५ ५ २ ३ १ ४ २
सन्नोवा । दा५वो६हायि ॥(२) यभो । जिष्ठा३ः । तमा
५ १ २ २ १ २
भरा । पवमानश्रवायिया२३म् । याःपञ्चचा ३ १ २ ३ ।
४ १ २ १ ४ ५ ५
षणा५यिरभायि । रायिंयेना३१२३ । वनोवा । मा५
५
होऽ६हायि(३) ॥ ८ * ॥ [३]

३ १ २ ४२ ५ २ ४
॥ श्यावाश्वम् ॥ अया३१म् । पू३षा । रयिः । भा३गः ।
१ १ २ २ १ १ २
एहिया । सो । मःपुनानो । अ । षता२रयि । ऐहि
१ २ ४ ५ १२ १
या२ । पतिर्विश्वास्या३भू३ । मा२३४नाः । ऐहा२रयि ।
२ १ २ ४ २ ५
एहिया२ । वियख्यद्रोदा३सी३ । ऊ२४५भो६हायि ॥(१)
२ २ ४२ ५२ २ ४ ५ १
समू३१ । प्रो३याः । धनू । षा३त । एहिया । गा ।

---

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ९सा० ।

र　र　२　१　१र　र र १
वोमदाया । घृ । षया२ः । एह्हिया२ । सोमासःका
२　४　५　१र　१र
एर्वा३ता३यि । पा२३४याः । ऐह्हा२यि । एह्हिया२ ।
१र　२　४　१　५　३ १
पवमानासा३आ३यि । दा३४५वो६हायि ॥(२) यओ३
२　४　५र　२ ४　५　१
१ । जा३यिष्ठः । तमा । भा३र । एह्हिया । पा । व
र　१र　१　१र　१　२
मानआ । वा । यिया२म् । एह्हिया२ । यःपञ्चचार्षा३
४　५　२र　१र
णी३ः । आ२३४भायि । ऐह्हा२यि । एह्हिया२ । रयिं
१र　२　४　२　५
येनावा३ना३ । मा२३४५वो६हायि(३) ॥ १०* ॥ [४]

२ १ १र र　१　र
॥ आसिताद्यम् ॥ अयम्पूषारयायिः । भगाः । सो
र र　२　१　१र
मःपुनानोअर्षा२३तायि । पाता२यिश्वा२ । स्वभूमनाः ।
१　१ २　१　५　४　५
वाया२ख्याद्रो२ । दसोवा३ओ२३४वा । ऊ५भो६हा
१　२ १र २ १　र र　र
यि ॥(१) समुप्रियाअनू । षता । गावोमदायघृष्वा२३
२　१　१र　१
याः । सोमा२साःका२ । एवतेपथाः । पावा२माना

---

* ऊ० गा० ११प्र० १अ० १०सा० ।

२। सखोवा३ओ२३४वा। दा५वो६हायि॥(२) यशो
जिष्ठस्तमा। भरा। पवमानश्रवाय्या२३याम्। याःपा
२ञ्चाचा२। षणोरभायि। रायो२यायिना२। वशो
वा३ओ२३४वा। मा५हो६हायि(३)॥२०*॥[५]

॥निषेधम्†॥ अयम्पूषारा३यिर्भगाः। सोमाःपुना।
नोअर्षता२यि। इहा३। पाता३यिर्वायिश्वा। हाहो
२३४हा। स्यभूमा२३नाः। इहा३। वाया३ख्याद्री।
हाहो२३४हा। दसो३ऊ५भा६५६यि॥(१) समुप्रियाआ
३नूषता। गावोमदा। यघृषया२ः। इहा३। सो
मा३साःका। हाहो२३४हा। एवतेपा२३थाः। इहा३।
पावा३माना। हाहो२३४हा। सम्रा३यिन्दा५वा६
५६ः॥(२) यशोजिष्ठस्ता३माभरा। पवामाना। श्रवा

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० २०गा०। † 'निषेधः'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

१ १ २ १ २ ४ ५ २ १ ५
यिया२म्। इहा ३। याःपा३स्वाचा। हाहो२३४हा।
२ ८ १ १ १ २ १ २ ४ ५ २ १
षणीरा२३४भायि। इहा३। रायी३यायिना। हाहो२३
५ ३ २ ४ १ १ १
४हा२३ ४ हा। वना ३ मा ५ हा ६ ५ ६ यि। हे २ ३
१ १
४ ५(३)॥ २ *॥ [६]

४ ३ र ४ २ ४ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ अयाऽ५म्पू। षा३रा३यिर्भागाः।
१ २ १ २ २ १ १
सोमःपुना। मो३आर्षा३तायि। पता२यिर्वि। स्वम्या
२ १ २ २ १ र १२
२३भू। ऊम्मायि। मा३नाः। वायख्यद्रोदसी २ उभा
१ २ १ र र र र २
उ॥(१) भायिसाम्। उप्रियाअनूषतगावोमदा। या
१ २ २ १र १ २ १
३घार्ष्वा३याः। सोमा२सः। कण्वा२३ता। ऊम्मायि।
२ २ १ र र ३२ १ २ १र
पा३याः। पावमानासआ२यिन्दवाउ॥(२) वायाः। ओ
र र २ १ र २ १ १
जिष्ठस्तमाभरपवमाना। आ३वाआ३याम्। यःपा२ञ्च।

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० २सा०।

२ १ २ २ १ र
चर्षा२३णा । ऊम्मायि । आ३भायि । रायिंयेनवना२
३ २ १ १ १
मद्दाउ । वा३४५(३) ॥ १३ * ॥ [७]

१ १ २र १र २र १ २ र १ २
॥ यद्वाहिष्ठीयम् ॥ अयम्पूषारयिर्भगः । अयम्पूषोवा ।
१ र २ र
रयिर्भगाः । सोमःपू२३ना । नोअर्षतायि । पतिर्वा२३
२ १र २ १र २
यिश्वा । स्यभूमनाः । वियख्या२३द्रो । दसीऊ२३भा२
१ २ १र २र १ २ १र
४३यि ॥(१) समुप्रियाअनूषत । समुप्रियोवा । अनूष
र र २ १ र र २
ता । गावोमा२३दा । यघृष्वयाः । सोमासा२३ःका ।
१र १ १ २ १
ख्वतेपथाः । पवमा२३ना । सइन्दा२३वा३४३ः ॥(२) य
र २ १ र २ र १ २ १र
ओजिष्ठस्तमाभर । यओजिष्ठोवा । तमाभरा । पवमा
२ १र २ १र
२३ना । अवायियाम् । यःपञ्चा२३चा । षणीरभायि ।
२ १र २ १
रयिंया२३यिना । वनामा२३द्दा३४३यि । ओ२३४५ई ।
डा (३)॥ १४ † ॥ [८]

* ऊ० गा० १५प्र० १ अ० १२ सा० । † ऊ० गा० २२प्र० १ अ० १७ सा० ।

१ १र२ •र१ २र
॥ क्रौञ्चाद्यम् ॥ अयम्पूषौहो । रायिर्भगाः । सो

१ २ ४ २ १ र
मःपुना३ । नोआ३र्षा५ता६ ५ ६ यि । पतिर्विश्वौहो ।

२र१र २ १ २ ४
स्याभूमनाः । वियख्यद्रो३ । दासी३ऊ५भा६५६यि ॥(१)

२ १ र २र १र २र र १ २ ४
समुप्रियौहो । आनूषता । गावोमदा३ । याघा३र्षा५

२र र १ र २र १र १ र
या६५६ः । सोमासःकौहो । एवातेपथाः । पवमाना३ ।

१ २ ४ १ र १ र २र १र
साधा३यिन्दा५वा६५६ः ॥(२) यओजिष्ठौहो । तामाभ

२ र १ २ ४ २ १ र
रा । पवमाना३ । आवा३आ५या६५६म् । यःपञ्चचौ

२र १र २ र १ १ ४
हो । चार्षणीरभायि । रयिंयेना३ । वाना३मा५हा६५

६यि (३)॥ १७ * ॥ [९]

२ २र१ ४र ४
॥ ऐडक्रौञ्चम् ॥ अयं९पौपू२३ । षारयिर्भगईया ।

१र २ र १र २ १ २ १र २ १
सोमःपुनानोअर्षति । पातिर्विश्व । स्यभूमा२३नाः । वा

२ २ १ २ २ १र २ २
या३हा । ख्याद्रो३हा । दसीऊ२३भा३४३यि ॥(१) स

* ऊ० गा० १५प्र० १ख० १७गा०

र २१ ४र र ५ १र २र १ २१ २ १
मूर्द्धिप्री२३। याश्वनूषतई्या। गावोमदायघृष्वय:। सो

र २ १र २ १ २ २ १ २ २
मास:क्र। एवुतेपार२३था:। पावा३द्दा। माना३द्दा।

१ २ ३ र २र १ ४ र
सइन्दा२३वा३४३: ॥(२) यश्रोहीजार३यि। छस्तमाभर

५ १ २र १र २ १ २ १र
द्दूया। पवमानश्रवायियम्। या:पञ्चच। षणीरा२३

२ १ २ १ १ २ २ १र
भायि। रायी३२हायि। यायिना३हायि। वनामा२

२ १
३हा३४३यि। औ२३४५ई। डा (३)॥ ५ * ॥ [१०]

२ र र २ र
॥ मधुश्चुन्निधनम् ॥ अयम्पूषारयिर्भगा३ए। सोम:पु

१ १ २ २ ५ २ २ १
ना३नोअर्षता३यि। हा३हा। औ३हो३वा। आयि

१ र २ २ १ ५ २
द्दी२। पतिर्विश्वा३स्याभूमना३:। हा३हा। औ३हो

२ १ १ २ २ २ ५
३वा। आयिद्दी२। वायख्यद्रो३। हा३हायि। औ

२ २ १ १र ३ ५र र
३हो३वा। आयिद्दी२। दसी। ऊ२भा२३४औहो

२ र र र र ५१७ २
वा ॥(१) समुप्रियाअनूषता३। गावोमदा३याघृष्वथा३:।

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० ५सा०।

हा३हा। औ३हो३वा। आयिही२। सोमासःकृ३ण्वा
तेपथा३ः। हा३हा। औ३हो३वा। आयिही२। पा
वमाना३। हा३हायि। औ३हो३वा। आयिही२।
सइ। दा२वा२३४औहोवा॥(२) यओजिष्ठस्तमाभरा
३ए। पवमाना३आवायिया३म्। हा३हा। औ३हो३
वा। आयिही२। यःपञ्चचा३र्षणीरभा३यि। हा३
हा। औ३हो३वा। आयिही२। रायियेना३। हा
३हायि। औ३हो३वा। आयिही२। वना। मा२हा
२३४औहोवा। मधुश्चुतता२३४५ः(३)॥ १८*॥ [११]

॥ कण्वबृहत्॥ औहोअयम्पूषा३ए। रयायिर्भा१गा२
३४ः। हाहोयि। सोमःपुनानोअर्षति। पतायिर्वा१यि
श्वा२३४। होहोश्वभूमा१ना२३४ः। हाहोयि। वियाख्या

* ऋ० मा० २०प्र० २ख० १८सा०।

१२ र १ २ ० १ ५
१द्रो२३४। हाहो। दसी३। ऊ२३४भायि। उऊवा
५ १२ २ २ १ २
६हाउ। वा ॥(१) औहोसमुप्रिया३ए। अनूषा१ता२
१२ १ १ २ १ २ १२ २
३४। हाहोयि। गावोमदायघृष्वय:। सोमासा१:का२
१२ १ १ २ १२ १ १
३४। हाहो। एवतायिपा१था२३४:। हाहोयि। पवा
१ १२ १ १ १ १ ५
मा१ना२३४। हाहो। सआ३यि। दा२३४वा:। उ
५ १२ २ २ २ १ १
ऊवा६हाउ। वा ॥(२) औहोयओजिष्ठा३ए। तमाभा
१२ १ १ १२ २ १ १
१रा२३४। हाहोयि। पावमानश्रवायियम्। य:पाञ्चा
१२ १ १ १ १२ १
१चा२३४। हाहो। षणायिरा१भा२३४यि। हाहोयि
१ १ १२ १ १ १ १
रयायिंया१यिना२३४। हाहो। वना३। मा२३४हायि।
५ ५
उऊवा६हाउ। वा(३) ॥ ८ * ॥ [१२] १६

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा।

१ १ ३ १ २ ३ २उ
वृषामतीनाम्पवतेविचक्षण:
३ १ २ ३ १ २र ३ २
सोमोअन्हाम्प्रतरीतोषसान्दिव:।

* ऊ० गा० २१प्र० २ख० ९सा०।

३ १र २र ३ १ २ ३
प्राणासिन्धूनाङ्कलशाꣳअचिक्रद
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
दिन्द्रस्यहार्द्यांविशन्मनीषिभिः ॥ १ * ॥

अयं "सोमः" "पवते" अभिषूयते। कीदृशः सोमः? "मतीनां" मतयः स्तोतारः तेषां "वृषा" वर्षकः, "कामानां" "विचक्षणः" विद्रष्टा, "अक्नाम्" उषसां "दिवः" द्युलोकस्य आदित्यस्य वा "प्रतरीता" प्रवर्द्धयिता किञ्च "सिन्धूनां" स्यन्दमानानाम् उदकानां "प्राणा' प्राणयिता चेष्टयिता [अनितेः (अदा० प०) शानचि, "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शब्विकरणस्य लुक्, सुपां सुलुगित्याकारः (७, १, ३९)] "कलशान्" "अचिक्रदत्" शब्दं करोति प्रवेष्टुम्। किं कुर्वन्? "इन्द्रस्य" "हार्द्दि" हृदयम् "आविशन्" प्रविशन् "मनीषिभिः" मनसईषितृभिः स्तुतिभिः स्तुत इति शेषः। व्यवहितमपि मनीषिभिरित्येतत् पवतइत्यनेन सम्बध्यते ॥

"अक्नाम्"-"अक्तः"—इति, "उषसाम्"-"उषसः"—इति, "प्राणा"-"क्राणा"—इति, "अचिक्रदत्"-"अवीवशत्"—इति च पाठाः ॥ १ ॥

---

* ऋ० सा०९, १, १, ६ (२भा० १८५ पृ०)=ऋ० वे० ७, १, १४, ४।

अथ द्वितीया ।

२ १ २ ३ २ ३ १
मनीषिभिःपवतेपूर्व्यःकविर्नृ-
१र २ २उ २ १ २
भिर्यतःपरिकोशाᳬअसिष्यदत् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ ३
त्रितस्यनामजनयन्मधुक्षर-
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
न्निन्द्रस्यवायुᳬसख्यायवर्द्धयन् ॥ २ † ॥

अयं सोमः "मनीषिभिः" मेधाविभिः अध्वर्य्यादिभिः "पवते" पूयते । यद्वा अयं मनीषिभिर्द्धाराभिः "पवते" चरति । कीदृशोऽयम् ? "पूर्व्यः" पुराणः "कविः" मेधावी "नृभिः" नेतृभिः अध्वर्य्यादिभिः "यतः" सन् "कोशान्" कलशान् प्राप्तुं "परि असिष्यदत्" परितः स्यन्दते स्रवति । "त्रितस्य" त्रिषु स्थानेषु लोकेषु विस्तृतस्य "इन्द्रस्य" यजमानस्य सम्बन्धि "नाम" नामकमुदकं "जनयन्" उत्पादयन् "मधु" मधुरं रसं "क्षरन्" चरति । किं कुर्वन् ? इन्द्रस्य "सख्याय" सखित्वाय "वायुं" "वर्द्धयन्" प्रवृद्धं कुर्वन् ॥

"असिष्यदत्"-"अचिक्रदत्"—इति पाठौ, "युवां"-"वायोः"—इति च, "वर्द्धयन्"--कर्त्तवे"—इति च ॥ २ ॥

* "पूर्व्यः कवि"—इति मु॰ पाठः ।   † ऋ॰ वे॰ ७, ३, १६, १ ।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

२१ २ ३ २ ३ १ २
अयम्पुनानउषसोअरोचय

३२ १ ३२ ३ २
दयꣳसिन्धुभ्योअभवदुलोककृत्।

३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २
अयन्त्रिःसप्तदुदुहानआशिरꣳ

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सोमोहृदेपवतेचारुमत्सरः॥ ३ * ॥ १७ †

"अयं" सोमः "पुनानः" पूयमानः "उषसः" "अरोचयत्" अदीपयत्। अयं "सिन्धुभ्यः" स्यन्दमानेभ्यः वसतीवरीभ्यः ‡ "अभवत्" समुद्भवो भवति। "उ"—इति पूरणः। कीदृशो-ऽयम्? "लोककृत्" लोकानां कर्त्ता [वर्षकृत्त्वाद्वृतोधारकत्वाच्चास्य लोककृत्त्वम्]। "अयं" सोमः "त्रिःसप्त" एकविंशतिं गाः ¶ ऋङ्मुखेन "आशिरं" "दुदुहानः" दुहानः [दोहस्य प्रयोज-कत्वात् कर्त्तोपचारः] "मत्सरः" मदकरः "चारु" रमणीयं "पवते" क्षरति। किमर्थम्? "हृदे" हृदयाय हृदय-गमनाय॥

"अरोचयत्"-"विरोचयत्"—इति पाठौ॥ ३॥ १७

---

* ऋ० वे० ७, २, १६, २। † 'यामं साम'—इति वि०।

‡ 'समुद्रेभ्यो वा'—इत्यधिकं वि०।

¶ 'प्रतिसवनं सप्तसप्त गावः ० ०'—इति वि०।

Digitized by Google

१ र २

॥ यामम् ॥ आ २यि । इया । वृषामतायिना१म्प

४ २ ३ ५ १र र ७ र

वता२३यि । वा३यिचक्षणः । सोमोयज्ञाम्प्रतरीतोर २३ ।

४ २र ३ ४ १र र २ ४ २

षा३सान्दिवः । प्राणासिन्धूना१ङ्कलशा२ं२३ । आ ३ चि

३ ५ १ ७ र २ ४

क्रदत् । इन्द्रस्यहार्दियाविशा२३न् । मना३यिषा५यिभा

१ र ७ र ४ २ ३ ५

६५६यिः ॥(१) मनीषिभायिःपवतेपू२३ । वीं ३ यःकवि ।

१ ७ र ४ २ ३ ५ १

नृभिर्य्यतःपरिकोशा२ं२३ । आ३सिष्यदत् । त्रितस्यना

७ ४ २ ३ ५ १ ७

मजनया२३न् । मा३धुक्षरन् । इन्द्रस्यवायुंसखिया२

२ ४ १ ७

३ । यवा३र्वा५या६५६न् ॥(२) अयम्पुनानउषसो २३ ।

४ २र ३ ५ १ २ ४ २र

आ३रोचयत् । अयंसिन्धूभ्यो१अभवा२३त् । ऊ३लो

३ ५ १ ७ ४ २र ३ ५

कक्रत् । अयन्त्रिस्साप्तदुदुहा२३ । ना३आशिरम् । आ

१ र र ७ र २ ४

२यि । इया । सोमोहृदायिपवतेचा२३ । रुमा३त्सा

५रा६५६ः(३) ॥ १० * ॥ [१]

---

* ऋ० ९म० ९अ० १०४ा० ।

२ र १ १र १
॥ ऐडयामम्॥ वृषामातो२३। नाम्यवातार२३ यि।
१ १ १र र १ १ १
ए३। विचक्षणए३। सोमोप्ताक्षा२३म्। प्रतरायिता२
२ २ र १र र १ १र
३। ए३। उषसान्दिवए३। प्राणासायिन्धू२३। नाह्न
१ १ १ १ १
लाम्राऌ२३। ए३। अचिक्रददे३। इन्द्रस्याहा २ ३।
१ र १ २ २ र १ र
दियावायिम्रा२३न्। ए३। मनीषिभिरे३४३॥(१) मनी
१ १ १ २ २
षायिभा२३यिः। पवतायिपू२३। ए३। विंयःकविरे३।
२ १ २ १ २ २
नृभिर्याता२३ः। परिकोश्राऌ२ ३। ए३। असिष्यददे
२ १ २ १ १ २
३। चितस्याना२३। मजनाया२३न्। ए३। मधुत्त
२ १ २ १ २
रन्ते३। इन्द्रस्यावा२३। युऌसखीया२३। ए३। यव
१ १ २ १ २
र्द्धयन्ने३४३॥(२) अयम्पूना२३। नउषासा२३ः। ए३।
१ र २ १ १र १
अरोचयदे३। अयऌसायिन्धू२३। भ्योअभावा२३ त्।
२ र १ १ २ १
ए३। उलोककृदे३। अयन्त्रायिःसा२३। प्रदुदूहा२३।

Digitized by Google

२ १ २ १२ २ १ २ १
ए३। नम्राग्निरमे३। सोमोदाई२ ३ यि। पवतायि
२ १
षा२३। ए३। हुमत्सुरए३४३। ओ २३४५ई। डा(३)॥

॥ ५ * ॥ [२]

४ २ ४ १ ४ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम्। वृषाऽ५म। ता३यिना३पवतायि।
१ २ २ २ २ २ १ २ २
वायिचक्षणः सोमोअन्हाम्प्रतरीतो। षा३सान्दा३यिवाः।
१२ १ २२ २ २ १
प्राणा२सिन्धूनाङ्कलशा२अचिक्र। ददा२३यिन्द्रा। ऊ
२ २ १२ ३२
र्म्मायि। स्या ३ हा। दीयाविशन्मना २ यिषिभाउ॥(१)
१ १ १२ २२ २
भायिर्म्मा। नीषिभिःपवतेपूर्व्यःकविर्नृभिर्यतःपरिकोशा२।
२ १ २ २ १ १ २
षा३सायिष्या३दात्। त्रिता२स्यनामजनयन्मधुक्ष। रन्ना
२ १ २ २ १ २
२३यिन्द्रा। ऊर्म्मायि। स्या३वा। यू२सखियायवा२
३ २ १ २ १ २ २ २
ईयाउ॥(२) याना। यम्पुनानउषसोअरोचयदय२सि
२ २ १ २ १ १
न्धुभ्योअभवात्। ऊ३लोका ३ कृत्। षया२न्तिःसप्तदु

* ऊ० गा० ६प्र० १ख० ५सा०।

२ १ २ १ १ २
हानआम्नि । र॒(ं)सो२३माः । ऊम्माथि । बा३ होयि ।
१ २ २ १ २ १ १ १ १
पावतेचारुमार२त्सराउ । वा२३४५(३) ॥ १७* ॥ [३] १७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य
पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

एवाह्यसीति-षष्ठे खण्डे ‡—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

३ १ २र ३ १२ ३ १ २र३ २ ३ २
एवाह्यसिवीरयुरेवाशूरउतस्थिरः ।
३ १ २ २ ३ १ २
एवातेराध्यम्मनः ॥ १ ¶ ॥

हे इन्द्र ! त्वं "वीरयुः" वीरान् युद्ध-कर्मणि समर्थान् शत्रून् हन्तुं कामयमानः "एव असि" भवसि खलु । "हि" प्रसिद्धो अतएव त्वं "शूरः" सामर्थ्यवान् "एव" भवसि । "उत" अपिच "स्थिरः" सङ्ग्रामे धैर्यवान् भवसि, एकत्र स्थित्वैव शत्रून् सम्प्रहरसीत्यर्थः । एवं सति "ते" तव "मनः" "राध्य"

---

* ऊ० गा० १६प्र० १खं० १७गा० ।

‡ 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोमसाम । एष्यूषाकमुक्थ्यम् । एवाह्यसि सामद्वीयं द्वितीयमुक्थ्यम्'—इति वि० चर्वति शेषः ।

¶ ऋ० सा० ३, १, ४, १० (१भा० ४७५पृ०) ऋ० मे० ६, ६, २०, १ ।

Digitized by Google

स्तुतिभिः आराधनीयम् "एव"। यतोऽनेन मनसा त्वं शत्रुवधं सङ्ग्रामे धैर्यादिकं करोषीति तव मन एव सर्वैः स्तुत्यमित्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३ २ ३ १ २　　 ३ १२　　　 ३ १ २
एवारातिस्तुवीमघविश्वेभिर्धायिधातृभिः।
१ २　　　 ३ १ २
अधाचिदिन्द्रनस्सचा॥ २*॥

हे "तुविमघ!" [तुविरिति बहु-नाम (निघ०२,१,१)] बहु-धन इन्द्र! "विश्वेभिः" सर्वैः "धातृभिः" कर्मधारकैः [यद्वा, देवानां हविर्दानेन पोषयितृभिः सर्वैः यजमानैः] तव "रातिः" गवाश्वादि-दानं "धायि" तैर्धार्यत एव [दधातेर्लुङि कर्मणि रूपम्]। "चित्" एवार्थे†। "अध"‡ अनन्तरमेव हे इन्द्र! एवंविधस्त्वं "नः" अस्माकं यष्टॄणामपि "सचा"¶ धनादि-दानेन कर्म-सहायो भव॥

"इन्द्रनस्सचा"--"इन्द्रमेसचा"—इति पाठौ॥ २॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, २०, २।

†, ‡ 'सचा चित्—इति पद पूरणः'—इति वि०। सायणमते तु अधेत्यस्य अथेत्यर्थे, "निपातस्य च (६,३,१३६)"—इति दीर्घे भवति "अधा"—इति।

¶ 'अथवा सचा सहा'—इत्यधिकं वि०।

अथ तृतीया।

२उ ३ १ २ ३१र २र
मोषुब्रह्मेवतन्द्रयुर्भुवोवाजानाम्पते।
१ २ ३१ २ ३ १ २
मत्स्वासुतस्यगोमतः॥ ३ *॥१८

हे "वाजानाम्पते" अन्नानाम्पते! बलानां वा, हे इन्द्र! "तन्द्रयुः" † निष्कारणं निवृत्तकर्मत्वादालस्ययुक्तः "ब्रह्मेव" ब्राह्मण इव त्वं "मा उ षु भुवः" ‡ सुष्ठु मा भव, सर्वदास्मत्-कर्मरतो भवेत्याशासनम् ¶। तदेवाह—"सुतस्य" अभिषुतस्य, ततः "गोमतः" गव्येन क्षीरेण दध्ना वा मिश्रणवतः सोमस्य पानेन "मत्स्व" माद्य हृष्टो भव॥ ३॥१८

१र२ र ३ ४ ५र २र १
॥ उक्थामदीयवम्॥ एवाह्नो३ असिवीरयूः। एवा
२ १ २ १ २र२ १
प्रभू१रा२ः। उता२३स्थिरा। अयिवातेरा। धिया
२ ५र२ १ ४ ५र २ १
२३मनाउ। वा३॥(१) एवारा३तिस्तुवीमघा। विश्वा

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ४।

† "उ षु"—इति पदपूरणौ। मा इति प्रतिषेधः, तन्द्रयुरित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः; मा तन्द्रयुः आलस्यं कुरु—इति वि०।

‡ "भुवः वाजानां पते"—भुवर्लोकस्य अन्नानां धनानां वाधिपते भुवर्ग्रहणञ्च प्रदर्शनार्थं सर्वेषां लोकानां पते—इति वि०।

¶ अथच! अस्मास्वपि ब्राह्मणानामालस्य-स्वभावो वर्णितः।

Digitized by Google

२ १ २ १ २र १
यिभा१यिद्वा२। यिधा२३ तृभायिः। आधाचिद्वायि।
२ ५र २ ४र ५
द्रना२३:सचाउ। वा३ ॥(२) मोषुब्रा३ह्म वतन्द्रयुः।
२ १ २ १ २ १ २र १
भुवोवा१जा२। ना२३मताथि। मात्स्वासुता। स्वगो
२ २ र १।१ १ १
२३मताउ। वा३। स्तौषे२३४५(३)॥ ११ * ॥ [१]

५र र २ ४ ५र ४ ५ २र १र
॥ सौभरम् ॥ एवा३द्धो३असिवीरयोवा। एवाभू२
१ ० १ २ ५ १रर र र
राउता२३। द्धो। स्था२३४यिराः। एवातेरा। धिया
ऽ २ १ २ ५र र ५र ४ २ ४
३९च्चा३यि। मा२ना२३४औह्नोवा ॥(१) एवा३रा ३ ति
५र ४ ५ २ १र १ ० १ २
स्तुवीमघोवा। विश्वेभा२यिद्वायिधा२३। द्धो। तू२
५ १ र ऽ २ १ २
३४भायिः। अधाचिदि। द्रना३ह्ना३यि। सा२चा२३४
५र र ५र ४ २ ४र ५ ४ ५ २ १र
औह्नोवा ॥(२) मोषूब्रा३ह्म वतन्द्रयोवा। भुवोवा२
१ १ २ ५ १ र
जाना२३म्। ह्नो। पा२३४ताथि। मत्स्वासुत। स्व

* ऋ० मा० २अ० १ख० ११सा० ।

५ २ १ ३ ४र र ३ ११ १ १
गो३वा३यि। मा२ता२३४ औहोवा। ऊ२३४५

(३)॥ २ *॥ [२] १८

द्वितीयतृचे—प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसङ्गिरः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
रथीतमꣳरथीनांवाजानाꣳसत्पतिम्पतिम्॥ १†॥

"विश्वाः" सर्वाः "गिरः" अस्मदीयाः स्तुतयः "इन्द्रम्" "अवीवृधन्" वर्द्धितवत्यः [वृधेर्णिचि चङि "उर्ऋत् (७, ४, ७)"—इत्यनुवृत्तौ "नित्यं छन्दसि (७, ४, ८)"—इति ऋकारस्य ऋकार-विधानात् लघूपधगुणाभावः, निपातस्वरः (८, १ २८)] कीदृशमिन्द्रम्? "समुद्रव्यचसं" समुद्रवद् व्याप्तवन्तं, "रथीनां" रथ-युक्तानां योद्धृणां मध्ये "रथीतमम्" अतिशयेन रथ-युक्तं, "वाजानाम्" अन्नानां "पतिं" स्वामिनं, "सत्पतिं" सतां सन्मार्ग-वर्त्तिनां पालकं ["पत्यावैश्वर्य्ये (६,२, १८)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्]॥ १॥

* ऊ० गा० २१प्र० १अ० २खा०।

† ऋ० आ० ४, २, १, २ (१भा० ६९७ पृ०)=ऋ० वे० १, १, २१, १।

अथ द्वितीया ।

२ १ २ ३ १ ३ १ २
सख्येतइन्द्रवाजिनोमाभेमशवसस्पते ।

२ ३ १ २र १ १ २ १ १ २
त्वामभिप्रनोनुमोजेतारमपराजितम् ॥ २ * ॥

हे "शवसस्पते" † बलस्य पालकेन्द्र ! "ते" तव "सख्ये" अनुग्रहप्रयुक्ते सखित्वे वर्त्तमाना वयं "वाजिनः" अन्नवन्तः भूत्वा "मा भेम" शत्रुभ्यो भीतिं प्राप्ता मा भूम । अतः "त्वाम्" अभयहेतुम् "अभि प्र नोनुमः" सर्वतः प्रकर्षेण स्तुमः [णु स्तुतौ (अदा०, प०), "णोनः (६, १, ६५)"—इति नत्वम्, यङोलुक् (२, ४, ७४), प्रत्ययलक्षणेन (१, १, ६२), "सन्यङोः (६, १, ९)"—इति द्विर्भावः, "गुणो यङ्लुकोः (७, ४, ८२)"—इत्यभ्यासस्य गुणः, प्रत्ययलक्षणेन धातुसञ्ज्ञायां (३, १, ३२) लटोमस् (३, ४, ७८), अदादिवद्भावात् शपोलुक् (२, ४, ७२)]। कीदृशं त्वाम् ? "जेतारं" युद्धेषु जयशीलं अपराजितं क्वापि पराजय-रहितम् ॥

"प्रनोनुमः"-"प्रणोनुमः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० १, १, २१, २ ।

† 'अन्नस्य यशसोवाधिपते' - इति वि० ।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

३ १२ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २
पूर्वीरिन्द्रस्यरातयोनविदस्यन्त्यूतयः।

३ १र २र३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
यदावाजस्यगोमतस्तोतृभ्योमंहतेमघम्॥ ३ * ॥ १९†

॥ इति द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

"इन्द्रस्य" सम्बन्धिन्यः "रातयः" धन-दानानि "पूर्वीः" अनादि-काल-सिद्धाः, अस्येन्द्रस्य सर्वदा यष्टृभ्यो धनदानमेव स्वभाव इत्यर्थः; एवं सति इदानीन्तनोऽपि यजमानः "स्तोतृभ्यः" ऋत्विग्भ्यः "गोमतः" गो-सहितस्य "वाजस्य" अन्नस्य पर्याप्तं "मघं" धनं "यदा" "मंहते" दक्षिणारूपेण ददाति, तदानीं "रातयः" बहु-धन-दान-पूर्वकाणीन्द्रस्यान्न-विषयाणि रक्षणानि "न वि दस्यन्ति" विशेषेण नोपक्षीयन्ते। ["यदा"-"यदि"—इति पाठौ। "मघं", "रेक्णः", "रिक्थं" —इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेषु धननामसु (निघ० २, १०) मघशब्दः पठितः। "दाति"-"दाशति"—इत्यादिषु दशसु दानकर्मसु "मंहते"—इति पठितम् (निघ० ३, २०, १०)। पूर्वीः—पुरु-शब्दस्य "वोतोगुणवचनात् (४, १, ४४)"—इति ङीष्, आद्यस्योकारस्य दीर्घश्छान्दसः, जसि "दीर्घाज्जसिच (६, १, १०५)"—इति निषेधं बाधित्वा "वा छन्दसि (६, १, १०६)"—इति पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्, ङीषः प्रत्ययस्वरेणोदात्त-

* ऋ० वे० १, १, ११, ३। † 'आद्यादंहूक्मुषम्'—इति वि०।

Digitized by Google

त्वम्। मंहते—अपः पित्वादनुदात्तत्वम्, तिङश्च ल-सार्वधातुक-स्वरेण, 'तिङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "निपातैर्यद्यदिहन्त (८,१,३०)"—इति निषेधात् ॥३॥१९

॥ षाष्टादंष्ट्रायम् ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्। ऐया
हायि। समुद्रा ऽ१व्या २। चसाङ्गा१यिरा२३ः। ऐया
२३हायि। रथायिता१मा २म्। रथायिना२३म्। ऐया
२३हायि। वाजाना१ᳲसा २त्। पतायिम्या१ती२३म्।
ऐया२३हा३४३यि ॥(१) सख्ये त इन्द्र वाजिनः। ऐयाहा
यि। माभायिमा१श्मा २। वसास्या१ता२३यि। ऐया२
३हायि। तुवामा१भी २। प्रनोनू१मा२३ः। ऐया २ ३
हायि। जेतारा१मा २। पराजा१यिता२३म्। ऐया२
३हा३४३यि ॥(२) पूर्वीरिन्द्रस्य रातयः। ऐयाहायि। न
वायिदा१स्या २। तियूता१या२३ः। ऐया २ ३ हायि।
यदावा१जा २। स्यगोमा१ता २ ३ः। ऐया २ ३ हायि।

Digitized by Google

र १ २ १ २ १र २
स्तोतृभ्यो१मा २। इतायिमा१घा२३म्। ऐया२३हा३४
१
३यि। ओ२३४५ई। डा(३) ॥ १२ * ॥ [१]

१ २ १ २र र १र २र १र
॥ आष्ट्रादंष्ट्रोत्तरम् ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्नैयादौ।
२ २ १ २ १ १र
हो३वा। समुद्रव्यचसम्। गायिरा२३। ऐया २३त्।
१ र २ १ २ १ १र
औ२३होवा। रथायितमंर। थायिना२३म्। ऐया
१ र २ १र र २र १ २ १
२३त्। औ२३होवा। वाजानांसत्पतिम्। पातौ २
१र १ र २ २ १र२
३म। ऐया२३त्। औ२३होवा३४३ ॥(१) सख्ये तइन्द्र
र १ २ १र२र१र २ २ १र र २ १
वाजिनऐयादौ। हो३वा। माभेमशवसः। पाता२ ३
१र १ र २ १र२ १ २ र १
यि। ऐया२३त्। औ२३होवा। त्वामभिप्रनो। नूमा
१र १ र २ १र र २ १ २र १
२३ः। ऐया२३त्। औ२३होवा। जेतारमपरा। जा
१र १ र २ २र१र
यिता२३त्। ऐया२३। औ२३होवा३४३ ॥(२) पूर्वीरि
२ र १ १ १र २र१र २ २ १ २ र १
न्द्रस्यरातयऐयादौ। हो३वा। नविदस्यन्तियू। ता

* ऊ० गा० १प्र० १ ख० १२गा० ।

१र १ र २ १र र २ र
यार३ः। ऐया२३त्। औ२३होवा। यदावाजस्यगो।
१ १र १ र २ र १ २र १
मता२३ः। ऐया२३त्। औ२३होवा। स्तोतृभ्योमᳫं
२ र १ १र १ र २
हते। माघार३म्। ऐया२३त्। औ२३होवा३ ४ ३।
१
ओ२३४५ई। डा(३)॥ ११ *॥ [२]

५ २ ४र ५ ४र ५ २ १ २
॥ कालेयम्† ॥ इन्द्र बा३यिश्वाश्ववीवृधान्। समूद्र
१ २ २ २ १ २ १ ५
व्या। चसङ्गिरा२३ः। रथा३यि। मार३४। मᳫंर।
२ २ १र २र २ २ ५ ४
था३यिनाम्। वाजानाᳫंसौ। वा३४३ओ३४वा। पता
५ २ र २ ४ ५ ४र ५ २र १
५ यिम्पतायिम्॥(१) सख्येता३इन्द्रवाजिनाः। माभा
२ १ २ २ २ १ २ १
यिमश्वा। वसस्पता२३यि। तुवा३म्। षा२३४। भि
५र २ २ १र २ १ २ ५ ४
प्रणो। नू३माः। जेतारमौ। वा३४३ओ३४वा। परा
५ र २ ४ ५ ४र ५ २ १ २
५ जिताम्॥(२) पूर्वीरा३यिन्द्रस्यरातयाः। नवायिद
१ २ २र २ १ २ १ ५र
स्या। त्यूतया२३ः। यदा३। वा२३४। जस्यगो।

---

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ११गा०।   † 'महाकालेयम्'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

१ २ १र २र २ ५र ५ ४
मा३ताः। स्तोतभ्योमौ। वा३४३ओ३४वा। चता३यि

४
मघाम्। ह्वोपुई। डा(३)॥३*॥[३]

२ र र २ १ २
॥ नार्मेधम्॥ इन्द्र विश्वा अवीवृधा३ने। स। मू। द्र

१ २ १ २ २ १ २ ५ २१
व्या। चसा३ङ्गा३यिराः। रथा३यिना२३४माम्। रथा

२ १र र ५ १ र ५ २र
यिनाम्। औहोहो२३४वा। वा२३४जाहायि। ना८

१ २ २र र ५ १ ५र
सा८पाता। औहोहो२३४वा। पा२३४तीम्। एहिया

५ २ र र २ र १ २
६हा॥(१) सख्ये तइन्द्रवाजिना३ए। मा। भायि। म।

१ २१२ २ १ २ ५ २१ २
शा। वसास्वा३तायि। तुवा३मा२३४भौ। प्रनोनूमा।

२र र ५ १ ५ २१ २ २र
औहोहो२३४वा। जा२३४यितहायि। रमापारां। औ

र ५ १ ५र ५
होहो२३४वा। जा२३४यिताम्। एहिया६हा॥(२)

२र र र २ १ २ २ २
पूर्वीरिन्द्रस्यरातया३ए। न। वायि। द। स्या। ति

१२ २ १ २ ५ २१ २ २र र
यूता३याः। यदा२वा२३४जा। स्यगोमाता। औहो

० ऋ० ग्रा० ११प्र० १ख० ३गा०।

५ १ ५ ११ १ २ १र
होर२३४वा । स्तो२३४तृहायि । ध्योमा१हाता । औ

र ५ १ ५र ५ ४
होहो२३४वा । मा२३४घाम । एहियाईहा । हो५ई ।

डा(३) ॥ १ * ॥ [४] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरारण्यस्य तृतीयस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः † ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्द्दं निवारयन् ।

पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ३ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-

श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तरारण्ये तृतीयोऽध्यायः ‡ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० २सा० ।   † 'इति द्वितीयमर्द्धः'—इति वि० ।

‡ "अथ द्वितीयप्रपाठकस्यार्द्धः समाप्तः"—इत्येव मूल-पद-विवरणादि-सम्मतः; न तु "तृतीयो" नापि "अध्यायः"—इति ।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्म्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम्॥ १॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्याय आरभ्यते* ॥

तत्र,

प्रथम-खण्डे—

एते असृग्रमिति प्रथमतृचे—प्रथमा।

२ १ २ १ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एते असृग्रमिन्दवस्तिरःपवित्रमाशवः।
१ २ ३ १ ३२
विश्वान्यभिसौभगा॥ १† ॥

"तिरः पवित्रं"‡ तिर्यग् गच्छन्तं दशापवित्रं प्रति "आशवः" शीघ्रगामिनः "एते" पवमाना "इन्दवः" सोमाः "विश्वानि" सर्व्वाणि "सौभगा" सौभगानि धनानि ¶ "अभि" लक्ष्य "असृग्रम्" ऋत्विग्भिः सृज्यन्ते॥ १॥

---

* 'इदानीं तृतीयमध्यायारभ्यते'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १, १४, १। ‡ 'तिरः=अधः'—इति वि०।

¶ 'विश्वानि अभिसौभगा—विश्वानि सर्वाण्यभिसौभाग्यानि'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
विघ्नन्तोदुरितापुरुसुगातोकायवाजिनः।

१ २ ३ २ ३ १ २
त्मनाकृण्वन्तोअर्वतः॥ २* ॥

"वाजिनः" बलवन्तः† सोमाः "पुरु" बहूनि "दुरिता" दुरितानि "वि घ्नन्तः" विशेषेण नाशयन्तः "तोकाय" अस्माकं पुत्राय‡ "सुगा" अतिसुखरूपाणि धनानि¶ "अर्वतः" अश्वांश्च "त्मना" आत्मना स्वयमेव "कृण्वन्तः" ददत इत्यर्थः। ऋत्विग्भिः सृज्यन्त इति पूर्वेण सम्बन्धः॥

"त्मना"-"तना"इति—इति पाठौ, "अर्वतः"-"अर्वते"—इति च॥ २॥

अथ तृतीया।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ २
कृण्वन्तोवरिवोगवेभ्यर्षन्तिसुष्टुतिम्।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
इडामस्मभ्यꣳसंयतम्॥ ३ §॥ १

---

* ऋ० वे० ७, १, २४, २।

† 'वाजिनः—अन्नवन्तः'—इति वि०।

‡, ¶ 'सुगातोकाय—सुष्ठाय पुत्रपौत्राय'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, २४, ३।

सोमाः अस्माकं "गवे" "अस्मभ्यं" च "संयन्त" यदस्मात् संयच्छति। तद् "वरिवः" धनम् "इडाम्" अन्नञ्च "कृण्वन्तः" कुर्वन्तः "सुष्टुतिम्" अस्मदीयां शोभनां स्तुतिम् * "अभ्यर्षन्ति" आभिमुख्येन गच्छन्ति॥ ३॥ १

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
राजामेधाभिरीयतेपवमानोमनावधि।
३ १ २ ३ १ २
अन्तरिक्षेणयातवे॥ १ †॥

"मनो अधि" मनुष्ये यागं कुर्वाणे सति‡। यद्वा मनावधि मनुर्मन्तव्यो यज्ञस्तस्मिन् "पवमानः" पूयमानः पुनानो वा "राजा" [राज-शब्देन सोमोऽभिधीयते "सोमं राजानमकृण्वन् (य० मा० २८, ७२)"—इत्यादिषु दृष्टत्वात्, स राजा] सोमः "मेधाभिः" स्तुतिभिः¶ सह "ईयते" गच्छति। कुत्र? "अन्तरिक्षेण" आकाशमार्गेण द्रोणकलशं प्रति "यातवे" यातुम्। द्रोणाभिगमन-काले हि स्तोतृभिः स्तूयते खलु॥ १॥

---

* 'सुष्टुतिं—सुखेन स्तुतिम्'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १,४, १।

‡ 'मनौ अधि—मनुष्ये यजमाने निमित्तभूते'—इति वि०।

¶ 'मेधाभिः ईयते—ऋत्विग्यजमानानां प्रज्ञाभिः'—इति वि०।

अथ द्वितीया ।

१ २ २ १ २ १ २ ३ १ २र
आ नस्सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर ।
३ २ ३ १ २
सुष्वाणो देववीतये ॥ २ * ॥

हे "सोम !" "देववीतये" देवानां पानाय देवानां कामाय वा † "सुष्वाणः" अभिषुतो वा त्वं "सहः" शत्रुभिभवनसमर्थं बलं "जुवः" [जु—इति गत्यर्थः ‡] शत्रून् प्रति शीघ्रगमनं ¶ यद्वा सर्वतो गमनशीलं बलं । किञ्च ["न"—इति चार्थे §] "वर्चसे" [वर्च दीप्तौ (भ्वा०, आ०) दीप्त्यै सर्वत्र प्रकाशनाय रूपञ्च "नः" अस्मभ्यम् "आ भर" आहर प्रयच्छ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ ३ २ ३ १ २
आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम ।
२ ३ १ २ ३ १ २
वहा भगत्तिमूतये ॥ ३ ‖ ॥ २

* ऋ० वे० ७, १, ४, २ ।
† 'देववीतये० ०—देवानां दानाय भक्षणाय वा'—इति वि० ।
‡ निघण्टौ गतिकर्मसु पञ्चोत्तरशततमत्वेन पठितम् (२, १४) ।
¶, § 'जुवः—रूपम् । न—न शब्द उपमार्थीयः रूपमिव'—इति वि० ।
‖ ऋ० वे० ७, १, ४, १ ।

Digitized by Google

हे "इन्दो" पात्रेषु क्षरणशील ! दीपनशील ! वा हे सोम ! "शतग्विनं"* शतसहस्रसङ्ख्याकाभिः गोभिः युक्तं "गवां पोषं" गवादीनां पुष्टिवर्द्धनं "स्वश्व्यं" शोभनाश्व-सङ्घ-सहितं "भगत्तिं" भगदत्तिं भजनीय-धन-दानञ्च † "ऊतये" रक्षणाय "नः" अस्माकम् "आवह" प्रापय। गवादींश्च तेषां वृद्धिं प्रयच्छेत्यर्थः ‖ ३ ‖ २

तन्त्वानृम्णानीति पञ्चर्चं तृतीयं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

तन्त्वानृम्णानिबिभ्रतꣳसधस्थेषुमहोदिवः।

१ २ ३ १ २

चारुꣳसुकृत्ययेमहे ‖ १ ‡ ‖

"महोदिवः" महतोद्युलोकस्य¶ "सधस्थेषु" सहस्थानेषु स्थितं, "नृम्णानि" धनानि § "बिभ्रतं" अस्मदर्थं धारयन्तं "चारुं" कल्याणं ‖ हे सोम ! "तं" तादृशं पवमान-लक्षणं "त्वा" त्वां "सुकृत्यया" शोभन-क्रियया "ईमहे" धनानि याचामहे** ‖ १ ‖

---

* 'शतग्विनं—शतसङ्ख्याकम्'—इति वि०।

† 'भगत्तिं—शोभमानप्रतिपत्तिम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, १, ५, १।

¶ 'महोदिवः—महाकाशात्'—इति वि०।

§ 'नृम्णानि—धनानि बलानि वा'—इति वि०।

‖ 'चारुं—शोभनम्'—इति वि०।

** "ईमहे"—इति याच्ञाकर्मसु निघण्टौ प्रथमं पदम् (३, १९)।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २   ३क   १र २ १ २   ३ १ २
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यम्महामहिव्रतम्मदम्।
३ १   २र ३ १ २
शतम्पुरोरुरुक्षणिम् ॥ २* ॥

हे सोम! "संवृक्तधृष्णुं" संवृक्ताः सञ्छिन्नाः धृष्णवो धर्षणशीलाः शत्रवो येनासौ संवृक्तधृष्णुः, तम् †, "उक्थ्यं" उक्थार्हं प्रशस्यम्, ‡ "महामहिव्रतं" महीय-बहु-कर्माणं, ¶ "मदं" मदकरं "शतं" बहूनि "पुरः" शत्रूणां पुराणि "रुरुक्षणिं" विनाशयन्तम्; त्वां धनानाम् ईमहे इति § सम्बन्धः ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २   ३ १ २क२र ३ १ २   ३ २
अतस्त्वारयिरभ्ययद्राजानꣳसुक्रतोदिवः।
३ १ २ ३ १ २
सुपर्णोअव्यथीभरत् ॥ ३ ‖ ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, ५, २।

† 'संवृक्तधृष्णुम्—अतिशयेन संवर्त्तकं, धृष्णुं धारणात्मकम्'—इति वि०।

‡ 'उक्थ्यम्—उक्थ्यानि स्तोत्राणि यत्र विद्यन्ते स उक्थ्यः, तम् उक्थ्यं सोमम्'—इति वि०।

¶ 'महामहिव्रतं—महेति महान्तं व्रतमग्रं कर्म वा यत्र, स महिव्रतः, तं महिव्रतम्'—इति वि०। महदर्थमव्ययद्वयमुभयोरतिमहत्त्वं गम्यत इति भावः।

§ पूर्वार्चिके गतम्।

‖ ऋ० वे० ७, १, ५, ३। "रयिमभिराजः"—इति च तत्र पाठः।

Digitized by Google

हे "सुक्रतो" शोभनकर्म्मन् * पवमान सोम ! "रयिः" रयिम् धनम्प्रति "अभि अयत्" † अभिगमयति "राजानं" ‡ "त्वा" त्वाम् "अतः दिवः" अमुष्मात् द्युलोकात् "अव्यथी" व्यथा-रहितः "सुपर्णः" श्येनवत् ¶ "भरत्" आहरत् । तथाच श्रूयते—'आदाय श्येनोऽभरत् सोमम् (ता० ब्रा०)'—इति ॥

"अव्यथी"-"अव्यथिः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३१ २

अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे ।

३ १ २र

अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥ ४ § ॥

"अधा" अथ "विचर्षणिः" कर्मणां विद्रष्टा ‖ "अभिष्टि-कृत्" यजमानानाम् अभीष्ट-फलस्य कर्त्ता सोमः** "इन्द्रियं" स्वकीयं फलं †† "हिन्वानः" प्रेरयन् "ज्यायः" प्रशस्यतरं "महित्वं" महत्वम् "आनशे" प्राप्नोति‡‡ ॥ ४ ॥

---

* 'सुक्रतो—सुक्रतु' शोभनकर्म'—इति वि० ।

† 'अयत्—आनयत'—इति वि० ।

‡ 'राजानं—सोमम्'—इति वि० ।

¶ 'सुपर्णः—पक्षीभूत्वा'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, ५, ४ ।

‖ 'विचर्षणिः—विविधानां पुरुषाणां स्वामी'—इति वि० ।

** 'अभिष्टिकृत्—अभिष्टिः यजमानः तं यः करोति स अभिष्टिकृत्'—इति वि० ।

†† 'इन्द्रियम्—इन्द्रस्य रूपं सोमम्'—इति वि० ।

‡‡ 'आनशे—व्याप्नोति'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ पञ्चमी ।

१२ २ ३ १ २ १ ३२ ३ १ २
विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणꣳ रजस्तुरम् ।

३ २ ३ २ ३ १ २
गोपामृतस्य विर्भरत् ॥ ५ * ॥ ३

"रजस्तुरम्" † उदकस्य प्रेरकम् "ऋतस्य" यज्ञस्य "गोपां" गोपयितारं‡ "विश्वस्मै" सर्वस्मै "स्वर्दृशे" देवाय ¶ "साधारणम् इत्" समानम् § आवसन्तं सोमं "विः" पक्षी ‖ श्येनो "भरत्" स्वर्गादाहरत् ॥ ५ ॥ ३

अथ तृचात्मके चतुर्थसूक्ते—

प्रथमा ।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।

१ २ ३ १ ३२
इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ १ ** ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, ५, ५ । "विश्वस्मा इत्स्व०"—इति ख० पु० पाठः । "विश्वस्मा इत्स्व०"—इति मु० पाठः ।

† 'रजस्तुरं—रजः-संयुक्तम्'—इति वि० ।

‡ 'गोपां—अतथाध्यानसंयुतम्'—इति वि० ।

¶ 'स्वर्दृशे—स्वः सर्वलोकस्य, दृशे दर्शनाय'—इति वि० ।

§ 'इत्—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

‖ 'विः—मध्यलोकम्'—इति वि० ।

** छ० आ० ६, १, २, ८ (२ भा० ६४ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, ३८, २ ।

Digitized by Google

हे "इन्दो" सोम ! "मनीषिभिः" ऋत्विग्भिः "मृज्यमानः" शोध्यमानः त्वम् "इषे" अस्माकमन्नाय "धारया" "पवस्व" क्षर। "रुचा" रोचमानेनान्धसा "गाः" पशून् "अभीहि" अभिगच्छ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ १ १र २ ३ २ १ २
पुनानोवरिवस्कृध्यूर्ज्जञ्जनायगिर्वणः।
१ २ ३ २ ३ १ २
हरेसृजानआशिरम्॥ २ *॥

हे "गिर्वणः" गीर्भिर्वननीय ! "हरे" हरितवर्ण सोम ! "आशिरं" † क्षीरं प्रति "सृजानः" विसृज्यमानः "पुनानः" पूयमानः त्वं "जनाय" ‡ जनार्थं "वरिवः" ¶ धनम् "ऊर्जम्" § अन्नञ्च "कृधि" कुरु॥ २॥

अथ तृतीया।

३ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २
पुनानोदेववीतयइन्द्रस्ययाहिनिष्कृतम्।
२ ३ २ १ २ ३१
द्युतानोवाजिभिर्हितः॥ ३ ॥॥ ४

* ऋ० वे० ७, १, ३८, ४।

† 'आशिरं—क्षीरं दधि वा'—इति वि०।

‡ 'जनाय—यजमानार्थम्'—इति वि०।

¶ 'वरिवः—वरिष्ठम्'—इति वि०।

§ 'ऊर्जम्—अन्नं यशो बलं वा'—इति वि०।

‖ ऋ० वे० ७, १, ३८, ५।

हे सोम! "वाजिभिः" हविर्लक्षणान्नयुक्तैर्यजमानैः सह* "द्युतानः" दीप्यमानः "देववीतये" यज्ञार्थं "पुनानः" पूयमानः "हितः" हितकरः† त्वम् "इन्द्रस्य" "निष्कृतं" स्थानं "याहि" गच्छ॥

"हितः"-"यतः"—इति पाठौ॥ ३॥ ४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः‡॥ १॥

द्वितीय-खण्डे¶—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा।
२ २ ३क २र
हव्यवाड्जुह्वास्यः॥ १ §॥

---

* 'वाजिभिः—वाजमन्नञ्च पुरोडाशादि-लक्षणं, तदेषामस्ति ते वाजिनः ऋत्विग्यजमानाः तैर्वाजिभिः; अथवा वाजसनेयैः वाजिभिः अध्वर्युभिः'—इति वि०।

† 'हितः—निहितः स्थापित इत्यर्थः—इति वि०।

‡ 'बहिष्पवमानमुक्तम्'—इति वि०।

¶ 'सप्तदशस्तौमिकं भेदमाह। इदानीमाज्यानि। आग्नेयम्—इति वि०।

§ ऋ० वे० १, १, १२, ६।

Digitized by Google

"अग्निः" आहवनीयाख्यः तस्मिन् प्रक्षिप्यमाणेन "अग्निना" निर्मन्थन-प्रणीतेन वा सह "समिध्यते" सम्यग् दीप्यते*। कीदृशोऽग्निः? "कविः" मेधावी "गृहपतिः" यजमान-गृहस्य पालकः "युवा" नित्य-तरुणः "हव्यवाट्" हविषोवोढा [वहतेः "वहश्च (३, २, ६४)"—इति ण्वि-प्रत्ययः; णित्त्वादुपधा-वृद्धिः (७, २, ११५) 'गतिकारकोपपदात् कृत् (६,२,१३९)"—इत्युत्तर-पद-प्रकृति-स्वरत्वम्] "जुह्वास्यः" जुहूरूपेण मुखेन युक्तः† [हूयते अनयेति जुहूः "हुवः श्लुवच्च (उ०, २, ६१)" —इति क्विप्; तत्सन्नियोगाद् (३, २, १७८ वा०) दीर्घश्च; श्लुवद्भावात् द्विर्भावः; चुत्व-जश्त्वे; प्रातिपदिक-स्वरेणान्तो-दात्तः (फि०१, १); जुहूरास्यं यस्येति बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-स्वरत्वेन स एव शिष्यते (८, २, १); शेष-निपातः; यणादेशे "उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य (८, २, ४)"—इत्या-कारः स्वरितः]॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतन्देवसपर्य्यति।
१ २ ३ १ २
तस्यस्मप्राविताभव॥ २ ‡॥

---

*'अग्निनाग्निः समिध्यते—अग्नीनां वैवेत्याचोन्याकरोति। तेन निर्मथ्याग्निना अग्निः समिध्यते यवनीयः'—इति वि०।

† 'जुह्वास्यः—जुह्वते आस्ये यस्य जुह्वास्यः। अथ जुहोति क्रिया यस्य आस्ये क्रियते। अथवा जुहूनामा स्रुक् आस्यमूतो यस्य स जुह्वास्यः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, २३, २।

हे "अग्ने !" "देव !" "यः" "हविष्पतिः" यजमानः "दूतं" "त्वाम्" "सपर्यति" * परिचरति । तस्य यजमानस्य "प्राविता" "भव स्म" अवश्यं रक्षको भव । [हूयत इति हविः "अर्चि-शुचि (उ०,२,१०७)"—इत्यादिना इसिः, प्रत्यय-स्वरेण इकार उदात्तः (३, १, ३), हविषः पतिः हविष्पतिः, "नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य (८, ३, ४५)"—इति षत्वम्, "पत्यावैश्वर्ये (६, २, १८)"—इति पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम् । सपर्यति—सपर-शब्दात् "कण्ड्वादिभ्यो यक् (३, १, २७)"—इति यक्, धातुप्रकरणात् गुणप्रतिषेधार्थात् यकः कित्त्वाच्च सपरशब्दस्य धातुत्वात्ततोविहितस्य यक आर्द्धधातुकत्वे सति "अतोलोपः(६,४,४८)"—इति लोपः, "सनाद्यन्ता धातवः (३,१,३२)"—इति धातुसञ्ज्ञायां तिप्, "कर्त्तरि शप् (३,१,६८)", तस्मिन् पूर्वस्य "अतोगुणे (६, १, ९६)"—इति पररूपत्वम्, यकः प्रत्यय-स्वरेणोदात्तत्वम् (३, १, ३), शपा सह एकादेशस्य "एकादेशउदात्त० (८, २, ५)"—इत्युदात्तत्वम्, "तिङ्ङतिङः (८, २, २८)"—इति निघातो न भवति "यद्वृत्तान्नित्यम् (८, १, ६६)"—इति प्रतिषेधात्] ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २   ३ १ २   ३ १ २
योअग्निन्देववीतये हविष्माꣳआविवासति ।
३ २
तस्मैपावकमृडय ॥ ३ † ॥ ५

* "सपर्यति"—इति परिचरणकर्मसु तृतीयं नैघण्टुकम् (३, ५) ।

† ऋ० मं० १, १, १२, ९ ।

"हविष्मान्" हविर्युक्तो "यः" यजमानः "देववीतये" देवानां हविर्लक्षणहेतुयागार्थम् "अग्निम्" "आविवासति" अग्नेः समीपे विशेषेणागत्य परिचर्यां करोति *। हे "पावक" अग्ने! "तस्मै"† "मृळय" तं यजमानं सुखय। [देववीतये—'वी गति-प्रजन-कान्त्यशन-खादनेषु (अदा०, उभ०)'—इत्यस्मादश-नार्थात् क्तिन्, देवानां वीति यस्मिन् यागे स देववीतिः, "बहु-व्रीहौ पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम्, "नब्विषयस्यानिसन्तस्य (फि०, २, ३)"—इति पर्य्युदासाद्धविः-शब्दोदात्तः, मतुपः सर्वानुदात्त-त्वात् स एव शिष्यते। आविवासति—'वा गति-गन्धनयोः (अदा० प०)'—अस्मादन्तर्भावित-ण्यर्थादागमयितुमिच्छतीत्यर्थे सन्, आह्वानेच्छा; परिचर्यायां पर्यवस्यतीति विवासति-शब्दः परिचर्यार्थे निघण्टौ (३, ५, १०) पठितः, द्विर्भावः, अभ्यासस्य ह्रस्वः (७, ४, ५९), "सन्यतः (७, ४, ७९)"—इति इत्वम्, "अनित्यादिर्नित्यम् (६, १, १९७)"—इत्याद्युदात्तत्वम्, "तिङ्ङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "यद्वृत्तान्नि-त्यम् (८, १, ६६)"—इति प्रतिषेधात्, "तिङि चोदात्तवती (८, १, ७१)"—इत्याङो "सहसुपेत्यत्र (२, १, ४) सहेति योगविभागादाङस्तिङा सह समासे समासान्तोदात्तत्वे प्राप्ते (८, १, २२३) "परादिश्छन्दसि बहुलम् (६, २, १९९)"—इत्युत्तर-पदाद्युदात्तत्वम्। तस्मै—"क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (२, ३, १३ वा०)"—इति सम्प्रदानत्वाच्चतुर्थी॥ २॥ ५

---

* 'आविवासति—दीपयति'—इति वि०।

† 'तस्मै पावक—चतुर्थ्येषा द्वितीया-स्थाने भवति, तं पावकम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीयतृचे*—प्रथमा।

२ १ २ ३ १ १ ३ १ २ ३ १ २

मित्रꣳहुवेपूतदक्षंवरुणञ्चरिशादसम्।

१ २ १ २ ३ १ २

धियङ्घृताचीꣳसाधन्ता ॥ १ † ॥

अहमस्मिन् कर्म्मणि हविः-प्रदानाय "पूतदक्षं"‡ पवित्र-बलं "मित्रं" "हुवे" आह्वयामि [ह्वयतेः "बहुलञ्छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शपोलुकि सति "ह्वः सम्प्रसारणम् (६, १, ३२)"—इत्यनुवृत्तौ 'बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति सम्प्रसारणे उवङादेशः, "तिङ्ङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातः]। तथा "रिशादसं" रिशानां हिंसकानाम् अदसम-त्तारम्¶ "वरुणञ्च" हुवे। कीदृशौ मित्रावरुणौ? "घृताचीं"§ घृतमुदकमञ्चति भूमिं प्रापयति या धी येन कर्म्मणा तां घृताचीं "धियम्" "साधन्ता" साधयन्तौ ‖ ['राध साध संसिद्धौ

* 'मैत्रावरुणसाम्नम्'—इति वि०।

† य० वे० ३३, ५७ = ऋ० वे० १, १, ४, २।

‡ 'पूतदक्ष'—पूतं मेध्यं, दक्षं शीघ्रम्'—इति वि०।

¶ रिशादसं—शत्रूणां हिंसकम्'—इति वि०।

§ 'घृताचीं—'घृतमुदकं तस्य प्रदानसमर्थाम्'—इति वि०।

‖ महीधरस्त्वेवमिमां व्याचष्टे—'हे मधुच्छन्दोदृष्टा गायत्री त्र्यचा मित्रावरुण-देवत्या। मित्रं वरुणञ्चाहं हुवे आह्वयामि। कीदृशम्? पूतदक्षम् पूतं पवित्रं सदाचारं दक्षयति धन-पुत्रादिभिर्वर्द्धयति पूतदक्षस्तम् दक्षवृद्धौ शीघ्रार्थे चेत्यस्मात्(?) कर्मण्यण्। रिशादसम् रिशन्ति हि सन्ति रिशा दुष्टाः तान् समन्तादस्यति नाशयति रिशादसः तम्। रिश हिंसायाम् दस उपक्षये। द्वयोर्विशेषणे। कीदृशौ

(द्वि०,प०)'—इत्यस्मादन्तर्भावितण्यर्थाल्लटः शत्रादेशे (६,१, १६१), श्नुं बाधित्वा व्यत्ययेन (३,१,८५) शप्, अदुपदेशत्वात् उपरि शत्र-प्रत्ययस्य ल-सार्वधातुकानुदात्तत्वम्. द्वितीयाद्विवचनस्य शपश्च "अनुदात्तौ सुप्पितौ (३,१,४)"—इत्यनुदात्तत्वे, "धातोः (६, १, १६२)"—इति धातुस्वर एव शिष्यते, "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्यादिना विभक्तेराकारादेशः ॥१॥

अथ द्वितीया।

२ १ २
ऋतेनमित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा।
१ २ १ १ २
क्रतुम्बृहन्तमाशाथे ॥ २ * ॥

हे "मित्रावरुणौ!" [मित्रश्च वरुणश्चेति मित्रावरुणौ "देवता द्वन्द्वे च (६, ३, २६)"—इति पूर्वपदस्यानङादेशः, तादृशौ] युवां "क्रतुं" प्रवर्त्तमानमिमं सोमयागम् "आशाथे" आनशाथे व्याप्नुवन्तौ ["छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः (३, ४, ६)" —इति वर्त्तमाने लिट्, नुडभावश्छान्दसः]। केन? "ऋतेन" अवश्यभावितया सत्येन फलेन अस्मभ्यं फलं दातुमित्यर्थः। कीदृशौ युवाम्? "ऋतावृधौ" ['ऋतमित्युदक-नाम (निघ० १, १२, ६), सत्यं वा यज्ञं वा'—इति यास्कः†] उदकादीना-

---

वृधौ? धियं कर्म साधन्ता साधयन्तौ। कीदृशीं धियम्? घृताचीं घृतमञ्चते घृच्यते यत्र तम्'—इति।

* ऋ० वे० १, १, ४, २।

† 'ऋतमित्युदकनाम'—इत्यंशस्तु द्वितीय-पञ्चविंशे, 'सत्यं वा यज्ञं वा'—इति तु चतुर्थोनविंशे इति विवेकः।

मन्यतमस्य वर्द्धयितारौ*। अतएव 'ऋतस्पृशा' उदकादीन् स्पृशन्तौ†। कीदृशं क्रतुम्? "बृहन्तम्" अङ्गैरुपाङ्गैश्चाति-प्रौढम्॥ २॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
कवीनोमित्रावरुणातुविजाताउरुक्षया।
१ २ ३ १ २
दक्षन्दधातेअपसम्॥ ३ ‡॥ ६

"मित्रावरुणा" मित्रावरुणौ एतौ देवौ "नः" अस्माकं "दक्षं" बलम् "अपसं"¶ कर्म च "दधाते" पोषयतः, कीदृशौ? "कवी" मेधाविनौ, "तुवि-जाता" तुविजातौ बहूनामुपकारकतया समुत्पन्नौ, "उरुक्षया" बहु निवासौ [मित्रावरुणौ—मित्र-शब्दः प्रातिपदिक-स्वरेणान्तोदात्तः (फि० १, १), वरुण-शब्दो नित्स्वरेणाद्युदात्तः (६, १, १९७)। तुविजातौ—बहूनामुपकारकतया तत्सम्बन्धित्वेन जातौ विति षष्ठीसमासे समासान्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३), चतुर्थीसमासे हि "क्ते च (६, २, ४५)"—इति क्वचित् पूर्वपदप्रकृतिस्वरः स्यात्। उरूणां बहूनां क्षयौ उरुक्षयौ, 'क्षि निवास-गत्योः (तु० प०)'—इति धातोः क्षियन्त्यस्मिन्निति क्षय इत्यधिकरणे एव अच्-प्रत्ययान्तस्य "चितः

* 'ऋतावृधौ—ऋतमन्नं तद् वर्द्धयतः'—इति वि०।

† 'अग्निष्टोमादिकम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, ४, ४।

¶ 'अपसं—धनम्'—इति वि०।

(६, १, १६३)”—इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते “चयो निवासे (६, १, २०१)”—इत्याद्युदात्तत्वं विहितम्, समासे तु “समासस्य (८, १, २२३)”—इत्यन्तोदात्तत्वं वाधित्वा कदुत्तरप्रकृति-स्वरेण (६, २, १३९) प्राप्तमुत्तरपदाद्युदात्तत्वम् यद्यपि थाथादि-स्वरेणान्तोदात्तत्वेन बाध्यते तथापि “परादिश्छन्दसि बहुलम् (६, २, १९९)”—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वं द्रष्टव्यम् । दृच:—दृचतेस्तौतिकर्मणो णित्त्वादाद्युदात्त: (६, १, १९७) । आप्यते फलमनेनेत्यप: कर्म, “आप: कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा (उ० ४, १०९ टी० वृ०)”—इत्यसन्तस्य अपसस्यारेइत्यादौ नित्त्वा (६, १, १९७) दाद्युदात्तस्यापस्-शब्दस्यात्र व्यत्ययेन प्रत्ययाद्युदात्तत्वम् (३, १, ३)] ॥ ३ ॥ ६

अथ तृतीयत्वचे*—प्रथमा ।

१ २ १ २   १र   ३ १   २र

इन्द्रेणसꣳहिदृक्षसेसञ्जग्मानोअबिभ्युषा ।

३ १ २ ३ १ २

मन्दूसमानवर्चसा ॥ १ † ॥

हे मरुद्गण ! त्वम् “इन्द्रेण” “सञ्जग्मान:” सङ्गच्छमान: “सं दृक्षसे हि” सम्यग् दृश्येथा: खलु, अवश्यमस्माभिर्द्रष्टव्य-

---

* ‘ऐन्द्रमारुतम्’—इति वि० ।

† ऋ० वे० १, १, १२, २ ।

Digitized by Google

मित्यर्थः *। कीदृशेनेन्द्रेण? "अबिभ्युषा" भीति-रहितेन कीदृशाविन्द्रमरुद्गणौ? "मन्दू" नित्य-प्रमुदितौ, † "समान-वर्चसा" तुल्य-दीप्ती ['पुरा कदाचित् वृत्र-वध-दशायाम् इन्द्रस्य सखायः सर्वे देवा वृत्र-श्वासेनापसारितास्तदानीमिन्द्रस्य वृत्र-सम्बन्धि-सकल-सेना-जयार्थं मरुद्भिः सङ्गमो भूतः'—सोऽयमर्थो "वृत्रस्यश्वसथाय (ऋ० आ० ४, १, ४, २; ६५६ पृ०)"—इति मन्त्रे सङ्गृहीतः; 'इन्द्रो वै वृत्रं हनिष्यन्'—इति ब्राह्मणे (ता०) प्रपञ्चितश्च; इन्द्रशब्दः परमैश्वर्यवन्तं मरुद्गणश्चाभिधत्ते, तदानीमिन्द्रस्य सम्बोधनं बहिरेवाध्याहर्त्तव्यम्। तथाचेयमृक् यास्केनैवं व्याख्याता—"इन्द्रेण हि सन्दृक्षसे सङ्गच्छमानोऽबिभ्युषा गणेन मन्दू मदिष्णू युवां स्थोऽपि वा मन्दुना तेनेति स्यात्, समानवर्चसेत्येतेन व्याख्यातम् (४, १२)"—इति। सन्दृक्षसे—सम्पश्येथाः "दृशेश्चेति वक्तव्यम् (७, १, ७ वा०)"—इत्यात्मनेपदम्, दृशेः "लिङर्थे लेट् (३, ४, ७)"—इति प्रार्थनायां लेट्, आसस्से (३, ४, ८०), "लेटोऽडाटौ (३, ४, ९४)"—इत्यडागमः, "सिब्बहुलं लेटि (३, १, ३४)"—इति सिप्, "सञ्ज्ञापूर्वको विधिरनित्यः (प० शे० ९३)"—इति गुणाभावः, व्रश्चादिना (८, २, ३६) षत्वम्, "षढोः कः सि (८, २, ४१)"

---

* 'इन्द्रेण सं हि दृक्षसे मरुद्गण इति वाक्यशेषः। अथवा व्यत्ययेन व्याख्या क्रियते—मरुद्गणेन दृश्यसे इन्द्रः। अथवा आदित्य इन्द्रोऽभिधीयते, मरुद्गणा रश्मिमयास्तैः सह दृश्यसे। अथवा इन्द्रेण आदित्येन सङ्गमानः सङ्गच्छमानः'—इति वि०।

† 'मन्दू—मदन-स्वभावेन'-इति वि०।

—इति वत्वम्, "आदेश-प्रत्यययोः (८, ३, ५९)"—इति सिपः षत्वम्, बहुल-ग्रहणात् सिपः परस्तात्छन्दपि भवति, सिपा व्यवधानात् पश्चादेशो न भवति, शपः पित्त्वादनुदात्तत्वम् (३, १, ४), उत्तरस्य ल-सार्वधातुकानुदात्तत्वम् (६, १, १८६), धातुस्वर एव शिष्यते (६, १, १६२), हि-शब्द-योगात् "तिङ्-तिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "हि च (८, १, ३४)"—इति प्रतिषेधात्। सञ्जग्मानः—गमेः सम्पूर्वात् छन्दसि लुङ्लङ्लिटः (३, ४, ६)"—इति वर्त्तमाने लिट्, "समोगम्यृच्छि० (१, ३, २९)"—इत्यात्मनेपद-विधानात् लिटः कानजादेशः (३, २, १०६), द्विर्भावः (६, १, ८), हलादि-शेषः (७, ४, ६०), अभ्यासस्य चुत्वम् (७, ४, ६१), "गमहन० (६, ४, ९८)"—इत्युपधा-लोपः, कानचश्चित्त्वादन्तोदात्तत्वम्, गति-समासे (२, २, १८), कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३९)। अबिभ्युषा—'ञि भी भये (जु०, प०), पूर्ववल्लिट् (३, ४, ६), "शेषात् कर्त्तरि० (१, ३, ७८)" —इति परस्मैपदम्, "क्वसुश्च (३, २, १०७)"—इति लिटः क्वसुरादेशः, तस्य कित्त्वाद् गुणाभावः (१, १, ५), अभ्यासस्य ह्रस्व-जश्त्वे (७, ४, ५९)—(८, ४, ५४) क्रादिनियमात् प्राप्तइट् (७, २, १३) "वस्वेकाजाद्घसाम् (७, २, ६७)"—इति नियमात् निवर्त्तते नञ्समासे तृतीयैकवचने भत्वाद् "वसोः सम्प्रसारणम् (६, ४, १३१)"—इति वकारस्य उकारादेशः, "सम्प्रसारणाच्च (६, १, १०८)"—इति पूर्वरूपत्वं बाधित्वा "एरनेकाच (६, ४, ८२)"—इति यणादेशः, अव्यय-

पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, ११८), पूर्वेण सह संहितायामोकारस्य "एङः पदान्तादति (६, १, १०९)"—इति पररूपत्वे प्राप्ते "प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे (६, १, ११५)"—इति प्रकृतिभावः। मन्द—'मद स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु' (भ्वा०, आ०,), "इदितो नुम् धातोः (७, १, ५८)"—इति नुमागमः, कुरित्यनुवृत्तौ "खरु-शङ्कु-पीयु-नीलङ्गु-लिगु (उ० १, ३६)"—इत्यत्राविभक्तिक-निर्देशादन्तेष्विङ्कुरितिवद्यालन्तरादपि कुरित्युक्तम्, प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १, ३), द्विवचने सौ "प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (६, १, १०४), तृतीयैकवचने च "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्यादिना पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्, समानं वर्णौ ययोरिति वा यस्येति बहुव्रीहिः, द्विवचने "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्याकारः, समान-पदस्य प्रातिपदिकान्तोदात्तत्वम् (फि० १, १), बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-स्वरेण (८, २, १), तदेवावशिष्यते ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे।
१ २ ३ १२३ १ २
दधाना नाम यज्ञियम् ॥ २ * ॥

अहेत्यवधारणार्थः†]। "आत् अह" वर्षात्तौरनन्तरमेव "स्वधामनु" इतःपरं जनिष्यमाणमन्नमुदकं वा अनुलक्ष्य महतो

* ऋ० वे० १, १, ११, ४।
† "अहरति च ह इति च विनिग्रहार्थीयौ पूर्वेण सम्प्रयुज्यते। अयमहेदं करोतु अयमिदं च करिष्यतीति"—इति निरु० १, ५

देवाः "पुनः गर्भत्वम् आ ईरिरे" मेघ-मध्ये जातस्य गर्भाकारं प्रेरितवन्तः* [प्रतिसंवत्सर मेवं कुर्वन्तीति दर्शयितुं पुनः-शब्दः प्रयुक्तः]। कीदृशा मरुतः? "यज्ञियं" यज्ञार्हं "नाम" "दधानाः" धारयन्तः। [सप्तसु गणेषु मरुतामीदृक् चान्यादृक् चेत्यादीनि यज्ञ-योग्यानि नामान्यन्यत्राम्नातानि। "अन्धः" —इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेष्वन्ननामसु "उक्" (१५), "रसः" (१६), "स्वधा" (१७)—इति पठितम्, (निघ० २, ७) "अर्णः"—इत्यादिष्वेकशत-सङ्ख्याकेषूदक-नामसु च "तेजः" (८६), "स्वधा" (८७), "अमृतम्" (८८)—इति पठितम् (निघ० १, १२)। "आत्"-"अह"-निपातावाद्युदात्तौ (फि० ४, १२)। स्वधा—स्वं लोकं दधाति पुष्णातीति स्वधा, "आतोऽनुपसर्गे कः (३, २, ३), कृदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३९)। अनु-पुनः-शब्दौ निपातावाद्युदात्तौ (फि०, ४, १२)। गर्भस्य भावो गर्भत्वं प्रत्ययस्वरः (३, १, ३)। एरिरे—अन्तर्भावितण्यर्थात् 'इण् गतौ (अदा०, प०)'—इत्यस्मादनुदात्तेतः परस्य लिटो झस्य इरेच्, चित्त्वादन्तोदात्तः (६, १, १६२), "सह सुपा (२, १, ४)"—इत्यत्र "सुपा" योगविभागादाङा सह तिङः "समासस्य (८, १, २२३)"—इत्यन्तोदात्तत्वम्, "इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः (३, १, ३६)"—इत्याम् न भवति मन्त्रत्वात् † अह-शब्द-योगान्निघाताभावः "तु-पश्य-

---

* 'आदित्य-रश्मय उदपचन्तं, सविता यत् अर्च्छन्ति, तैः पुनरश्मिते सविनरि गर्भत्वं यान्ति'—इति वि०।

† "कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि (३, १, ३५)"—इति सूत्रादिह 'अमन्त्रे'—इत्यनुवृत्तेरिति भावः।

Digitized by Google

प्रश्नताद्यैः पूजायात् (८,१,३८)"—इति निषेधात् । दधानाः—शानचश्चित्वादन्तोदात्तत्वे प्राप्ते (६, १, १६२) "अभ्यस्तानामादिः (६, १, १८८)"—इत्याद्युदात्तत्वम् । यज्ञमर्हति यज्ञियम्, "यज्ञर्त्विग्भ्यां घ-खञौ (५, १, ७१)"—इति घ-प्रत्ययः "आयनेयीनीयियः फ-ढ-ख-छ-घां प्रत्ययादीनाम् (७,१,२)"—इतीयादेशः प्रत्ययस्वरेण इकार उदात्तः (३, १, ३)] ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १२ १ २ ३ १ २ ३१ २
वीळु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः ।
१ २ ३ २ ३ १ २
अविन्द उस्रिया अनु ॥ ३ * ॥ ७

अस्ति किञ्चिदुपाख्यानम्—'पणिभिर्देवलोकाद् गावोऽपहृताः अन्धकारे प्रक्षिप्ताः तास्वेन्द्रो मरुद्भिः सहाजयत'—इति । एतच्च बह्वृचानुक्रमणिकायां सूचितम्—"पणिभिरसुरैर्निगूढा गा अन्वेष्टुं सरमादेत शुनीन्द्रेण प्रेषिता ता ऋग्भिः पणयोऽमित्रीयन्तः प्रोचुः"—इति । मन्त्रान्तरेऽपि दृष्टान्ततया सूचितम्—"निरुद्धा आपः पणिनेव गावः"—इति] तदेव उपाख्यान मभिप्रेत्योच्यते—हे "इन्द्र !" "वीळु चित्"† दृढमपि दुर्गमस्थानम् "आरुजत्नुभिः" ‡ अभिभञ्जद्भिः "वह्निभिः" वोढृभिः अन्यत्र

* ऋ० वे० १, १, ११, ५ ।

† 'चित्—इति पदपूरणः । वीळु अन्तरिक्षे स्थितः'—इति वि० ।

‡ 'अन्तरिक्षे स्थिता अमस्कोभयन्ति आरुजत्नवः'—इति वि० ।

¶ 'इन्द्रनामकैरग्निभिः—इति वि० ।

मेतुं समर्थैः मरुद्भिः सहितस्त्वं "गुहा चित्" गुहायामपि स्थापिता "उस्रियाः" गाः "अन्वविन्दः † अन्विष्य लब्धवानसि । ["ओजः" (१), "पाजः"(२)—इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेषु बल-नामसु "दक्षः"(१३) "वीळु"(१४) "च्यौत्नम्" (१५)—इति पठितम् । (८, ९) नव-सङ्ख्याकेषु गो-नामसु "अघ्न्या"(१), "उस्रा" (२), "उस्रिया" (३)—इति पठितम् निघ० (२, ११) । वीळु—प्रातिपदिक-स्वरः (फि० १, १) । चित्—आद्युदात्तः । आरुजत्नुभिः—'रुजो भङ्गे (तु० प०) इत्यस्मादौणादिकः कत्नुच् प्रत्ययः, कित्त्वात् (१, १, ५) गुणाभावः, चित्त्वादन्तोदात्तत्वम् (६, १, १६) समासे कृदुत्तर-पदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (६, २, १६०) । गुहा—सप्तम्यां डादेशः (७, १, ३९), "ग्रामादीनाञ्च (फि०, २, १५)"—इत्याद्युदात्तः । वह्निभिः—"वहि-श्रि-श्रु-यु-द्रु-ग्ला-हा-त्वरिभ्यो नित् (उ० ४, ५१)"—इति नि-प्रत्ययः, नित्त्वादाद्युदात्तः । अविन्दः—'शेमुचादीनाम् (७, १, ५९)"—इति नुमागमः, लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः (६, ४, ७१) । वसन्तीति उस्रियाः वसेः कर्त्तरि यक् प्रत्ययः, षत्वाभावश्च बाहुलकादूहनीयः (३, १, ८५), उक्तं हि 'यत्र पदार्थविशेष मुक्तं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तदूह्यम् (३, १, ८५ भा०)'—इति, इकारः प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १ ३) ॥ २ ॥ ७

---

० 'उस्रियाः—आदित्यरश्मयः—इति वि० ।

† 'अविन्दः विदल्लाभे (अदा० प०)—इत्यस्येदं रूपम्'—इति, 'अनु—आनुपूर्व्येण' इति च वि० ।

अथ चतुर्थे तृचे* प्रथमा ।

१ २ ३ १   २ ३   १ ३ १   ३र ३ २ ३ २

ताहुवेययोरिदम्पप्रे विश्वम्पुराकृतम् ।

३   १   ३र

इन्द्राग्नीनमर्द्धतः ॥ १† ॥

"ता" तौ तादृशौ "इन्द्राग्नी" "हुवे" आह्वये । "ययोः" इन्द्राग्न्योः "पुरा" पूर्व्वस्मिन् काले "कृतं" "विश्वं" सर्वम् "इदं" पूर्वोक्तमु कीर्त्तितं वीर्यं "पप्ने" पन्यते ऋषिभिः स्तूयते ;—ताविन्द्राग्नी हुवे इत्यन्वयः । तौ चेन्द्राग्नी न "मर्द्धतः" [मर्द्धतिः हिंसाकर्मा (निघ०२, १९, १४)] स्तोतॄन् अहिंस्रः । अतोऽस्मान् आहुतौ रक्षतामिति भावः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १   २ ३   १ ३   १ २   ३ १ २

उग्राविघनिनाम्टधइन्द्राग्नीहवामहे ।

१   २   ३ १ २

तानोम्टड़ातईदृशे ॥ २‡ ॥

"उग्रा" उग्रौ उद्गूर्ण-बलौ अतएव "मृधः" शत्रून् "विघनिता" विघनितौ विशेषेण हतवन्तौ "इन्द्राग्नी" "हवामहे" आह्वयामहे । तौ चेन्द्राग्नी "ईदृशे" अस्मिन् सङ्ग्रामे "नः"

---

* 'ऐन्द्राग्नमाज्यम्'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ४, ८, १०, ४ ।

‡ ऋ० वे० ४, ८, १०, ५ ।

Digitized by Google

अस्मान् "मृड़ातः" सुखयताम् [यद्वा मृड़ातिः उपदयाकर्मा ; नोऽस्माकं मृड़ातः उपदयां कुरुताम्] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ २ १   २र ३ १   १र
हथोवृत्राण्यार्य्या हथोदासानिसत्पती।
३ २उ   ३ २ ३ १ २
हथोविश्वाअपद्विषः ॥ ३* ॥ ८

हे इन्द्राग्नी ! "आर्या" आर्यैः कर्मानुष्ठातृभिः कृतानि "वृत्राणि" उपद्रवजातानि "हथः" हिंस्थः। तथा "सत्पती" सतां पालयितारौ सन्तौ "दासानि" दासाः कर्महीनाः† शत्रवः, तैः कृतानि चोपद्रवजातानि हथः। अपि च "विश्वाः" सर्वाः "द्विषः" द्वेष्ट्रीः शत्रुभूताः प्रजाः "अप हथः" विनाशयथः अतोऽस्माकमप्येव मेव कुरुता मिति भावः॥

"हथः"-"हनः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः ‡ ॥ ४ ॥

---

* ऋ० वे० ४, ८, १८, १।

† 'दासानि—यातुधानीनि रक्षः-पिशाचादीनि'—इति वि०।

‡ 'उक्तं प्रातःसवनम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीयखण्डे*

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

२ १ २र ३१२३१२३१२३१२
अभिसोमासआयवःपवन्तेमद्यम्मदम् ।

२ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणोमत्सरासोमदच्युतः ॥ १ † ॥

"आयवः" गमन-शीलाः "सोमासः" सोमाः "मद्यं" मद-करं मदम् आत्मीयं रसम् "अभिपवन्ते" अभितो निर्गमयन्ति । कुत्रेत्युच्यते "समुद्रस्य" अन्तरिक्षस्य "अधिविष्टपे" अधिकं समुच्छ्रिते पवित्रे यद्वा समुद्रस्य यस्मात् समुद्द्रवन्ति रसास्तस्य कलशस्य "अधि" उपरि "विष्टपे" स्थाने पवित्रे निर्गमयन्ति । कीदृशाः ? "मनीषिणः" मनस ईशितारो "मत्सासः" मदकराः "मदच्युतः" मदस्राविणः ॥

"विष्टपे"-"विष्टपि"—इति पाठौ, "मदच्युतः"-"स्वर्विदः" इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२ ३१ २र ३ २ ३१ २ ३१२३१२ २
तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणाराजादेवऋतम्बृहत् ।

१२ ३१ ३१२ ३१ २३ १२ ३२३१२
अर्षामित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणाप्रहिन्वानऋतम्बृहत् ॥२‡॥

---

* 'इदानीं माध्यन्दिनं सवनमुच्यते । तत्रोच्यन्ते—गायत्री-त्रैष्टुभादीनि सामानि, तासां नामतः आर्षेयमुक्तम्'—इति वि० ।

† छ० आ० ६, १, ३, ८ (२भा० ८६पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १४, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १५, १ । "समुद्रियः"—इति च तत्र पाठः ।

"पवमानः" पूयमानः "देवः" द्योतमानः "बृहत्" अत्यन्तम् * "ऋतम्" सत्यभूतः † "राजा" सोमः "समुद्रम्" अन्तरिक्षं कलशं वा "ऊर्मिणा" धारया ‡ "तरत्" तरति "हिन्वानः" प्रेर्यमाणः। "ऋतम्बृहत्" अत्यन्तं सत्यभूतः स सोमः "मित्रस्य वरुणस्य" मित्रावरुणयोः "धर्मणा" धारणार्थं "प्र अर्षा" प्रार्षति प्रकर्षेण गच्छति ¶॥

"अर्षा"-"अर्षन्"—इति पाठौ॥ २॥

अथ अध्यास्याख्या तृतीया।

१ २ ३ १ २३१ २ ३१ २र३१ १ ३ २र
नृभिर्येमाणोहर्यतोविचक्षणोराजादेवःसमुद्र्यः॥ ३ §॥ ९

"नृभिः" कर्म-नेतृभिः ऋत्विग्भिः "येमानः" नियम्यमानः "हर्यतः" स्पृहणीयो "विचक्षणः" विद्रष्टा "देवः" दीप्यमानः "समुद्र्यः" अन्तरिक्षे भवः ‖ "राजा" सोमः इन्द्रार्थं पवते इति शेषः॥

"येमाणः"-"येमानः" इति पाठौ॥ ३॥ ९

---

* 'बृहत्—महत् अथवा बृहत्साम'—इति वि०।

† 'ऋतं—सत्यम् अन्नम् प्रजापतिः यज्ञ' वा'—इति वि०।

‡ 'ऊर्मिणा—उदकसङ्घातेन'—इति वि०।

¶ 'अर्षा—द्रष्टा'—इति वि०।

§ छ० आ० ६, १, ४, २ (२आ० ११२पृ०)=ऋ० वे० ७, ४, १०, ४।

‖ "समुद्रः"—इत्यन्तरिक्ष-नामसु पञ्चदशं नैघण्टुकम् (१, ३)। 'समुद्र्यः—समुद्रात्मकः'—इति वि०।

१ १ २ २ १ २ १ १ २ १
॥ पौरुमद्गम् ॥ अभिसोमासआयवः। औहोवा।
१ २ १२ १ १ १ १
एहिया। हाउ। पवन्तेमा २दियम्मदम्। समुद्रा १
१ १ १ १ १ ५ १
स्या २। धायिविष्टपा३यि। मानीषा२३४यिणः। मत्सा।
१ १ १ १ १
रासौवाओ२३४वा। हा३हायि। मदा५च्युताः॥(१)
१ १२ २ १ १ १ २ १ १ २
मत्सरासोमदच्युतः। औहोवा। एहिया। हाउ। म
१२ १ १ १ १ १ १ १
त्सरासो २मदच्युतः। तरात्सा१मू २। द्रास्यवमा३। ना
१ ३ ५ १२ १ २ ५ १
ऊर्म्मा२३४यिणा। राजा। दायिवीवाओ२३४वा। हा
१ ४ ५२ २ ५२ १ १ १ १ १ २१
३हायि। ऋता५म्बृहात् ॥(२) राजादेवऋतम्बृहत्। औ
१ १ २ २ २ १२ १ १ १
होवा। एहिया। हाउ। राजादेवा २ऋतम्बृहत्। अ
१ १ १ १ १ १ ५ १
र्षामा१यिता २। स्यावरुणा३। स्याधर्म्मा२३४णा। प्र
१ १ ५ २ १ ४
हायि। स्मानौवाओ२३४वा। हा३हायि। ऋता५म्बृ
४
हात्। हो५इ। डा(३)॥ १४ * ॥ [१]

---

* ज० गा० २प्र० १ख० १४गा०।

२१ र र र र
॥ उभयतःस्तोभं गौतमम् ॥ हावभिसोमासआयवो
१ २र १ ७ ३र १
हाउ। पावन्तेम। दियाम्मदा२३४म्। हाहोयि। स
१ र २१र र २ ३र २ १
मुद्रस्याधिविष्टपे। मानीषिणा३४ः। हाहोयि। मात्स
२ ३र २ २ १ ५ ४ ५
रासा३४ः। हाहो३। मदो२३४वा। च्युःपूतोईहायि॥(१)
२र र र र १ २र १ ७
हाउमत्सरासोमदच्युतोहाउ। मात्सरासः। मदाच्यु
३र २ १ २ १ २र १ र
ता'२ ३ ४ः। हाहोयि। तरत्समुद्रम्पवमा। नाऊर्म्मि
२ ३र २ १ र २ ३र २
णा३४। हाहोयि। राजादायिवा३४ः। हाहो३यि।
२ १ ५ ४ ५ २र र र र
ऋतो२३४वा। बृ५हो ६ हायि॥(२) हाउराजादेवऋत
१ र २र १ ० ३र र
म्बृहद्धाउ। राजादेवः। ऋताम्बृहा२३४त्। हाहोयि।
१ र २१ २१ २ १ २ ३र२ १
अर्षामित्रस्यवरुणा। स्याधर्मणा ३ ४। हाहोयि। प्रा
२ ३र २ २ १ ५ ४
हिन्वाना३४ः। हाहो३यि। ऋतो२३४वा। बृ५ हो ६
५
हायि(३) ॥ १५ * ॥ [२]

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १५सा०।

२ १ ४र ५र
॥ द्विहिङ्कारंवामदेव्यम्॥ अभिसो२३मास आयवाः।
१ र र २ ३ र २ १
पाऽवन्ते मघमद्रं समुद्रस्याधिविष्टपाऽयिमनीषोहो३। ऊ
१ २ १ र २ ३र २ १
म्मा २। षा२३यिणाः। मत्सरासोमदीचोहो३। ऊम्मा २।
२ १ २ ४ ५ २ १ ४र ५
ऽच्युता। औ२३होवा॥(१) मत्सरा २ ३ सोमदच्युताः।
१ र र २ ३र २ १
मात्सरासोमदच्युतम्तरत्समुद्रम्पवमाऽनऔहो३। ऊम्मा
२ १र र र २ ३र २ १
२। मा२३यिणा। राजादेवाऽऋतौहो३। ऊम्मा २।
१ ४ ५ २र १र ४ ५
वृहात्। औ२३होवा॥(२) राजादा २ ३ यिवऋतम्बृ
१ र र र २ ३र २
हात्। राऽजादेवऋतम्बृहादर्षामित्रस्यवरुणाऽस्यधौहो३।
१ १ २ १ र २ ३र २ १
ऊम्मा २। मा२३णा। प्रहिन्वानाऽऋतौहो३। ऊम्मा
१ ४ ५ ४
२। वृहात्। औ२३होवा। होर्५ई। डा(३)॥ ७ *॥ [३]
१ २ १ र २
॥ गायत्रपार्श्वम्॥ आभो। सोमास आ२१उवा२३।
१ २र १ २ १ २ १ २१र२र १
या२३४वाः। पवन्ते मदियमद्रं समुद्राधिविष्टपेमनीषि

* ऊ० गा० ४प्र० २ख० ७सा०।

२ १ १ १ १ २ १ २ २ २ १ ४ १
णा२३४५ः। मत्सारा१सा२ः। मदा३। इ२३वा३। च्यू

१ १ १ १ १ २ १ ९ २
ता२३४५ः ॥(१) मात्सा। रासोमदा३१उवा२३। च्यू

५ १र र २ १ २ १ २ १ १र र १
२३४ताः। मत्सरासोमदच्युतस्तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मि

२ १ १ १ १ १र १ २ २ २ १ ४
णा२३४५। राजादा१विवा२ः। ऋता३म्। इ२३वा

१ १ १ १ १ १र १ २ १
३। बृहा२३४५त् ॥(२) राजा। दायिवऋता३१उवा२

५ १र र१र१ २ १ २ १ र २ १ १ १ २
३। बृ२३ ४हात्। राजादेवऋतम्बृहदर्षामित्रस्यवरुण

१ २ १ १ १ १ २ १ २ २ २ १
स्यधर्म्मणा२३४५। प्रहायिन्वा१ना२ः। ऋता३म्। इ

४ १ १ १ १ १
२३वा३। बृहा२३४५त(३) ॥ ८ * ॥ [४]

५ २ ४र ५ ४र ५ १ १र
॥ पौरुहन्मनम् ॥ अभिसो३मासआयवाः। पावन्ते

१ १ १ १ र १
म। दियाम्मा१दा२म्। मादा२म्। सामुद्रस्या। था

२ १ २ १ २ २ ५
यि। विष्टपा३यि। विष्टपा३यि। मानीषा२३४यिणाः।

१ २र १ २ २ ५ ४
मात्सरासो। मादच्यू२३४ताः। मदा५च्युताः ॥(१)

---

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० ८सा०।

मत्सरासः। मदाच्यू१ता २ः। च्यूता २ः। तारत्समु। द्राम्। पवमा३। पवमा३। नार्ज्मा२३४यिणा। राजादेवाः। ऋतंबृ२३४हात्। ऋता५म्बृहात्॥(२) राजा दा३यिवऋतम्बृहात्। राजादेवः। ऋतांबृ१हा २त्। आ मित्र। स्या। वरुणा३। वरुणा३। स्याधर्मा२३ ४णा। प्राचिन्वानाः। ऋतंबृ२३४हात्। ऋता५म्बृहा त्। हो५ई। डा(३)॥ ८ *॥ [५]

॥ दैगतम्॥ अभिसो३मासआयवाः। पावन्तेम। दियाम्मा१दा२म्। समू३। औ३हो३वा। द्रस्याधिवि ष्येमानो१विषा २ः। मत्सा२३। रा२सा२३४औहोवा। ए३। मदा२च्युता२३४५ः॥(१) मत्सरा३सोमदच्युताः। मात्सरासः। मदाच्यू१ता२ः। तरा३त्। हौ३हो३वा।

* ऊ० गा० ४प्र० २ख० ८गा०।

१ र २ १र १ २
समुद्रम्पवमानाऊ१र्मिणा२। राजा२३। दा२यिवा२३

५र र २ १ ३ १ १ १ १ ५र र
४औहोवा। ए ३। ऋता२म्बृहा२३४५त् ॥(२) राजा

२ ४ ५ ४ ५ १ २ १र १ २
दा३यिवऋतंबृहात्। राजादेवः। ऋतांबृ१हा२त्।

२ २ ८ २ २ १
अर्षा३। हौ ३। हो ३ वा। मित्रस्यवरुणस्याधर्माणा२।

१ १ २ ५र र २ १ ३
प्रहा२३यि। न्वा२ना२३४औहोवा। ए३। ऋता२म्बृहा

१ १ १ १
२३४५त्(३) ॥ १० * ॥ [६]

१ २र र १
॥ हारायणम् ॥ अभिसोमौहो२यिसआयवाः। पा

र २ २ १ २
वन्तेमद्यम्मदम्। समूद्रा३स्या। धिविष्टपायि। मना

२ १ १ रर २ १ ५
३हायि। षायिणा२ः। मत्सरासोमदोवा३ओ२३४वा।

४ ५ र र १
च्यू५तो६हायि ॥(१) मत्सरासोहो२यिमदच्युताः। मा

र र २ २ २
त्सरासोमदच्युतः। तरात्सा३मू। द्रपवमा। नऊ३

२ १र र र २ १ ५ ४
हा। मायिणा२। राजादेवऋतोवा३ओ२३४वा। बृ

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० १०सा० ।

५ १ २ २ २ १ २ २
५होईद्दायि ॥(२) राजादेवौहो२वाऋतंबृहात्। राजादे

२ २ १ २
वऋतंबृहत्। अर्षामा३ यिचा। स्यवरुणा। स्यधा३

२ १ १ २ २ १ ५ ४
हा। मााा२। प्रहिन्वानऋतोवा३ओ२३४वा। बृ५हो

५
ईद्दायि(३) ॥ ११ * ॥ [७]

२ २ २
॥ अच्छिद्रम् ॥ अभिसोमा। सआ३१उवा२३। या

५ १ २२१ १ १ ३ १ १ १ १ २ २
२३४वाः। पवन्तेमदियम्मदा२३४५म्। पवन्तेमा। दि

५ २ १ २ २ १ २ २ २
या३१उवा२३। मा२३४दाम्। समुद्रस्याधिविष्टपेमनी

१ ३ १ १ १ १ २ १ २ २
षिणा२३४५ः। समुद्रस्या। धिवि। ष्टा। पेमना३१उ

५ २ १२ २ २ १ १ १ १ १ १
वा२३यि। षी२३४णाः। मत्सरासोमदच्युता२३४५ः।

२ २ ५ २
मत्सरासाः। मदा३१उवा२३। च्यू२३४ताः ॥(१) मत्स

२ ५ २ १२ २
रासाः। मदा३१उवा२३। च्यू२३४ताः। मत्सरासो

२ १ ३ १ १ १ १ २ २
मदच्युता२३४५ः। मत्सरासाः। मदा३१उवा२३। च्यू

---

* ऊ० गा० ४प्र० २ख० ११गा०।

Digitized by Google

५　१　२　१　१र　र　१　३१११११　२
२३४ताः। तरत्समुद्रम्पवमानऊर्मिणा२३४५। तरत्स

१　२　१　५
मू। द्रम्पव। मा। नऊ३आउवा२३। मो२३४णा।

१र　र　१र१　१　१　२　२र　र　र
राजादेवऋतंबृहा१त्। राजादेवाः। ऋता३१उवा२३।

५　१र　र　र१　१　१　२　१र　र　र
बृ२३४हात्। राजादेवऋतंबृहा१त्। राजादेवाः। ऋ

५
ता३१उवा२३। बृ२३४हात्। राजादेवऋतंबृहा१त्।

१र　२　१　२
राजादेवाः। ऋता३१उवा२३। बृहात्। अर्षामित्रस्य

१　२　१　३११११　र　र　१　२
वरुणस्यधर्मणा२३४५। अर्षामित्रा। स्यवरु। णा। स्य

५　१　१र　१　१　१　२
धा३१उवा२३। मा२३४णा। प्रहिन्वानऋतंबृहा१त्।

२　र　५
प्रहिन्वानाः। ऋता३१उवा२३। बृ२३४हात्(३) ॥१२*॥[८]

१　र　र　१　५　१
॥ रौरवम्॥ अभिसोमासआ३आया२३४वाः। पाव

र　र　र　३　२　१　२
न्तेमद्यम्मद७समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणाः। ओहा

२　१　र　र　१　१　२　२
३उवा। मत्सरासोमदा२३हायि। ओहा३उवा। च्यु

* ऋ० सं० ४प्र० २अ० ११वा०।

१ २ ४ ५ २ २र १ ५
ता। औ ३ होवा ॥(१) मत्सरासोमा३दच्यु२३४ताः ।
१ २र २ ३ १ १
मा॑ऽत्सरासोमदच्युतस्तरत्समुद्रम्पवमानऊ२र्म्मि णा। औ
२ २ १२र र २ १ २ २
हा३उवा। राजादेवऋता२३ऽहायि। औहा ३ उवा।
१ ४ ५ १२ र र १ ५
बृहात्। औ २ ३ होवा ॥(२) राजादेवआ३र्तं२३४हा
१ र र र १ २
त्। राजादेवऋतंबृहदर्षामित्रस्यवरुणस्यधा २र्म्म णा।
१ १ २ १ र २ १
औहा३उवा। प्रहिन्वानऋता२३ऽहायि। औहा३उ
२ १ ४ ५ ४
वा। बृहात्। औ२३होवा। हो५ई। डा(३) ॥१३*॥[९]

१ २ २र र १र १ २
॥ मानवोत्तरम् ॥ होवायि। अभिसोमासआयवः।
१ र ७१ र १
होवायि। पावन्तेमद्यम्मदम्। सामुद्रस्या। धायि
७ १ ७ २ ५ २ १
विष्टया३१यि। मना२र्यिषा२३४यिणाः। मत्सारा २ ३
२ २ ३ ५र र ३ ५ १
साः। मा२र्दा२३४औहोवा। च्यू२३४ताः ॥(१) होवा
२ १र र २ १ २ १ र र
यि। मत्सरासोमदच्युतः। होवायि। मात्सरासोम

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० १३सा०।

१०२ १७२ ७ २ २
दच्युतः । आरत्समु । द्राम्पवमा३१ । नऊर्म्मा२३४यि
५ १र१ २ १ २ ५र र
णा । राजादा२३यिवा३ः । आर्त्ता २ ३ ४ औहोवा ।
३ ५ १ र र २र१२१११ १
व२३४हात् ॥(२) होवायि । राजादेवऋतम्बृहत् । हो
र र ७र २ १ ७ २
वायि । राजादेवऋतंबृहत् । आर्षामित्र । स्यावरुणा
७ ३ ५ २१ २ १ ३
३१ । स्यधार्म्मा२३४णा । प्रहायिन्वा२३ना३ः । आर्त्ता
१र र ३ ५
२३४औहोवा । वृ२३४हात्(३) ॥ १४ * ॥ [१०]

१२१र र र १ र
॥ आनूपवाध्यस्वम् ॥ अभीअभी । सोमासा३आया
१ २र १ ७ १
१वा २ः । पावन्तेम । दियाम्भा १ दा २म् । सामू २
१ १ र२१र २ १ र २
द्रास्या २ । धिविष्टपेमनीषा२३यिणाः । मत्सारा ३ सा
१ ४ २ ५ १ २ १ २
३ः । मा२३दा३ । च्यू३४५तोई्हायि ॥(१) मत्सामत्सा ।
र र १ २ १ १ १ र २
रासोमा३दाच्यू१ता २ः । तारा र्त्सामू २ । द्रपवमान
१र २ १र २ २ १ ४
ऊर्म्मा२३यिणा । राजादा३यिवा३ः । आ २३ त्ता३म् ।

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० १४गा० ।

२ ५ १र २ १र २ र १ २
बृ३४५ह्वोई्हायि ॥(२) राजाराजा। देवक्र ३तांब१हा

१ र १र १ २ १ १
२रत्। राजाद्देवः। क्रतांब१हा२रत्। आर्षा २ मायि

१ २ १ २ १ २ २
त्वा२। स्यवरुणस्यधर्मा२३णा। प्रहायिन्वा ३ ना ३ः।

१ ४ २ ५
आ२३र्त्ता३म्। बृ३४५ह्वोई्हायि(३) ॥ १५ ॥[११]

४ ३ र ४र ५ र २ २ १
॥ वाम्रम् ॥ अभिसोमासआ। हा३हा३यि। या२

र ५ १ १र १ ७
३४। वायवोवा। पवाहो२। तेमाहो२। दायम्मा

१ २ र १ २ ३ १ २
दा२म्। सामुद्रस्या। धिवायिष्टापेमनाउवा३। ऊ

५ १ १ १ १
३ ४ पा। पिणा२ः। मात्सा२रासा२ः। मद। च्यू

३ ५र र ४ ३र ४र ५ र २ १
२ता२३४औहोवा ॥(१) मत्सरासोमदा। हा३हा३यि।

१ ५ १ १र
च्यू२३४। तच्युतोवा। मत्साहो२यि। रासाहो२।

१ ७ १ १ १ २ २ १
मादच्यूता२ः। नारत्समु। द्रम्यावामा। नआउवा३।

२ ५ १ १ १ १
ऊ३४पा। मिणा२। राजा२दायिवा२ः। क्रतम्।

* ऊ० गा० ७अ० १ख० १४सा०।

बृ२हा२३४औहोवा ॥(२) राजादेवऋतम्। हाइहाइयि।
बृ२३४। हहृहोवा। राजाहो२यि। देवाहो२। आ
तंवहा२तृ। आर्षामित्र। स्वधाउवा३। ऊ३ ४ पा।
मणा२। प्राहा२यिन्वाना२ः। ऋतम। बृ२हा२३४
औहोवा। ऊ३२३४पा(३) ॥ १६ ॥ [१२]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ अभा३यिसो३मा ऽ सआयवोवा। पा
वन्तेम। दियाम्भा१दा३म्। सामुद्रस्या३१२३४। धि
विष्टपे। मनायिषा१यिणा२ः। म२पारा१सा२ः। मदा
३। च्यू२३४५। ता१२३४५ः(१) ॥ १६* ॥ [१३]

॥ कालेयम्† ॥ मत्सरा३सोमदच्यूताः। मत्सारासो।
मदच्यूता२३ः। तरत्समू३। द्रा२३४म्। पवमानऊ।

* ऊ० गा० ७प्र० ९खा० १६सा०। † "महाकालेयम्"—इति वि०।

२ २ १र ३ र २ ४
माऽयिणा। राजादेवौ। वा३४३वा। ऋतापुष्भ्वृहात्।
५
होपुई। डा(२)॥ १७*॥ [१४]

५ २ ४र ५ ४र ५ १ १र
॥ गौङ्गवम्॥ अभिसोऽमासआयवाः। पावा२। ते
३ २ ४ ५ २ १र
मदियाऽम्। मादाम्। समुद्रस्याधिविष्टा२३पा २ यि।
३ २ ४ ५ २ १ र र ३ २ ४
मनाऽयिषायिणाः। समुद्रस्याधिविष्टये। मनाऽयिषा
५ १ १र १ २ २ १ ५
यिणाः। मात्सरा। सा। औऽहो। मदो२३४वा।
४ ५ ५ २ ४र ५ ४ ५ १
च्यूपूतोईहायि॥(१) मत्सराऽसोमदच्युताः। मात्सा२।
१र र ३ २ ४ ५ १ २ १ १ ३ २
रासोमदाऽ। च्यूताः। तरत्समुद्रम्पवा२३माऽ। नज
४ ५ १ २ १ र १ २ ४ ५ १
ऽर्मायिणा। तरत्समुद्रम्पवमा। नजऽर्मायिणा। रा
र १र १ २ २ १ ५ ४ ५
जादे। वा। औऽहो। ऋतो२३४वा। बृपूहोईहा
५र र २ ४ ५र ५ १ १र २
यि॥(२) राजादाऽयिवऋतंबृहात्। राजा२। देवऋ
२ ४ ५ १र २ १ २ १ १ ३ २
ताऽम्। बृहात्। धर्षामित्रस्यवरू२३णा२। स्वधाऽ

* ऊ० गा० ७प्र० २खा० १७गा०।

४ ५ १ २ १ २ १ ३ २ ४ ५ १ २र
र्माणा। अर्षामित्रस्यवरुण। स्यधाऽर्माणा। प्राहिन्वा।
१ २ २ १ ५ ४ ५
ना। औ३हो। ऋतो२३४वा। व ५ पुहो६हायि(३)॥१८*॥[१५]

२ र १ २
॥ भारद्वाजम्॥ अभिसोमा। सआया१ वा२ः।
१ २र १ २ १ २र
पावन्तमद्यम्मदम्। समूद्रा१स्या२। धायिविष्टपे। म
१ २ १ २ १ २ ५र
नायिषा१यिणा२ः। मत्सारा१सा२३ः। मा२दा२३४औ
र ३ ५
होवा। च्यू२३४ताः(१) ॥ १५† ॥ [१६]

२ र १ २ ३ २ ४ ५
॥ मैधातिथम्॥ अभिसोमोहायि। सआ३यावाः।
१ २ २ १ २ १ २
पवन्ता२हो१यि। माऔ३हो। दायाउवा। मादाउ
१ र २ २ १ २ १
वा। समुद्रस्याधिविष्टपाऔ३हो। मानाउवा। षा
२ १ र २ २ १ २र १ ३र
यिणाउवा। मत्सरासाऔ३हो। मदा। औहो। वा
५ ४ ५ २ र १ २ ३
हो२३४वा। च्यू५तो६हायि॥(१) मत्सरासोहायि। म
२ ४ ५ १ २ २ १ २
दा३च्यूताः। मत्सरा२हो१यि। साऔ३हो। मादा

* ऊ० गा० ८प्र० २खा० १८खा०। † ऊ० गा० ६प्र० २खा० १५खा०।

Digitized by Google

१ २ १ २ २ १
उवा । च्यूताउवा । तरत्समुद्रम्पवमाऔ३हो । ना

२ १ २ १र २ र २ २ १
थाउवा । मायिणाउवा । राजादेवाऔ३हो । ऋता ।

२र १ ३र ५ ४ ५ २र र र १
औहो । वाहो२३४वा । ब५हो६हायि ॥(२) राजादेवो

२ ३ १ ४ ५ १र र २
हायि । ऋता३म्बृहात् । राजादा२हो१यि । वाऔ३

२ १ २ १ २ १ र
हो । आर्त्ताउवा । बृहाउवा । अर्षामित्रस्यवरुणा

२ २ १ २ १ २ १ र २
औ३हो । स्याधाउवा । माणाउवा । प्रहिन्वानाऔ३

२ १ २र १ ३र ५ ४ ५
हो । ऋता । औहो । वाहो२३४वा । ब५हो६हा

यि(३) ॥ ६* ॥ [१७]

४ ३ र ४र ५ र ४ ५ १र २
॥ उत्सेधम् † ॥ अभिसोमासआयवः । पव । तेमा

१र ४र ५ २ १ २
३४औहोवा । दियम्मदारम् । हा३१उवा२३ । ऊ२३४

५ १ २ ४ ५र ४ ५ १ ११
पा । समूद्रस्या । औहोवाहायि । धायिविष्टपायि ।

२ र १ १र २ ५ ३ २ ४र
मनीषायिणाः । हा३१उवा२३ । ऊ३४पा । मत्सा३रा

* ऊ० गा० ८प्र० ३ख० ६गा० । † "उत्सेधः"—इति ख० पु० ।

Digitized by Google

५र ४ २ १ ४ ४ ३र
सः। औहोवायि। मदाश्च्यूपूताईपूईः॥(१) मत्सरा

४र५ ४ ५ ३र १ ३र ४र ५ २ १
सोमदच्युतः। मत्स। रासा३४औहोवा। मदच्युताऽ

२ ५ ३ र ४ ५र ४
२ः। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। तरा३त्समु। औहो

५ १ २१ २र१ २र
वाहायि। द्रापवमा। नऊर्म्मीयिणा। हा३१उवा२३।

२ ५ ३र२ ४र ५प ४ ५ २ २ ४
ऊ३४पा। राजा३देवः। औहोवाहायि। ऋता३म्बृ५

३र४र र३४३४ ५ र र ३र२
हाई५ई त्॥(२) राजादेवऋतंबृहत्। राजा। देवा

३र ४र ५ २ १ २
३४औहोवा। ऋतंबृहाऽरत्। हा३१उवा२३। ऊ३४

५ १२ ४ ५र ४ ५ १ ११ २
पा। अर्षा३मित्रा। औहोवाहायि। स्यावरुणा। स्य

१ १र २ ५ १२ ४र
धर्म्मणा। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। प्रहा३यिन्वानः।

५र ४ ५ २ १ ४ ३ १ १
औहोवाहायि। ऋता३म्ब५हाई५ईत्। औ२३

१ १
४५(३)॥ ३*॥ [१८]

२ र र र र र र
॥ सदोविशीयम्॥ अभिसोमासआयवओहाओहा३

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० ३गा०।

१ र र र १ १ १र१ १ १ ५ १
ए। औहोऔहो३वा। पवन्तेमदियम्मदम्। ओ३हा।

१ र ११र२र१ १ ५ १ १ १
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणः। ओ३हा। मत्सारा१सा

५ १ ५ १ १ ५ १ ५ १
२ः। ओ३हा। ओ३हा३ए। औ३होयि। औ३हो

१ १ १ ५र र १ र र
३वा। मद। च्यू२ता२३४औहोवा॥(१) मत्सरासो

र र र १ र र र १ १र
मदच्युतओहाओहा३ए। औहोऔहो३वा। मत्सरा

र २ ११ ५ १ १ १ १ १र १र १र
सोमदच्युतः। ओ३हा। तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणा।

५ १ १र १ ५ १ ५ १ २
ओ३हा। राजादा१यिवा२ः। ओ३हा। ओ३हा३ए।

५ १ ५ १ १ १ १ ५
औ३होयि। औ३हो३वा। ऋतम्। बृ२हा२३४औ

र १र १ १र र र र २ र र
होवा॥(२) राजादेवऋतंबृहदोहाओहा ३ ए। औहो

र १ १र र १र११११ ५ १ १ र
औहो३वा। राजादेवऋतंबृहत्। ओ३हा। अर्षा।

१ ११ १ १ १ १र ५ २ १ १
मित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणा। ओ३हा। प्रहायिन्वा१ना२ः।

५ १ ५ १ २ ५ १ ५ २ १
ओ३हा। ओ३हा३ए। औ३होयि। औ३हो ३ वा।

१ ३ ५र र २ र १ २ ११
ऋतम्। बृ२हा२३४औहोवा। सदोविश्वा२३
११
४ पुः(३)॥ १६ *॥ [१९]

५ २ ४र५४र ५ २१
॥ जनित्राद्यम्॥ अभिसो३मासआयवाः। ऊवेहो

१ र २ १ र
२यि। पवन्तेमदियामा१दा२म्। समुद्रस्याधिविष्टपा

३२ ३ ५ १२ १ र२
२यि। मना२यिषा२३४यिणाः। मत्सा३होयि। रासा

१ २१ ३ ५रर ५ २ ४र
३हो। मद। च्यू२ता२३४औहोवा॥(१) मत्सरा३सो

५४ ५ २१ १ रर २
मदच्युताः। ऊवेहो२यि। मत्सरासोमदाच्यू१ता२ः।

१ ३२३ ५ १र२ १
तरत्समुद्रम्पवमा२। नऊर्म्मा२३४यिणा। राजा३होयि।

र२ १ २१ ३ ५रर ५रर
दे वा३हो। ऋतम्। बृ२हा२३४औहोवा॥(२) राजा

२ ४५४ ५ २१ १रर र २
दा३यिवऋतंबृहात्। ऊवेहो२यि। राजादेवऋतंबृ

१र ३२३ ५ १
१हा२त्। अधिमित्रस्यवरुणा२। स्यधार्म्मा२३४णा। प्र

* ज० गा० १२प्र० २ख० १६गा०।

हाउयिहोयि । न्वानाउहो । ऋतम् । बृहा२३४औ

होवा । जनित्वा२३४५म्(३) ॥ ८ * ॥ [२०]

॥ दैर्घश्रवसम् ॥ अभिसोमासआयवओहा । ओहा३

ए । पवन्तेमदियम्मदम् । ओ३हा । ओ३हा३ए३४ ।

समू३४द्रस्या । धायिविष्ट । पेमानीषिणाः । ओ३हा ।

ओ३हा३ए३४ । मत्सा३४रासाउः । मदो २ ३ ४ वा ।

च्यू५तोइहायि ॥(१) मत्सरासोमदच्युतओहाओहा३ए ।

मत्सरासोमदच्यूतः । ओ३हा । ओ३हा३ए३४ । तरा

३४त्समू । द्राम्पव । मानाऊर्म्मिणा । ओ३हा । ओ

३हा३ए३४ । राजाजा३४दे वाउः । ऋतो२३४वा । बृ

५होइहायि ॥(२) राजादेवऋतंबृहदोहाओहा३ए । रा

जादेवऋतंबृहात् । ओ३हा । ओ३हा३ए३४ । अर्षा

---

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० ८गा० ।

१ २ १ २ १ २ ५ २ ५
३४मित्रा। स्यावरु। णास्याधर्म्मणा। ओ२हा। ओ
२ २ २ १ २र २ २ १ ५ ४
२हा३ए३४। प्रहा३४यिन्वानाः३। ऋतो२३४वा। बृ
५
५ होऽ६हायि(३) ॥ ५ * ॥ [२१]

१ २ १ र २
॥ सन्तनि ॥ अभीहाउ। सोमामन्द्रा३१उवा २ ३।
५ १ २र १ २ १ र १ १ र २ र
या२३४वाः। पवन्ते मदियम्मद७ंसमुद्रस्याधिविष्टपेमनी
१ २ १ १ १ १ १ २ १ र २
षिणा२३४५ः। मत्साहाउ। रासोमदा३१उवा २ ३।
५ २ १र र १ १ र २ १र र २ १ २
च्यू२३४ताः ॥(१) मत्सरासोमदच्यूतोमत्सरासोमदच्युत
१ २ १ २र र १ २ १ १ १ १ १र २ १
स्तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणा२३४५। राजाहाउ। दा
२ ५ १र र २र १ २ १
यिवऋता३१उवा२३। बृ२३४हात् ॥(२) राजादेवऋतं
२ १ र र १र १ २ १ १ २ १ र २ १ २ १ २ १ २ १ १ १ १
बृहद्राजादेवऋतंबृहद्र्षामित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणा२३४५।
१ २ १ २ १ ५
प्रहायिहाउ। न्वानऋता३१उवा२३। बृ२३४हात्(३) ॥

॥ ७ † ॥ [२२]

---

* ऊ० गा० १४प्र० २ख० ७गा० ।

† ऊ० गा० १४प्र० २ख० ७गा० ।

Digitized by Google

२ १ र र २ र १ २ १ र २ र १ र
॥ आष्टादंष्ट्रोत्तरम्॥ अभिसोमासआयवऐयाहौ।
२ २ १ २र १ २ १ २र
होऽवा। पवन्तेमदियम्। मादा२३म्। ऐया२३त्।
१ र २ १ र २ १ र २ र १ १र
औ२३होवा। समुद्रस्याधिविष्टपेमनो। षायिणा२३ः। ऐया
१ र २ १र र २ १
२३त्। औ२३होवा। मत्सरासोमद। च्यूता २ ३ः।
१र १ र २ १
ऐया२३त्। औ२३होवा३४३। ओ२३४५ई। डा ३)॥

॥ २ * ॥ [२२]

२ र र र
॥ आभीश्रवोत्तरम्॥ अभिसोमासआयवए। ए। पव
र १ ७ २ २ ५ २ २ १ र
न्तेमा२दायमादम्। सा२३५मू। हा३हा। द्रस्याधि
र २ २ २ ५ २ २ १ र
विष्टपेमानी१षिणाः। मा२३४त्सा। हा३हायि। रासो
२१ ५ ४ ५ २ र र
मदो२३४वा। च्यू५तो६हायि ॥(१) मत्सरासोमदच्युत
र ऽर १ ७ २ २ ५ २
ए। ए। मत्सरासो२मादच्यूतः। ता२३४रात्। हा३
२ १ र २ २ २ ५ २
हायि। समुद्रस्यवमानाऊ१र्म्मिणा। रा२३४जा। हा

* ऊ० गा० १६प्र० २ख० २गा०।

२ १ १२ ५ ४ ५
३ हायि । दायिवक्षतोर२३४वा । व५हो ६ हायि ॥(२)
१र र र र र र १ १
राजादेवक्षतंवहदे । ए । राजादे वा३याक्षतंवहात् ।
२ ५ २ २ १ ० २
आर२३४र्षा । हा ३ हायि । मित्रस्यवरुणस्याधर्म्मणा ।
१ ५ १ २ १ २ १ ५ ४
प्रा२३४हायि । हा३हायि । न्वानक्षतोर२३४वा । व५
५
होइहायि(३) ॥ ३ * ॥ [२३]

५ २ ४र ५र४५ १
॥ आष्कारनिधनम् † ॥ अभिसोऽमा स ऽआयवाः । पः
२र १ २ १ २ १ २
वन्तेम । दियार३म्मदाउ । वा३२ । समुद्रस्या । धि
१२१ २१र ५ १ २ १प र २
विष्टपायि । मनीषार२३४यिणाः । मार३त्सा । रासोम ।
१ ५ २ ४र ५ ४ ५ १ २र
दच्यु२३४५ताइ५६: ॥(१)मत्सरा३सोमऽदच्युताः । मात्सरा
१ २ १ २ १ २ ३ २
सः । मदार२३च्युताउ । वा २ ३ । तरत्सम् । द्रप्सव
१ २ १र ५ १ २ १र १ १
मा । नजम्मार२३४यिणा । रार३जा । देवक्ष । तंव
५र र २ ४ ५ ४ ५ १ र
२३४५हाइ५६त् ॥(२) राजादा३यिवक्षऽतंवहात् । राजा

• ऊ० गा० १६प्र० १अ० २गा० । † "आष्कारनिधनं काश्यम्"—इति ख० पु० ।

Digitized by Google

१र १ २ १र २ १ २ २
दे वः। ऋतार२३बृहात। वा३२। अर्षामित्रा। स्यव
२ १ २ १ ५ १ २ १र २ १
रुणा। स्यधर्म्मा२३४णा। प्रा२३हायि। न्वानका। तं

२ १ १ १ १
बृ२३४५हाई५६त्। आ२३४५प्(३)॥ २* ॥ [२४]

२ र र ३ ५
॥ मानवाद्यम्॥ अभिसोमा। सआाया२३४वाः। २।

१ २प १ २ १ २ र
पावन्तेम। दियाममा१दा२म्। सम्। ऊ। द्रसा।

१ ० २ १ २ ५ १ २ र १
धायिविष्टपा३यि। मना२यिषा२३४यिणाः। मत्सरासा

१ २ ५र र २ ५ २
२३ः। मा२दा२३४औहोवा। च्यू२३४ताः॥(१) मत्स

र २ ५ २ ३ ५ १ २र
रासाः। मदच्यू२३४ताः। मदाच्यू२३४ताः। मात्सरा

१ २ १ २ १ ० २
सः। मदाच्यू१ता२ः। त। रत्। समु। द्राम्पवमा

१ ३ ५ १र २र र १ १ २
३। नऊ२र्म्मा२३४यिणा। राजादेवा२३ः। आ२र्त्ता

५र र २ ५ २ र र
२३४औहोवा। बृ२३४हात्॥(२) राजादेवाः। ऋतं

२ ५ २ २ ५ १ र २र १ २
बृ२३४हात्। ऋतांबृ२३४हात्। राजादेवः। ऋतांब

* ऊ० गा० १८प्र० २ख० २सा०।

Digitized by Google

१ २ १ १ २ १
१ड्र२त्। अ। या। मित्र। स्य। वरुणा३। सुधा
२ ३ १ २ २ १ १ ३ ५र २
२र्म्मा२३४णा। प्रश्चिन्वानार३ः। या२ता२३४औहोवा।
२ ५
वृ२३४हात्(३) ॥ १० * ॥ [२५]

१ २र १ २र १ २
॥ महावैष्टम्भम्॥ अभिसोमोहायि। सम्मायवोवा।
१ २र १ २ १ २ २
पावन्तोम। दियाम्मा१दा२३म्। होवा३हायि समु
१ र २१र २१ २ १२ १
द्रस्याधिविष्टपे। मनायिषा १ यिणा२३ः। होवा३हा
१ २ १ २ २ १
यि। मत्सारा१सा२३ः †। होवा३हायि। मद। च्यूर
३ ५र र १ २र१ २ १ २
ता२३४औहोवा ॥(१) मत्सरासोहायि। मदच्युतोवा।
१ २र १ २ १ २ २ १
मात्सरासः। मदाच्यु१तार३ः। होवा३हायि। नर
२ १ २र १ २ १ २ २
समुद्रम्यवमा। नजर्म्मा१यिणा२३। होवा ३ हायि।
१र २ १ २ २ १ ३
राजादा१यिवा२३ः। होवा३हायि। ऋतम्। वृ२हा२
५र र १र र २र१ २ १ २ १
३४औहोवा ॥(२) राजादेवोहायि। ऋतंवृहोवा। रा

---

* ऊ० गा० १८प्र० २ख० १०गा०। † "मत्सारासा१२"—इति ख० पु० पाठः।

र १र   १ १   १ २ १   १ र १
जाऽदेवः । ऋतांव१्वा२इत् । हौवा३हायि । अर्षामि

१ १ १ १   १ १   १ २ १   १
चक्षवरुण । स्वधार्मा१्ष्मा२३ । हौवा३हायि । प्रक्ष

२   १ २ १   १   २
यिन्वा१ना२३ । हौवा३हायि । ऋतम् । बृ२हा२३४

१र र
औहोवा(३) ॥ १० * ॥ [२६] ९

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमम् ।

३ १ २र ३ १ २र
तिस्रोवाचईरयतिप्रवह्निः

३ १ २ ३ १ २र ३ २
ऋतस्यधीतिम्ब्रह्मणोमनीषाम् ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
गावोयन्तिगोपतिम्पृच्छमानाः

१ २ ३ १ २ ३ २
सोमंयन्तिमतयोवावशानाः ॥ १† ॥

"वह्निः" वोढा यजमानः "तिस्रोवाचः" ऋग्यजुःसामात्मिकाः स्तुतीः प्रेरयति । तथा "ऋतस्य" यज्ञस्य "धीतिं" धारयित्रीं "ब्रह्मणः" परिवृढस्य सोमस्य "मनीषां" मनस ईशित्रीं कल्याणीं वाचं प्रेरयति । किञ्च "गोपतिं" वृषभं यथा गावोऽभिगच्छन्ति तद्वत् गवां स्वामिनं सोमं "गावः"

* ऊ० गा० १२प्र० २ख० १०गा० ।

† ऋ० सा० ६, ६, ४, १ (२भा० ११२पृ०) = ऋ० वे० ७, ४, १७, ४ ।

"पृच्छमानाः" पृच्छन्त्यः सत्यः यन्ति स्व-पयसा मिश्रयितुम् अभिगच्छन्ति । तथा "वावशानाः" कामयमानाः "मतयः" स्तोतारश्च "सोमं" "यन्ति" स्तोतुमभिगच्छन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ २उ
सोमङ्गावो धेनवो वावशानाः

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः

१ २ ३ २ ३ २ १ १ २
सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सन्नवन्ते ॥ २* ॥

"धेनवः" † प्रीणयित्र्यो "गावः" "सोमं" "वावशानाः" कामयमाना भवन्ति, "विप्राः" मेधाविनः स्तोतारः ‡ "सोमं" "मतिभिः" स्तुतिभिः ¶ "पृच्छमानाः" पृच्छन्तो भवन्ति "सुतः" अभिषुतः "सोमः" "पूयमानः" ऋत्विग्भिः "ऋच्यते"

* ऋ० वे० ७, ४, १७, ५ ।

† 'आदित्यरश्मयो धेनवः'—इति वि० ।

‡ 'विप्राः—ब्राह्मणाः . . . अथवा विप्रा आदित्यरश्मयः'—इति वि० ।

¶ 'मतिभिः—प्रज्ञाभिः'—इति वि० ।

Digitized by Google

चरति *। तथा "त्रिष्टुभः" त्रिष्टुब्रूपाः † "अर्काः" अस्माभिः क्रियमाणा एते मन्त्राः "सोमे" "सन्नवन्ते" सङ्गच्छन्ते॥

"सोमस्सुतऋच्यतेपूयमानः"—इति छन्दोगाः, "सोमःसुतः पूयतेअज्यमानः"—इति बह्वृचाः॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३
एवानःसोमपरिषिच्यमान
१ २ ३ १ २ ३ २
आपवस्वपूयमानःस्वस्ति।
२ ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रमाविशबृहतामदेन
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वर्द्धयावाचञ्जनयापुरन्धिम्॥ ३‡॥ १०

हे "सोम!" "परिषिच्यमानः" परितः पात्रेषु सिच्यमानः पूयमानः त्वं "नः एव" अस्माकमेव "स्वस्ति"¶ अविनाशम् आ पवस्व प्रापय। किञ्च "बृहता" महता "मदेन" मदकर-रसेन सहम् "इन्द्रम्" "आविश" प्रविश। तथा "वर्द्धया" "वाचं" स्तुति-लक्षणां § प्रसिद्धां कुरु। किञ्च

* 'ऋच्यते—ऋच् गतौ। गच्छति'—इति वि०।

† 'त्रिष्टुप्छन्दस्काः अथवा त्रिष्टुभः त्रयीं विद्यां स्तोभयन्तः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १८, १। "रवेण"—इति च तत्र पाठः।

¶ 'स्वस्ति—क्षेमं कुरु'—इति वि०।

§ 'वाचम्—ऋग्यजुःसामलक्षणम्'—इति वि०।

Digitized by Google

"पुरन्धिं" बहुधियं प्रज्ञानं * "अनया" † असभ्यमुत्पादय। वाक्यभेदादनिघातः ‡ ॥ २ ॥ १०

॥ सङ्गोग्रम्॥ घोयि। घो। घा३घोयि। तिस्रो वाचाः। ई३रय। तिप्रवह्नीः। ऋतस्यधायि। तो३ म्ब्रह्म। णोमनीषाम्। गावोयन्तायि। गो३ पतिम्। पृच्छमानाः। सोमंयन्तायि। मतयः। वा३४३। वा ३४३। वा३आ५ना६५६ः ॥(२) सोमङ्गावो। धे३नवः। वावशानाः। सोमंविप्राः। मतिभिः। पृच्छमानाः। सोमःसुताः। ऋच्यते। पूयमानाः। सोमेअर्काः। त्रिष्टुभः। सा३४३म्। ना३वाऽ५ता६५ईयि ॥(२) एवा

* 'पुरन्धिं'—पुष्टिम्'—इति वि०।

† 'ऋच मन्त्रे' इत्येवमादौ बहुल छान्दसं दीर्घत्वम्। यथाच—"एवा"—इत्यत्र "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दीर्घः, "वईवा"—"अनया"—इत्यनयोस्तु "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इत्यत्र "तिङः"—इति, योगविभागाद्दीर्घः।

‡ "तिङ्ङतिङः (८, १, २८)"—इति प्राप्तौ निघातः "छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् (८, १, ३५)"—इति तदभावइत्यर्थः।

Digitized by Google

१ १ १ २ ४ ५ २र १ १ १

नःसो। मा३परि। षिच्यमानाः। आपवस्वा। पू३य

र २ १ ४ ५ १ १ र १ १ २ १ ४ ५

मा। नःसुवस्ती। इन्द्रमावायि। आ२वृच। तामदेना।

१ १ १ २१र १ १

होयि। यो। हा२योयि। वर्हुयावा। चा२च्छन।

२ २ ४

या३४३। पू२रा५धा६५६यिम्(३) ॥ १७ * ॥ [१] १०

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

तृतीयः खण्डः † ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थखण्डे, ‡ प्रगाथरूपे—

प्रथमसूक्ते—प्रथमा।

१ २र १ २र २ १ २र १ १

यद्यावइन्द्रतेशतंशतम्भूमीरुतस्युः।

१ १ १ २ २ २ २ १ २ २ १ २ १ २ १ १ २

नत्वावज्रिन्सहस्रंसूर्य्याअनुनजातमष्टरोदसी ॥ १ § ॥

---

* उ० गा० २प्र० १ख० १७पा०। † 'जन्तो माध्यन्दिनः'—इति वि०।

‡ 'इदानीं पृष्ठान्युच्यन्ते। रथन्तरं, बृहत्, विरूपं, वैराजं, शाक्वरं, रैवतञ्चेति पृष्ठः षड्विधः, तत्र पृष्ठानि सधर्मकाणि भवन्ति'—इति वि०। 'रथघोषं, दुन्दुभ्याघातम्, उपवाजनम्, वर्षोऽग्निमन्थनम्, चार्षघोषः, गवां घोषः इति पृष्ठधर्मा यथाक्रमं षट् पृष्ठे षड्वे यदन्वयन्ति गौरीवितं साम'—इति च वि०।

§ छ० आ० ३, २, ४, ६ (१ भा० ५०२४०)=ऋ० वे० ६, ५, ८, ५।

हे "इन्द्र!" "ते" तव प्रतिमानार्थं "यद्" यदि "द्यावः" द्युलोकाः "शतं" शत-सङ्ख्याकाः "स्युः" तथापि नाश्नुवन्ति। "उत" अपिच "भूमीः" भूम्यः "ते" तव मूर्त्ति-प्रतिबिम्बाय "शतं" स्युः तथापि "न" अश्नुवन्ति। हे "वज्रिन्" "त्वा" त्वाम् "सहस्रं" "सूर्याः" अगणिता अपि सूर्याः "न" "अनु" भवन्ति न प्रकाशयन्तीत्यर्थः। "न तत्र सूर्यो भाति (क०उप०)" —इति श्रुतेः। किं बहुना जातं पूर्वमुत्पन्नं किञ्चित् त्वामनु "नाष्ट" नाश्नुते तथा "रोदसी" द्यावापृथिव्यौ नाश्नुवाते सर्वेभ्योऽतिरिच्यसे इत्यर्थः। "ज्यायान् पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षाद् दिवो ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः"—इति (छ० उप०) श्रुतेः॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
आपप्राथमहिनावृष्ण्यावृषन्विश्वाशविष्ठशवसा।
३ १ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ १ २
अस्माँ॒ अवमघवन्गोमतिव्रजेवज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः॥२*॥११

हे "वृषन्" अभिमतवर्षकेन्द्र! त्वम् "आ पप्राथ" आ पूरयसि व्याप्नोषि। कानि? "विश्वा" सर्व्वाणि "वृष्ण्या" वर्षकाणि बलानि शत्रु-सम्बन्धीनि। केन साधनेन? "महिना" महता "शवसा" बलेन स्वीयेन अथवा वृष्ण्येत्येतच्छवो विशेषणम्। तथा सति अभिमतवर्षकेण महता बलेन अस्मदीयानि बलानि पूरयसीत्यर्थः। अथ तथाकृत्वा हे "शविष्ठ" बल-

---

* ऋ० वे० ६, ५, ९, १।

वत्तम ! "गोमति" बहुभिः गोभिर्युक्ते "व्रजे" गवां-सम्बन्धि-निमित्ते सति "अस्मान्" "अव" रच। हे "मघवन्" धनवन् ! "वज्रिन्" वज्रयुक्तेन्द्र ! कैः साधनैः ? "चित्राभिः" नानाविधैः "ऊतिभिः" रक्षणैरिति ॥ २ ॥

१ र २ १   २र १ २
॥ महावैष्टम्भम् ॥ यद्यावओहायि। द्रतेअतोवा।
१ २र र   १ २   १ २ २   १ र
शातम्भूमीः। उतासी१यू२३ः। होवा३हायि। नत्वा
२   १ २ १र   २ १ १   १ १ २   १
वज्रिन्सहस्र७सू। रियाआ१नू२३। होवा३हायि। न
२   १ २ २   १र   २   ५र र
जाता१मा२३। होवा३हा। इरो। दा२सौ२३४औहो
१ र२ १   १ र   १ १   १ र २
वा ॥(१) नजातमोहा। इरोदसोवा। नाजातम।
१ २   १ २   २   १र   २र   र
इरोदा१सा२३यि। होवा३हायि। आपप्रायमहिनाइ।
१ २   १ २ २   १ २
ष्ठियावा१र्षा२३न्। होवा३पायि। विश्वाआ१वा२३।
१ २ २   १   २   ५र र   १ र
होवा३हा। इअ। वा२सा२३४औहोवा ॥(२) विश्वा
२ १   २   १ २   १   र २   १ २
अवोहायि। इअसोवा। वायिश्वाअवि। इआवा१सा

Digitized by Google

१ २ १ १र २ र १
२३। हौवा ३ हायि। अस्मा२ऽऽअवमघवन्गो। मतायि
२ १ २ १ १ १
व्रा१जा२३यि। हौवा३हायि। वज्रायिश्चा१यित्रा २ ३।
१ २ २ १र २ १ ५र र
हौवा ३ हायि। भिह। ता २ यिभा २ ३ ४ औहोवा॥

॥ १८ *॥ [१] ११

अथ द्वितीयखण्डे†—प्रथमा।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
वयन्त्वासुतावन्तआपोनवृक्तबर्हिषः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रस्यप्रस्रवणेषुवृत्रहन्परिस्तोतारआसते॥ १‡॥

हे "वृत्रहन्" इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "वयं च" वयं खलु "सुतवन्तः" "आपः न" आप इव प्रवणमभिगच्छामः। "पवित्रस्य" सोमानां प्रस्रवणेषु "वृक्तबर्हिषः" तीर्णबर्हिषः स्तोतारश्च त्वां पर्युपासते॥ १॥

---

* ऊ० आ० २२प्र० १ख० १८सा०।

† 'वामदेव्यं सैवावरुणं साम, वैद्रुमं वाजपाव्यं वि, रौरवमच्छावाकं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ३, २, १, ८ (१ भा० ५४० पृ०) = ऋ० वे० ८, ३, ७, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २

स्वरन्तित्वासुतेनरोवसोनिरेकउक्थिनः।

३ २ ३ १ २ ३ २ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

कदासुतन्तृषाणओकआगमइन्द्रस्वब्दीववꣳसगः॥ २* ॥

हे "वसो" वासयितरिन्द्र! † "त्वा" त्वां "सुते" अभिषुते सोमे "निरेके" निर्गमे ‡ "उक्थिनः" ¶ "नरः" नेतारः "स्वरन्ति" शब्दायन्ते §। अपिचेन्द्रः "सुतं" सोमं प्रति "तृषाणः" तृष्यन् "स्वब्दीव" स्वभूत-शब्दी इव ‖ "वंसगः" वननीय-गमनो** वृषभः शब्दं कुर्वन् "कदा" "ओकः" स्थानम् "आगमत्" आगच्छेत्॥ २॥

---

* ऋ० वे० ६, ३, ७, २। "गमदिन्द्र"—इति मु० पाठः सायण-सम्मतश्च।

† 'वसो निरेके—हे वसो! प्रशस्तधन!'—इति वि०।

‡ 'निरेके—दानवति यज्ञे। अथवा वसोनिरेक इत्येकं पदम्, तथा सा षष्ठी क्रियते—वसुनः धनस्य निरेके'—इति वि०।

¶ 'उक्थिनः—उक्थानि सामानि, ते तद्वन्तः'—इति वि०।

§ 'स्वरन्ति सामभिः'—इति वि०।

‖ 'स्वब्दो इन्द्रः। शोभन-शब्दं करोति, दर्शयोभूत्वा हविर्धारयं'—इति वि०।

** 'वंसगः—वननीयगमः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १२ २२ ३ १ २
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम् ।
३ १ २ ३ १२ २२
पिशङ्गरूपम्मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ ३ * ॥ १२

हे "धृष्णो" धर्षकेन्द्र ! † "कण्वेभिः" कण्वान् मेधाविनः स्तोतॄन् अनुग्रिह्य [विभक्ति-व्यत्ययः (३, १, ८५)] "सहस्रिणं" सहस्र-सङ्ख्याकं "वाजम्" "आदर्षि" प्रयच्छसि । हे "मघवन्" धनवन् ! "विचर्षणे" विद्रष्टरिन्द्र ! ‡ "धृषत्" धृष्टं "पिशङ्ग-रूपं" ¶ "गोमन्तम्" वाजं § "मक्षू" शीघ्रम् ‖ "ईमहे" याचामहे, त्वामिति शेषः ॥ ३ ॥ १२

२ १ २ १ २ २ १ १
॥ महावैष्टम्भम् ॥ वयन्त्वोहायि । सुतावन्तोवा ।
१ २ १ १ २ १ २ २ १
आपोनरः । वृक्तबार्हो१यिषा२३ः । ह्वोवा३हायि । पवि

* ऋ० वे० ६, ३, ७, ३।

† 'धृष्णो—धारकशील !'—इति वि० ।

‡ 'विचर्षणे—विविधाश्चर्षणयः पुरुषाः यस्य स विचर्षणिः, अथवा विश्वस्य द्रष्टा'—इति वि० ।

¶ 'पिशङ्गरूपं—सुवर्णवर्णम्'—इति वि० ।

§ 'गोमन्तं—गोक्षीरयुक्तम्'—इति वि० ।

‖ 'मक्षु—मक्षणीयम्'—इति वि० । "निपातस्य च (६, ३, १३३)"—इति दीर्घः ।

Digitized by Google

२ १ १र १ २ १ २ २ १
न्वस्यप्रस्रवणे। धुवार्चो१हा२३न्। होवा३हायि। परा

२ १ २ २ १र ३ ५र
यिस्तो१ता२३। होवा३हा। रया। सा२ता२३४औ

र १ २ १ १र १ १ १ २ र
होवा॥(१) स्वरन्तित्वोहायि। सुतेनरोवा। वासोनि

र १ २ १ २ २ १र २ १
रे। कजश्या१यिना२३ः। होवा३हायि। कदासुत

२र १ र २ १ २ १ २ २ १
न्तृषाणऔ। कआगा१मा२३ः। होवा३हायि। इन्द्र।

२ १ २ २ १ ३ ५र
स्वा१ब्दी२३। होवा३हा। वव। सा२गा२३४। औ

र १ र ० १ २ र १ २ १ २
होवा॥(२) कण्वेभिर्द्धोहा। ष्णुवाधृषोवा। वाजन्द

१ २ १ २ २ १
र्षि। सहास्रा१यिणा२३म्। होवा३हायि। पिशङ्ग

२र १ २ १ २ २ १
रूपम्मघवन्। विचार्षा१णा२३यि। होवा३हायि। मचू

२ १ २ २ १र ३ ५र र
गो१मा२३। होवा३हा। तमी। मा२हा२३४औहो

३ ५
वा। दी२३४आः(३)॥ १८ *॥ [१]

५र १ २ १ २
॥ अभिनिधनङ्काण्वम्॥ औहोहोहायि। आयिही।

---

* ऋ० गा० २प्र० १ख० १८गा०।

१ २ ३ ५ २ ३ ५ १ २
वायाम् । घा२३४ल्वा । सूतावा२३४न्ता: । आपोना२

५ २र १ २र १ ३ ५ २
३४वृ । ताबर्हिषा: । ऐहोयि । आ२३४यिही । पा

३ ५ २ ३ ५ २र१ २र १
विना२३४स्या । प्रास्तावा२३४णे । घृष्वहान् । ऐहोयि ।

३ ५ २ ३ ५ ३ २ ४
आ२३४यिही । पारिस्तो२३४ता । र आ३सा५ता६ ५ ६

२र १ २ १ २ १ २ २
यि ॥(१) औहोहोहायि । आयिही । स्वारा । ता२

५ २ ३ ५ २ ३ ५ २र
३४यित्वा । सूतेना२३४रा: । वासोना२३४यिरे । का

१ २र १ ३ ५ २ ३
उक्थिना: । ऐहोयि । आ२३४यिही । कादासू२३४

५ २ ३ ५ २र १र २र १
ताम् । तार्षाणा२३४ओ । कामागमा: । ऐहोयि ।

३ ५ २ ३ ५ ३ २ ४
आ२३४यिही । आयिन्द्राखा२३४व्दो । ववा३९सा५गा

२र १ २ १ २ १ २ ३
६५६: ॥(२) औहोहायि । आयिही । काण्वे । भा२

५ २ ३ ५ २ ३ ५ २र
३४यिर्ना । व्यावाधा२३४षात् । वाजन्दा२३४षी । सा

१ २ २र १ ३ ५ २ ३
हस्रिणाम् । ऐहोयि । आ२३४यिही । पायिमज्ञा२३

५ २ २ ५ २र १ २र १ २
४ह्व। पन्माघार२३४वान्। वीचर्षणायि। ऐहोयि। आ
५ २ ३ ५ ३ २ ४
२३४यिहो। मात्तूगो२३४मा। तमा३यिमा५घा६ ५ ६
२ ५
यि। आर२३४भो(३)॥ ८*॥ [२]

५ ५ २ ४ ५र ४ ५ १र
॥ अभीवर्त्तम्† ॥ वया३द्वा३त्वासुतावन्तोवा। आपो
२ १ २ १ २ २ ४
नवृ। ऊबार्हा१यिषा२ः। पाविन्नस्या३१२३ ४। प्रस्तव
५र २ १ २ १ २ २ १
णे। षुवार्त्रा१हा२न्। परायिस्तो १ ता २। रथा ३।
१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५र ४ ५
सा२३४५। ता२३४यि ॥(१) खरा३न्ता३यित्वासुतेनरोवा।
१र २र १ २ १ २ २
वासोनिरे। कऊक्था१यिना२ः। कादासुता३१२३४म्।
२ र ४ ५र २ १ २ १ २ २ २
चिषाणभो। कथागा१मा२ः। इन्द्रासा१ब्दौर२। ववा
१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५र
३। सा२३४५। गा२३४५ः ॥(२) कण्वे३भा३यिधृष्णवा
४ ५ १ २ १ २
धृषोवा। वाजन्दषि। सहास्रा१यिणा२म्। पायिश्ङ्ग
२ ३ ४ ५ २ १ २ १ २
रू३१२३४। पन्मघवन्। विचार्षा१णा२यि। मत्तूगो१

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० ८सा०। † "अभीवर्त्तः"—इति ख० पु०।

२१ १ २११११
मार। तमाइयि। मा२३४५। हा२३४५यि(३) ॥ ६* ॥[३]

१२

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते†—प्रथमा।

३२३ १ २ ३२ ३१२ ३२
तरणिरित्सिषासतिवाजम्पुरन्ध्यायुजा।
२ ३१२ ३१२ ३२३ १ १२३ १ २
आवइन्द्रम्पुरुहूतन्नमेगिरानेमिन्तष्टेवसुद्रुवम् ॥ १‡ ॥

"तरणिरित्" युद्धादौ कर्मणि त्वरितएव पुमान् "पुरन्ध्या" महत्या धिया "युजा" सहायभूतया "वाजम्" अन्नं "सिषासति" सम्भजते, "पुरुहूतं" बहुभिराहुतम् "इन्द्रम्" "गिरा" स्तुत्या हे यजमानाः "वः" युष्मदर्थम् अहम् "आ नमे" आनतमभिमुखं कुर्वे। तत्र दृष्टान्तः—"नेमिं" चक्रस्य वलयम् "सुद्रुवं" शोभनदारु "तष्टेव" यथा वर्द्धकिः दारु-नेमिमानमयते तद्वदित्यर्थः ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० ६प्र० १अ० ६खा०।

† 'रौरवमत्स्यावाकं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० २, १, ५, ६ (१ भा० ४९३ पृ०) = य० वे० ११, २१ = ऋ० वे० ५, ३, २०, ५।

अथ द्वितीया ।

१ २३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २
नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यतेनस्रेधन्तꣳरयिर्नशत् ।
१ २ ३ १ १ २ २ ३ १ २ ३ १२ ३२ ३ २
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यम्मावतेदेष्णंयत्पार्येदिवि ॥ २* ॥१२

"द्रविणोदेषु" धनदातृषु पुरुषेषु "दुष्टुतिः" असमीचीना स्तुतिः "न शस्यते" नाभिधीयते । किञ्च "स्रेधन्तं" हिंसन्तं धनदातृविषय-स्तुत्यादि-कर्माण्यकुर्वन्तमित्यर्थः, एवम्भूतं जनं "रयिः" धनं "न नशत्" न व्याप्नोति । तथा हे "मघवन्" धनवन्निन्द्र ! "पार्ये दिवि" सौत्ये दिवसे † "मावते" मत्सदृशाय स्तोत्रे "देष्णं" दातव्यं "यत्" धनमस्ति तत् "तुभ्यं" त्वत्तः सकाशात् "सुशक्तिरित्" शोभन-स्तुतिकएव स्तोता लभत इति शेषः ॥

"नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यते"—इति छन्दोगाः, "नदुष्टुती मर्त्योविन्दतेवसु"—इति बह्वृचाः ॥ २ ॥ १२

२ १ ५ १
॥ रौरवम् ॥ नरणिरित्साꣳयिषासार२३४ती । वा५जम्पु
२ २ २ ३१ १ २ २
रन्ध्यायुजावइन्द्रम्पूरुहूतन्नमार२यिगिरा । औहो३ऽवा ।

---

* ऋ० वे० ५, ७, २१, १ ।

† 'पार्ये दिवि—पारणीये द्युलोके'—इति वि० ।

Digitized by Google

१र र २ १र र १ १
नेमिन्तष्टे वसू२३हाइ । नेमिन्तष्टे वसा२३उहाइ । ओ
२ २ १ ४ ५ १र र
हा३उवा । द्रुवाम् । औ२३होवा ॥(१) नेनिन्तष्टे वा
१ ५ १ र र
३सुद्र२३४वाम् । नायिमिन्तष्टे वसुद्रुवन्नदुष्टूतिर्द्र विणो
र २ २ २ २ २ १ र ऽ
देषुशा२स्यतायि । ओहा३उवा । नस्ते धन्ता२रया२३
२ १ २ २ १ ४ ५
यिर्हायि । ओहा३उवा । नशात् । औ२३होवा ॥(२)
२ र १ ५ १ र
नस्ते धन्त२रा३यिर्न्ना२३४शात् । नाऽस्ते धन्त२रयिर्नशत्सु
३ २ १ २ २ १र
शक्तिरिन्मघवन्तुभ्यम्मा२वतायि । ओहा३उवा । देष्णं
र २ १ २ २ १ २
यत्पारिया२३यिहायि । ओहा३उवा । दिवा । औ३
३ ५ ४
होवा । हो५ई । डा(३) ॥ १८ * ॥ [१] १३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः † ॥ ४ ॥

---

* ऊ० गा० २प्र० १ब० १८सा० ।

† 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ पञ्चमे खण्डे*—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

२ ३उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तिस्रोवाचउदीरतेगावोमिमन्तिधेनवः।
१ २ ३ १ २
हरिरेतिकनिक्रदत्॥ १† ॥

"तिस्रोवाचः" ऋगादिभेदेन "उदीरते" प्रोद्गायन्ति ऋत्विजः। "धेनवः" आशिरेण प्रीणयित्र्यो "गावः" "मिमन्ति" शब्दायन्ति दोहार्थम्, "हरिः" हरितवर्णः सोमश्च "कनिक्रदत्" शब्दं कुर्वन् "एति" गच्छति द्रोणकलशम्॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभिब्रह्मीरनूषतयह्वीऋतस्यमातरः।
३ १ २ ३ १ २र
मर्ज्जयन्तीर्दिवःशिशुम्॥ २‡ ॥

"ब्रह्मीः" ब्राह्मण-प्रेरिताः¶ "यह्वीः" महत्यः [‘यह्वः’—इति महन्नाम (निघ० ३, ३, १३)] "ऋतस्य" यज्ञस्य "मातरः"

---

* ‘इदानीं तृतीयसवनमारभते’—इति वि०। ‘पाठौषं साम’—इति वि०।

† छ० आ० ५, २, ४, ५ (२ भा० १६) = ऋ० वे० ६, ८, २३, ४।

‡ ऋ० वे० ६, ८, २३, ५।

¶ ‘ब्रह्मीः—ब्रह्मणा या याः छन्दयन्ति ता ब्रह्मीः’—इति वि०।

Digitized by Google

निर्मातारः स्तुतयः* "दिवः" द्युलोकात्† "शिशुं" शिशु-स्थानीयं सोमम्‡ "मर्जयन्तीः" पावयन्तीः "अभ्यनूषत" स्तुवन्ति [तृतीयस्यामितोदिवि सोमआसीदित्यादि श्रुतेः द्यु-शिशुत्वं तस्य]॥

"मर्जयन्तीः"-"मर्मृज्यन्ते"—इति पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रायःसमुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यंसोमविश्वतः।
१ २ ३ १ २
आपवस्वसहस्रिणः॥ ३ ¶ ॥ १४

"रायः" धनस्य सम्बन्धिनश्च "चतुरः समुद्रान्" मणि-मुक्तादि-धन-पूर्णानित्यर्थः। तादृशान् समुद्रान् "अस्मभ्यम्" अर्थाय हे "सोम!" "विश्वतः" सर्वतः "आ पवस्व"। तथा "सहस्रिणः" § अपरिमितान् कामान् आपवस्व प्रयच्छ [चतुःसमुद्रस्य धन-विशेष-प्राप्ते तन्मध्यगत-धन-भूमि-स्वामित्वमन्तरेणा सम्भवात् चतुस्समुद्र-सहित-भूमण्डल-स्वामित्वमेवाशास्ते यजमानः]॥ ३ ॥ १४

---

* 'मातरः—धेनवः आदित्यरश्मयो वा आपो वा'—इति वि०।

† 'दिवः—द्युलोकात् सकाशात्'—इति वि०।

‡ 'शिशुं शंसनीयं सोमम्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, ८, २२, ६।

§ 'सहस्रिणः—सहस्रमर्जिताः'—इति वि०।

१ २ २ २१ १२ १२

॥ पाष्ठौहम् ॥ तिस्रोवाचा २उदीरताथि । गावो।

१ १२ १ १

मिमन्तिधेनवः । हरिरा२३यितौ । कनी२ । ऊवायि ।

५ १ १ ३ ५२ २ १

होऽ३वा३ । क्ना२दा२३४औहोवा ॥(१) अभिब्रह्मा २यि

२ १ १ १२ २ १

रनूषता । यह्वीर्ऋतस्यमातरः । मर्ज्जया२३न्तीः । दिवौ

१ ५ १ १ १ ५२ २

२ । ऊवायि । होऽ३वा३ । शा२यिशा२३४औहोवा ॥(२)

१२ २ १ १ १ २ २

रायःसमू२द्राᳬश्चतुराः । अस्मभ्यᳬसोमविश्वताः । आ

१ १ ५ १ १

पवा२३स्वा । सह्री२ । ऊवायि । होऽ३वा । स्वा२यि

१ ५२ २ ६२ १ १ १ ३ १ १ १ १

णा२३४औहोवा । हाओवा । ओवा२३४५ ॥ २०* ॥ [१]

४ ३ २ ४ १ ३२५

॥ क्षुल्लकवैष्टम्भम् ॥ तिस्रोऽ५वा । चा३उदीरताथि ।

१ २ १ १ १ १ १ १ १

गावोमिम । तिधायिता१वा२३ः । होवा३हायि । हरा

१ १ १ १ १ १

यिरा१यितौ२३ । होवा३हायि । कनि । क्ना२दा२३४

५२ २ ४ ३ ४ १ ३२५ १ २

औहोवा ॥(१) अभाऽ५यिब्र । ह्मा३यिरनूषता । यह्वी

---

* ऊ० गा० २प्र० १अ० १०सा० ।

२ १ २ १ १ २ १ २
कृत। स्यमाता१रा२३:। होवा३हायि। मज्जाया१

१ २ २ १ २ ५र
न्ती२३:। होवा३हायि। दिव:। ग्रा२यिग्रा२३४ग्रौ

र ४र ३ ४ २र २ ५ १
होवा ॥(२) रायाऽ५:सम्। ऊ३द्रा॰स्वतुरा:। ग्रास्म

२ र १ २ १ २ २ १र
भ्य॰सो। मवायिस्वा१ता२३:। होवा३हायि। ग्रापा

२ १ २ २ १ ३ ५र
वा१स्वा२३। होवा३हायि। सद्य। स्वा२यिणा२३४ग्रौ

र ३ ५
होवा। दौर२३४ग्रा:(३) ॥ १६ * ॥ [२]

१ र २र १
॥ सा॰हितम ॥ तिस्रोवाचउत्। ग्रा२यिरतायि।

२र १ २ १ १ २
गावो२। मा२३यिमा। तिधा२यिनावा:। हा२३रौ:।

१ ० २ ५
ग्रा२यितायि। कना२३। हाउवा३। क्रा२३४दात् ॥(१)

२ १ २र १ २ १ २
ग्रभिब्रह्मीर। नू२षता। यह्वा२यि:। ग्रा२३र्त्ता।

१ १ २ १ ०
स्यमा२तारा:। मा२३र्ज्जा। या२न्तायि:। दिवा२

२ ५ २र १ २ र
३:। हाउवा३। ग्रा२३४यिग्रूम् ॥(२) राय:समुद्रान्।

* ऋ० गा० ७प्र० १ख० १६गा०।

१ १ १ २ १ १
चा२तुराः। अस्मा२। भ्या२३ꣳसो। मवा२यिस्वा
२ १ ० २
ताः। आ२३पा। वा२स्वा। सद्दा२३। द्दाउवा३।
५
द्दो२३४णाः(३)॥ ७ * ॥ [३]

१ र २र १ २ १र
॥ ऐडसैन्धुक्षितम्॥ तिस्रोवाचो। द्दायि। उद्दो
२ १र र २ २ २ २
रा२३तायि। गावोमिमन्तिधा१यिना२वाः। द्दरिरेतो
५ १ २ २ १ ४
२३४द्दायि। कानार्यिद्दायि। क्रदात्। औ२३हो
५ १ २१ २१र २ १ र
वा॥(१) अभिब्रह्मी। द्दायि। अनूषा२३ता। यह्वी
२ २ २ २ ५ १ २
ऋतस्यमा१ता२राः। मर्ज्जयन्तो२३द्दायि। दायिवा३
२ १ ४ ५ २र १
द्दायि। शिशुम्। औ२३द्दोवा॥(२) रायःसमो। द्दा
२र १ २ १ र २ २ २
यि। द्राꣳस्वतू२३राः। अस्मभ्यꣳसोमावा१यिस्वा२ताः।
र २ ५ १ २ २ १ २ ४
आपवस्वो२३४द्दायि। साद्दा२द्दा। मिणा। औ३द्दो
वा। द्दो५ई। डा(३)॥ १८ † ॥ [४]

---

* ज० गा० ९प्र० १ख० ७गा०। † ज० गा० १५प्र० १ख० १९गा०।

१ १र र १ २ १र २
॥ गायत्रगौशनम्॥ तिस्रोवाचाः। उदीरा२३ता

१ र १ १र २ १ २ २
यि। गावोमिम। तिधेना२३वाः। हरायिरा३यिता३

१ २ १ ५ ५ १
यि। कोना२३यिहा३४३यि। क्रा२३४ओ६हायि॥(१) अ

२ १ २ १र २ १ र २ १र
भिब्रह्मायिः। अनूषा२३ता। याह्वीर्ऋत। स्यमाता

२ १ २ २ १ २ १
२३रः। मर्ज्जयाह्णीरः। दायिवा२३हा३४३यि। आ

५ ५ १र २ २ १ २
२३४यिओ६हायि॥(२) रायःसमू। द्राण्वतू२३राः।

१ २ र १ २ १र २ २ १
चत्वार्य्ण्सो। मविश्वा२३ताः। आपावा३वा३। साहा

२ १ ५ ५
२३हा३४३यि। स्रा२३४यिओ६हायि(३)॥ १० *॥ [५]

२ १र ५ २१ २ २
॥ वैरूपम्†॥ तिस्रोवा२३४चाः। उदायिरा३ता३यि।

१र ३ ५ १ २ १
गावो२मा२३४यिमा। ताविधे१नावा२ः। हरा२३यिः।

र १ १र र २ १ २ ३ १ १ १ १ २ १
हता२३४औहोवा। कनिक्रदा२३४५त्॥(१) अभिब्रा२३

५ २ १ १ २ १ २ ५ १ २
४ह्मीः। अनूषा३ता३। यह्वा२यिरा२३४ता। स्यामा

---

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० १०सा०। † "गायत्रौवैरूपम्"—इति क० पु०।

१　　　　　२　　　५र र　　　　१ १ २
१तारा२ः । मर्ज्जा२३ । यन्ता३४औहोवा । दिवःभि

३ १ १ १ १　　　२ १　　　५　　　१र १ २ १　　　१
भू२३४५म् ॥(२) रायःसा२३४मू । द्राꣳस्वानू३रा३ः । स

२　　५　　१ ०　　　　　　१र　　　　　२
स्मा२भ्या२३४ꣳसो । माविस्वाता२ः । आपा२३ । वस्वो

५र र　　　　२ १　२ २ १ १ १ १
३४औहोवा । सदमिणा२३४५ः(३) ॥ ११ * ॥ [६] १४

अथ द्वितीयखण्डे† — प्रथमा ।

३ २ ३ १ २　　३ २ ३ १ २　३ १ २
सुतासोमधुमत्तमाःसोमाइन्द्रायमन्दिनः ।

३ १ २　　　　३ १　२　　३ १ २
पवित्रवन्तोअक्षरन्देवान्गच्छन्तुवोमदाः ॥ १ ‡ ॥

"मधुमत्तमाः" अतिशयेन माधुर्योपेताः अतएव "मन्दिनः" मदकराः "सुतासः" अभिषुताः सोमाः "पवित्रवन्तः" पवित्रे वर्त्तमानाः सन्तः "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "अक्षरन्" पात्रेषु क्षरन्ति । अथ प्रत्यक्षकृतः—"वः" युष्माकं "मदाः" मदहेतवः रसाः "देवान्" इन्द्रादीन् "गच्छन्तु" ॥ १ ॥

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ११गा० ।

† 'ताद्दौ याम'—इति वि० ।

‡ छ० आ० ६, २, १, ३ (२भा० ११५पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, १, ४ ।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ ३ २ १ २
इन्दुरिन्द्रायपवतइतिदेवासोअब्रुवन् ।
२ १ ३२ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
वाचस्पतिर्मखस्यतेविश्वस्येशानओजसः ॥ २ * ॥

"इन्दुः" सोमः "इन्द्राय" इन्द्रार्थं "पवते" कलशे क्षरति "—इति" "देवासः" स्तुतिकारिणः स्तोतारः "अब्रुवन्" वदन्ति; यदा स्तोतार एवं ब्रुवन्ति तदानीं "वाचः" स्तुतेः "पतिः" पालयिता † यद्वा शब्दस्य स्वामी अत्यन्तं शब्दायमान इत्यर्थः, तादृशः सोमः "मखस्यते" स्तुतिभिः पूजामिच्छति [लालसायां सुगागमः]। कीदृशः? "ओजसः" बलवतः "विश्वस्य" सर्वस्य "ईशानः" प्रभुः ॥

"ओजसः"-"ओजसा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २
सहस्रधारःपवतेसमुद्रोवाचमीङ्खयः ।
१ ३ २ १ २ ३ १ ३२ ३ १
सोमस्पतीरयीणाꣳसखेन्द्रस्यदिवेदिवे ॥ ३ ‡ ॥ १५

---

* ऋ० वे० ७, ५, १, ५ ।

† 'वाचस्पतिः—मध्यमः सामरूपायाः वाग्भ्यः पतिः'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १, १ ।

Digitized by Google

"सहस्रधारः" बहुविध-धारोपेतः "सोमः" "पवते" क्षरति । कीदृशः ? "समुद्रः" समुद्रवन्ति "रसा" रस-स्थानीयः "वाचमीङ्खयः" [ईङ्खतेर्ण्यन्तस्य सुप्युपपदे खश् प्रत्ययः] स्तुतीनां प्रेरयिता * "रयीणां" धनानां "पतिः" प्रभुः [यद्वा "रयीणा" हविषोदातॄणां यजमानानां † "पतिः" पालयिता] "दिवे-दिवे" प्रत्यहम् "इन्द्रस्य" "सखा" मित्रभूतः सोमः पवते ॥

"सोमस्पतिः"-"सोमःपतिः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १५

॥ गौरीवितम् ‡ ॥ सुता । सोमा३ । धुमत्तमाः । सोमाइन्द्रायमन्दिना२३ः । पाविन्नवा३१२३ । तोश्रा५स्र रान् । दायिवान्गच्छा३१२३ । तुवोवा । मा५दो६या यि ॥(१) इन्दुः । इन्द्रा३ । यपवतायि । इतिदेवासो अब्रुवा२३न् । वाचस्पता३१२३यिः । मखा५स्रतायि । वायिश्वस्ये श्रा३१२३ । नपोवा । जा५सो ६ हायि ॥(२) सह । सुधा३ । रःपवतायि । समुद्रोवाचमीङ्ख्या२३ः ।

---

* 'वाचमीङ्खयः—शब्दं कुर्वन्तः'—इति वि० ।

† 'सोमः पतिः केषाम् ? रयीणाम् पशु-पुत्रोत्पादि-लक्षणानां धनानाम् अथवा सर्वस्नानाम्'—इति वि० । ‡ "महागौरीवितम्"—इति क० पु० ।

१ २ ४ १ र २
सोमस्यता३१२३यिः । रया५यिणाम् । साखेन्द्रस्या३१२३ ।
४ ५ ५ ५
दिवोवा । दा५यिवो६हायि(३) ॥ ३ * ॥ [१]

१ र र २
॥ त्वतन्त्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमा । धुमा ३ त्तमाः ।
१र १ १ २ १ २ २ १ १ २
सोमाइन्द्रा३यमा३ । ए३ । दिनश्रा । पवायित्रवा३न्तो
२ २ १ २ १ २ २ २
३ । ए३ । त्वरन्ना । दायिवान्गच्छा३न्तुवा३ः । ए३ ।
२ २र २ २ २ २र र
मदाश्रा ॥(१) इन्दुरिन्द्रा । यपा३वतायिदेवा३सो ३ ।
२ २ ३ १ १र २ २ २ १ १
ए३ । ब्रुवन्ना । वाचास्पता३यिर्म्मखा३ । ए३ । स्यत
२ १ २र २ २ १ २ २ २
मा । विश्वास्येशा३नश्रो३ । ए३ । जसश्रा ॥(२) सह
२ १ १र २ २
स्रधा । रःपा३वतायि । समुद्रोवा३चमा ३ यि । ए३ ।
२ ३ २ १र २ २ २ २ २
रयश्रा । सोमास्पता३यिरया३यि । ए३ । णा ३ मा ।
१ २ २ २ २ २ २
सखेन्द्रस्या३दिवा३यि । ए३ । दिवश्रा(३) ॥ ४ † ॥ [२]

२ र र २ १र र
॥ श्रान्धीगवम् ॥ सुतासोमधुमा१त्तामाः । सोमाइ ।

* ऋ० मा० २प्र० २ख० १खा० ।
† ऋ० गा० २प्र० २ख० ४खा० ।

द्रायार२३मा । ऊम्मा२१५२ । दिनःपवित्रवन्तोअत्तरार२
३४५न् । दायिवा३उवा । गा२च्छा । तूर२३वो । मदा ।
औ३होवा ॥ (१) इन्दुरिन्द्रायपा१वातायि । इतिदे । वा
सो२३आ । ऊम्मा२१५२ । भुवन्वाचस्पतिर्मखस्यता२३४
५यि । वायिश्वा३उवा । स्या२यिशा । ना२३ओ । ज
सा । औ३होवा ॥ (२) सहस्रधारःपा१वातायि । समु
द्रः । वाचार२३मा । ऊम्मा२१५२ । सखयःसोमस्यतोर
योणा१म् । साखा३उवा । द्रा२स्या । दा २ ३ यिवे ।
दिवा । औ३होवा । होे५इ । डा(३) ॥ २० * ॥ [१]

॥ स्वारत्वाष्ट्रीसाम ॥ सहस्रधा ३ रा । रःपवाता२
यि । समुद्रोवा३चा । चमीङ्खाया२ः । सोमस्यता३यि

* ऋ० म० ७म० १अ० १०सू० ।

२ १ १र २ १ १ १
हायि । रयायिणा२म् । सखेन्द्रस्या३हायि । दिवा३
१ ५ ४ ५
हो२३४ । वा । दा५यिवो६हायि(३) ॥ ८ *॥ [२]

१ २र २ २ १ १ १ १
॥ स्वारत्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमा३हा । धुमत्तामा
१र र १ २ १ १ १ १ २
२ः । सोमाइन्द्रा३हां । यमन्दायिना२ः । पवित्रवा३
१ १र २ १ १र र २ १ १ १ १
हा । तोषधारा२न् । देवान्गच्छा३हा । तुवो३हो२
५ ४ ५ १ २ १ १ १
३४ । वा । मा५दो६हायि ॥(१) इन्दुरिन्द्रा३हा । यप
१ १ र १ २ १र १ १ १र
वाता२यि । इतिदेवा३हा । सोषब्रूवा२न् । वाचस्प
२ १ २ १ १ १ र १ २ २
ता३यिर्हायि । मखस्याता२यि । विश्वस्येशा३हा । न
२ २ ५ ४ ५ १ २
ओ३हो२३४ । वा । जा५सो६हायि ॥(२) सहस्रधा३
२ १ १ १ १ र १ १ १ १र १
हां । रःपवाता२यि । समुद्रोवा३हा । चमीङ्गाया२ः ।
१र २ १ १ १र १ १
सोमस्यता३यिहायि । रयायिणा२म् । सखेन्द्रस्या३हा
१ २ १ ५ ४ ५
यि । दिवा३हो२३४ । वा । दा५यिवो६हाइ(३) ॥ १ †॥[३]

* ऊ० गा० ६प्र० १ख० ८सा० । † ऊ० गा० १५प्र० १ख० १सा० ।

५ र   २र १   २
॥ हिरण्यस्त्वाष्ट्रीसाम ॥ सुता । सोमा३ । हा ३

२ ३ २ १   र ५र   ३ १   २ २
हा । धुमत्तामा२३४ः । सोमाः । इन्द्रा३ । हा३हा ।

३ २ १   ५   ३ १   २ २   ३र २
यमन्दायिना२३४ः । पवि । त्रवा३ । हा३हा । तोष

१   र ५र   ३ १   २ २   ३ १
णारा२३४न् । देवान् । गच्छा३ । हा३हा । तुवो३

१   ५   ४   ५   ५   ३ १
हो२३४ । वा । सा५दो६हायि ॥(१) इन्दुः । इन्द्रा

२ २   ३ २ १   ५   ३र २   २
३ । हा३हा । यपवाता२३४यि । इति । देवा३ । हा

२   ३र २ १   र ५   ३ १   २
३हा । सोमब्रूवा२३४न् । वाचः । पता३यिः । हा३

२   ३ २ १   ५   ३र २   २
हायि । मखस्याता२३४यि । विश्व । स्येशा३ । हा३

२   ३ २ १   ५   ४   ५   ५
हा । नभो३हो२३४ । वा । जा५सो६हायि ॥(२) स

३ १   २ २   ३ २ १   ५
ह । सूधा३ । हा३हा । रःपवाता२३४यि । समु ।

३र २   १ २   ३ २र १   र ५   ३ १
द्रोवा३ । हा३हा । चमोह्णाया२३४ः । सोमः । पता

२ २   १   ५   ३ १
३यि । हा३हायि । रयायिणा२३४म् । सखे । इन्द्रस्या

३। हाउहाउयि। दिवा३हो२३४। वा। दा५यियिषो६
हायि(३) ॥ २ * ॥ [४]

॥ ऊर्द्ध्वत्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमधुमत्तमाः । सोमा
२३इन्द्रा२। यमा३४५। दो२३४नाः। पवित्रवन्तोऽक्ष
रा२३४न्। देवान्गच्छा। तुवोमा२३दा ३ ४ ३ः॥(१)
इन्दुरिन्द्रायपवतायि। आयिता२यिदेवा२। सोआ३४
५। ब्रू२३४वान्। वाचस्पतिर्म्मखस्यता२३४५यि। वि
श्वस्येशा। नओजा२३सा३४३ः ॥(२) सहस्रधारःपवता
यि। सामू२द्रोवा२। चमा३४५यि। खा२३४याः। सो
मस्पतीरयीणा१म्। सखेन्द्रस्या। दिवेदा२३यिवा३५३
यि। ओ२३४५ई(३) ॥ २ † ॥ [७]

॥ साध्रम् ॥ सुतासो३साऽधुमत्तमाः। सोमाइन्द्रा२।

---

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० २गा०। † ऊ० गा० १६प्र० १ख० १गा०।

३ २ ३ ५ २ १ २ ८ २ १ १ १ १
यमा३४५। दौ२३४नाः। पवित्रवन्तोअक्षरा२३४५न्।
१ २ २ ५ १ २ ३ ५ ४
दायिवाओ२३४५वा। गाच्छाओ२३४वा। तुवो५मदाः॥(१)

५ र ४ऽ ५ ५ ५ २ १ २र १ २र १
इन्दुरा३यिन्द्रायपवतायि। इतायिदेवार। सोआ३४५।
१ ५ २र १ २ २ १ १ १ १ १ २
अ२३४वान्। वाचस्पतिर्मखस्यता२३४५यि। वायिश्वा
२ ५ १ २ ३ ५ ४
ओ२३४वा। स्यायिषाओ२३४वा। नओ५जसाः॥(२)

५ २ ४ऽ ५ ४ ५ २ १ २र १ २ २
सहस्राइधारःपवतायि। समुद्रोवार। चमा३४५यि।
३ ५ १र २ १ र २ ३र १ २ ३
खार३४याः। सोमस्पतीरयिणा१म्। साखाओ२३४
५ १ २ २ ५ ४ ४
वा। द्रास्याओ२३४वा। दिवे५दिवायि। द्यो५इ।

डा(३)॥१२*॥[८]

३२ २ ४ ५ २
॥ श्यावाश्वम्॥ सुता३१। सो३माऽ। धुम। ता३
४ ५ १ र र २ १
म। एह्यिया। सो। माइन्द्राया। म। दिना२ः।
१र १ २ ४ ५ १र
एह्यिया२। पवित्रवान्तो३आ३। चा२३४रान्। ऐद्दा

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० १२सा०।

१र २र १ २ ४ २
२यि। एहिया२। देवान्गाच्छान्तू३वो३। मा३४५दो६

५ १ २ २ ४ऽ ५ २ ४र
हायि॥(१) इन्दू३१:। आ३यिन्द्रा। यप। वा३ते।

५ १ २र २ १ १र
एहिया। आयि। तिर्देवासो। अ। ब्रूवा२न्। ए

२ १ २ ४ ५ १र
हिया२। वाचस्पतायिर्मा३खा३। स्या२३४तायि। ऐ

१र १र २ ४ २
हा२यि। एहिया२। विश्वस्ये शाना३ओ३। जा३४५

५ १ १ २ ४ऽ ५ २ ४र
सो६हायि॥(२) सहा३१। स्वा३धा। र:पा। वा३ते।

५ १ २ र १र १ १र
एहिया। साम्। उद्गोवाचाम्। ई। खया२:। ए

र १ २ ४ ५ १र
हिया२। सोमस्पाती३रा३। या२३४यिणाम्। ऐहा

१र २१ २ ४ २
२यि। एहिया२। सखेद्र स्यादा३यिव३। दा३४५यि

५
वो६हायि(३)॥ १३ *॥ [६]

२ १र २र १ २ १ २
॥ महाविष्टम्भम्॥ सुतासोमोहायि। धुमत्तमोवा।

१ २र २ र १ २ १ २ २ १
सोमाइन्द्रा। यमान्दा१यिना२३:। होवा३हायि। पवित्र

* ऋ० मा० १०प्र० १व० १२मा०।

२ २१ २ १ २ १ १२ २
व । तोआवा१रा२३न् । होवा३ हायि । देवान्गा १

१२ २ १ २ ५२ २
च्छा२३ । होवा३हा । तुवः । मा२दा२३४औहोवा ॥(१)

१ २ १ २ १२ १ १२२ १२ २
इन्दुरिन्द्रोहा । यपवतोवा । भायितिदेवा । सोभात्र्

१ २ २ २ १ २ १ २
१वा२३न् । होवा३हायि । वाचस्पतिः । मखास्या१

१ १ २ १ २ १ २
ता२३यि । होवा३हायि । विस्वास्ये१भा२३ । होवा३

२ १२ २ ५२२ १ २ १
हा । नभो । जा२सा२३४औहोवा ॥(२) सहस्रधोहा ।

२ १ २ १ २२ २ १ २ १
रःपवतोवा । सामुद्रोवा । चमायिङ्खा१या२३ः । हो

२ २ १२ २ ५२ २ २
वा३हायि । दिजे । दा२यवा२३४औहोवा । दी२३४

५
भाः(३) ॥ ११* ॥ [१०] १५

अथ तृतीयवृचे† — प्रथमा ।

३१२३ १२
पवित्रन्ते विततम्ब्रह्मणस्पते

३१ ३२ ३१२ ३१२
प्रभुर्गात्राणिपर्येषिविस्वतः ।

* ऊ० गा० ११०प्र० २ख० ११गा० । † 'चरित' साम' — इति वि० ।

१ २ ३ १२उ २ १ २
अतप्ततनूर्नतदामोअश्नुते
२ २ ३ १ ३१ २ १ ३१
शृतासइद्वहन्तःसन्तदाशत ॥ १* ॥

हे "ब्रह्मणस्पते" मन्त्रस्य स्वामिन् सोम! "ते" "पवित्रं" शोधकमङ्गं "विततं" सर्वत्र विस्तृतम्। सः "प्रभुः" प्रभविता त्वं "गात्राणि" पातुरङ्गानि "पर्य्येषि" परिगच्छसि "विश्वतः" सर्वतस्तव तत् पवित्रम् "अतप्ततनूः" पयोव्रतादिना असन्तप्तगात्रः "आमः" अपरिपक्वः "न अश्नुते" न व्याप्नोति। "शृतासः इत्" "शृताएव" परिपक्वाएव "वहन्तः" यागं निर्वहन्तः "तत्" पवित्रम् "समाशत" व्याप्नुवन्ति ॥

"सन्तदाशत"--"तत्समाशत"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १
तपोष्पवित्रं विततन्दिवस्पदे
१ २ २ ३ २क २र
र्च्चन्तोअस्यतन्तवोव्यस्थिरन्।

---

* ऋ० आ० ६, २, २, १२ (२भा० १९८ पृ०) = ऋ० मं० ९, ८३ = ऋ० वे० ७, ३, ८, १।

Digitized by Google

१ २ ३ १ २ ३ १ २
अवन्त्यस्यपवितारमाशवो

३ २ ३ १ २र ३ १ २
दिवःपृष्ठमधिरोहन्तितेजसा ॥ २ * ॥

"तपोः" † शत्रूणां तापकस्य सोमस्य "पवित्र" शोधक-मङ्ग "दिवस्पदे" द्युलोकस्योत्थिते स्थाने "विततं" विस्तृतम् ["तृतीयस्यामितो दिवि सोम आसीत्"—इति ब्राह्मणम्] "अस्य" "तन्तवः" अंशवः ‡ "अर्चन्तः" दीप्यमानाः "व्यस्थि-रन्" विविधं तिष्ठन्ति पृथिव्यां हविर्द्धाने वा "अस्य" सोमस्य "आशवः" शीघ्रगामिनः रसाः "पवितारं" पावयितारं यज-मानम् "अवन्ति" रक्षन्ति होमद्वारा पश्चाद्भुता "दिवः" द्युलो-कस्य "पृष्ठं" पृष्ठभागम् उन्नतदेशम् "तेजसा" स्वप्रकाशेन सार्द्धं "अधिरोहन्ति" आरोहणं कुर्वन्ति ॥

"अर्चन्तः"-"शोचन्तः"—इति पाठौ, "अधिरोहन्तितेजसा"-"अधितिष्ठन्तिचेतसा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ३, ८, २।

† 'हे तपोः'—इति वि०।

‡ 'अस्य दशापवित्रस्य तन्तवः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ १ २ १ १ २ १ २
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय

२ १ २ २ १ १ १ २
उक्षामिमेतिभुवनेषुवाजयुः।

२ १ २ २ १ २
मायाविनोममिरेअस्यमायया

२ १ २ १ २ ३ २ २ १ २
नृचक्षसःपितरोगर्भमादधुः॥ ३ *॥ १६

"उषसः" सम्बन्धि "पृश्निः" आदित्यः ["पृश्निरादित्यो भवति प्राश्नुत एनं वर्णः"—इति निरुक्तम् (२, १४)] "अग्रियः" मुख्यः सोऽयं "अरूरुचत्" रोचयति। स "उक्षा" जलस्य सेक्ता "भुवनेषु" भूतजातेषु "मिमेति" मिनोति उदकं प्रक्षिपतीत्यर्थः। "वाजयुः" † तेषामन्नमिच्छन् "मायाविनः" माया प्रज्ञा तद्वन्तः देवा "अस्य" सोमस्य "मायया" प्रज्ञया "ममिरे" निर्मितवन्तः, सोमस्यैकांशपानबला अन्यादयः स्व-स्व-व्यापारेण जगत् सृजन्तीत्यर्थः। तथा "अस्य" मायया "नृचक्षसः" नृणां द्रष्टारः "पितरः" पालका देवाः अङ्गिरसः पितरो वा "गर्भम्" "आदधुः" धारयन्ति ओषधीषु च। अत्र सूर्य्यात्मकः सोमः स्तूयते। सूर्य्यरश्म्यनुगमाधीन-

* ऋ० वे० ७, ३, ८, ३।

† 'वाजयुः—वाजमन्नं तदिच्छुः अथवा वाजयुः वाजप्रदः अथवा वाजयुः वेगवान्'—इति वि०।

Digitized by Google

वर्द्धनाच्चन्द्रस्य अयमुषसः पृश्निः सविता अरूरुचत् रोचते रोचयति वासवं श्रिष्टं समानं तत्सम्बन्धिनः नृचक्षसः नृणां द्रष्टारः पितरो जगद्रक्षका रश्मयो गर्भमादधुः वृष्ट्यर्थम् ॥

"मिमेतिभुवनेषु"-"विभर्त्तिभुवनानि"—इति पाठौ ॥३॥ १६

२र १ २ १ र २ १
॥ स्वारसाम ॥ पवौहोवा । चन्तं विततंम्रा । ह्मणस्पा

१ र र २ १
ता२यि । प्रभुर्गात्राणिपरियायि । षिविश्वाता २ ३ः ।

१ २ ४५ २ २ ५ २ ३र २ २
आता३प्ताता । नूर्न्नाता२३४दा । हौ । मोश्नाश्नू२३४

५ २ १ २ ४५ २ २ ५
तायि । होइयि । श्रार्त्ता३साइत् । वाहन्तो२३४ःसा ।

२ २ २ ४ २र १ २ १
हौ । तदा३शा५नाई५६ ॥(१) तपौहोवा । पवित्रं वित

२ १ १ र २
ताम् । दिवस्पादा२यि । अर्चन्तोअस्यतन्तवो । विय

१ १ २ ४ ५ २ २ ५
स्थायिरा२३न् । आवा३न्तीया । स्यापावी २ ३ ४ ता ।

२ ३ २ २ ५ २ १ २ ४ ५
हौ । रमात्मा२३४वाः । होइयि । दायिवा३ःपार्ष्ठम् ।

२ २ ५ २ ३ २ ४
आधीरो२३४हा । हौ । तिता३यिजा५सा ६ ५ ६ ॥(२)

२र १ २ १ २ १ १ र
अरौहोवा । रुचदुषसःपा । श्निरम्रायार२ः । उक्षामि

मेतिभुवनायि । षुवाजायू२३: । मायाइवायिनो । मा

मौरे२३४षा । द्यौ । स्यमाया२३४या । द्योइयि । ना

द्यौइत्वासाः । पायितारो२३४गा । द्यौ । भमाइदा५धू

६५६:(३) ॥ १ * ॥ [१]

॥ कावम्† ॥ पवोवा । त्वन्ते विततंब्रा । ह्मणस्था ।

ता२यि । प्रभुर्गात्राणिपरियायि । षिविस्वाता२: ।

अतप्ततनूर्नतदा । मोअस्न ता२३यि । श्रात्ताइसाईत् ।

वहन्ता:सा२३म् । तादाइश्रापुता६५६ ॥(१) तपोवा ।

पवित्रंवितताम् । दिवस्पादा२यि । अर्चन्तोअस्यतन्त

वो । वियस्थायिरा२न् । अवन्त्यस्यपविता । रमाश्रा

वा२३: । दायिवाइ:पार्ष्ठाम् । अधिरोहा२३ तायि

ताइयिजापुसा६५६ ॥(१) अरोवा । रुचदुषस:पा । श्नि

* उ० गा०७प्र० २ख० १खा० ।

रय्याया२ः । उत्वामिमेतिभुवनायि । षुवाजाय्२ः ।

मायाविनोममिरेश्रा । स्वमायाया२३ । नार्श्वा३त्वासाः ।

पितरोगा२३ । भामा३दा५धू६५६ः(३) ॥ ३ * ॥ [२]

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवा ऽ५यित्रम् । ता३यिवा३यिततंब्रा ।

ह्माणस्पतेप्रभुर्गात्राणि । प:रियायि । षी३वायिस्वा३ताः ।

अता२प्ततनूर्नतदामोअश्नु । तेश्रा२३र्त्ता । ऊम्मायि ।

सा३ई३त् । वाहन्तःसन्तस्ता२श्रनाउ ॥(१) ताता । पोष्प

वित्रंविततन्दिवस्पदेर्चन्तोअस्यतन्तवो । वा३यास्था३यि

रान् । अवा२न्त्यस्यपवितारमाश्र । वोदा २ ३ यिवाः ।

ऊम्मायि । पा३ष्ठीम् । आधिरोहन्तिता२.यिजसाउ ॥(२)

साश्रा । ऽरुरुचदुषसःपृश्निरग्रियउत्वामिमेतिभुवनायि ।

षू३वाजा३यूः । माया२विनोममिरेअस्यमाय् । याना२

* उ० मा० १२प्र० २ख० ३सा० ।

२ १ १ २ १ २ ४ १ २

३र्वा। ऊम्मायि। श्वा३सा:। पायितरोगभंमा२दधा

२ १ १ १

उ। वा३४५(३)॥ १ *॥[३] १६

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे ‡—

प्रथमसूक्त-प्रगाथे—

१ २र १ १ २ २ १ २ १ २

प्रमꣳहिष्ठायगायतऋताव्ने बृहतेशुक्रशोचिषे।

२ १ २ ३ १ २

उपस्तुतासोअग्नये ॥ १ ¶ ॥

हे "उपस्तुतास:" उपस्तोतार:! यूयं "मंहिष्ठाय" दातृतमाय "ऋताव्ने" ऋतवते यज्ञवते वा "बृहते" महते "शुक्रशोचिषे" दीप्ततेजसे "अग्नये" "प्र गायत" स्तोत्रं पठत ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १५प्र० १ख० १सा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'इदानीमुक्थानि भवन्ति'—इति वि०।

¶ छ० आ० २, १, २, १ (१ भा० १७४ पृ०) = ऋ० वे० ६, ७, १४, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

आवꣳसतेमघवावीरवद्यशःसमिद्धोद्युम्न्याहुतः।

३ १ २ ३ १ ३२ ३ २ ३ २ ३ १ २

कुविन्नोअस्यसुमतिर्भवीयस्यच्छवाजेभिरागमत्॥ २* ॥१७

"मघवा" धनवान् "द्युम्नी" अन्नवान् यशस्वी वा। [तथाच यास्कः—"द्युम्नं द्योततेर्यशोवान्नं वा (५, ५)"—इति "समिद्धः" सम्यग् दीप्तः "आहुतः" आभिमुख्येन हुतः अग्निः "वीरवत्" पुत्रवत् "यशः" यशस्करम् अन्नम् "आवंसते" यजमानेभ्य आ प्रयच्छति तस्य "अस्य" अग्नेः "भवीयसी" अस्मासु अतिशयेन भवितुं योग्या "सुमतिः" अनुग्रह-बुद्धिः "नः" अस्मान् "अच्छ" प्रति "वाजेभिः" अन्नैः सह "कुवित्" बहु-सलिलम् † [कुविदिति बहु-नाम (निघ० ३, १, १२)] "आगमत्" आगच्छतु॥

"भवीयसी"-"नवीयसी"—इति पाठो॥ २ ॥ १७

५ र ४र ५र १

॥ प्रमꣳहिष्ठीयम्॥ प्रमꣳहा३यिष्ठायगायता। ऋ

१ १ र २ ४ ५ २ १

ताव्ने२। बृहतेशुक्रा३शोऽ३। चा२३४यिषायि। उपा

* ऋ० वे० ६, ७, १४, ४।

† 'कुवित्—कदाचन'—इति वि०।

२ २ १ २ ४ २ ५
औ३हो। स्तोतासो३आ३। गा३४५यो ६ हायि॥(१)
५ २ ४र र ५ २र १ १र
उपस्त्व३तासोअग्रयायि। आव२७साता२यि। मघवाना
२ ४ ५ २ १ २ २ १ २
यिरा३वा३त्। या२३३भाः। समाऔ३हो। धोद्यूम्नी
४ २ ५ ५ २ ४ ५र
३या३। इ३४५तो६हायि॥(२) समिद्धो३ग्नीयाहुताः।
२ १ १ २ ४ ५
कुवायिन्नो२। अस्यसुमतातिर्भा३वी३। या२३४सायि।
२ १ २ २ १र १ ४ २ ५
अच्छाऔ३हो। वाजायिभी३रा३। गा३४५मो६हायि(३)॥

॥ ५ * ॥ [१] १७

अथ द्वितीयर्च्चे†—प्रथमा।

२ ३ १ २ ३१२ ३१ २ ३ २
तन्ते मदङ्गृणीमसिवृषणम्पृत्सुसासहिम्।
३ १२ ३ १ २
उलोककृत्नुमद्रिवोहरिश्रियम्॥ १ ‡॥

हे "अद्रिवः" वज्रवन् इन्द्र! "ते" त्वदीयं तं "मदं" सोम-पान-जनितं हर्षं "गृणीमसि" गृणीमः प्रशंसामः ['गृ शब्दे'

* क० गा० १प्र० २ख० ५सा०।

† 'हारिवर्णं साम'—इति वि०।

‡ छ० आ० ४, २, ५, २ (१भा० ७८८ पृ०) = ऋ० वे० ६, १, १७, ४।

क्यादिः "पादीनां ह्रस्वः (७, ४, ८०)", "इदन्तोमसि (७, १, ४६)"—इति मसइगागमः]। कीदृशम्? "वृषणं" वर्षितारं कामानां "पृत्सु" पृतनासु सङ्ग्रामेषु "सासहिं" शत्रूणाम् अभिभवितारं "लोककृत्नुं" लोकस्य स्थानस्य कर्त्तारं हरिश्रियं "हरिभ्याम्" अश्वाभ्यां "श्रयणीयं" सेव्यम् ["उ"शब्द एषः समुच्चये पादपूरणे वा]॥

"पृत्सु"-"पृत्सु"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
येनज्योतीꣳष्यायवेमनवेमनवेचविवेदिथ ।
३ २ ३ १ २ २ ३ १ २
मन्दानोअस्यबर्हिषोविराजसि ॥ २ * ॥

हे इन्द्र! "येन" आत्मीयेन मदेन "आयवे" औवंशेयाय † "मनवे" विवस्वतः पुत्राय च "ज्योतींषि" सूर्यादीनि वृत्रादिभिरावृतानि तदा तेषां "विवेदिथ" अलम्भय प्रज्ञापितवान् प्रकाशितवानसीत्यर्थः ; तेन मदेन "मन्दानः" मोदमानस्त्वम् "अस्य बर्हिषः" वृद्धस्य यज्ञस्य "विराजसि" विशेषेण दीप्यसे [यद्वा अस्येति तृतीयार्थे षष्ठी, अनेन बर्हिषा वृद्धेन मदेन हृष्यन् विराजसि विशेषेण दीप्यसे ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ६, १, १०, ३ ।

† 'आयवे—यजमानाय'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

२ ३ १ ३ १ १ २र ३१ २
तदद्याचित्तउक्थिनोनुष्टुवन्तिपूर्वथा ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषपत्नीरपोजयादिवेदिवे ॥ ३ * ॥ १८

हे इन्द्र ! "ते" त्वदीयं "तत्" प्रसिद्धं बलं "अद्याचित्" † अद्यापि ‡ "पूर्वथा" ¶ पूर्वस्मिन् काले इव "उक्थिनः" शस्त्रिणः स्तोतारः "अनुष्टुवन्ति" क्रमेण प्रशंसन्ति । स त्वं "वृषपत्नीः" वृषा वर्षन्तः पर्जन्याः पतिर्यासां तादृशीः "अपः" "दिवेदिवे" प्रतिदिवसं "जय" § स्वायत्तं कुरु ॥ ३ ॥ १८

१ र र १ २
॥ हारिवर्णम् ॥ तन्तेमदा२गृणीमसायि । चार्षणं

१ २ २ १ २ २ १ १ २
प । त्सुसासा३हो३म् । होवा३हायि । उलोका३कृ३ ।

१ २ २ १ २ ५र र २
होवा३हा । त्सुम । द्रा२यिवा२३४औहोवा । हरि

---

* ऋ० वे० ६, १, १८, १ ।

† "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दि० ।

‡ 'चित्—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

¶ "दिक्शब्देभ्यः (५, ३, २७)"—इति था ।

§ मन्त्रे अचेति दीर्घान्तः, तत्र "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः ।

Digitized by Google

१ ११११ १र र र १
श्रियार३४५म्॥(१) येनज्योता२यिॐषिआपवायि। मा
२र १ २ २ १ २ २ १ २
नवेच। विवायिदी३था३। होवा३हायि। मन्दानो३
२ १ २ २ १ ५र र
था३। होवा३हा। अयब। हा२यिषा२३४औहोवा।
२र१ ११११ १ र १
विराजसार ३ ४ ५ यि॥(२) तदद्याचा२यित्तउक्थिनाः।
२ २१ २ १ २ २ १ २२
आनुष्टुव। तिपूर्वा३था३। हावा३हायि। वृषापानी३ः।
१२ २ १ ३ ५र र २ र
होवा ३ हायि। अपः। जा२या२३४औहोवा। दिवे
२ ११११
दिवा२३४५यि(३)॥६*॥ [१]
२र र र १ २ ३ ५ २
तन्तेमदाऔहोहायि। गार्णायिमा२३४सायि। वृ
१ ५ १ र र २ ३र ४र ५
षाणा२३४ॐहायि। पृत्सुसासहिमुलोका३४। औहोवा।
१२ ५ २ २ ५ २ १२ १० २
हूहा२३४हायि। उरुवा२३४कृ। नमद्रि। वोहरिआ
३र ४र ५ १ २ ५ ३र २
३४। औहोवा। हूहा२३४हायि। औहो३१२३४।
५र ५ २र र र र १ २
याम्। एहियाहहा॥(१) येनज्योता। औहोहायि।

० उ० आ० २प्र० २ख० ६सा०।

२ ५ २ १ ५ १ र
षोआया२३४बायि। मनावा२३४ई हायि। चविवेदिथम

र १ ३र ४र ५ १ २ ५ २ ३
न्दाना३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उऊवा२३४

५ २ १ २ १ ७ र २ ३र ४र ५ १ २
आ। स्रुवर्हि। षोविराजा३४। औहोवा। इहा२३४

५ ३र २ ५र ५
हायि। औहो३१२३४। सायि। । एहियाई्हा॥(२)

२ रर र १ २ ३ ५ २१
तद्द्याचाऔहोहायि। ताउच्छा२३४ईनाः। अनूष्ट२३

५ १ र र २ ३र ४र ५ १ ३ ५
४हा। वन्तिपूर्वथावृषपा३४। औहोवा। इहा२३४हा

२ ३ ५ २१र२ १ ७र२ ३र
यि। उऊवा२३४नीः। अपोज। यादिवेदा३४। औ

४र ५ १ ३ ५ ३र २ ५र
होवा। इहा२३४हायि। ओहो३१२३४। वायि। ए

५
हियाई्हा(३)॥ १३ † ॥ [२]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ सौभरम्॥ तन्ता३यिमा३इङ्गृणीमसीवा। वृषणं

र १ ७ १ २ ५ १
पृक्षुसासा२हायिमुतो२३। हो। का२३४कृ। तमद्रि

ऽ २ १ २ ५र र ५र ४
वः। हरा३यिहा३यि। आ२या२३४औहोवा॥(१) येना

० ऋ० मा० १२प्र० १ष० १२सा० ।

२ ४ ५र ४५ १ र र १०
इज्यो३तीꣳषिआयवोवा । मनवेचविवेदा२यिथामन्दा

१ ३ ५ १ ऽ २
२३। हो। नो२३४वा। स्वर्वर्हिंषः। विरा३हा३यि।

१ ३ ५र र ५४ २ ४ ५ ४ ५
जा२सा२३४औहोवा ॥(२) तदा३द्या३चित्तउक्थिनोवा।

१ र १० १ ३ ५ १
अनुष्टु वन्तिपूर्वा२थावृषा२३। हो। पा२३४नीः। अ

र र ऽ २ १ ३ ५र ० २
पोजया। दिवे३हा३यि। दा२यिवा२३४औहोवा। ऊ

१११११
२३४५(३) ॥ १८ * ॥ १८

अथ तृतीयतृचे† — प्रथमा ।

२ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
श्रुधीहवन्तिरश्च्याइन्द्रयस्त्वासपर्यति ।

३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
सुवीर्यस्यगोमतोरायस्पूर्द्धिमहाꣳअसि ॥ १‡ ॥

हे इन्द्र! यः "त्वा" त्वां "सपर्यति" [सपरशब्दः कण्ड्वादिः¶] हविर्भिः परिचरति। तादृशस्य "तिरश्च्याः"—एतन्नामकस्य ऋषेर्मम "हवं" स्तुतिभिस्त्वद्विषयमाह्वानं "श्रुधि" शृणु।

---

* उ० गा० १८प्र० १ख० १८सा० ।

† 'तैरश्च्यं तृतीयमुक्थ्यम्'—इति वि० ।

‡ ऋ० सा० ४, २, १, ५ (७०७ पृ०) = ऋ० वे० ६, ६, २०, ५ ।

¶ अतः "कण्ड्वादिभ्यो यक् (३, १, २७)"—इति यकि रूपमिति भावः ।

Digitized by Google

श्रुत्वा च हे इन्द्र! त्वं "सुवीर्यस्य" शोभन-वीर्योपेतस्य [यद्वा, वीरे पुत्रे भवं वीर्यं, सुपुत्रवतः] "गोमतः" गवादि-पशुमतः "रायः" धनस्य दानेन अस्मान् "पूर्द्धि" पूरय। एतत्सामर्थ्यं कुत इत्यत आह—त्वं "महान्" गुणाधिकः श्रेष्ठश्च "असि" भवसि खलु ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३क
यस्त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत्।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम्॥ २ * ॥

हे "इन्द्र!" "यः" यजमानः "नवीयसीं" नवतरां † पुनःपुनः क्रियमाणतया "मन्द्रां" मदकरीं "गिरं" स्तुतिलक्षणां वाचं "ते" त्वदर्थम् "अजीजनत्" उदपीपदत् अकार्षीदित्यर्थः। तस्मै "स्तोत्रे" त्वं "प्रत्नां" पुरातनीम् ‡ "ऋतस्य" सत्यस्य¶ सम्बन्धि [यद्वा तृतीयार्थे षष्ठी (२, ३, ६३)] सत्येन "पिप्युषीं" प्रवृद्धां ["सिलकाजोस (६, १, २९)"—इति प्यायतेः पी-भावः] तादृशः "चिकित्वित् मनसं" ['कित ज्ञाने' क्वसो रूपम्, आकारस्येकारश्छान्दसः] चिकित्वांसि ज्ञानानि

---

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ६।

† 'नवीयसीं—नवतरां बहुपदवर्णस्तोत्रादारचयुक्ताम्'—इति वि०।

‡ 'ऋग्यजुःसामलक्षणाम्'—इति वि०।

¶ 'ऋतस्य पिप्युषीं—ऋतो यज्ञः अथवा ऋतमन्नम् अथवा ऋतः प्रजापतिः अथवा ऋतं सत्यं परं ब्रह्म, तस्य पिप्युषीं पोषणसमर्थाम्'—इति वि०।

Digitized by Google

सर्वेषां हृदयानि यथेति अभवद्भियमाणं यत्तव रक्षणं तत् सर्वेषां हृदयं प्रज्ञापयतीति । ततः अतीन्द्रियार्थदर्शिकं "धिय" त्वदीयं रक्षणाख्यं कर्म तस्मै कुरु ॥

"यस्तइन्द्र"-"इन्द्रयस्ते"—इति व्यत्ययेन पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २　२ ३र　३ १ २ ३　१ ३ २ ३
तमुष्टवामयङ्गिरइन्द्रमुक्थानिवावृधुः ।
३ १ २ ३ १　२　१ २
पुरूण्यस्यपौंᳫस्यासिषासन्तोवनामहे ॥ ३ * ॥ १९

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः ॥

हे ऋषयः "तम्" परस्परमाहुतं पूर्वोक्तलक्षणम् "उ"—इत्यवधारणे तमेव "इन्द्रम्" "स्तवामः" स्तुतिभिः स्तुमः "यम्" इन्द्रं "गिरः" अस्माकं स्तुतयः "उक्थानि" शस्त्राणि च "वावृधुः" प्रावर्धयत् तं स्तुमः ; ततो वयम् "अस्य" इन्द्रस्य "पुरूणि" बहूनि "पौंस्याणि" वीर्याणि "सिषासन्तः" ['षण सम्भक्तौ' सनीड्भावपक्षे आत्वे कृते रूपं. "सनोतेरनः (८, ३, १०८)"—इति सांहितिकं षत्वम्] तानि वीर्याणि सम्भक्तुमिच्छन्तः सन्तो "वनामहे" तमिन्द्रं स्तुतिभिः सम्भजामहे ॥ ३ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, ३१, १ ।

Digitized by Google

५ र १ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १
॥ तैरश्चम् ॥ अधीहाइवन्निरश्विया: । इन्द्रायस्त्वा ।
२ १ ७ १ ५र ३ २ २ ५ १
सपर्य्यतार२३४यि । सुवी । रिया । स्यार२३४गो । मा
१ २ २ २ ४
ता२: । रायास्पूर्द्धि । हाइहायि । महा५ऽअसी ॥(१)
५ २ ४ ५ ४र ५ २ १ २ १ २ ३र
यस्त्वाइयिन्द्रनवीयसायिम् । गिराम्मन्द्राम् । अजी
२ १ ५ २ २ २ ५ १
जना२३४त् । चिकि । त्विम्मा । ना२३४साम् । धाया
१ २ २ २ ४
२म् । प्रत्नामात्त्री । हाइहा । स्यपाऽ५यिप्पुषीम् ॥(२)
५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ २ १ २ ३र २ १
तमुष्टाइवामयङ्गिरा: । इन्द्रामुक्था । निवावृधू२३४: ।
५र २ २ २ ५ १ १ २
पुरू । णिया । स्या२३४पौ । साया२ । सिषासान्ताइ: ।
२ २ ४ ४
हाइहायि । वना५मद्दायि । हो५ई । डा(३) ॥ ७ *॥ [१]
२ र र र १ २ २
॥ वारवन्तीयम् ॥ अधीहवाओहोहायि । ताइ रस्वार२३
५ २ र १ ५ १ र र
४या: । इन्द्रयस्त्वासपर्य्यातोर२३४हायि । सुवीर्य्यस्यगो

---

* क० गा० २प्र० २ख० ७सा०।

२ ३र४३ ५ १ २ ५ २ ३ ५
मा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उहुवा२३४ताः।

२र १ २र १ ७ र २ ३र ४र ५ १ २
रायस्पू। धायिमहा७भा३४। औहोवा। इहा२३४

५ ३र २ ५र ५ २
हायि। औहो३१२३४। सायि। एहियाइहा॥(१) य

र र १ २ २ ५ २
स्तइन्द्राऔहोहायि। नावीया२३४सायिम्। गिरश्च

र र १ ५ १ २ ३र
न्द्रामजीजानो२३४हायि। चिकित्विन्मनसन्धा३४। औ

४र ५ १ २ ५ २ १ ५ २ १र १
होवा। इहा२३४हायि। उहुवा२३४याम्। प्रत्नामृ।

१ ७ २ ३र ४र ५ १ २ ५ ३र २
तस्यपिप्यू३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो

५र ५ २ र र १ २
३१२३४। षीम्। एहियाइहा॥(२) तमुष्टवाऔहोहा

२ ५ २ र र १
यि। मायज्ञा२३४यिराः। इन्द्रमुक्थानिवावार्धो२ ३ ४

५ १ र र २ ३र ४र ५ १ २
हायि। पुरूण्यस्यपौ७सा३४। औहोवा। इहा२३

५ २ ३ ५ २ १र २ १ ७ र १ ३र
४हायि उहुवा२३४या। सिषास। तोवनामा३४। औ

Digitized by Google

४र ५ १ २ ५ ३र १ ५र
होवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। हायि। ह

५ ४
यियाईहा। होपुई। वा(३)॥ १४ *॥ [२] १८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थाध्यायस्य
षष्ठः खण्डः † । ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः॥ ४॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे चतुर्थोऽध्यायः ‡ ॥

---

* ऊ० गा० १३प्र० १अ० १४गा०।

† 'तृतीयमषः समाप्तः' इति वि०।

‡ द्वितीयश्च प्रपाठकः समाप्तः'—इति वि० मूल-पदकारादि-सम्मतश्चेति-भ्रम्।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।

निर्म्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ ५ ॥

॥ अथ पञ्चमाध्यायः आरभ्यते* ॥

तत्र,

प्रथमे खण्डे प्रतआश्विनीरिति† त्र्यचं प्रथमं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा—

२ ३ १ २   ३ १ २

प्रतआश्विनीःपवमानधेनवो

३ १ २   ३ १ २ ३ १ २

दिव्याअसृग्रन्पयसाधरीमणि ।

१२   ३२ ३ १   २   ३

प्रान्तरिक्षात्स्थाविरीस्तेअसृक्षत

१ २ ३ १ २   ३ १ २

येत्वामृजन्त्यृषिषाणवेधसः ॥ १ ‡ ॥

हे "पवमान" सोम! "ते" तव "आश्विनीः" व्याप्ताः ['अशू व्याप्तौ (स्वा० आ०)' तस्मादौणादिका विनिः, ततोऽण्, व्यत्ययेनाद्युदात्तः] "धेनवः" प्रीणयित्र्यः "दिव्याः" दिवि भवाः

---

* 'अथ चतुर्थस्याधरारभ्यते द्वितीयस्त्रिरात्रः । प्रकृतच्छन्दाः प्रथमस्त्रिरात्रः । अथोत्तरस्य छन्दांसि व्यूहन्ति जगत्यः प्रतिपदः, जगती-स्थाने त्रिष्टुभः, त्रिष्टुभां स्थाने जगत्यः'—इति वि० ।

† "एषा चतुर्थस्य प्रतिपत्"—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ३, १९, ४ ।

Digitized by Google

दिव: पतन्त्यो धारा: "पयसा" युक्ता: * "धरीमणि" धारके द्रोणकलशे "प्र असृग्रन्" गच्छन्ति "ये" "वेधस:" विधातार: ऋत्विज: हे सोम ! "ऋषिषाण" ऋषिभि: सम्भक्तत्वात् "त्वा" त्वाम् "मृजन्ति" अभिषुण्वन्ति, "ते" वेधस: "स्थाविरी:" स्थविरा धारा"‡ "अन्तरिक्षात्" सकाशात "प्र असृक्षत" पात्रं प्रति सृजन्ति ॥

"धेनवे"-"धीजुवो"—इति पाठौ, "प्रान्तरिक्षात्स्थाविरीस्ते असृक्षत"--"प्रातऋ षय:स्थाविरीरसृक्षत"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १ ३ १ २ ३ १ २
उभयत:पवमानस्यरश्मयो
३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
ध्रुवस्यसत:परियन्तिकेतव: ।
१ २ ३ २ ३ १ १ २ १ २ ३
यदीपवित्रे अधिमृज्यतेहरि:
२ ३ १र २र ३ १ २
सत्तानियोनौकलशेषुसीदति ॥ २ ¶ ॥

"पवमानस्य" पूयमानस्य "ध्रुवस्य" स्वयमविचलितस्य "सत:" विद्यमानस्य सोमस्य "केतव:" प्रज्ञापका रश्मय: "उभयत:" इतश्चामुतश्च "परि यन्ति" परितो गच्छन्ति अभिषव-

---

* 'पयसा—तृतीयैकवचनमिदं प्रथमाबहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् पयांसि'—इति वि० ।   † 'धरीमणि—यज्ञ'—इति वि० ।

‡ 'स्थाविरी: स्थिरा: स्थूला वा स्थविरीर्वा गाव: रश्मय:'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, ३, १३, १ ।

Digitized by Google

समये एवं भवति । “यदि” यदा ‘‘पवित्रे’* दशापवित्रे “हरिः” हरितवर्णोऽयं सोमः “अधि मृज्यते” तदानीं “सत्ता” सदनशीलोऽयं “योनौ”† योनिषु स्थानेषु “कलशेषु” द्रोणकलशादिषु पात्रेषु “निषीदति” निषस्मो भवति ॥

“योनौ”—“योना”—इति च पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २　　३ १ २
विश्वाधामानिविश्वचक्षऋभ्वसः

३ १ २ ३ १र २र　　३ १ २
प्रभोष्टसतःपरियन्तिकेतवः ।

३　१ २　　३ १ २ ३
व्यानशीपवसेसोमधर्मणा

२ ३ १ २ ३ १ २
पतिर्विश्वस्यभुवनस्यराजसि ॥ ३ ‡ ॥ १

हे “विश्वचक्षः” सर्वस्य द्रष्टः ! सोम ! “प्रभोः” परिवृढस्य “सतः” “ते” तव “ऋभ्वसः” “[ऋभ्वा”—इति महन्नामसु पठितम्]¶ महान्तः “केतवः” रश्मयः “विश्वा” विश्वानि सर्वाणि

* ‘पवित्रे अधि—सप्तम्येक-वचनमिदं पञ्चम्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, पवित्रादधि’—इति वि० ।

† ‘नितरां योनिर्नियोनिः, अथवा नीचैः स्थिता पवित्रस्य योनिर्नियोनिः, तस्मिन् नियोनौ’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ३, १२, ५ ।

¶ सायणमतेऽदःपदं निघण्टौ महन्नामसु (३, ३) पाठभेदेन पठ्यते । विवरणकारस्तु ‘ऋभ्वसः—प्रभुत्वस्य’—इति व्याचष्टे ।

"धामानि" तेजः-स्थानानि देव-शरीराणि* "परियन्ति" परितो गच्छन्ति प्रकाशयन्तीत्यर्थः। हे "सोम!" "व्यानशी" व्यापनशीलस्त्वं "धर्मणा" धारकेण रसनिष्यन्देन "पवसे" पूयसे। किञ्च "विश्वस्य भुवनस्य" "पतिः" स्वामी त्वं "राजसि" ईश्वरो भवसि† ॥

"प्रभोष्टेसतःपरियन्ति"-"प्रभोस्तेसतःपरियन्ति"—इति पाठौ, "व्यानशी"-"व्यानशि"—इति, "धर्मणा"-"धर्मभिः" —इति च ॥ २ ॥ १

॥ लौशाद्यम् ॥ प्रतआश्वि। नीःपवमा२३। नाइधे नवः। दिव्याधरु। ग्न्पयसा२३। धा३रीमणि। प्रा न्तरिक्षात्। स्थाविरीक्षे२३। आ३इक्षत। येत्वाम् जा। तिक्ष्णषिषा२३। णवा३यिधा५वा६५६ः ॥(१) उभ यतः। पवमाना२३। स्वा३रश्मयः। ध्रूवस्य। तः परिया२३। ती३केतवः। यदीपवि। चेत्रधिमा२३।

---

* 'विश्वा धामानि—विश्वानि स्थानानि जन्मानि नामानि वा'—इति वि०।

† 'राजसि—दीप्यसे शोभसे वा'—इति वि०।

Digitized by Google

४ २र २५ २ २र २ ५ १र २
व्याऽ३तेहरिः। सत्तानियो। नौकलशाऽ२ऽयि। धुसा३

२ २र२ २र५र १
यिदाऽ५नाऽ६५ऽ६यि॥(२) विश्वाधामा। निविश्वचा २३।

४ २ २ ५ २ २र२र५ १ ४ २र२५
आ३स्थभ्वसः। प्रभोष्टेस। तःपरियार३। तौ३केतवः।

२ २र२ २५र १ र ४ २२५र २ २ २५
वियानशौ। पवसेसो२३। मा३धर्मणा। पतिर्विश्वा।

१ २ ४
स्यभुवना२३। स्वराऽ३जाऽ५साऽ६५ऽ६यि(३)॥ २* ॥ [१]

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा।

१ २ २ १ २ १र २र२ १
पवमानोअजीजनद्दिवश्चित्रन्नतन्यतुम्।

१ २ २२२२
ज्योतिर्वैश्वानरंबृहत्॥ १ † ॥

"पवमानः" पूयमानः सोमः "बृहत्" महत् "वैश्वानरं" वैश्वानराख्यं "ज्योतिः" तेजः "दिवः" द्युलोकस्य "चित्र" विचित्रं "तन्यतुं न" अशनिमिव "अजीजनत्" अजनयत्॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० ८प्र० १अ० २सा०।

† ऋ० बा० ५, १, ५, ८ (२भा० १८ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, ११, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ ३ १ २ १ ३ ३ २
पवमानरसस्तवमदोराजन्नदुच्छुनः ।
२ड २
विवारमव्यमर्षति ॥ २ * ॥

हे "राजन्" दीप्यमान ! "पवमान" पूयमान ! सोम ! "तव" त्वदीयः "मदः" मदकरः "अदुच्छुनः"† रक्षोवर्जितः "रसः" "अव्यम्" अविमयं "वारं"‡ वालं दशापवित्रम् "वि अर्षति" अभिगच्छति ॥

"पवमानरसस्तव"-"पवमानस्यते रसः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ ३ १ २ १ २ ३ २
पवमानस्यतेरसोदक्षोविराजतिद्युमान् ।
२ ३ १ ३ २र ३ २
ज्योतिर्विश्वंᳪस्वर्दृशे ॥ ३ ¶ ॥ २

हे सोम ! "पवमानस्य" "ते" त्वदीयः "रसः" "दक्षः" § "द्युमान्" दीप्तिमान्‖ "विराजति" प्रकाशते** । न केवलं

---

* ऋ० वे० ७, १, २१, २ ।

† 'दुच्छुनः दुष्टजनः, न दुच्छुनः अदुच्छुनः'—इति वि० ।

‡ 'विवारं—वि-अवारितं च, वारं=याज्ञम्'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, १, २१ ३ ।

§ 'दक्षः शीघ्रगामी, अथवा दक्षरक्षणक्रियायाः कर्म'—इति वि० ।

‖ 'द्युमान् द्युलोकवान्'—इति वि० ।

** 'विविधं दीप्यते शोभते वा'—इति वि० ।

स्वयमेव प्रकाशते किन्तु "विश्वं" व्याप्तं *"स्वः" सर्वं "ज्योतिः" तेजः "दृशे" द्रष्टुं करोतीति शेषः†॥

"पवमानस्यतेरसः"-"पवमानरसस्तव"—इति पाठौ ॥३॥२

१ २र र १ २
॥ सᳫंहितम्॥ पवमानोअ। जा२यिजनात्। दि

१ २ १ १ २
वा२ः। चा२३यित्राम्। नता२न्याद्धम्। ज्यो२३तीः।

१ ७ २ ५
वा२यिश्वा। नरा२३म्। हाउवा३। ब२३४हात्॥(१)

१ २र १ २ १ २ १
पवमानर। सा२स्तवा। मदो२। रा२३जान्। अ

१ २ १ ०
दू२च्छूनाः। वा २ ३ यिवा। रा२मा। व्यमा २ ३।

२ ५ १ २र १
हाउवा३। षा२३४तौ॥(२) पवमानस्य। ता२यिरसाः।

२ १ १ १ १
दत्तो२। वा२३यिरा। जता२यिद्यूमान्। ज्यो २ ३

२ १ ० २
तीः। वा२यिश्वाम्। सुवा२३। हाउवा ३। ह२३४

५
शे(३)॥ १२ ‡॥ [१]

---

* 'विश्वं सर्वम्'—इति वि०।

† 'दृशे—स्वर्गलोकस्य गमनाय; न केवलं स्वर्गलोकस्य, सर्वस्य जगतो दर्शनायेत्यर्थः'—इति वि०।

‡ ऊ० गा० १२प्र० १ख० १२सा०।

Digitized by Google

२ र १ २ १ र १-२
॥ जराबोधीयम् ॥ पवमानोवा । ष्योजीजनात् ।

२ १ १ १ र २
दिवाश्चार२३यिचाम् । नतन्यातूम् । ज्योतायिर्वा१यि

४५ ५ २ १ १ र १ २
श्वार२३ना । रम् । बृहो३४५ई । डा ॥(१) पवमानोवा ।

१ २ १ २ १ २ १ २
रासस्तवा । मदोरार२३जान् । अदुच्छू नाः । विवारा

४५ ५ २ २ २ र १
१मार२३व्याम् । ष । षतो३४५ई । डा ॥(२) पवमानो

२ १ र२१ २१ २ २
वा । स्यातेरसाः । दचोवार२३यिरा । जतिद्यूमान् ।

र २ ४५ ५ २२
ज्योतायिर्वा १ यिश्वा २ ३९सूऽ । वः । हमो ३ ४ ५ ई ।

डा(३) ॥ ८ * ॥ [२]

५ २ ४र ५र १
॥ औपगवोत्तरम् ॥ पवमा३नोष्यजीजनात । दिवश्चि

२र १
त्रन्नतन्यतुम् । ज्योती२ । र्वौ२ । ऊवा २ ३ यि ।

२ ५ २ ११ ५ २ ४ ५ १र
वा३४यिश्वा । नरम्बृहात् ॥(१) पवमा३नरसस्तवा । मदो

र २ १ २
राजन्नदुच्छु नाः । विवौ२ । वौ२ । ऊवा२३यि । रा

* ऋ० मा० १८प्र० १ख० १८खा० ।

५ २ १ २ ५ ५ ४ ५र १ र
३४मा। व्यमर्षतायि ॥(२) पवमाउनस्यतेरसाः। दक्षो

र २र १
विराजतिद्युमान्। ज्योतौ२। षौ२। ऊवा२३यि।

२ ५ २ १ २ र १ २
वा३४यिश्वाम्। सुवर्दृशायि। ऐ। हा२ए२३। हिया

५र र २ १२ १११२
३४औहोवा। ए३। उपा३१२३४५(३)॥८*॥[३]२

अथ प्रयज्ञावइति षडृचं तृतीयं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा।

१उ ३१ २र ३२ ३२ ३ १२
प्रयज्ञावोनभूर्णयस्त्वेषाअयासोअक्रतुः।

१२ ३ २उ ३१२
घ्नन्तःकृष्णामपत्वचम्॥१†॥

"यत्" ये अभिषुताः सोमाः "गावः न" उदकानीव [तानि यथा तूर्णमधः पतन्ति तद्वत्; गाव एव वीपमीयन्ते, ता यथा स्वं गोष्ठं प्रत्याशु गच्छन्ति तद्वत्; अथवा गावः स्तुतिवचनाः यथा स्तुत्यं प्रति क्षिप्रं प्राप्नुवन्ति तद्वत्], "भूर्णयः" क्षिप्राः, "त्वेषाः" दीप्ताः "अयासः" अयाः गमनशीलाः, "कृष्णं" कृष्णवर्णम् "अपत्वचम्" अपकृष्टां त्वचं "घ्नन्तः" विनाशयन्तः, ईदृग्भूता ये सोमाः "प्र अक्रमुः" तां स्तुम इति शेषः॥

"यत्"-'ये'—इति पाठो॥१॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० ८गा०।

† ऋ० सा० ६, १, १, ५ (२भा० ४७पृ०)=ऋ० वे० ९, ८, २१, १

अथ द्वितीया।

२ १२ ३१ ३१२१ ३क २र
सुवितस्यवनामहेतिसेतुन्दुराय्यम्।
३ २ ३१ २ ३२
साह्यामदस्युमव्रतम्॥ २ *॥

"सुवितस्य"† शोभनं प्राप्तस्य सोमस्य सम्बन्धिनम् "अति-सेतुम्"‡ रक्षोविषयं बन्धनं "वनामहे"¶ सोमकर्त्तृकं रक्षसां बन्धनं स्तुमइत्यर्थः। कीदृशम्? "दुराय्यम्" दुष्प्रापणीयम् § किञ्च "अव्रतम्" यज्ञादि-कर्म-रहितं "दस्युं"‖ अपि "साह्याम" अभिभवेम॥

"दुराय्यं"-"दुराव्यं","साह्याम"-"साह्यांस"—इति पाठाः॥२॥

अथ तृतीया।

३ २३१२ ३ १र २र ३ १ २
शृण्वेवृष्टेरिवस्वनःपवमानस्यशुष्मिणः।
१२ ३१२ ३ २
चरन्तिविद्युतोदिवि॥ ३ **॥

"शृण्वे" श्रूयते। कः? "स्वनः"। किमिव? "वृष्टेः"

* ऋ० वे० ६, ८, ११, १। "वनामहे"—इति च तत्र क्वचित् पाठः।

† 'सुवितस्य—अभिषुतस्य'—इति वि०।

‡ 'अतिसेतु'—मर्य्यादां तामपि अतिक्रम्य स्थानतया'—इति वि०।

¶ 'वनतिः स्तुतिकर्मा, स्तुतिं कुर्मः'—इति वि०।

§ 'दुराय्यं'—दुर्वार्यम्, अथवा दुराप्यं दुष्प्राप्यम्''—इति वि०।

‖ 'व्रत-वर्जितम्'—इति वि०।

** ऋ० वे० ६, ८, ११, ३।

Digitized by Google

वर्षणस्य स्वनइव [तस्य यथा महान् स्वनः श्रूयते तद्वत् प्रभूत-रस-पात-समये श्रूयते]। कस्य स्वन इति? तत्राह—"पव-मानस्य" पूयमानस्य "शुष्मिणः" बलवतः तस्यैव "विद्युतः" दीप्तयः* "दिवि" अन्तरिक्षे चरन्ति ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

१ २ ३ १उ २ १ २ ३ १ २
आपवस्वमहीमिषङ्गोमदिन्दोहिरण्यवत् ।
१ २ ३ २ २
अश्ववत्सोमवीरवत् ॥ ४ † ॥

हे "इन्दो!" "सोम!" अभिषुतः त्वं "महीम् इषम्" महद्-न्नम् "आ पवस्व" ‡। कीदृशम् अन्नम्? "गोमद्" गोभि-र्युक्तम्, "हिरण्यवत्" सुवर्णोपेतम्, "अश्ववत्" अश्वोपेतम्, "वीरवत्" पुत्रयुक्तम् ॥

"अश्ववत्सोमवीरवत्"-"अश्वावद्वाजवत्सुतः"—इति पाठौ॥४॥

---

* 'विद्युतः—विद्युत्संयुक्तस्य'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६. ८, ३१, ४ ।

‡ 'आपवस्व महीमिषम्'—आभिमुख्येन पवस्व महीमिषम् महतीमिषं वृष्टिमन्नं वा'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ पञ्चमी।

१ २ ३ २ ३ १ २र
पवस्वविश्वचर्षणआमहीरोदसीपृण।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २
उषाःसूर्योनरश्मिभिः॥ ५ * ॥

हे "विश्वचर्षणे" विश्वस्य द्रष्टः सोम! स त्वं "पवस्व" चर रसम्। तथा कृत्वा तेन रसेन "मही"† "रोदसी" द्यावापृथिव्यौ "आ पृण" आ पूरय। "उषाः" उषसः [एकदेश-वाचिनोष:-शब्देनाहान्युपलक्ष्यन्ते तत्प्राधान्यात्] अहानि "रश्मिभिः" "सूर्योन" सूर्यइव॥

"पवस्वविश्वचर्षणे"-"पवस्वविश्वचर्षण"—इति पाठौ॥ ५॥

अथ षष्ठी।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
परिनःशर्मयन्त्याधारयासोमविश्वतः।

१ २ ३ १ ० ३ १ २
सरारसेवविष्टपम्॥ ६ ‡॥ ३

हे सोम! "नः" अस्मभ्यं "शर्मयन्त्या" सुखयन्त्या धारया¶ "विश्वतः" सर्वतः "परि सरा" परिसर परिचर। "रसेव"

---

* ऋ० वे० ६, ८, ३१, ५।

† 'मही—महती'—इति वि० महत्यौइत्यर्थः।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ३१, ६।

¶ 'शर्मयन्त्या—शर्म-सुखं, तद्भावयन्त्या धारया'—इति वि०।

रसेनेव "विष्टपं" भूलोकं* [यद्वा रसा नदी स्थानं सा प्रवणरूपमिव]॥

"परिनः"-"परिणः"—इति पाठौ॥ ६॥ ३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः॥ १॥

अथ द्वितीय खण्डे—

आशुरर्षेति षड्टचं प्रथमं सूक्तम्, तत्र प्रथमा।

२ ३१ २ ३१२ ३२ ३१ २
आशुरर्षबृहन्मतेपरिप्रियेणधाम्ना।

१ २१ २उ ३ १२
यत्रदेवाइतिब्रवन्॥ १†॥

हे "बृहन्मते"‡ महामते सोम! "प्रियेण" देवानां प्रियतमेन "धाम्ना" शरीरेण¶ "धारया" "आशुः" शीघ्रः सन्

---

* 'विष्टपं स्वर्गं लोकम्,—इति वि०।

† ऋ० वे० ९, ८, २९, १। "अ्रुवन्"—इति मु०पाठः, अस्मंदे च क्वचित् पाठः।

‡ 'बृहन्मते—बृहद्गुहे'—इति वि०।

¶ 'परिप्रियेण—परि समन्तात् प्रियेण धाम्ना प्रियेण स्थानेन'—इति वि०।

Digitized by Google

"पर्य्येषि" परिगच्छ, "यत्र" "देवाः" इन्द्रादयः वर्त्तन्ते—"इति" "ब्रुवन्" उच्चारयन्, तं देशं गच्छामीति ब्रुवन्नित्यर्थः॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ १२ २२ ३ १ २ ३१२१२
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतञ्जनाययातयन्निषः।
३२ ३१ ३२
वृष्टिन्दिवःपरिस्रव॥ २ *॥

"अनिष्कृतम्" असंस्कृतम् † यजमानं स्थानं वा "परिष्कृण्वन्" संस्कुर्वन् "जनाय" "इषः" अन्नानि "यातयन्" ‡ निर्गमयन् "दिवः" अन्तरिक्षात् "वृष्टिं" ¶ "परि स्रव"॥ २॥

अथ तृतीया।

३ २उ ३१२ ३२ ३ १ १ ११११
अयꣳसयोदिवस्परिरघुयामापवित्रआ।
१ २ ३ १ ३२
सिन्धोरूर्म्माव्यक्षरत्॥ ३ §॥

"सः" "अयं" सोमः "पवित्रे आ" सिच्यमानः [—इति

---

* ऋ० वे० ६, ८, २९, २।

† 'अनिष्कृतम्—आभिमुख्येन निष्कृतम्'—इति वि०। इह लेतविन्यमत प्रत्यर्थं आभिमुख्यं कुतो लभ्यतइति।

‡ 'यातयन्'—प्रापयन्—इति वि०।

¶ मुद्रित-मूले तु "वृष्टिम्"—इति पाठः ऋग्वेदेपि तथा।

§ ऋ० वे० ६, ८, २९, ३।

Digitized by Google

शेषः *] "सिन्धोः" जलस्य † "ऊर्म्मा" ‡ ऊर्म्मौ सङ्घाते "वि अचरत्" विविधं चरति । स इत्युक्तम्, कः? इत्याह— "यः" "दिवस्परि" द्युलोकस्योपरि "रघुयामा" लघुगमनः ¶ देवप्राप्तौ, सोयमिति सम्बन्धः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

२ १ २   ३ २ ३ २उ   ३ १ २ ३ १ २

सुतएतिपवित्रआत्विषिन्दधानओजसा ।

३ १ २   ३ १ २

विचक्षाणोविरोचयन् ॥ ४ § ॥

"सुतः" अभिषुतः सन् "पवित्रे" दशापवित्रे ["आ" —इत्यनर्थकः] "ओजसा" बलेन "शीघ्रम्" "एति" गच्छति । कीदृशः सन्? "त्विषिं" दीप्तिं "दधानः" धारयन्, "विचक्षाणः" सर्वं पश्यन्, ‖ "विरोचयन्" दीपयंश्च; किम्? देवानिति शेषः ॥ ४ ॥

---

* 'पवित्रे—अधिकरण-सप्तम्या; पवित्रे अधिकरणभूते । आ-इत्ययमुपसर्गः अचरदित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः; आ अचरत्'—इति वि० ।

† 'सिन्धोः—समुद्रस्य नदीमात्रोदकस्य वा'—इति वि० ।

‡ 'ऊर्मयः सङ्घाताः'—इति वि० । ऊर्म्मा इति तूर्म्मिशब्दस्य सुपां सुलुगिति सुपो डादेशे डि-लोपे रूपम् ।

¶ 'रघुशब्दो लघुवाची'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ९, ८, १९, ४ ।

‖ 'विचक्षाणः—विविधं पश्यमानः अयं वा विश्वं जगत् पश्यमानः'— इति वि० ।

Digitized by Google

अथ पञ्चमी ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आविवासन्परावतोअथोअर्वावतःसुतः ।

१ २ ३ १ २
इन्द्रायसिच्यतेमधु ॥ ५ * ॥

"सुतः" अभिषुतः सोमः "परावतः" [दूरनामैतत् †] दूरस्थान् "अथो" ‡ अपिच "अर्वावतः" अन्तिकस्थांश्च ¶ देवान् "आ विवासन्" रसेन परिरक्षणायेत्यर्थः । "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "मधु" मधुरद्रव्यः सोमः "सिच्यते"॥ ५ ॥

अथ षष्ठी ।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समीचीनाअनूषतहरिᳲहिन्वन्त्यद्रिभिः ।

२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये ॥ ६ § ॥ ४

"समीचीनाः" सम्यगञ्चिताः सङ्गताः स्तोतारः ‖ "अनूषत" स्तुवन्ति किञ्च सोमं "हरिं" हरितवर्णं "हिन्वन्ति"

---

* ऋ० वे० ६, ८, २९, ५ ।

† "परावतः"—इति निघण्टौ तृतीय-षड्विंशे दूरनामसु पञ्चमत्वेन पाठात् ।

‡ "अथ उ"—इति वि० ।

¶ अन्तिकनामसु "अर्वाके"—इति पाठात् (निघ० २, १६, ८) ।

§ ऋ० वे० ६, ८, २९, ६ । "योनावृतस्यसीदत"—इति तत्र तृतीयः पादः ।

‖ 'समीचीनाः—आसन्नवर्तिनः'—इति वि० ।

Digitized by Google

प्रेरयन्ति गमयन्ति "अद्रिभिः" ग्रावभिः । किमर्थं हिन्वन्ति ? "इन्दुं" सोमम् "इन्द्राय" इन्द्रस्य "पीतये" पानाय ॥ ६ ॥ ४

अथ तृचात्मके द्वितीयसूक्ते—प्रथमा ।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
हिन्वन्तिसूरमुस्रयःस्वसारोजामयस्पतिम् ।
२ १ १२ ३ १ २
महामिन्दुम्महीयुवः ॥ १ * ॥

"उस्रयः" कर्मार्थं निवसन्त्यः सर्वत्र गन्त्र्य इत्यर्थः, "जामयः" एकस्याः पाणेः उत्पन्नत्वात् परस्परं बन्धुभूताः, "स्वसारः" [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ० २, ५, १३) । सुष्ठु कर्मसु प्रेर्यन्ते ऋत्विग्भिरिति स्वसारः] अङ्गुलयः, "महीयुवः" सोमाभिषवं कामयमानाः सन्तः "सूरं" सुवीर्यं [सोमे पीते वीर्यं भवतीति ; शोभनं वीर्यं कारणं वा, सर्वेषां कर्मणि प्रेरकं वा, तादृशम्] "पतिम्" सर्वस्य स्थावर-जङ्गम-जातस्य स्वामिनं, यस्माद् देवार्थमिज्यतेऽतएव "महाम्" देवेभ्यो दीयमानत्वेन महान्तं मंहनीयं वा "इन्दुम्" ग्रहेषु स्यन्दमानं सोमं "हिन्वन्ति" प्रेरयन्ति ["हिवि प्रीति-गत्योः (भ्वा० प०)"—इति धातोरेतद्रूपं स्यादि] † ॥ १ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ९, १, १ ।

† 'हिन्वन्ति सूरम् उस्रयः = सेवयन्ति सूर्यम् आदित्यरश्मयः । स्वसारः जामयः पतिम् = स्वसारः भगिन्यः जामयः आदित्यरश्मयः ; यथा परस्परं भगिन्यः एकस्यैव भर्त्तुः परमहमिकया सेवां कुर्वन्ति, तद्वदादित्य-रश्मयः परमहमिकया आदित्यं सेवन्ति । एवं, महामिन्दुमभीयुवः = महिमानमभिच्छन्त्यः सोमरश्मयः उदकानि वा'—इति वि० ।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ १ ३ १ २ ३ १
पवमानरुचारुचादेवदेवेभ्यःसुतः।
२ ३ २३ १ २
विश्वावसून्याविश ॥ २ * ॥

हे "पवमान" दशापवित्रेण पूयमान! [यद्वा पुनान शुद्ध!] सोम! "रुचारुचा" ["रुच दीप्तौ (भ्वा० आ०)] सर्वेण तेजसा हे "देव" दीप्यमान! "देवेभ्यः" देवार्थं "सुतः" अभिषुतः त्वं "विश्वा" व्याप्तानि सर्वाणि बहूनि "वसूनि" धनानि "आविश" अस्मान् प्रापय [यद्वा सर्वाणि "वसूनि" वासस्थानानि ग्रहादीनि† "आविश" समन्तात् प्रविश] ॥

"देवेभ्यसस्सुतः"--"देवेभ्यस्परि"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
आपवमानसुष्टुतिंवृष्टिन्देवेभ्योदुवः।
३ १ २ ३ १ २
इषेपवस्वसंयतम ॥ ३ ‡ ॥ ५

हे "पवमान" पूयमान! पुनान! वा सोम! "सुष्टुतिं" ¶

---

* ऋ० वे० ७, २, १, २।

† ग्रह-चमसादीनि यज्ञीयपात्राणीति यावत्।

‡ ऋ० वे० ७, २, १, ३।

¶ 'सुष्टुतिं—शोभनां स्तुतिम् प्राप्यमाणां'—इति वि०।

शोभनस्तुति-युक्तां "वृष्टिं" "देवेभ्यः" देवानां "दुवः"* ["सुपां सुलुक् (७, १, ३९)"—इति चतुर्थ्या लुक्] दुवसे परिचरणायं† "आ पवस्व" आ गमय त्वम् [यथा मदीयया स्तुत्या वृष्टिर्भवति तथा कुर्वित्यर्थः] किञ्च अस्माकम् "इषे" अन्नार्थञ्च "संयतं"‡ सम्यगस्मान् सङ्गच्छतीति वृष्टिं कुरु [यद्वा "दुवः" परिचर्या मभिलक्ष्य क्रियमाणां "सुष्टुतिं" शोभन-स्तुति-रूपां वृष्टिं बहुशः स्तुतिमित्यर्थः, एतां देवेभ्यः प्रापय] ॥ ३ ॥५

२ र र २
॥ विशोविशीयम् ॥ हिन्वाऊम् । ता३यिस् । रा३

१ २ २ १ २र १ २ १ २
मूस्रा३याः । स्वसारः । जामार३याः । ऊम्मायि । पा

२ १ र ५ १ ३ १ ३
३ता३यिम् । मार२३४द्दा२द्दायि । ओ । ऊवायि । ई

५ १ २ २ १ ५र
२३४न्दूम् । ऊम्मायि । मा३द्दो३ । यू२३४वाः । एद्दि

५ २ र र २ १ २ २ १र २र
या६हा ॥(१) पवाऊम्मा३ना । ह्व३चाह्व३चा । देवदे ।

१ २ १ २ २ १
वायिभा२३याः । ऊम्मायि । सू३ता ३ः । वा२३४यि

* 'दुवः—दूरात् द्युलोकात्'— इति वि० ।

† "दुवस्यति"—इति परिचरण-कर्मसु पञ्चमं नैघण्टुकम् (३, ५)।

‡ "संयतं—सम्यङ्नियतम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

२ ५ १ २ १ १ ५ १ २
स्वाद्वायि। ओ। ऊर्वायि। वा२३४सू। ऊम्मा। नौ
२ १ ५र ५ १र र र
३या३। वा२३४यिश्रा। एह्वियाद्द्वा॥(२) आपाऽम्।
२ १ २ २ १ २ र १ २
वा३मा। ना३सूष्टू३तीम्। वृष्टिन्दे। वायिभा२३शाः।
१ २ २ १ र५ १ २ २
ऊम्मायि। दू३वा३ः। भा२३४यिषेद्वायि। ओ। ऊर्वा
२ ५ १ २ २ १
यि। पा२३४वा। ऊम्मा। स्वा३सा३म्। या २ ३ ४
५र ५ ४
ताम्। एह्वियाई द्वा। हो५ई। डा (३)॥ १० *॥[१]

१र र १ २
॥ ऐडानाऽसञ्चारम्†॥ औहोयिऊवा३होयि। चि
४ २ १ ५ २ र र ४ २ १ ५ २
त्वन्तिसू३रा३मुत्वयः। स्वसारोजा३मा३यस्पतिम्। म
२ २ ५ २१र१ १ २ र
हामा२३४यिन्दुम्। मद्दीयुवः। इडा२३॥(१) पवमा
४ २र २५र १र ४ २ २ ५ र २ २ ५
ना३रु३चारुचा। देवदे३वे३भ्यःसुतः। विश्वावा२३४सू।
२१र २ १ १र ४ २ २ ५
नियाविश। इडा२३॥(२) आपवमा३ना३सुष्टुतिम्।
२ ४ २र २ ५ २र र १ ३ २र
वृष्टिन्दे३वे३भ्योदुवः। औहोयिऊवा३होयि। इषायि

* ऊ० गा० ५प्र० १ ख० १०सा०। † "इडानांसंचारः"—इति ख० पाठः।

३　५　२ १ २　१　२　४　५　४
पा२३४वा । स्वसंयतम् । इडा२३भा३ । एहीडा । हो

५ई । डा(३) ॥ १० * ॥ [२]५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
द्वितीय खण्डः † ॥ २ ॥

अथ तृतीयखण्डे ‡ प्रथमतृचे—

प्रथमा ।

१ २　३ १ २　३ १ २
जनस्यगोपाअजनिष्टजागृवि

३२ ३ १ २　१　२ ३ १ २
रग्निःसुदक्षःसुवितायनव्यसे ।

३ १ २　३ १　२ ३ १　२
घृतप्रतीकोबृहतादिविस्पृशा

३ १२　२२　३ १ ३　१ २
द्युमद्विभातिभरतेभ्यःशुचिः ॥ १ ¶ ॥

"जनस्य" § "गोपा" गोपयिता रक्षिता, "जागृविः"

---

* ऊ० गा० १९प्र० २ख० १०गा० ।

† 'उक्तम् बहिष्पवमानमेकविंशस्तोत्रिकम्'—इति वि० ।

‡ 'इहाग्नेयान्याज्यानि'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ४, १, ७, १=य० वे० १५, २७ ।

§ 'जनस्य—यजमानस्य'—इति वि० ।

Digitized by Google

जागरणशील: सदा प्रबुद्ध:, "सुदक्ष:" सुबल: सर्वैः श्लाघनीयबल:, स: "अग्नि:" "नव्यसे" नवतराय "सुविताय"* लोकानां कल्याणाय "अजनिष्ट" जात:। तत: "घृत-प्रतीक:" घृतेन प्रज्वलिताङ्ग:, "बृहता" महता "दिविस्पृशा" द्युलोकं प्राप्नुवता तेजसा युक्त:, "शुचि:" शुद्ध:, एवंविधोऽग्नि: "भरतेभ्य:" ऋत्विग्भ्य: तत्तदर्थं† "द्युमत्" दीप्तिमत् यथा भवति तथा "भाति"‡ प्रकाशते¶ ॥ १ ॥

---

* "सुविताय—यजमानजनाय अभिषवकर्म्मणे'—इति वि०।

† 'भरता: मनुष्या: ऋत्विजो दत्यन्ते, तेभ्य:'—इति वि०। "भरता:"—इति ऋत्विङ्नामसु प्रथमं नैघण्टुकम् (३, १८)।

‡ नात्र वि-शब्दो व्याख्यात: सायणेन, विवरणकारस्त्वाह—'वि=विविधम्'—इति।

¶ अत्र महीधरव्याख्या यथा—"योऽग्निर्भरतेभ्य: ऋत्विग्भ्य: सकाशादजनिष्ट जात: तैर्मथितत्वात्तेभ्यो जात इत्युच्यते। भरता इति ऋत्विङ्नामसु पठितम्। किमर्थं जात:। नव्यसे नवीयसे नवतराय सुविताय सूताय प्रसूताय कर्मणे यागाय सूतरिडागम आर्षः अभिनवं नवीयस्तस्मै ईलोप आर्षः। सोऽग्निर्दिविस्पृशा द्युलोकस्पर्शिना बृहता ज्वालासमूहेन द्युमत्कान्तिमद्यथा तथा विभाति विविधं दीप्यते। कीदृशोऽग्नि: ? जनस्य यजमानस्य गोपा:। गोपायति रक्षतीति गोपा: क्विप् लोपोर्व्योर्वलि यलोप:। जागृवि: जागरणशील: कर्मणि सावधान:। सुदक्ष: शोभनो दक्ष उत्साहो यस्य अतिकुशलो वा। घृतप्रतीक: घृतं प्रतीके मुखे यस्य। शुचि: शुद्ध: बहूनि हवींषि भक्षयन्नपि उच्छिष्टो न स्यात् शोधको वा ॥"—इति।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २३ १ २ ३ १ २ ३१र
त्वामग्ने अङ्गिरसोगुहाहित

२र ३१ २र
मन्वविन्दञ्छिश्रियाणंवनेवने ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र
सजायसेमथ्यमानःसहोमह

२र ३ १ २ ३ १ २
त्वामाहुःसहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ २ * ॥

हे "अग्ने!" "अङ्गिरसः"†—एतन्नामका ऋषयः "गुहा" गुहायां "हितं" निहितं निगूढं "वनेवने" वृक्षे "शिश्रियाणम्" आश्रितम् "त्वाम्" "अन्वविन्दन्"‡ अलभन्त। "महत्" महता "सहः" सहसा बलेन युक्तः "सः" त्वं "मथ्यमानः" "जायसे" हे "अङ्गिरः"¶ अङ्गिरसां प्रकृतिभूत! त्वां "सहसस्पुत्रम्" आहुः§ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ४, १, ३, ६ = य० वे० १५, २८।

† 'अङ्गानां रसभूताः'—इति वि०।

‡ 'अन्वविन्दन्—विद्ज्ञाने, विद्लाभे, विद्सत्तायाम्'—इति वि०।

¶ 'अङ्गिरा जाठरोऽग्निः'—इति वि०।

§ अत्र महीधरव्याख्या यथा—'हे अग्ने! अङ्गिरसः अङ्गिरोवंशोद्भवा ऋषयस्त्वा मन्वविन्दन् लेभिरे अन्विष्य प्रापुरित्यर्थः। किम्भूतं त्वां? गुहा गुहायां निगूढे प्रदेशे हितं स्थितमप्सु प्रविष्टमित्यर्थः। अग्निर्देवेभ्य उदक्रामत्सोऽप आविशदित्यादि श्रुतेः। सुपां सुलुगिति गुहाशब्दात्सप्तमीलोपः। हे अग्ने! पुनर्मह त्वां वनेवने शिश्रिया नानावनस्पतिषु श्रितमङ्गिरसोऽन्वविन्दन्। नित्यवीप्सयोरिति वनेपदस्य

अथ तृतीया।

२१ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
यज्ञस्यकेतुम्प्रथमम्पुरोहित
३ १र २र ३ १र २र
मग्निन्नरस्त्रिषधस्थेसमिन्धते।
१ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २
इन्द्रेणदेवैःसरथंसबर्हिषि
२ ३ १र २र३ १ २र ३ १ २
सीदन्निहोतायजथायसुक्रतुः॥ ३ *॥ ६

"नरः" कर्मणां नेतारः ऋत्विजः "यज्ञस्य" यागस्य "केतुं" प्रज्ञापकं "पुरोहितं" यजमानैः पुरस्कृतम् "इन्द्रेण" "देवैः" "सरथं" देवानां तेषां मान्यत्वात् समान-रथम् "अग्निं" "त्रिषधस्थे"† त्रिस्थाने विहारप्रदेशे "प्रथमं" "समिन्धते" सम्यग् दीपयन्ति। ततः "सुक्रतुः" शोभन-कर्मा "होता" देवाना-माह्वाता "सः" अग्निः "बर्हिषि" बर्हिर्युक्ते तस्मिन् स्थाने

हितम्। अयतेः शार्दाच बहुलं छन्दसीति अपः सुः हितं च। यं त्वामङ्गिरसो ऽन्वभन्त स त्वं आयसेऽधुनाप्यरणिभ्य उत्पद्यसे। कीदृशः? महसाः महता बहुना सहसा बलेन मथ्यमानः। महत्सहः-शब्दाभ्यां तृतीयालोपः। मथ्यमानो जायसे इत्यर्थः। हे अङ्गिरः अग्ने! अतएव सहसो बलस्य पुत्रं त्वामाहुः वदन्ति मुनयः बलेन मथ्यमानत्वाद् बलपुत्रं वदन्तीत्यर्थः॥"—इति।

* ऋ० वे० ४, १, २, २।

† 'त्रिषधस्थे—सधस्थं स्थानमुच्यते। त्रिभिः स्थानैः समिन्धते—गार्हपत्य-दक्षिणाग्न्याहवनीय-प्रभृतिभिः स्थानैः समिन्धते'—इति वि०।

Digitized by Google

"यजथाय" यज्ञाय * "निषीदन्" न्यसीदत् प्रतिष्ठितो भवदिति यावत् ॥

"समिन्धते"-"समीधिरे"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ६

२ १ २ २ २ २ १
॥ काबम् ॥ जनोवा । स्यगोपाअजनायि । इजागृ
१ २ १ १
वा२यिः । अग्निःसुदत्तःसुविता । यनव्यासा२यि । घृ
२ २ २ १ १ २ ४ ५ २
तप्रतीकोबृहता । दिविस्पृशा२३ । द्युमा३द्वायिभा । ति
१ १ २ ४ १ १
भराता२३यि । भाया३:श्वु५चा६५६यिः ॥(१) तुवोवा ।
२ २ २ १ १ २
अग्ने अङ्गिरसो । गहाहायिता२म । अन्वविन्दञ्छिश्रिया
२ २ १ १ २ २ २ २
णाम् । वनेवाना२यि । सजायसेमथ्यमानाः । स
२ १ १ २ ४ ५ २ १ १ २
होमाहा२३त् । त्वा३माहुः । सहसास्पू२३त् । त्रामा
४ २ १ २
३ऽगा५यिरा६ ५६: ॥(२) यज्ञोवा । स्यकेतुम्प्रथमाम् ।
२ २ १ २ २ १ १
पुरोहायिता२म । पुरोहायिता२म । अग्निन्नरस्त्रिष
२ १ १ २ २ २
धस्थायि । समिन्धाता२यि । इन्द्रेणादेवैःसरथाम् ।

---

* 'यजथाय —यजन-क्रियायाः कर्तृ चे'—इति वि० ।

Digitized by Google

२ १ १ १ ४५ ५ २र १
सबर्हायिषा२३यि। सायिदा३न्नायिहो। तायजाथा२३।
१ २ ४
यासू३क्का५तू६५६:(३)॥ १५ *॥ [१] ६

अथ द्वितीयतृचे†—

प्रथमा।

३ १ २ ३ १र १र
अयंवांमित्रावरुणासुत:सोमऋतावृधा।
२उ ३ १ २ ३ १ २
ममेदिहश्रुतᳪहवम्॥ १ ‡॥

हे "ऋतावृधा" ऋतस्य सत्यस्य यज्ञस्य वा वर्द्धकौ¶! "मित्रावरुणा" हे मित्रावरुणौ! "वां" युवाभ्याम् "अयं" "सोम:" "सुत:" अभिषुत:। यस्मादेवं तस्मात् "इह" अस्मिन् यज्ञे "ममेत्" मदीयमेव§ "हवम्" आह्वानं "श्रुतं" शृणुतम्॥ १॥

* ऊ० गा० १९प्र० १ख० १५गा०।

† 'मैत्रावरुणमाज्यम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० २, ८, ७, ४।

¶ 'ऋतावृधा—ऋतो यज्ञ:, तेन वर्द्धयितारौ अथवा ऋतमन्नं तेन वर्द्धेते ऋतावृधौ' —इति वि०। निघण्टौ तु ऋतमिति यज्ञनामसु (१, १२), धननामसु (२, १०), उदकनामसु (१, १२), सत्यनामसु (३, १०) च दृश्यते परं नत्वन्ननामसु।

§ 'मम इत्—इत्-इति पद-पूरण:। इह मदीये यज्ञे'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १२ ३ १२ ३१ ३ २
राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे ।
३१ २
सहस्रस्थूण आसाते ॥ २ * ॥

"राजानौ" ईश्वरौ दीप्यमानौ वा "अनभिद्रुहा" † अनभिद्रोग्धारौ यौ मित्रावरुणौ "ध्रुवे" स्थिरे "उत्तमे" उत्कृष्टे "सहस्रस्थूणे"‡ "सदसि"¶ स्थाने "आसाते" उपविशतः [तावागच्छतामिति शेषः] ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ २३१ १२
ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती ।
१ २ ३ १ २
सचेते अनवह्वरम् ॥ ३ § ॥ ७

"सम्राजा" सम्राजौ आश्रयेव सर्वेषां शास्तारौ, "घृतासुती" घृताशौ‖ ["महामहिच्चं घृताशावदत्"—इति मन्त्रान्तरात्,]

* ऋ० वे० ३, ८, ७, ५ । "आसाते"—इति तत्र पाठः ।

† 'अद्रोहकर्त्तारौ'—इति वि० ।

‡ 'सहस्रस्थूणे—स्थूणानां सहस्रं यस्मिन्'—इत्यादि वि० ।

¶ 'सद्मोनामसमाख्ये इति भावत् ।

§ ऋ० वे० ३, ८, ८, १ ।

‖ 'घृतासुती—घृतेन आहुतिः * * * शरीरवृद्धिर्ययोर्भवति * *'—इति वि० ।

Digitized by Google

"आदित्या" अदितेः पुत्रौ, "दानुनस्पती" 'दानुनः' धनस्य देवस्य वा 'पती' स्वामिनौ,* "ता" तौ मित्रावरुणौ "अन-ह्वरम्" अकुटिलं यजमानं† "सचेते" हविर्भक्षणार्थं सेवेते ॥ २ ॥ ७

अथ तृतीय-तृचे‡—प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रोदधीचोअस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः ।
३ १ २ ३ १र २र
जघाननवतीर्नव ¶ ॥ १ § ॥

[अत्र शाट्यायनिन इतिहासमाचक्षते—"आथर्वणस्य दधीचो जीवतो दर्शनेन असुराः पराबभूवुः। अथ तस्मिन् स्वर्गते सति असुरैः पूर्णा पृथिव्यभवत्। अथेन्द्रस्तैरसुरैः सह योद्धुमशक्नुवं-स्तमृषिमन्विच्छन् स्वर्गं गत इति शुश्राव। अथ पप्रच्छ तत्र-त्यान्—'नेह किमस्य किञ्चित् परिशिष्टमङ्गमस्ति?'—इति; तस्मा अवोचन्—'अस्त्येतदाश्वं शीर्षं, येन शिरसा अश्विभ्यां मधुविद्यां प्राब्रवीत्, तत्तु न विद्मः यत्राभवत्'—इति। पुन-

* 'दानुनस्पती—दान-कर्त्तृ च यजमानाय'—इति वि०।

† 'अनवह्वरं—यज्ञम्'—इति वि०।

‡ 'ऐन्द्रमाज्यम्'—इति वि०। ¶ "नवतीर्णवा"—इति क० पु० पाठः।

§ छ० आ० २, २, ४, ५ (१भा० २९९ पृ०) = ऋ० वे० १, ९, ७, १ ।

रिन्द्रोऽब्रवीत्—'तदन्विच्छत'—इति । तद्दान्वेषिषुस्तच्छर्यणावत्यनुविद्या आजह्नुः । शर्यणावद्ध वै नाम कुरुक्षेत्रस्य जघनार्धे सरः स्यन्दते । तस्य शिरसोऽस्थिभिरिन्द्रोऽसुरान् जघान"—इति ॥]
"अप्रतिष्कुतः" परैरप्रतिशब्दितः प्रतिकूल-शब्द-रहितः इन्द्रः आथर्वणस्य "दधीचः"—एतन्नामकस्य ऋषेः "अस्थिभिः" पार्श्व-शिरः-सम्बन्धिभिरस्थिभिः "नवतीर्नव" नवसङ्ख्याका नवतीः दशोत्तरा अष्टशतसङ्ख्याकाः (८१०) [तथाहि—लोकत्रयवर्त्तिनो देवान् जेतु मादावासुरी माया त्रिधा सम्पद्यते ; त्रिविधा सा अतीतानागतवर्त्तमान-काल-भेदेन तत्काल-वर्त्तिनो जेतुं पुनरपि प्रत्येकं त्रिगुणिता भवति—एवं नव सम्पद्यन्ते ; पुनरपि उत्साहादि-शक्ति-त्रय-रूपेण त्रैगुण्ये सति सप्तविंशतिः सम्पद्यते ; पुनः सात्त्विकादि-गुणत्रयभेदेन त्रैगुण्ये सति एकोत्तरा अशीतिः सम्पद्यते ;—एवं चतुर्भिस्त्रिकैर्गुणितायाः मायाया दशसु दिक्षु प्रत्येकमवस्थाने सति नवनवतयः सम्पद्यन्ते । एवंविधमायारूपाणि] "वृत्राणि" आवरकाण्यसुरजातानि "जघान" हतवान्] दधीचः—दधि अञ्चतीति दध्यङ्, अञ्चतेः ऋत्विगित्यादिना (३, २, ५९) क्विन्, अनिदिताम्-इति (६, ४, २४) न-लोपः, षष्ठ्येकवचने "अचः (६, ४ १३८)"—इत्यकारलोपे चाविति (६, ३, १३८) दीर्घत्वम्, उदात्तनिवृत्तिस्वरेण विभक्त्युदात्तत्व-विधानेन तद्बाध्यते ।

Digitized by Google

भ्यस्त्वभिः—"छन्दस्यपि दृश्यते (७, १, ७६)" —इति भन- जादावपि अस्थि-शब्दस्यानङादेशः अन्तोदात्तः] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ १ १२ ३ २ ३ २ १ २ ३ १ २
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्।
१ २ ३ १ २
तद्विदच्छर्यणावति ॥ २ * ॥

"पर्वतेषु" पर्ववत्सु गिरिषु अपश्रितम् अप गत्य स्थितम् "अश्वस्य" अश्व-सम्बन्धिनो दधीचः "यत्" "शिरः" "इच्छन्" इन्द्रो वर्त्तते, "शर्यणावति" एतन्नामके सरसि† "तत्" शिरः "विदत्" अज्ञासीत्] 'ज्ञात्वा, तदाहृत्य, तदीयैः अस्थिभिः वृत्राणि जघान'—इति पूर्वस्यामृचि सम्बन्धः ॥ इच्छन्—इषु इच्छायां तुदादित्वाच्छप्रत्ययः। विदत्— वेत्तेर्लुङि व्यत्ययेन च्लेरङादेशः। शर्यणावति—शर्यणा नामानो देशास्तेषामदूर- भवः सरः शर्यणावत्; मध्वादिषु शर्यणाशब्दस्य पाठात् "मध्वादिभ्यश्च (४, २, ८६)"—इति चातुरर्थिको मतुप्, "सञ्ज्ञायाम् (८, २, ११)"—इति मतुपो वत्वम्, मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् (६, ३, ११९)"—इति दीर्घः ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० १, ६, ७, ४।

† 'शर्यणावति—यज्ञे कर्मवति'—इति वि०।

अथ तृतीया ।

१उ   २ ३ १ २   ३ १ २ ३ १ २   ३क २र

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।

१ २ ३ १ २   ३ १ २

इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ * ॥ ८

"अत्राह" अस्मिन्नेव "गोः" गन्तुः "चन्द्रमसः" "गृहे" मण्डले "त्वष्टुः" दीप्तस्य आदित्यस्य सम्बन्धि "अपीच्य" रात्र्यावन्तर्हितं स्वकीयं यत् "नाम" तदादित्यरश्मयः "इत्था" इत्थमनेन प्रकारेण "अमन्वत" अजानन् [उदकमये स्वच्छे चन्द्रविम्बे सूर्य्य-किरणाः प्रतिफलन्ति, तत्र प्रतिफलिताः किरणाः सूर्य्ये यादृशीं सञ्ज्ञां लभन्ते तादृशीं चन्द्रेऽपि वर्त्तमानां लभन्त इत्यर्थः। एतदुक्तं भवति—यद्रात्र्यावन्तर्हितं सौरं तेजस्तच्चन्द्र-मण्डलं प्रविश्य अह्नीव नैशं तमो निवार्य्य सर्व्वं प्रकाशयति; ईदृशभूत-तेजसा युक्तः सूर्य्यश्चन्द्र एव, द्वादशस्वादित्येषु इन्द्रस्यापि परिगणितत्वात्। अतोऽहोरात्रयोः प्रकाशक इन्द्र एवेति इन्द्र-स्तुतेः प्रतीयमानत्वादिन्द्रो देवतेत्येतदुपपन्नं भवति। अत्र निरुक्तम्—'अथाप्यस्यैको रश्मिश्चन्द्रमसं प्रति दीप्यते तदेतेनोपे-क्षितव्यमादित्यतोऽस्य दीप्तिर्भवतीति; 'सुषुम्णः सूर्य्यरश्मि-श्चन्द्रमा गन्धर्वः'—इत्यपि निगमो भवति; सोऽपि गौरुच्यते—

* ऋ० आ० १, २, १, २ (१आ० १४१ ऋ०) = ऋ० वे० १, ८, ७, ४ ।

Digitized by Google

"अत्राह गोरमन्वत"—इति (२, ६,)। "अत्रा ह गोः सममंसतादित्यरश्मयः स्वनामापीच्यमपगतमपचितमपिहितमन्तर्हितं वा (४, २५)"—इति॥ अमन्वत—'मनु अवबोधने (त०, आ०)। अपीच्यम्—अपपूर्वाच्चिनोते र्निपातनाद् यत्, अतएवाभिमतरूपसिद्धिः; यद्वा अपिपूर्वादञ्चतेः "ऋत्विग् (३, २, ५९)"—इत्यादिना क्विन्, "अनिदिताम् (६, ४, २४)"—इति न-लोपः, अपिगते निर्गते भवमपीच्यम् "भवे छन्दसि (४, ४, ११०)"—इति यत्, "अचः (६, ४, १३८)"—इत्यकारलोपे "चौ (६, ३, १३८)"—इति दीर्घत्वम्; 'अपीच्यो प्रकाशः'—इति भट्टभास्करमिश्रः। इत्था—इदम्-शब्दाच्च "था हेतौ च छन्दसि (५, ३, २६)"—इति प्रकारवचने था-प्रत्ययः; यदि तत्रेदं-शब्दोनानुवर्त्तते तदानीम् "इदमस्थमुः (५, ३, २४)"—इति थमुः प्रत्यय; "अव्ययादाप्-सुपः (२, ४, ८२)"—इति सुब्लुकं बाधित्वा "सुपां सु-लुक् (७, १, ३९)"—इत्यादिना डादेशः। चन्द्रमसः—चन्द्रमाह्लादनं मिमीते निर्मिमीते—इति चन्द्रमाः "चन्द्रेमोडित् (उ०, ४, २२७)"—इत्यसि-प्रत्ययः; दासीभारादिषु पठितत्वात् पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्; पूर्वपदञ्च "स्फायितञ्चि (, ,)"—इत्यादिना रक्-प्रत्ययान्तत्वादन्तोदात्तम्॥ १॥ ८

अथ चतुर्थतृचे—प्रथमा ।

२१२२ १ २८३ २ ३१ २

इयंवामस्यमन्मनइन्द्राग्नीपूर्व्यस्तुतिः ।

३ २ ३ १ २

अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि ॥ १ * ॥

हे "इन्द्राग्नी ! "इयं" "पूर्व्यस्तुतिः" पूर्व्या स्तुतिः मुख्या स्तुतिः†, कस्य सम्बन्धिनी ? "मन्मनः"‡ स्तोतुः अस्मात् वसिष्ठात् "वां" युवाभ्यां युवयोरर्थम् "अभ्रात्" मेघात् "वृष्टि-रिव" बह्वी सती "अजनि" प्रादुर्भूता¶, तां शृणुतमित्युत्तरत्र सम्बन्धः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ११ ३१उ ३ १ २ ३ १२३ १२

शृणुतञ्जरितुर्हवमिन्द्राग्नीवनतङ्गिरः ।

३ १ २ ३ १ २

ईशानापिप्यतन्धियः ॥ २ § ॥

हे "इन्द्राग्नी !" "जरितुः" स्तोतुः "हवम्' आह्वानं युवां

---

* ऋ० वे० ५, ६, १७, १ ।

† 'पूर्व्यस्तुतिः—पूर्व्या प्रथमतरा स्तुतिः सर्वेषां स्तुत्यानां प्रथमतरे इन्द्राग्नी-स्तुत्यौ —इति वि० ।

‡ 'मन्मनः प्रज्ञानस्य यज्ञाः'—इति वि० ।

¶ 'यथा अभ्रात् सकाशात् वृष्टिरुत्पद्यते, तद्वदिन्द्राग्नीभ्यां सकाशात् यज्ञम् उत्पद्यते —इति वि० ।

§ ऋ० वे० ५, ६, १७, २ ।

Digitized by Google

शृणुतम्। श्रुत्वा च "गिरः" तदीयाः स्तुतीः "वनतं" सम्भजतम्। तथा "ईशाना" ईश्वरौ युवां "धियः" अनुष्ठितानि कर्माणि "पिप्यतं" तैस्तैः फलैः पूरयताम्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २३१ २ ३१ ३ ३१ ११
मापापत्वायनोनरेन्द्राग्नीमाभिशस्तये।

१ २ ३१
मानोरीरधतन्निदे॥ ३*॥ ९

हे "नरा" नेतारौ! इन्द्राग्नी! "नः" अस्मान् "पापत्वाय"† हीनभावाय "मा रीधतम्"‡ मा वशं नयतम्, तथा "अभिशस्तये" शत्रुभिः कृतायाभिशंसनाय मा रीरधतम्, तथा "निदे"¶ निन्दकाय मा रीरधतं मा वशीकुरुतम्॥ ३॥ ९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः§॥ ३॥

---

* ऋ० वे० ५, ६, १०, ३।

† 'पापत्वाय—पापबुद्धये'—इति वि०।

‡ 'मा रीधतम्—अहिंसायाम्; मा हिंसताम्'—इति वि०।

¶ 'निदे—नितरां दीयते यस्मिन् यत्नौ निदे'—इति वि०।

§ 'उष्ण' प्रातः-सवनम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ चतुर्थखण्डे* प्रथमतृचे—

प्रथमा।

१२ ३१२ ३१२ ३१२
पवस्वदक्षसाधनोदेवेभ्यःपीतये† हरे।
३१ २ ३२३१२
मरुद्भ्योवायवेमदः॥ १ ‡॥

हे "हरे" हरितवर्ण! पापहर्त्तर्वा सोम! "दक्षसाधनः" दक्षो बलं तस्य साधनो "मदः" मदकरश्च त्वं "पवस्व" क्षर। किमर्थम्? "देवेभ्यः" इन्द्रादिभ्यः "पीतये" पानाय, तथा "मरुद्भ्यः" "वायवे" च पीतये पवस्व॥ १॥

अथ द्वितीया।

२३१२ ३१२ ३२उ ३१२३२
सन्देवैःशोभतेवृषाकविर्योनावधिप्रियः।
१२ ३१२
पवमानोअदाभ्यः॥ २ ¶॥

"अयं" सोमः "सं शोभते" "देवैः" सह। कीदृशः सोमः? "वृषा" वर्षकः, "कविः" क्रान्तदर्शी, "योनौ" स्थाने स्वीये "अधि" अधिष्ठितः§ "प्रियः" प्रियोभूतः सर्वेषां [यद्वा प्रीणयिता]

---

* 'इदानीं माध्यन्दिनसवनमुच्यते'—इति वि०।

† "देवेभ्यःपीतये"—इति क० पु० पाठः।

‡ छ० आ० ५, २, ४, ८ (२ भा० २४ पृ०) = ऋ० वे० ९, ८, १५, १।

¶ ऋ० वे० ९. ८, १५, २। "पवमानोअदाभ्यः"—इति स्थले "हवद्वादेववीतमः" —इति ऋ०-पाठः।

§ 'योनौ अधि—सप्तम्येकवचनमिदं द्वितीयैकवचने द्रष्टव्यम्। योनिम् अधि' —इति वि०।

Digitized by Google

"पवमानः" चरन् "अदाभ्यः" केनाप्यहिंसितश्च भवति अतएव सोमः सं शोभते ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २   ३ २   ३ २   ३उ   ३१ २
पवमानधियाहितोऽ३ऽभियोनिङ्कनिक्रदत्।
१ २   ३ १   ३२
धर्मणावायुमारुहः॥ ३ * ॥ १०

हे "पवमान" सोम! "धिया" कर्म्मणा अस्मद्व्यापारेण अङ्गुल्या वा † "हितः" धृतः सन् "कनिक्रदत्" शब्दं कुर्वन् "योनिं" स्थानं "द्रोणकलशं" च "अभि आरुहः" आभिमुख्येन आरोहणं कुरु प्रविशेत्यर्थः। तदेवाह—"धर्म्मणा" कर्म्मणा "वायुं" वायुसम्बन्धिपात्रमित्यर्थः, तदारुहः प्रविश ॥

"आरुहः"-"आविश"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १०

१   २ १   ३२ ३२
॥ निधनकामम् ॥ पवस्वदा२क्षसाधनाः। देवेभ्यः
२ २   २ १ २   ०   ३२ २
पीतयेहराथि। मरुद्भ्योवा। पवा२३४यि। हाहोयि।
१ २   १   १   १
मदाः। होयि। २। मदः। होयि। २। मदः। होयि।

* ऋ० वे० ९, ८, १५, २।

† 'धिया बुद्धा'—इति वि०।

२र१र२र २ १११ १ रर र१
२। औहोऔहोवा२३४५हाउ॥(१) सन्देवैःशो२भतेवृ

२ १र र २१ र ७
षा। कविर्योनावधिप्रियाः। पवमानाः। अदा२३४।

२र २ १ र
हाहोयि। भियाः। होयि। होयि। भिय। होयि।

२र१र२र १११
२। भियः। होयि। २। औहोऔहोवा२३४५हाउ॥(२)

१ र र १ २ १र र१
पवमाना२धियाहिताः। अभियोनिङ्कनिक्रदात्। धर्म्म

र ७ २र२ १र
णावा। युमा२३४। हाहोयि। रुहाः। होयि।

२र१र२र १११
होयि। रुह। होयि। २। औहोऔहोवा२३४५

हाउ। वा(३)॥८*॥[१]

३२ र ५
॥सत्रासाहीयम्॥ पवा३४। स्वदक्षसाधनः। आे

५ १रर र र १ २ २
६वा। देवेभ्यःपीतयेहा२रायि। मा२रु। ह्यो२३वा।

१६ २र १र२ १ ५ ५ ३२
यवौ३हो। वाहा३४३यि। मा२३४टो६हायि॥(१) सन्दे

र र र र ५ ५ १ र र
३४। वैःशोभतेवृषा। ओ६वा। कविर्य्योनावधिप्रा२

---

* ऊ० मा० १प्र० १ख० ८ सा०।

१ १ २ १ ५ २र १र २
याः । पा२वा । मा२३नाः । अदौ३ह्रो । वाहा३४३

१ ५ ५ १२ र र
यि । भा२३४यो६हायि ॥(२) पवा३४ । मानधियाहि

५ ५ १ र १ १
तः । ओ६वा । अभियोनिक्निका२दात् । धा२र्मा ।

२ १ ५ २र १र २ १ ५ ५
णा२३वा । युमौ३ह्रो । वाहा३४३यि । रु२३४वो६हा

यि(३) ॥ ८ * ॥ [२]

२ १ १
॥ त्वाष्ट्रीसाम ॥ पवस्वदा । क्षसा२धाना२ः । दा

र २ र १ २ १ १ १
यिवेभ्यःपो । तयायिहा१रा२यि । मरुद्भ्यो२३वा । यवे

२ २ र र १
मदा३१उवा२३ ॥(१) सन्देवैःशो । भता२यिवार्षा२ ।

१ २र र १ २ १ २ १
काविर्योनौ । अधायिप्रा१या२ः । पवमा२३नाः । अदा

२ २ र १
भिया३१उवा२३ ॥(२) पवमाना । धिया२हायिता२ः ।

१ २र १ २ १ २
आभियोनिम् । कनायिक्रा१दा२त् । धर्म्मणा२३वा ।

१ २ २
युमारुहा३१उवा२३ । वृधे१(३) ॥ १ † ॥ [३] १०

* ऊ० गा० १५प्र० १ख० ८गा० । † ऊ० गा० १६प्र० २ख० १गा० ।

Digitized by Google

अथ प्रगाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा।

१ २ १ २ ३ २ २ ३ १ २
तवाहꣳसोमरारणसख्यइन्दोदिवेदिवे।
३ १ २ २ १ २ ३ १र २र ३ २उ २ १ २
पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमामवपरिधीꣳरतिताꣳइहि॥ १* ॥

हे "इन्दो" स्यन्दमान-सोम ! "तव" "सख्ये" सखि-कर्मणि "अहं" "दिवेदिवे" अन्वहं "रारण" रमे [रणेर्लिटि उत्तमे णलि रूपम्]। हे "बभ्रो" बभ्रुवर्ण-सोम "पुरूणि" बहूनि रक्षांसि "मां" तव सख्ये स्थितं "नि अव चरन्ति" नीचीनं चरन्ति बाधन्ते। ये मां बाधन्ते तान् "परिधीन्" "अति इहि" अतीत्य गच्छ जहीति यावत्॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २र३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तवाहन्नक्तमुतसोमतेदिवादुहानोबभ्रऊधनि।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
घृणातपन्तमतिसूर्य्यंपरःशकुनाइवपप्तिम॥ २ † ॥ ११

हे "बभ्रो" बभ्रुवर्ण-सोम ! "उत" अपिच "नक्तम्" "उत" अपिच "दिवा" अहोरात्रयोः "सख्याय" सख्यार्थं ‡ "तव"

---

* ऋ० था० ६, १, २, ६ (२भा० ९१४०) = ऋ० वे० ७, ५, १५, ४।

† ऋ० वे० ७, ५, १५, ५।

‡ सख्यायेति ऋग्वेदीयपाठमवलम्ब्यैवं व्याख्यातं बहुतः; सामवेदीय-पाठस्तु "दुहानः"—इति।

"उधनि" समीपे * "अहं" रमे—इति शेषः । "ते" वयं "घृणा" दीप्त्या "तपन्त" ज्वलन्त "परः" परस्थानस्थितं "सूर्यं" तदात्मकं त्वाम् † "अति पप्तिम" तत्र स्थितं त्वां प्राप्नुमतिपतेम । कथमिव ? शकुनाइव यथा सुपर्णादयः पक्षिणः सूर्यमतिगच्छन्ति तद्वत् ‡ [पत्लृगतौ, अस्माच्छान्दसो लिटि "तनिपत्योश्छन्दसि (६, ४, ९९)"—इत्युपधालोपः ॥

"दुहानः"--"सख्याय"—इति पाठौ ॥ २ ॥ ११

१ २र १ २र र १र १र १र
॥ आष्टादंष्ट्रौत्तरम् ॥ तवाहꣳसोमरारणऐयादौ ।
२ १ १ र २र १ १र
होइवा । सख्यइन्दोदिवे । दायिवे २ ३ । ऐयार३त् ।
१ र २ १र १ र २ २ र १
औ२३होवा । पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमाम् । आवार३ ।
१र १ र १ १र १ र १
ऐया२३त् । औ२३होवा । परिधीꣳरतितान् । आयि
१र १ र २ २ १र
हा२३यि । ऐया२३त् । औ२३होवा३४३ ॥(१) परिधीꣳ
२ १र २ १र १र १र २ १ १र २ र
रतिताꣳइहिऐयादौ । होइवा । परिधीꣳरतितान् ।

* 'उधनि—दशापवित्रात् द्रोणकलशे'—इति वि० ।

† 'परःसूर्यम्—सूर्यादपि परतः'—इति वि० ।

‡ 'एतदुक्तं भवति—सख्ये वयं स्थिताः पुरूणि यजमानकुलानि त्वा मुपचरामः, इव मुपचरमाणाः शकुनाइव पप्तिम'—इति वि० ।

१ १र १ र २ १२र१
धायिष्ठा२३यि। ऐया२३त्। औ२३होवा। तवाह्न
२ १ र २र १ १र १ र
त्तमुतसोमते। दायिवा२३। ऐया२३त्। औ२३हो
२ र १र २ र १ १र १
वा। दुहानोबभ्रुउ। धानी२३। ऐया२३त्। औ२३
र २ २र १र २ १र२ १र१र१र १ २
होवा३४३॥(२) दुहानोबभ्रुउधनिऐयादौ। हो३वा।
र १र २र १ १र १ र २
दुहानोबभ्रुउ। धानी२३। ऐया२३त्। औ२३होवा।
१र २ १२१र२ १ १र १
घृणातपन्तमतिह्वरियम्। पारा२३ः। ऐया२३त्। औ
र २ १र २ १ १र
२३होवा। शकुनाइवप। शायिमा२३। ऐया२३त्।
१ र १ १
औ२३होवा३४३। ओ२३४५ई। डा॥९*॥[१]

२र र र
॥ आभीशवोत्तरम्॥ तवाह७सोमरारणए। ए। स
र ५ १ २ २ ३ ५ २ २ १
ख्यइन्दो३दायिवे१दिवाायि। पू२३४ह। हा३हा। पि
र २ २ ३ ५ २ २
बभ्रोनिचरन्तायिमा१मवा। पा२३४री। पा३हायि।
१ २ १ ५ ४ ५ २ र
धायि७रतितो२२४वा। आ५यिहो६हायि॥(१) परिधी७

* ऊ० गा० २प्र० १ख० ९सा०।

रतिताꣳइच्छिए । ए । परिधीꣳरा३तायिताꣳइच्छायि ।
ता२३४वा । हा३हायि । अन्नक्तमुतसोमातेऽदिवा ।
दू२३४हा । हा३हायि । नोबभ्रओ२३४वा । धा५नोई
हायि ॥(२) दुहानोबभ्रऊधनिए । ए । दुहानोबा३भ्राऊ१
धनायि । घा२३४र्णा । हा ३ हा । तपन्तमतिसूराय
म्यारः । श्वा२३४क । हा३हायि । नायिवपो२३४वा ।
म्रा५यिमो६हायि(३) ॥ १० * ॥ [२]

॥ स्वःपृष्ठम्† ॥ तवा२हꣳसो३४ । औहो५मरारणा ।
सख्या२इन्दो३४ । औहो५दिवेदिवायि । पुरूरणिबा३
४औहो५भ्रोनिचरा । भो । तारयिमा२३४औहोवा । भा
२३४वा । ऊर३४पा । ऊर२३४पा । परिधीꣳरा २ ३ ।
तारयिताꣳ२३४औहोवा । ई२३४हो ॥(१) परारयिधीꣳ

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १०गा० । † "पृष्ठम्"—इति वि० ।

२ ३र ४ र ४ १ ३र २
रा३४। औहोऽ५तिताॅऽइहायि। परा२यिधीॅऽरा३४।

३र ४ र ४ १ ३ २ ३र ४
औहोऽ५तिताॅऽइहायि। नवा२ह्वना३४। औहोऽ५क्रामु

४ १ ३ ५र र ३ ५ ३
नसो। ओ। मा२ता२३४औहोवा। दौ२३४वा। ऊ

५ ३ ५ ३ र ३र १ १ ३ ५र
२३४पा। ऊ२३४पा। दुहानोवा२३। भा२ऊ२३४औ

र ३ ५ १ ३र १ ३र ४
होवा। धा२३४नी॥(२) दुहा२नोवा३४। औहोऽ५भ्र

र ४ १ ३र १ ३र ४ र ४ १
ऊधनायि। दुहा२नोवा३४। औहोऽ५भ्रऊधनायि। घृ

३ १ ३र ४ ४ १ ३
णा२तपा३४। औहोऽ५न्तमतिसू। ओ। रा२या२३४

५र र ३ ५ ३ ५ ३ ५ ३
औहोवा। पा२३४राः। ऊ२३४पा। ऊ२३४पा। प्रक्र

३र १ १ १ ५र र ३
नाआ२ ३ यि। वा २ पा २ ३ ४ औहोवा। प्री २ ३ ४

५
मा(३)॥ ११ *॥ [३]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५
॥ अभीवर्त्तम्॥ परा३यिधा३यिॅऽराऽतिताॅऽइहोवा।

१ ३र १ २ १ र २
परिधीॅऽर। तिताॅऽआ१यिहा२यि। तावा१ह्वा३१२३४।

---

* ऊ० गा० २प्र० २ख० ११गा०।

२ ४ ५र १ १ १ १ २ २ १
ह्लामुतसो । मतायिदा१यिवा२ । दुहानो१वा२ । भ्रज

१ १ १ १ १ १
३ । धा२३४५ । ना२३४यि(२) ॥ १८* ॥ [४]

२ ४र १ ४र ५ र र १ २
॥ उत्सेधम् ॥ तवाह१ँसोमरारण । सख्ये । इन्द्रा

३र ४र ५ १ १र २
३४औहोवा । दिवेदिवाऽ२यि । हा३१उवा२३ । ऊ३

५ ३ २ ४ ५र ४ ५ १ २ १
४ पा । पुरू ३ णिवा । औहोवाहायि । भ्रानिचरा ।

२ र १ २ २ ५ ३ १ ४र
तिमामाव । हा३१उवा२३ । ऊ३४पा । परा३यिधी१ँ

५र ४ ५ १ २ ४
र । औहोवाहायि । तिता३१ँवापुयिहा६५६यि ॥(२)

४ ३र ४ ३र ४ ५ ३र २ ३र ४र ५
परिधी१ँरतिता१ँइहि । परि । धी१ँरा ३ ४ औहोवा ।

१ १र २ ५ २ २
तिता१ँइहाऽ२यि । हा३१उवा२३ । ऊ३४पा । तवा३

४ ५र ४ ५ १ १ १ २ र १ २र
हन्ना । औहोवाहायि । ह्लामुतसो । मतेदायिवा ।

२ ५ १ २ ४र ५र ४ ५
हा३१उवा२३ । ऊ३४पा । दुहा३नोव । औहोवाहायि ।

१ २ ४ ४ र ३र ४ ३र ४ ५ र
भ्रज३धा५ना६५६यि ॥(२) दुहानावभ्रजधनि । दुहा ।

---

* ऊ० गा० ८प्र० १अ० १८गा० ।

१र १ २र ४र ५ २ १र २
नोवा३४औहोवा। भ्रऊधनाऽ२यि। हा३१उवा२३। ऊ
५ २ २ ४ ५र ४ ५ १ २ १
३४पा। घृणा२तपा। औहोवाहायि। तामतिसू।
२ १ १ २ ५ २ २ ४र
रियंपार। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। शकूनाच।
५र ४ ५ २ २ ४ २ १ १ २ १
औहोवाहायि। वपा३प्ता५यिमा६५६। ऊ२३४५(२)॥

॥ १० * ॥ [५]

५ २ ४ ५ ४र ५ २
॥ जनित्राद्यम्॥ परिधा३यि०रातिता०इहायि। ऊ
१ १ र २ १र
वेहो२यि। परिधी०रनिता०आ१यिहा२यि। नवाहम
२र ३ ५ १ २ १ र
कामुतसो२। मतायिदा२३४यिवा। दुहा३होयि। नो
२ १ २१र ३ ५र र २ १ १ १
वा३हो। भ्रऊ। धा२ना२३४औहोवा। जनित्रा२३
१ १
२३४५म्(२)॥ १४ †॥ [६]

१ २र१ २र १र२१ २
॥ समन्तम्॥ तवाह०सोमरारणा। सख्यइन्दोऽदि
१र १ र २ १ २ १
वेदिवायि। पुरूणा२३यिवा। भ्रोनिचर। तिमामा

वां। औहोऽ४वाहायि। प। रायिधा२३यि९रा३।
होवा३हायि। तिना९धा२३यिहा३४३यि॥(१) परिभी९
रतिता९द्दायि। परिधी९राऽतिना९द्दायि। तवा
हा२३मा। क्रामुतसो। मतायिदायिवा। औहो३४
वाहायि। दु। हानो२३वा३। होवा३हा। भ्रजधा
२३ना३४३यि॥(२) दुहानोवभ्रजधनायि। दुहानोवाऽ
भ्रजधनायि। घृणातार२३पा। तामतिवा। रियाम्या
रा। औहो३४वाहायि। म्र। कूना२३था३यि। हो
वा३हायि। वपम्रा२३यिमा३४३। ओ२३४५ई। ओ२३
४५ई। डा(३)॥ १ *॥ [७]

॥ यौधाजयम्॥ तवा२१। हा३९सो। म। रा
रा२३४णा। साख्या३यि। इन्द्रो२। दिवा ३ ४ ५ वि।

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १गा०।

२ ५ २ १ २ १ १र १ २ १
दौ२३४वे। पुरूणिवा। ओ। निचरार्२। तिमा३४५म्।

२ ५ २ १ २ १
आ२३४वा। परा२यि। धायि९रार्२। तिना९३४५।

२ ५ १ १ २ ४ ५ २
ई२३४हो॥(१) परा३१यि। धा३यि९र। ति। तां९

२ ५ १ २ १र २ १
आ२३४यिद्यायि। पारी३। धी९रार्२। तिता९३४५।

२ ५ २ १ २ १ २ १ २ १
ई२३४वो। तवाह्वा। क्राम्। उनसोर्२। मना३४

२ ५ २ १र २ १
५यि। द्री२३४वा। दुहा२। नोबार्२। अज३४५।

२ ५ २ १ २ ४ ५र २ १
धा२३४नी॥(२) दुवा३१। नो३व। ओ। जधा२३४

५ १ २ १र १ २ २ ५
नायि। दुद्रा३। नोबार्२। अज३४५। धा२३४नी।

२ १ २ १ २ १ २ २ २
घृणातपा। तम्। अतिसूर्२। रिया३४५म्। घा२३

५ २ १ २ १ २
४राः। शकू२। नाआ२यि। वपा३४५। मी२३४

५
मा(३)॥२ *॥ [८]

५ र २ ४र ५ ४र ५ १
॥ पौरुहन्मनम् ॥ तवाहा३९सोमरारणा। साख्य

* ऋ० मा० ११म० १सू० १ऋ०।

१ २ १ २ १ १ २ २
इन्दो। दिवायिदा१यिवा२यि। दायिवा२यिपूछवि

१ २ १ २ १ २ १ ५
ब। भो। निचरा३। निचरा३। तायिमामार२३४वा।

१ २ २ १ २ २ ५ ४
पारिधी२रा। तायिता२आर२३४यिहायि। तिना२५इ

५ २ ४ ५ ४२ ५ १ २२
हायि॥(१) परिधा३यि२रातिना२इहायि। पारिधी२

१ २ १ १ २ १
रातिना२आ१यिहा२यि। आयिहा२यि। तावाइन्न।

१ २ १ २ १ २ २ ५
म्नाम्। उतसो३। उतसो३। मातायिदार२३४यिवा।

१ २२ २ १ २ २ ५ ४
दूहानोवा। आजधा२३४नायि। अज ५ धनायि॥(२)

५ २ २ ४ ५ ४२ ५ १ २ २र १ २
दुहानो३वअजधनायि। दूहानोव। अजधा१ना२यि।

१ १ २ १ १ २ १ २
धाना२यि। घार्णतप। नाम। आतिसू३। आतिसू

५ २ ३ ५ १ २२ १ २ २
३। रायम्पा२३४राः। आकुनाआयि। वापप्ना२३४यि

५ ४ ४
मा। वपा५प्निमा। ह्रो५ई। डा(३)॥ १५ *॥[९]

५ २ २ ४२ ५ ४२ ५ १ २२
॥ दैगतम्॥ तवाहा३२सोमरारणा। साख्यइन्दो।

० ऊ० आ० १६प्र० १अ० १५गा०।

दिवायिद्दा१यिवा२यि। पुह्३। हौ३हो३वा। पिब
धोनिचरन्तायिमा१मवा२। परा२३यि। धा२यिꣳरा२
३४औहोवा। ए३। तिता२ꣳइहा२३४५यि ॥(१) परि
धा३यिꣳराऽतिताꣳइहायि। पारिधीꣳर। तिताꣳआ
१यिहा२यि। तवा३। हौ३हो३वा। अहन्नक्तमुतसो
मातेश्दिवा२। दुहा२३। नो२वा२३४औहोवा। ए३।
अज२धना२३४५यि ॥(२) दुहानो३वभ्रऊधनायि। दू
हानोव। अऊधा१ना२यि। घृणा३। हौ३हो ३ वा।
तपन्तमतिसूरायम्पारा२ः। अकू२३। ना२भा२३४औ
होवा। ए३। वपा२न्निमा२३४५(३)॥ १६ * ॥ [१०]

॥ गौङ्गवम् ॥ नवाहा३ꣳसोमरारणा। सख्या२
यि। इन्दोदिवे३। दायिवायि। पुरूणिबभ्रोनिचा२३

* ऊ० आ० १६प्र० २ख० १६षा०।

१ २२ २५ २१र र २२ ४
रा२। तिमा३मावा। पुरुणिवश्चोनिचर। तिमा३मा
४ १ १र १ २ २ १ ५
वा। पारिधोन्। हा। औ३हो। तितो२३४वा।
४ ५ ५ ४६ ५ ४र ५
आपुयिहोइडायि॥(१) परिधा३यि०रातितां०इडायि।
१ १र २१ ४ ५ २१प
पारी२। धो०रतिता३०। आयिहायि। तवाहन्न
१ २२ ४ ५ २१र र
ऋमुता२३सो२। मता३यिदायिवा। तवाहनक्रमुतसो।
२१ ४ ५ १र २ १ २ २ १
मता३यिदायिवा। दूडानः। हा। औ३हो। अयो
५ ५ ५ ५र २ ४ ५४र ५
२३४वा। धापुनोइडायि॥(२) दुडानो३बभ्रजधनायि।
१ १र २२ ४५ २ १र
दूडा२। नोबभ्रज३। धानायि। घृणातपन्नमता२३
१ २२ ४५ २१र र २२ ४५
यिसू२। रियाउ३पाराः। घृणातपन्तिसू। रियाउ३पाराः।
१ २र १ २ २ १ ५ ४
शाकुनाः। आ। औ३हो। वपो२३४वा। आपुथिमो
५
इडायि(३)॥ १७॥ [११]

---

* ऊ० गा० ११प्र० २अ० १७गा०।

॥ द्विनिधनमायास्यम् ॥ तवाह३ऽसोमरारण । ए३ । औ३हो५वा॒ऽऽ । साख्या३यि । इन्दो२ । दिवा३४५यि । दा३यिवा२३४५यि । पृथिवा । ओनिचरा । तायि मा३या । औ३हो३ । आ२३४वा । पराऔ ३ हो । धायिऽरा२ । तिता३४५ । आ३यिहा२३४५यि ॥(१) परिधीऽरतिताऽइहि । ए३ । औ३हो५वा॒ऽऽ । पारी ३ । धीऽरा२ । तिता३४५ । आ३यिहा२३४५यि । तावाहना । क्रामुतसो । माता३या । औ३हो३ । दी२३४वा । दुहाऔ३हो । नोवा२ । भ्रज३ ४ ५ । धा३ना२३४५यि ॥(२) दुहानोवभ्रजधनि । ए३ । औ३ हो५वा॒ऽऽ । दुहा३ । नोवा२ । भ्रज२३४५यि । धा र्णतपा । तामतिसू । राया३या । औ३हो३ । पा

५ २ १ २ २ १ ३ २ २
२३४राः। प्रकू३औ३हो। ना३आ२यि। वपा३४५। प्रा
१ १ १ १ १
३यिमा२३४५इ) ॥ १८* ॥ [१२]

२ १ ४र ३ ५ २ १ १र
॥ पृश्नि ॥ तवाहा२३ꣳसोमरारणाहाउ। सख्यइन्दो
१र १ २ १ २ २ १ऽ २
दिवेदिवे। पुरूणा१यिबा२३। होवा३हा। भ्रोनिचर। ति
१ २ १ २ २ १ २
मामा१वा२३। होवा३हायि। परायिधा१यिꣳरा२३।
१ २ २ १ र २ १ २ १
होवा३हायि। तायिताꣳइहि। इडा२३भा३४३। ओ

२३४५ई। डा(१) ॥ १ † ॥ [१३]

१ २र १ २र र १
॥ अर्कपुष्पाद्यम् ॥ तवाहꣳसोमरारण। ऊवे२३।
२ १ २र १र २र १ २ १र २ र १ २
सख्यइन्दोदिवेदिवे। ऊवे२३। पुरूणिबभ्रोनिचरन्ति
१र २ १ २ १र २ १र २ १
मामव। ऊवे२३। परिधीꣳरतिताꣳइहि। ऊवे२३ ॥(१)
२ १र २ १र २ १ २ १र २ १र १
परिधीꣳरतिताꣳइहि। ऊवे२३। परिधीꣳरतिताꣳइ
१ १ २र १ २ १ र २ र १ २र १
हि। ऊवे२३। तवाहन्नक्तमुतसोमतेदिवा। ऊवे२३।

---

* ऊ० गा० १६प्र० २ख० १८गा०। † ऊ० गा० १९प्र० २ख० १गा०।

२ र १र २ १र२ १ २ र १र २ १र२
दुहानोबभ्रऊधनि। ऊवेरइ॥(२) दुहानोबभ्रऊधनि।

१ २ र १र २१र२ १ २१र २ १ १
ऊवेरइ। दुहानोबभ्रऊधनि। ऊवेरइ। घृणातपन्तमति

१र २ १ २ १र १ १
सूर्य्यम्परः। ऊवेरइ। अ ऊनाइवपन्निम। ऊवे रइ।

१ १ १ १ २ ५र र २ १र
ऊवेरइ। होवाइहाइ। हाइ४। औहोवा। अर्का

र र १र २ १ १ १ १
देवानारम्। परमेवियोरमार३४५न्(३)॥ १४ *॥[१४]

१ २र१ १र १र
॥वार्चदुक्थ्यम्॥ तवाहऽसोम। रारण। सख्य

र २ १र १ १ २ १ ७
इन्दोदिवेदार३यिवायि। पूरुश्णायिवा२। भोनिचरा

१र २ १र
२। निमामवा। परिधार३यिऽरा। निताऽआर३यि

२ २ १र १ १
हा३४३यि॥(१) परिधीऽरति। ता२ऽइहायि। परि

र १ १र २ १ २ १ ७
धीऽर्ततताऽआ२३यिहायि। तावाश्हान्ना२। क्तामु

१र र २ १र २
तासो२। मतेदिवा। दुहानो२३वा। भ्रऊधा२३ना

२ र १र२र १ र र
३४३यि॥(२) दुहानोबभ्रो। ऊ२धनायि। दुहानोब

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १४गा०।

Digitized by Google

२ १र   २   १ २   १ ०
भूजधा२३नायि। घार्णा१तापा२। नामतायिसू२।
१   २   १   २   २
रियम्परा:। प्रकुना२३श्रायि। वपप्पा२३यिमा३४३। श्रौ
२३४५ई। डा(३)॥ १५*॥ [१५]

२र   र   २१ २   १   १र
॥ माण्डवम्॥ तवाह९सोमरारणा। सख्यइन्दो
१र २र   १   २   १   २   १ २
दिवेदिवे। पुरूणा१यिबा२। भूनिचर। तिमामा१बा
१   २   १र   ३   ५र
२। परिधा२३यि९रा। निताम्। श्रा२यिहा२३४श्रौ
र   २ र   र १ २   १र   २
होवा॥(१) परिधी९रनिता९श्रायिहायि। परिधी९रति
१र २   १ २   १   २र   १   २
ता९इहि। तवाहा१श्रा२। श्रमुतसो। मतायिदा
१र   २   १र   ३   ५र र
१यिबा२। दुहानो२३बा। भूज। धा२ना२३४श्रौहो
१ र र   र १ २   र १र १ १र१
वा॥(२) दुहानोबभूजधानायि। दुहानोबभूजधमि।
१ २   १ १र   १ २   १
घृणाता१पा२। नामतिसू। रियाम्पा१रा२:। प्रकुना

* ऊ० गा० २प्र० १ख० १५ डा०।

Digitized by Google

२   १   २   ५र र   १ र १ २
२३आयि । वप । प्रा२यिमा२३४औहोवा । विदावसू

१ १ १ १
२३४५(३) ॥ १६ * ॥ [१६] ११

अथ तृतीय-तृचे—

प्रथमा ।

२ १ २ ३ १उ २ १२ १ २
पुनानो अक्रमीदभिविश्वामृधोविचर्षणिः ।

२ २ ३ १२३ १ २
शुम्भन्तिविप्रन्धीतिभिः ॥ १ † ॥

"पुनानः" पूयमानः "विचर्षणिः" विद्रष्टा सोमः "विश्वा" सर्वान् "मृधः" हिंसकान् शत्रून् "अभि अक्रमीत्" अतिक्रान्तवान्, तं "विप्रं" मेधाविनं "धीतिभिः" कर्मभिरभिषवादिभिः स्तुतिभिर्वा "शुम्भन्ति" दीपयन्ति अलङ्कुर्वन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २र ३ १ १२३१२ २ १ २ ३१
आयोनिमरुणोरुहद्गमदिन्द्रोवृषासुतम ।

३ १ २र
ध्रुवेसदसिसीदतु ॥ २ ‡ ॥

अयम् "अरुणः" अरुणवर्णः सोमः "योनिं" स्थानं द्रोणकलशम् "आरुहत्" आरोहति, ततो "वृषा" कामानां वर्षकः

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १६ गा० ।

† ऋ० भा० ६, १, १, २ (२ भा० ३४ पृ०) = ऋ० वे० ६, ८, ४०, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ४०, २ ।

"इन्द्रः" "सुतम्" अभिषुतं सोमं "गमद्" गच्छति, गत्वा "ध्रुवे सदसि" स्थिरे स्थाने द्युलोकाख्ये "सीदति"* निवसति ॥

"इन्द्रोवृषासुतम्"-"इन्द्रं वृषा सुतः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २

नूनोरयिम्महामिन्दोऽस्मभ्यꣳसोमविश्वतः ।

१ २ ३ १ २

आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३ † ॥ १२

हे "सोम !" अभिषुतस्त्वं हे "इन्दो !" "नः" अस्मभ्यम् "नु" क्षिप्रं "महां" महान्तं "सहस्रिणम्"‡ असङ्ख्यातं "रयिं" धनं "विश्वतः" "आ पवस्व" सर्वतः परिस्रव ॥ ३ ॥ १२

३ २ २ २

॥ सत्रासाहीयम् ॥ पुना ३ ४ । नोचक्रमीदभि ।

५ ५ १ २ २ १ १

ओ६वा । विश्वाम्मृधोविचर्षा२णायिः । प्र२म्भा । ता

२ १ ऽ १२ ३२ १ १ ५

२३यिवो । प्रन्धी३हो । वाहा३४३यि । ता२३४यिमो६

५ ३२ १ २ ५ ५ १

हायि ॥(१) आयो३४ । निमह्णोरुहत् । ओ६वा । गम

२ २ १ ० १ २ १ ऽ

दिन्द्रोवृषासू२ताम् । ध्रू२वे । सा२३दा । सिसी ३

---

* "सीदति"—इति ऋग्वेदीय पाठः, मूलपाठस्तु "सीदतु"—इति ।

† ऋ० वे० ६, ८, १०, ३ ।

‡ 'सहस्रिणं -सहस्रस्थितम्'—इति वि० ।

२र १र २ १ ५ १र १
हो। वाहा३४३यि। दा२३४तो६हायि॥(२) नूनो३४।
र ५ ५ १ र
३४। रयिम्महामिन्द। चो६वा। अस्मभ्यꣳसोमविश्वा
१ १ १ १ ऽ १र १र १
२ताः। आ२पा। वा२३स्वा। सहौ३हो। वाहा३
१ ५ ५
४३यि। हा२३४यिणो६हायि(३)॥ १२ *॥ [१]

॥ यामम्॥ पुनानोआ२। क्रमीदा२३४भी। वि
र १ २ १ ५ १ ०र १ १ २ २ १ ५ १
श्वाम्टधो२। विचर्षा२३४णायिः। प्रुभ्मतिवा२३यि। प्र
२ १र ० २ १ २
न्धा३यितापुयिभा६५६यिः॥(१) आयोनिमा२। रुणोह्न
५ १ २ १ २ ५ १र
२३४हात्। गमदिन्द्रो२। वृषासू२३४ताम्। ध्रुवेस
२ ४ १र ०
दा२३। सिसा३यिदापुता६५६उ॥(२) नूनोरया२यि
२ १ २ ५ १ २ १ २
म्। महामा२३४यिन्दो। अस्मभ्यꣳसो२। मविश्वा२३
५ १र २ ४
४ताः। आपवस्वा २ ३। सहा ३ स्रा ५ यि णा ६ ५
६ म(३)॥ ११॥ [२]

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० १२गा०। † ऊ० गा० १२प्र० १ख० ११गा०।

४ र १र ४ १र ४ ५ १र २ ४
॥ यामोत्तरम् ॥ पुनानोअक्रमीदभि । औहाइऔ
५ ३ ४र र ३ ४ ५ ३र २ ४ ५ २ १
हा । विश्वामृधोविचर्षणिः । औहाइऔहा । शुम्भ
१ १ १ ४ ३र ४र
ता२३यिवि । प्रन्धा३यिता५यिभा६५६यिः ॥(१) आयो
३ ४ ३र ४ ५ ३र २ ४ ५ ३ ४ ३ ४र ३र ४ ५
निमरुणोरुहत् । औहाइऔहा । गमदिन्द्रोवृषासुतम् ।
३र १ ४ ५ १ १र २ ३ १ ४
औहाइऔहा । ध्रुवेसार२३दे । सिसा३यिदा५ता६५
३र ४र ३ ४ ३र ४ ५ ३र २ ४ ५ ३
६उ ॥(२) नूनोरयिंमहामिन्द । औहाइऔहा । अस्म
र ३ ४ ५ ३र २ ४ ५ १र १ २
भ्यꣳसोमविश्वतः । औहाइऔहा । आपावा २ ३ स्व ।
१ १ ४
सहा३स्रा५यिणा६५६म् (३) ॥ १२ * ॥ [३]

१र र १ १ १
॥ गौराङ्गिरसस्य साम ॥ आहायिह३वार३यि । ऊव
२ र र ४ १र ३ ५ २ र २ ३ ५
ए । पुनानोआ३क्रा३मीदभि । विश्वामृधो३चर्षणिः ।
२ ३ २ ४ १र र
शुम्भतिवि । प्रन्धा३यिता५यिभा६५६यिः ॥(१) आयो
४ २र ३ ५ २ ४ २र ३ ५ २ र
निमा३रु३णोरुहत् । गमदिन्द्रो३वा३षासुतम् । ध्रुवे

* ऊ० गा० १३प्र० २ख० ११सा० ।

२ १ ४ २र र ४
सद । सिसा३यिद्दा५ना६३६उ ॥(२) नूनोरया३यिमा३
२र १ ५र १ ४ २ १ ५ २र र
द्दामिन्दो । अस्मभ्यꣳसो३मा३विश्वतः । ओ३वायि । इ
१ २ १ २ र २ १ ४
३वा२३यि । ऊवा । आपवस्व । सद्दा३स्ना५यिणा ६ ५

६ म्(३) ॥ १२ * ॥ [४] १२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
चतुर्थ खण्डः † ॥ ४ ॥

———

अथ पञ्चम-खण्डे‡ प्रथमतृचे—

प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यन्ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सोतुर्बाहुभ्याꣳसुयतो नार्वा ॥ १ ¶ ॥

हे "इन्द्र !" "सोमं" "पिब", स सोमः "त्वा" त्वाम्
"मन्दतु" मादयतु, हे "हर्यश्व" हरिसञ्ज्ञकाश्ववन् ! इन्द्र !

---

* ऊ० म|० २३प्र० २० (३सा ० ।
'उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि० ।

‡ 'इहाग्नी पृष्ठान्युच्यन्ते विराजं पृष्ठं भवति । यद्याग्निमन्थनम् ॥'—इतिवि० ।

¶ छ० आ० ५, १, १, ८ (१भा० ८(४ पृ०) = ० ५, ४, ५, १ ।

Digitized by Google

"ते" त्वदर्थं "सोतुः" अभिषवकर्त्तुः "बाहुभ्याम्" "अर्वा" रश्मिभ्यामश्वइव "सुयतः" सुष्ठु परिगृहीतः "अद्रिः" ग्रावा "यं" सोमं "सुषाय" अभिषवं करोषि, स मन्दत्विति पूर्वेण सम्बन्धः॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ १ २
यस्तेमदोयुज्यश्चारुरस्तियेनवृत्राणिहर्यश्वहꣳसि ।
१२ १२
सत्वामिन्द्रप्रभूवसोममत्तु ॥ २ * ॥

हे "हर्यश्व !" "इन्द्र !" "ते" तव "युज्यः" योग्यः "चारुः" समीचीनः "मदः" मदकरः "यः" सोमः "अस्ति" विद्यते "येन" च पीतेन सोमेन "वृत्राणि" आवरकादीनि राक्षसादीनि "हंसि", हे "प्रभूवसो" प्रभूतधन इन्द्र! "त्वा" त्वां "सः" सोमः "मदतु" मादयतु॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ २ ३ ०उ ३ १ २ ३ १ २ ३
बोधासुमेमघवन्वाचमेमांयान्तेवसिष्ठोअर्चतिप्रशस्तिम्।
३ १२ १२ ३ १ २
इमाब्रह्मसधमादेजुषस्व ॥ ३ † ॥ १३

हे "मघवन्" इन्द्र! "ते" तव "प्रशस्तिं" स्तुतिरूपां "यां" वाचं "वसिष्ठः" नामर्षिः "अर्चति" वहति, "इमां" वसिष्ठस्य

---

* ऋ० वे० ५, ३, ५, २। † ऋ० वे० ५, ३, ५, ३।

Digitized by Google

सम्बन्धिनीं वाचं "सु आ बोध" सुष्ठु अभिबुध्यस्व किञ्च "इमा" इमानि "ब्रह्म" ब्रह्माणि हवीरूपाण्यन्नानि * "सधमादे" यज्ञे "जुषस्व" सेवस्व ॥ ३ ॥ १३

॥ दैर्घतमसम् ॥ हाउपिबा । सोममिन्द्र । मा । दतुत्वा । यन्तेसुषावहरिया । श्वा१द्रौ२ः । श्वाद्रौ२ः । सोतुर्बाहुभ्याम् । सुयता३ः । सुयताः । ना२र्वा२ ३ ४औहोवा ॥(१) हाउयास्तायि । मादोयुजियः । चा । रुस्ता३यि । रुस्तायि । येनवृत्राणिहर्य्यश्वा । हा१ ९सा२यि । हा९सा२यि । सत्वामिन्द्रा । प्रभूवसा३ उ । भूवसा३उ । ममा२स्तू२३४औहोवा ॥(२) हाउबो धा । सूमेमघवन् । वा । चमेमा३म् । चमेमाम् । यान्तेवसिष्ठअर्चतिप्रा । शा १ स्ता २ यिम । शास्ता

* 'अथवा ब्रह्माणि च विद्यलक्षणानि'—इति वि० ।

१र र २ १ र २
२यिम। इमाब्रह्मा। सधमाद्दा३यि। धमाद्दा३यिः।
१ ॰ ५र र
जुषा२स्वा२३४औहोवा(३)॥ १ *॥ [१]

१र र र १ २ र १
॥ मरायम्॥ हाउहाउहाउ। पायिबा। सोमाम्।
२ र र र १ २ १
इन्द्र। मन्दतुत्वा। त्वा। त्वा। यान्तायि। सुषा।
२ र १ २ र १ २र
वज्रय्यंस्वाद्रिः। द्रिः। द्रिः। सोढ्ढः। बाहू। भ्या२
र र र र र १ २ १
सुयतोनार्वा। र्वा। र्वा॥(१) यास्तायि। मद्दो। यु
२ र १ २ १
जियस्वारुरस्ति। स्ति। स्ति। यायिना। वृत्रा। णि
२ १ २ १ २र
हर्य्यंस्वहऽसि। सि। सि। सात्वाम्। इन्द्रा। भूप्र
र १ २ १ २१
वसोममत्तु। तु तु॥(२) बोधा। सुमायि। मघवन्।
१र र र र र १ २ १
वाचमेमाम्। माम्। माम्। यान्तायि। वसायि।
र २ १ २
ष्ठोमश्चेतिप्रशस्तिम्। स्तिम्। स्तिम्। अयिमा। ब्र
१ २१ र २र
ह्मा। सधमा। देजुषस्व। स्व। स्व(३)॥ २ †॥ [२] १३

* ऊ० गा० ११प्र० २अ० १खा०। † ऊ० गा० ११प्र० २अ० २खा०।

Digitized by Google

अथ द्वितीयहचे—*प्रथमा ।

१ २ १ २ २ १ २ ३ १ १
विश्वाःपृतनाअभिभूतरन्नरः
३ १ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २
सजूस्ततक्षुरिन्द्रञ्जजनुश्चराजसे ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
क्रत्वेवरेस्थेमन्यामुरीमुतोग्र
७र ३ १ २ ३ १ २
मोजिष्ठन्तरसन्तरस्विनम् ॥ १ † ॥

"विश्वाः" सर्वाः व्याप्ता वा "पृतनाः" [पृङ् व्यायामे (तु०, आ०); व्याप्रियन्ते इति पृतनाः] सेनाः परस्परं सङ्गताः सत्यः "अभिभूतरम्" [शत्रूणामित्यर्थः] अभिभवितारम् "इन्द्रम्" "ततक्षुः" आयुधादिभिः तीक्ष्णीचक्रुः आयुधवन्तम-स्त्रवन्तञ्च चक्रुरित्यर्थः [यद्वा पृतना इति सङ्ग्राम नाम (निघ० २, १७, १८); व्याप्रियन्ते अत्रेति पृतनाः सङ्ग्रामाः, सर्वा-नेव सङ्ग्रामानभिभावुकमिन्द्रं "नरः" नेतारः स्तोतारः अन्योन्यं सङ्गताः स्तुतिभिः तीक्ष्णमकुर्वन्, सुतोऽतिबलवान् भवतीति । यद्वा यष्टारो हविः-प्रदानेन वीर्यवन्तं कुर्वन्तीति] किञ्च स्तोतारः "राजसे" [राजतेः तुमर्थे असे प्रत्ययः (३, ४, ६)] आत्मनो विराजनार्थं प्रकाशनार्थं सूर्यात्मानमिन्द्रं "जजनुः" जनयामासुः स्तोत्र-शस्त्रैः स्व-यज्ञे प्रादुरभावयन्ति-

* 'वामदेव्यम् । मैत्रावरुणं साम । विश्वोकं साम'—इति वि० ।

† ऋ० मा० ४, २, ४, १, (१भा० ७५४०) = ऋ० वे० ६, २, २७, ५ ।

Digitized by Google

त्यर्थः। किञ्च "क्रत्वा" ईदृशमिन्द्रम् "आसुरीम्" अत्र आमाभि-मुख्येन मारयितारम् "उग्रम्" उद्गूर्णबलम् अतएव "ओजिष्ठम्" ओजस्वितमं "तरसं" प्रवृद्धं "तरस्विनं" वक्ष्यामि अत्र वधार्थं वेगवन्तं बलवन्तं वा एवम्भूतमिन्द्रं धनार्थं स्तुवन्ति॥

"क्रत्वेवरेस्थेमनि"-"क्रत्वावरिष्ठंवरे"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
नेमिन्नमन्तिचक्षसामेषंविप्राअभिस्वरे।
१ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ ३ १ २र
सुदीतयोवोअद्रुहोपिकर्णेतरस्विनःसमृक्वभिः॥ २ *॥

"नेमिम्" [अरान् यथा नेमिर्व्याप्नोति तद्वदिन्द्रं सर्वं व्याप्नुते तादृशं] नमनशीलमिन्द्रं "चक्षसा" दर्शनमात्रेणैव† "विप्राः" मेधाविनः ‡ "अभिस्वरे" ¶ अभिस्वरेण गीताय स्तोत्राय इन्द्रविषयं स्तोत्रं कर्त्तुमित्यर्थः "नमन्ति" नमस्कुर्वन्ति। कीदृशम्? "मेषम्" इन्द्रो मेषोभूत्वा मेधातिथिं स्वर्गमनयत् तस्मात् मेधातिथेर्मेषभूतमिति यावत्। इदानीं यजमानः स्तोतॄनाह—अपिच हे स्तोतारः! "सुदीतयः" शोभनदीप्तयः

---

* ऋ० वे० ६, १, ९८, १।

† 'चक्षुषा दृष्टिसूत्रे ण'—इति वि०।

‡ 'विप्राः ब्राह्मणाः'—इति वि०।

¶ 'अभिस्वरे—अभिस्वरो यज्ञस्तस्मिन् अभिस्वरे यज्ञे'—इति वि०।

Digitized by Google

"अद्रिहः" कस्याप्यद्रोग्धारः "वः" यूयं [छान्दसो वसादेशः] "तरस्विनः" कर्मसु स्तोत्रेषु वा त्वरायुक्ताः सन्तः इन्द्रस्य "कर्णे" श्रोत्र-समीपे "ऋक्वभिः" अर्च्चनयुक्तैर्मन्त्रैः * [यद्वा ऋचो बह्वी येषु सन्ति तैः स्तोत्रादिभिः] संस्तुतः इन्द्रो यथा युष्मदीयानि स्तोत्रादीनि शृणोति तथा सम्यगभिष्टुतेत्यर्थः ॥

"अभिस्वरे"-"अभिस्वरा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

समु रेभासो अस्वरन्निन्द्रँ सोमस्य पीतये ।

१२ ३ १ ० ३ १ २ ३ १ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

स्वःपतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ ३ † ॥ १४

"रेभासः" [रेभृ शब्दे (भ्वा० आ०) शब्दयितारः स्तोतारः [यद्वा, "रेभासः" कश्यप-पुत्रा रेभाः एतन्नामका ऋषयः] "इन्द्रम् उ" इन्द्रमेव "समस्वरन्" ‡ सम्यगशब्दयन् समस्तुवन् । किमर्थम् ? "सोमस्य पीतये" सोमपानाय "यद्" यदा "स्वष्पतिः" स्वर्गस्य पालयिता धनस्य स्वामी वा इन्द्रः "वृधे" यजमानादिवर्द्धनाय भवति, तदा "धृतव्रतः" धृत-कर्मेन्द्रः

---

* 'ऋक्वभिः—ऋग्वद्भिः सामभिः'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, १, २९, १ । "यदीम्"—इति च ऋ०-पाठः ।

‡ 'अस्वरन्—सामभिर्मायन्ति'—इति वि० ।

Digitized by Google

"ओजसा" बलेन "ऊतिभिः" मरुद्भिः पालनैश्च वा सह सङ्गच्छते ; स्तुतिभिर्बलं मरुद्भिः पालनैश्चेन्द्रस्य भवतीत्यर्थः* ॥

"समु"-"समोम्"—इति पाठो, "स्वष्पतिः"-"स्वपतिम्"—इति च ॥ ३ ॥ १४

॥ वैशोकम् ॥ विश्वोहायि । पृतनाअभिभु । तरन्नराः । सजूस्ततक्षुरायिन्द्रञ्जजनूः । चराजासो२३४हायि । क्रत्वौहोयि । वरौहोयि । स्थेमन्या२मू२३४रीम् । उतोहायि । उग्रमो२३४जो । ष्ठन्तारा२३४साम् । हो यि । तरा३४ । स्विनम् । ओ२३४वा ॥(१) नेमोहायि । नाम । तिचक्षसा । मेषंविप्राः । अभिस्वारो२३४हायि । सौहोयि । दौहोयि । तयोर२वो२३४आ । क्रुहोहायि । अपायिका२३४र्णो । तारस्वौ२३४नाः । हो यि । समु३४ । कभिः । ओ२३४वा ॥(२) समोहायि ।

---

* अत्र 'सम् उ—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

२   १२ ३ २ १   २ १२   २ र १
रायिभा। सोअस्वरान्। इन्द्र(ँ)सोम। स्वपीतायो२३

५   १र   र   ३   ५
४वायि। सोवोयि। वीवोयि। पतार्यिर्या२३४दी।

२ १   २ १   ५   २   ३   ५   २
वृधोवायि। धृतव्रा२३४ता:। हियोजा२३४सा। वा

१ २   ५   ५   २   ३
यि। समू३४। तिभि:। ओ६वा। ओयिदी २ ३ ४

५
वा (३) ॥ १२ * ॥ [१] १४

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते †—

प्रथमा।

१   २र   ३ २उ   ३ १ २ ३ १ २
योराजाचर्षणीनांयातारथेभिरध्रिगु:।

१ २   ३ १   २र   ३ र ३ १ २ ३ २ ३ १
विश्वासान्तरुतापृतनानाञ्ज्येष्ठंयोवृत्रहागृणे ॥ १ ‡ ॥

"य:" इन्द्र: "चर्षणीनां मनुष्याणां "राजा" स्वामी, "रथेभि:" रथै: "याता" आगन्ता च, "अध्रिगु:" अधृतगमनो ऽन्यै:, "विश्वासां" "पृतनानां" सेनानां "तरुता" तारक:, "य:" च "वृत्रहा" वृत्रं हतवान्, "ज्येष्ठं" गुणैर्ज्यायांसं तं महाभागमिन्द्रं "गृणे" स्तौमि ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० २३प्र० २ख० १३गा०।

† 'भरद्वाजस्य पृश्न्याख्यावाकं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० सा० ३, २, ४, १ (१ भा० ५६३ पृ०) = ऋ० वे० ६, ५, ८, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २३१ २
इन्द्रन्तꣳ शुम्भपुरुहन्मन्नवसेयस्यद्विताविधर्त्तरि।
१ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ २र
हस्तेनवज्रः प्रतिधायिदर्शतोमहान्देवोनसूर्य्यः॥ २* ॥ १५

हे "पुरुहन्मन्" ऋषे! † त्वं "तम्" "इन्द्र" "शुम्भ" ‡ हविःप्रदानादिना अलङ्कुरु। किमर्थम्? "अवसे" रक्षणाय ¶। एवमात्मा स्वात्मानं सम्बोध्य ब्रवीति—"यस्य" तव "विधर्त्तरि" विधारके इन्द्रे "द्विता" § द्वित्वम् अस्ति,—भोग्यमभोग्यम् [तव अन्नं न् हन्तुमुपत्वं, तदनुग्रहाय अनुग्रहस्वेति द्वैतमस्ति]; तयोरंशं दर्शयति—"दर्शतः" दर्शनीयः "महान्" प्रभूतः "वज्रः" "देवो न सूर्य्यः" द्योतमानः सूर्य इव स्थितः, "हस्तेन" करेण "प्रति धायि" प्रतिनिहितो भवति ‖ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ५, ८, २।

† पुरुहन्मन्—पुरुहन्मा नामऋषिः अस्य तृचस्य स्वात्मानं परोक्षवत् ब्रवीति'—इति वि०।

‡ 'शुम्भ—शुम्भं अलङ्कुरु'—इति वि०।

¶ 'कुर्वीति वाक्यशेषः'—इति वि०।

§ 'त्रितः, द्वितः, एकतः—इति ऋषयः; तेषां मध्ये द्विताः'—इति वि०।

‖ 'हस्तेन वज्रः प्रतिधायि—हस्तेन धृतोऽसौ वज्रः प्रति धेह् पाते सर्वप्राणिनां वीर्यं रसं शोणितादि पिबते'—इति वि०।

"हस्तेन"-"हस्ताय"—इति पाठौ, "महान्देव"-"महोदेवः" —इति च *॥ २ ॥ १५

२र १ ४ र र ५ १र २र १ र
॥ पृश्नि ॥ योराजा२३चर्षणीनाउ्हाउ। यातारथे

२ १ २ १ २ १ २ २ १ २र
भिरध्रिगुः। विश्वासा१न्ता२३। होवा३हायि। तृता।

१ २ १ २ २ १र २
पृतानां१ना२३म्। होवा३हायि। ज्येष्ठांये१वा२३।

१ २ २ १ र र १ २१ ४
होवा३हा। त्राहागृणे। इडा२३॥(१) ज्येष्ठांयो२३वृ

र र ५ १र २ १र २ १र २र १ २
त्राहागृणोहाउ। ज्येष्ठंयोवृत्राहागृणे। इन्द्रान्ता१उ्भूर२

१ २ २ १ २ १ २ १
३। होवा३हा। भपुरुह। मन्नावा१सा२३यि। हो

२ २ १ २ १ २ २ १
वा३हायि। यस्यादा१यिता२३। होवा३हायि। वायि

२ १ २ १ ४र ५
धर्त्तरि। इडा२३॥(२) यस्यद्दी२३ताविधर्त्तरिहाउ।

१ २ १र २ २ २ १ २ १ २ २
यस्यद्दिताविधर्त्तरि। हस्तायिना१वा२३। होवा३हा।

१ २ र २ २ १ २ २ १
त्रः प्रतिधा। यिदार्भा१मा२३ः। होवा३हायि। मह/

* "महोदेव"—इति च क० पाठः।

१   १ २ २   १ र २   १
न्दा१यिवा२३ः। छोवा३च्चायि। नासूरियः। इडा २ ३

१   १
भा३४३। श्रो२३४५ई। डा(३)॥१४*॥ [१]

५र ४   २   ४   ५र ४   ५   १ र १
॥ अभीवर्त्तम्† ॥ योरा३जा३चर्षणीनोवा। यातार

र   १ २   १ र २   २५५र
थे। भिराध्रा१यिगू२ः। वायिश्वासा३१२३४म्। तरुता।

२ १ २   २र १ २   ३ २   १
पृतानाश्ना२म्। ज्येष्ठांया१वा२। च्चा३। गा२३४

२   १ १ १   ५र ४   २   ४   ५र   ४ ५
५। णा२३ ४ ५ यि॥(१) ज्येष्ठा३यो३वृत्रहागुणोवा।

१   २र   १ २   १   २
ज्यायिष्ठयोवु। च्चा१गा१णा२यि। श्रायिन्द्रन्तꣳशू३१

३ ४५   २ १ २   १ २
२३४। भपुरुष्टु। म्नावा१सा२यि। यश्चाद्दा१यिता

२ २   १   २ १ १ १ १   ५ ४   २
२। विधा३। ता२३४५। रा२३४यि ॥(२) यश्चा३द्दा३यि

४   ५   ४   ५   १   १ र   १ २   १
ताविधर्त्तरोवा। याश्चद्दिता। विधार्त्ता१रा२यि। द्या

र २   २   ४ ५र   २ १ २   १
स्तेनवा३१२३४। ज्ञःप्रतिधा। यिन्द्राग्गी१ता२ः। मघा

---

* ऊ० गा० २प्र० २ष० १४सा०। † "अभीवर्त्तः"—इति ख० पु० पाठः।

Digitized by Google

न्द्रा१यिवा२ः। नमू३। रा२३४५। या२३४५ः (३)

॥ ७ * ॥ [२]

॥ जनित्राद्यम ॥ योराजा३चर्षणायिनाम। ऊवे
होऽ२यि। यातारथेभिराधा१यिगु२ः। विश्वासान्तरु
ता२। पृताना२३४नाम्। ज्येष्ठा३ऽहोयि। योवा३
ऽहोयि। योवा३हो। त्रहा। गा२र्णा२ ३ ४ औहो
वा ॥(१) ज्येष्ठंयो ३ वृत्रहागृणायि। ऊवेहोऽ२यि।
ज्येष्ठंयोवृत्रहागा१र्णाऽ२यि। इन्द्रन्तऽशुम्भपुरुहा२।
न्मन्नावा२३४साथि। यस्या ३ होयि। द्विता ३ होयि।
विध। ता२रा२३४ओहोवा ॥(२) यस्यद्वी३ताविधर्त्तरा
यि। ऊवेहोऽ२यि। यस्यद्विताविधार्त्ता१राऽ२यि। हस्ते
नवज्रःप्रतिधा२। यिदार्शा२३४ताः। महा३न्होयि।

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ७सा०।

२र १ १ २ १र २ ५र र १ १ ११
देवा३हो। नम्। रा२ॱर्या२३४औहोवा ॥(३) जनित्रा२३
११
४५म् ॥ १३ * ॥ [३] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे ‡, प्रथमतृचेण ¶—

प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र ३ २
परिप्रियादिवःकविर्वयाꣳसिनप्तयोर्हितः।

३ १ २ ३ १ २
स्वानैर्यातिकविक्रतुः ॥ १ § ॥

"कविः" मेधावी "कविक्रतुः" क्रान्त-प्रज्ञः क्रान्त-कर्मा "नप्त्योः" अधिषवणफलकयोः "हितः" निहितः सोमः "दिवः" द्युलोकस्य "परि प्रिया" अति प्रियाणि "वयांसि" ग्रावणः ॥

"स्वानैः"-"सुवानः"—इति पाठो ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० २ख० १३गा०। † 'उत्तरं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि०।

‡ 'इदानीमार्भवमुच्यते'—इति वि०। ¶ 'यौधाजयं साम'—इति वि०।

§ छ० आ० ५, २, ४, १० (१भा० २९) = ऋ० वे० ९, ७, ३२, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

२ २ र ३ २३ १ र ३ र र १ २
ससूनुर्मातराशुचिर्जातोजातेअरोचयत् ।
३ र ३ १ २ र १ २
महान्मही ऋतावृधा ॥ २ * ॥

"जातः" उत्पन्नः "शुचिः" † विशुद्धः महान् हविष्मत्तमः "सः" सोमाख्यः "सूनुः" पुत्रः "मही" महत्यौ "ऋतावृधा" ‡ यज्ञस्य वर्द्धयित्र्यौ "जाते" विश्वस्य जनयित्र्यौ "मातरा" आत्मनो मातरौ द्यावापृथिव्यौ "अरोचयत्" रोचयति दीपयति ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ र ३ १ २ ३ १ र ३ १ र ३ १ २
प्रप्रक्षयायपन्यसेजनायजुष्टोअद्रुहः ।
३क २र ३ १ २
वीत्यर्षपनिष्टये ॥ ३ ¶ ॥ १६

हे सोम ! "प्र प्र" अत्यन्तं "क्षयाय" तव निवास-भूताय "अद्रुहः" अद्रुहे अद्रोग्धे "पन्यसे" स्तोत्रे "जनाय" मनुष्याय

---

* ऋ० वे० ६, ७, ३२, २ ।　† 'शुचिः दीप्तः'—इति वि० ।

‡ 'ऋतावृधा—ऋतो यज्ञः तेन वर्द्धतः ऋतावृधौ यद्वा ऋतमन्नं तेन वर्द्धते'—इति वि० ।　¶ ऋ० वे० ६, ७, ३३, २ ।

Digitized by Google

"वीति"वीत्यै भक्षणाय "जुष्टः" पर्याप्तः त्वं "पनिष्टये"* स्तुतये "अर्ष" अङ्गं प्रति गच्छ ॥

"अद्रुहः"-"अद्रुहे"—इति पाठौ, "पनिष्टये"-"च म-ष्टया"—इति च॥३॥१६

१ १
॥ औशनायवोत्तरम् ॥ परिप्रिया २दिवःकवायिः। व

२ १ १ २ २ २ १ २ २ २
या २हो१वा१सिनप्तोवोर्हितः। स्वानैर्य्या२३ती। ऊ

१ २ १ २ १ ५ २ ३ २
वा। होवा। होवा। ऊवा २यि। ई३या। कविक्र

१ ३ ५२ २ १ २ २ १
तो२। या२३४औहोवा॥(१) समूनुर्म्मा२तराशुचायिः।

२ २ २२ १२ २ २ २ १ २ ३
जाता २हो१वाजातेअरोवोचयात्। महान्मा२३ही। ऊ

१ १ २ १ ५ २ २ २ १ १
वा। होवा। २। ऊवा २यि। ई३या। ऋतावृधो२।

३ ५२ २ १ १
या२३४औहोवा॥(२) प्रप्रक्षया २यपन्यसायि। जना २हो

२ १ १ २ २ २ १ २ २ १ १ २
१वायजुष्टोवोअद्रुहाः। वीतिया२३र्षा। ऊवा। होवा।

---

* 'पनतिः स्तुतिकर्म्मा (निघ० ३, १४, १६),—इति वि०।

२। ऊवा२यि। ई३या। पनिष्टयोर। या२३४औहो
वा। ई३या२३४५म्(३) ॥ १५ * ॥ [१]

॥ और्णायवाद्यम् ॥ परिप्रियादिवःकावीः। वयाᳪ
सिनप्रोर्हिताः। स्वानैर्या२३तो। आया२। इया
२ई३या। कविक्रतोर। या२३४औहोवा ॥(१) ससुनु
र्मातराशूचीः। जातोजातेअरोचयात्। महान्मा २ ३
ही। आया२। इया२ई३या। ऋतावृधोर। या२
३४औहोवा ॥(२) प्रप्रक्षयायपन्यासायि। जनायजुष्टो
अद्रुहः। वीतिया२३र्षा। आया२। इया२ई३या।
पनिष्टयेर। या२३४औहोवा। ई२३४५(३) ॥८ † ॥[२]

॥ बृहद्भारद्वाजम् ॥ परिप्रिया। दिवःकवायिः।
वयाᳪसा२३यिना। प्रियोर्हिताः। स्वानैर्या२३तायि।

* ऊ० गा० २प्र० २ख० १५गा० । † ऊ० गा० ७प्र० २खं० ८गा० ।

आ। औ३होवा। काविक्रतुः। इडा२३ ॥(१) ससूनु
र्मा। नरामृचायिः। जातोजा२३ते। अरोचयात्।
मयान्मा२३ही। आ। औ३होवा। आर्त्तावृध। इडार
३ ॥(२) प्रप्रक्षया। यपन्यसायि। जनाया२३जू। ष्टो
अद्रुहाः। वीतियार२३र्षा। आ। औ३होवा। पानि
ष्टये। इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई। डा(३) ॥ १० * ॥[३]

॥ गौषूक्तम् ॥ परिप्रियादिवौ। हौहोवाहायि।
कवायिः। वयाꣳसिनप्रियौ२। ऊवायि। ऊवा२यि।
हायिता२ः। स्वानैर्य्यातिकवौ२। ऊवायि। ऊवा२
यि। क्रातू२३ः। हो२वा२३४औहोवा। अग्निराऊता
२३४५ः(१) ॥ ११ † ॥[४]

॥ ईनिधनमाग्नेयम् ॥ परिप्रियादिवःकवा३यिरे।

---

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० १०सा०। † ऊ० गा० १६प्र० १ख० ११सा०।

Digitized by Google

१ र र र र २
वयाᳫँसिनप्तगोर्हिताः । स्वानैर्या२३नायि । ऐ२हो१आ
२ १ २ ५र र १ र
२३यिहो । कवि । क्रा२ह२३४औहोवा ॥(१) समूनु
र र २ १ र र र र र
म्नातराघ्नुचा३ए । जातोजातेअरोचयात् । महान्मा२३
२ २ १र ३ ५र र
हो । ऐ२हो१आ२३यिहो । ऋता । वा२र्द्ध२३४औहो
२ र २ १र र
वा ॥(१) प्रप्रत्त्ययायपन्यसा ३ ए । जनायजुष्टोअद्रुहाः ।
र २ २ १ ३
वीतिया२३र्षा । ऐ२हो१आ२३यिहो । पनि । ष्टा२या
५र र ३ १ १ १ १
२३४औहोवा । ई२३४५(३) ॥ १७ * ॥ [५] १६

अथ प्रगाथे द्वितीयसूक्ते †—

प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वᳫँह्या३ङ्गदैव्यपवमानजनिमानिद्युमत्तमः ।
३ १ २ ३ १ २
अमृतत्वायघोषयन् ॥ १ ‡ ॥

हे "पवमान" पूयमान ! "दैव्य" देवसम्बन्धि सोम ! "द्युम-

---

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १७गा० ।

† 'वामदेव्यं बृहत्कं साम'—इति वि० ।

‡ छ० आ० ६, २, ४, ६(२ भा० २३५ पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, १७, ३ ।

त्तमः" अतिशयेन दीप्तिमान् "त्वं हि" त्वमेव "अङ्ग" क्षिप्रं "घोषयन्" शब्दयन् शब्दं कुर्वन् "जनिमानि" देवसम्बन्धीनि जन्मान्यभिलक्ष्य "अमृतत्वाय" अमरणाय आगच्छेति शेषः॥

"दैव्य"-"दैव्या"—इति पाठौ, "घोषयन्"-"घोषः"—इति च॥१॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ २ १ २ ३ २
येनानवग्वादध्यङ्पोर्नु*तेयेनविप्रासआपिरे।

३ १ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ २ १ २
देवानाꣳसुम्ने अमृतस्यचारुणोयेनश्रवाꣳस्याशत॥२†॥१७

"नवग्वा"‡ नवनीय-गतिः यद्वा नवभिर्मासैः सत्रस्यानुष्ठानात् "दध्यङ्"—एतन्नामकः अङ्गिराः "येन" सोमेन पणिभिरपहृतानां "द्वारम्" "अपोर्णुते" अपच्छादयति विहृतमकार्षीत् "विप्रासः" तत् मुख्याः सर्वे मेधाविनोऽङ्गिरसः "येन" च सोमेन "आपिरे" तैरपहृता गाः आप्नुवन् किञ्च "देवानाम्" इन्द्रादीनां "सुम्ने" सुखे यज्ञेन सम्भाते सति "चारुणः" कल्याणस्य "अमृतस्य" उदकस्य सम्बन्धीनि "श्रवांसि" अन्नानि

* "र्णु"—इति क० पु० पाठः। † ऋ० वे० ७, ५, १७, २।
‡ 'नवग्वा—नवा गावो यस्य असौ नवग्वा'—इति वि०।

"येन" च सोमेन यजमानाः "आयत" व्याप्नुवत् अलभन्त ; स त्वं देवानाममरणायागच्छेति पूर्व्वेण सम्बन्धः ॥

"नवग्वा"-"नवग्वो"—इति पाठौ, "आयत"-"आनशुः" —इति च ॥ २ ॥ १७

१ २ १ २ १२ २ १
॥ बृहत्कम् ॥ तुवꣳद्दो। अङ्गदैवा२ ३ या। पाव
२र १ २र १ ० १ २ २ ४
मानजनिमानि। द्यूमत्तामा २ः। अमार्त्ताइत्वा३। य
५ ४ ५ १ २ १ २र १र
घोवा। षा५योई३ा।यि ॥(१) अमृता। त्वायघोषार३
२ १ २र१ २र १ २ १र
यान्। यायिनानवग्वाद्दध्यङ्। आपो१र्णुता२यि। येना
२ २ ४ ५ ४ ५ १र २ १
वा३यिप्रा३। सञ्ओवा। पा५यिरोई३ायि ॥(२) येनवी।
२र १र २ १ र २र १र २ १ २ १
प्रासआपार३यिरा।यि। दायिवानाꣳसुम्न अमृत। स्या
२ १र २ २ ४ ५ ४ ५
चा१ह्वणा२ः। येनाआ३वा। सियोवा। शा५तोई३ा
यि(३) ॥ १६ * ॥[१]

* ऊ० गा० २प्र० २ख० १६ गा०।

Digitized by Google

२ र १ ३ ४ र ३
॥ स्वारसौम॥ त्व१ ह्यङ्गदैवा३या। पवमानज
४ ५र र १ २ ५ १ २ २
निमानिद्युमा। ऊम्। ता२३४माः। ग्रामा ३ उवा।
र १र २ ५ ४ ५ २
तात्वा। ३यघो२३४वा। षा५यो ६ हायि॥(१) अम्टत
र र २ १र४र३४र ३४ ५र १ २
त्वायघोषा३यान्। येनानवस्वाद्ध्यङ्ङ्पो। ऊम्। णू
५ १ २ २ १र २ १ ५
२३४तायि। यायिना३उवा। विप्रा। सघ्रो२३४वा।
४ ५ १र ऽर र २४ र
पा५यिरो६हायि॥(२) येनविप्रासञ्आपा३यिरायि। दे
१र४र १र४ ३४५ र १ २ ५ १ २
वानांसुम्ने अम्टतस्यचा। ऊम्। रु२३४णाः। यायिना
२ १र २१ ५ ४ ५
३उवा। अवा। सियो२३४वा। आ५तो६हायि(३)॥१६*॥[२]
१ २ १र १
॥ आङ्कम्†॥ तुव१ह्यिया। ए२। गदा। विया।
र र २१ २ १
पवमानजनिमानिमानिद्युमत्ता२३मा:। आमा२त्त्वा
२१ ५ ४ ५ १ २१र
२३। यघो२३४वा। षा५यो६हायि॥(१) अम्टतत्वा।
१ र र २१र २
ए२। यघो। षयान्। येनानवस्वाद्ध्यङ्पोर्णू२३तायि।

* ऊ० गा० ५प्र० २अ० १६ सा०। † "अक्ष"—इति क० पु० पाठः।

Digitized by Google

१ १ २ १ ५ ४ ५
यायिना२वायिप्रा२३ । सश्रो२३४वा । पा५यिरो ६ हा

१र २ १र १ र र र
यि ॥(२) येनविप्रा । ए२ । सश्रा । पिरायि । देवा

र र २ १र २ १ १ २
ना७सुम्ने अमृतस्यचारु२३णाः । यायिना२स्रावा२३ । सि

१ ५ ४ ५
यो२३४वा । श्रापूतो६हायि(३) ॥ १८ * ॥ [३]

२ २ र ५
॥ सत्रासाहीयम् ॥ तुवा३४म् । हियज्ञदैविय । श्रो

५ १ २र र १ १
६वा । पवमानजनिमानिद्युमत्ता२माः । श्रा२मा । ता

२ १ ऽ २र २र १ १ ५ ५
२३त्वा । यद्यौ३हो । वाहा३४३यि । षा२३४ यो ६ हा

३ २ र र र ५ ५ १र र
यि ॥(१) अमा३४ । तात्वायघोषयन् । श्रो६वा । येना

र र १ १ २
नवग्वादध्यङ्ङपोर्णु२तायि । या२यिना । वा२३यिप्रा ।

१ ऽ २र २र २ २ ५ ५
सश्रौ३हो । वाहा३४३यि । पा२३४यिरो६हायि ॥(२)

२र २ र र र ५ ५ १र र र र
येना३४ । विप्रासश्रापिरे । श्रो६वा । देवाना७सुम्ने

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १८गा० ।

२ १ १ २ १ ९
अमृतस्यचारु२णाः। या२यिना। आ२३वा। सियौ३

२र ३र २ १ ५ ५
हो। वाहा३४३यि। आ२३४तो६हायि(३)॥ १२ *॥[४]१७

अथ तृतीयतृचे†—प्रथमा।

१ २ ३ २ ७ २उ ३ २ ३ १ २
सोमःपुनानऊर्म्मिणाव्यंवारंविधावति।

१ ७ ३ १ २र ३ १ २
अग्रेवाचःपवमानःकनिक्रदत्॥ १ ‡॥

"पुनानः" पूयमानः "सोमः" "ऊर्मिणा" स्वीयया धारया "अव्यम्" अवेः सम्बन्धिनं "वालं" पवित्रं "वि धावति" विविधं गच्छति। कीदृशः सोमः? "पवमानः" पूतः "वाचः" स्तोतस्य "अग्रे" "कनिक्रदत्" पुनः पुनः शब्दं कुर्वन् विधावति॥

"अव्यम्"-"अव्ये"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ २ ७ २ ३ १ २ ३ १ २
धीभिर्म्मृजन्तिवाजिनंवनेक्रीडन्तमत्यविम्।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २
अभित्रिपृष्ठम्मतयःसमस्वरन्॥ २ ¶॥

"वाजिनं" बलवन्तं वा "नवनीये" वसतीवर्याख्ये उदके

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० १२सा०। † 'वातोपादीयं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० स० ६, २, २, ७ (२ भा० २१४ पृ०) = ऋ० वे० ५, ५, १०, ५।

¶ ऋ० वे० ५, ५, ११, १

"क्रीडन्तं" सङ्क्रीडमानम् "अत्यविम्" [अविशब्देन तद्रोमकृतं पवित्रमभिधीयते] अतिक्रान्त-पवित्रं सोमम् ऋत्विजः "धीभिः" स्तुतिभिः * "मृजन्ति" शोधयन्ति [यद्वा, धीभिः—वर्णलोपश्छान्दसः, धीतिभिः अङ्गुलीभिः मृजन्ति] किञ्च "त्रिपृष्ठं" [त्रीणि पवित्राणि द्रोणकलशाधवनीयपूतभृदात्मकानि पात्राणि स्पृशतीति त्रीणि सवनानि वा स्पृशतीति स तथोक्तः, तम्] सोमं "मतयः" स्तुतयः "अभि समस्वरन्" अभितः संस्तुवन्तीति ॥

"मृजन्ति"-"हिन्वन्ति"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३१ २ ३ २ ३ २उ ३ १२ ३ २
असर्जि कलशाꣳ अभिमीढ्वान्त्सप्तिर्नवाजयुः।

३ १ २र ३ १ २
पुनानोवाचञ्जनयन्नसिष्यदत् ॥ ३† ॥ १८

"वाजयुः" यजमानानामन्नमिच्छन् "मीढ्वान्" सेक्ता ‡ स सोमः "कलशान्" "अभि" लक्ष्य, कलशेषु "असर्जि" असृज्यत। तत्र दृष्टान्तः—"सप्तिर्न" यथा सर्पणशीलोऽश्वः ¶ सङ्ग्रामे सृज्यते तद्वत्। ततः "पुनानः" पूयमानः सोमं

* 'धीभिः बुद्धिभिः'—इति वि०। † ऋ० वे० ५, ४, ११, ३।

‡ 'मीढ्वान् बलवान्'—इति वि०।

¶ 'सप्तिर्न—सप्तिरश्वोऽभिधीयते'—इति वि०। "सप्तिः"—इति निघण्टावश्वनामसु पञ्चमं पदम् (१, १४,)।

Digitized by Google

"वाचं" शब्दं "जनयन्" उत्पादयन् "असिष्यदत्" पात्रेषु स्यन्दते॥

"मीढ्वान्"--"मेल्ह्वा"—इति पाठौ॥ ३॥ १८

३र ४ ५ र २ ३ ४र ५
॥ आतीषादीयम्॥ सोमःपुना। हो। नऊर्म्मिणा

५ १ र २ २ १ २ ३ २ १
ईए। अव्यंवारंविधा१वा३तो। अग्रेवा२३४५। धा२

१ १ १ २ १ १ १ ३ ५र र २
३४५ः। पवमा२३ना३ः। कार२ना२३४औहोवा। क्रद

३ १ १ १ १ ३र ४ ५ र २ ३ ४र ५ ५
दे२३४५॥(१) धीभिर्मृजा। हो। तिवाजिनाईमे।

१ र र २ २ २ ३ २ १
वनेक्रीडन्तमा१त्या३वायिम्। अभिवा२३४५यि। पार२

१ १ १ २ १ १ १ ३ ५र र २
३४५। ष्टम्मता२३या३ः। सा२मा२३४औहोवा। स्वर

३ १ १ १ १ १ ३ ४ ५ र २ ३ ४र ५ ५
ने२३४५॥(२) असर्ज्जिका। हो। लशा०अभीईए।

१र र २ २ १ ३ १ १ १ १ १ २
मीढ्वान्सप्तिर्न्नवा१जा३यूः। पुनानो२३४५वा२३४५। च

१ १ १ ३ ५र र १ ३ १ १
जना२३या३न्। चा२सा २ ३ ४ औहोवा। ष्यदद २ ३

१ १
४ ५ (३)॥ १७ *॥ [१]

---

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० १७गा०।

२र र १ २ १
॥ यज्ञानम् ॥ सोमःपुना। नऊर्म्मिणा। अव्यवा

र १ १र १ १
रा२म्। विधावतायि। अग्नेवाचा२ः। पव। मा२

२ ५र र १ २ १र
ना२३४औहोवा। कनिक्रददे३ ॥(१) धीभिर्मृजा। ति

र १ १र १ १ २
वाजिनाम्। वनेक्रायिडा२। तमत्यवायिम्। अभि

१ १ २ ५र र १ २
त्रायिपा२। छन्म। ता२या२३४औहोवा। समस्वरन्ने

२ र १ २र र १
३ ॥(२) असर्जिका। लशा९अभायि। मीढान्त्सप्ता२

र १ १ र १ १ १
यिः। नवाजयूः। पुनानोवा२। चन्द्र। ना२या२३

५र र १ १ १ ११ ११
४औहोवा। असिष्यददे३उपा२३४५ (३)॥ ८ *॥ [२]

१र र १ र १
॥ शुध्यम् ॥ सोमःपुना२नः। ऊर्म्मिणोवा। अव्यं

२र १ १ २र २ १ र १र१ २र १
वाराम्। विधावतायि। अग्नेवाचःपवमानःक। ना२

२ १र १र
३यि। क्रदाउवा। शूधिया२ ॥(१) धीभिर्मृजा२न्ति।

र १ ११र२र१ १ २ २ १ २ १ २ १
वाजिनोवा। वनेक्रीडा। तमत्यवायिम्। अभित्रिपृष्ठ

* ऊ० गा० ७प्र० २ख० ८गा०।

२ १ २ १ २ १र
म्नतयःसम् । श्चा२३ । स्वराउवा । अूधिया२ ॥(२)

१ र १ २र१र १ १
असर्ज्जिका२स । म्राऽभोवा । मीठात्सप्तायिः । न

१र२१ २ र १र र र १ २ १ २
वाजयूः । पुनानोवाचञ्जनयन । सा २ ३यि । ष्यदाउ

१र १ २ १
वा । अूधिया२ । ए२३हिया३४३ । श्रो २ ३ ४ ५ ई ।

डा (३)॥ ४ * ॥ [३]

२र १ र र १र १
॥ श्रोग्रम् ॥ सोमाः । पुनानानऊर्म्मि । णा । हो

१ १र १ र र २ १
ई२ । हो । वाहोयि । अव्यंवारंविधावतायि । अग्रा

२ २ १२ २ १ २
यिवा१चा२३ः । पा३वामा३नाः । कना२३यिक्रदा३४३

२र १ र २ १
त् ॥(१) धीभोः । मृजन्तिवाजि । नम् । होई२ ।

१ २र १ र र २ १ २
हो । वाहोयि । वनेक्रीडन्तमत्यायिम् । अभायिना१

२ १ २ २ १ २
यिपा२३ । हा३म्माता३याः । समार२स्वरा३४३न् ॥(२)

२ १ र २ १ १ १र
असा । जिकलग्राऽ्ष । भि । होई२ । हो । वा

* ऊ० गा० ६प्र० २ख० ४गा० ।

१   २ र   र   २ १ २   २
होयि । मौहाद्यम्प्रिर्न्नवाजयू: । पुनानो१वा२३ । चा३

१ २ २   १   ५   १
आना३यान् । असा२३यिष्यदा३४३त् । औ२३४५ई ।

डा (३)॥ ११ *॥ [४] १८

अथ चतुर्थदृचे†—प्रथमा ।

१ २   ३ १ २ ३ १
सोमःपवतेजनितामतीना

२ ३२ ३१ २ ३१२ ३ २
ञ्जनितादिवोजनितापृथिव्याः ।

३ १ २र ३ २र
जनिताग्नेर्जनितासूर्य्यस्य

३ १ २   ३ १   २र
जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णोः ॥ १ ‡ ॥

"सोमः" अभिषूयमाणः "पवते" पात्रेषु चरति । कीदृशः ? "मतीनां" बुद्धीनां [यद्वा, मननीयानां] "जनिता" जनयिता, ["जनिता मन्त्रे (६, ४, ५३)"—इति निपातनाण्णिलोपः] किञ्च "दिवः" द्युलोकस्य "जनिता" प्रादुर्भावयिता, तथा

---

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० ११सा० ।

† 'वात्सप्रं' साम सोमस्यायं स्तुतिः'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० ६, १, ४, ५ (२ भा० ११७पृ०) = ऋ० वे० ७, ४, ६, ५ ।

Digitized by Google

"पृथिव्याः" "जनिता", "अग्नेः" 'जनिता" प्रकाशयिता, "सूर्य्यस्य" सर्वस्य प्रेरकस्यादित्यस्य "जनिता", "इन्द्रस्य" "जनिता" तेन महस्य जनयिता "उत" अपिच "विष्णोः" व्यापकस्य "जनिता" जनयिता;—एतत्सर्व्वं सोमेऽभि षूयमाणे भवतीति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ २ ३ १ १ ३ २ ३ २
ब्रह्मादेवानाम्पदवीःकवीना*

३ १ २ ३ २ ३ १ २
मृषिर्विप्राणाम्महिषोमृगाणाम्।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ ३
श्येनोगृध्राणाᳪंस्वधितिर्वनानाᳪं

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमःपवित्रमत्येतिरेभन्॥ २ † ॥

"सोमः" एवंरूपो भवति—"देवानां" स्तोत्रकारिणा मृत्विजां "ब्रह्मा" ब्रह्माख्यर्त्विक्स्थानीयो भवति [यद्वा, "देवानां" द्योतमानानामिन्द्रादीनां "ब्रह्मा" राजा भवति] तथा "कवीनां" क्रान्त-प्रज्ञानां "पदवीः" [स्खलन्ति पदानि साधुत्वेन यो योजयति स पदवीः, वी गत्यादिषु (अदा०, उभ०)—इत्येतस्मात् क्विपि

---

* "इवीकवीना"—इति क० पु० पाठः। † ऋ० वे० ७, ४, ७, २।

रूपम्], तथा "विप्राणां" मेधाविनां मध्ये "ऋषिः" भवति [यः परोक्षं पश्यति स ऋषिः 'ऋषिर्दर्शनात् (निरु० २, ११)"—इति,] "मृगाणां" "महिषो" भवति महिषाख्यो बलवान् राजा भवति तथा "गृध्राणां" पक्षिविशेषाणां "श्येनः" शंसनीयः पक्षिराजो भवति, "वनानां" [वनतिर्हिंसाकर्मा] हिंसकानां छेदकानां मध्ये "स्वधितिः"—एतन्नामकश्छेदकोऽसि। एवम्प्रभावः सोमः "रेभन्" शब्दायमानः सन् "पवित्रम्" ऊर्णास्तुकेन कृतम् "अत्येति" अतिगच्छति * ॥ २ ॥

---

* अत्राह यास्कः—"ब्रह्मा देवानामित्येष हि ब्रह्मा भवति देवानां देवनकर्मणामादित्यरश्मीनां पदवीः कवीनामित्येष हि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानामादित्यरश्मीनामृषिर्विप्राणामित्येष हि ऋषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्मणामादित्यरश्मीनां महिषो मृगाणामित्येष हि महान् भवति मृगाणां मार्गणकर्मणामादित्यरश्मीनां श्येनो गृध्राणामिति श्येन आदित्यो भवति श्यायतेर्गतिकर्मणो गृध्र आदित्यो भवति गृध्यतेः स्थानकर्मणो यत एतस्मिंस्तिष्ठति स्वधितिर्वनानामित्येष हि स्वयं कर्माण्यादित्यो धत्ते वनानां वननकर्मणामादित्यरश्मीनां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्नित्येष हि पवित्रं रश्मीनामत्येति स्तूयमान एष एवैतत्सर्वमक्षरमित्यधिदैवतमथाऽध्यात्मं ब्रह्मा देवानामित्ययमपि ब्रह्मा भवति देवानां देवनकर्मणामिन्द्रियाणां पदवीः कवीनामित्ययमपि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानामिन्द्रियाणामृषिर्विप्राणामित्ययमप्यृषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्मणामिन्द्रियाणां महिषो मृगाणामित्ययमपि महान् भवति मृगाणां मार्गणकर्मणामिन्द्रियाणां श्येनो गृध्राणामिति श्येन आत्मा भवति श्यायतेर्ज्ञान-कर्मणो गृध्राणीन्द्रियाणि गृध्यतेर्ज्ञान-कर्मणो यत एतस्मिंस्तिष्ठन्ति स्वधितिर्वनानामित्ययमपि स्वयं कर्माण्यात्मनि धत्ते वनानां वननकर्मणामिन्द्रियाणां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्नित्ययमपि पवित्रमिन्द्रियाण्यत्येति स्तूयमानोऽयमेवैतत्सर्वमनुभवत्यात्मगतिमाचष्टे ॥"—इति निरु० प० १, १२।

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ २ २
प्रावीविपद्वाचऊर्म्मिं नसिन्धु

३२ २ २ १ २ २ ३ २
र्गिरस्तोमान्पवमानोमनीषाः।

३ २ ३२ ३१२१ २ ३ १
अन्तःपश्यन्वृजनेमावराण्या

२ ३ १ ३२ ३ २
तिष्ठतिवृषभोगोषुजानन्॥ ३ * ॥ १९

"पवमानः" सोमः "मनीषाः" मनसईषिता हृदयङ्गमान् "प्रावीविपत्" प्रकर्षेण विपर्यति † प्रेरयति "सिन्धुर्न" स्यन्दमान-नदीव "वाचः" शब्दस्य "ऊर्मिं न" सङ्गं यथा प्रेरयति तद्वत्। किञ्च "वृषभः" कामानामुदकानां वा वर्षकः सोमः "अन्तः" अन्तर्हितं वस्तुजातं ‡ "पश्यन्" "अवराणि" दुर्बलैः वारयितुमशक्यानि "इमा वृजना" ¶ इमानि बलानि "आतिष्ठति" आसीदति। किं कुर्वन्? "गोषु जानन्" § गवां जयाय जानानः सन् परबलानि प्रविशति॥

"स्तोमान्"-"स्तोमः"—इति पाठौ॥ ३॥ १९

---

* ऋ० वे० ७, ४, ७, २। † 'वेपयति'—इति वि०।

‡ 'अन्तः हृदये'—इति वि०।

¶ 'वृजना वृजनानि छिद्राणि शरीरावच्छिन्नानि'—इति वि०।

§ 'गोषु जानन्—गोशब्देन रश्मयः ता एव नाड्यो गच्छन्ति; वृषभो वर्षिता; गोषु अप्सु नाडीषु जानन्'—इति वि०।

Digitized by Google

२र र र १
॥ महावात्सप्रम् ॥ हाउहाउहाउ। औ। होहो

१ १ १ र १ २ १ २
वा। औ। होहोवा। सोमःपवा। तेऽजनि। ताऽ

र र र र र र १र
मतीनाम्। मतीनाम्। मतीनाम्। जनिताद्दायि।

२ १ १ र र र
वोऽजनि। ताऽपृथिव्याः। पृथिव्याः। पृथिव्याः। ज

१र १ १ र २ र र
निताग्नायिः। जनिता। सूऽरियस्या। रियस्या। २।

१र २ १ १ र र
जनितेंद्रा। स्याऽजनि। तोऽनविष्णोः। नविष्णोः। २।

१र र २ १ २ र र र र
ब्रह्मादेवा। नाम्पद। वीःकवीनाम्। कवीनाम्।

र र १ २ १ २ र र
कवीनाम्। ऋषिर्विप्रा। णाम्महि। षोऽमृगाणाम्।

र र र १र २ १ २ र
मृगाणाम्। २। श्येनोगृध्रा। णाꣳस्वधि। तिर्वना

र र र र १ २ १ २र
नाम्। वनानाम्। २। सोमःपवायि। त्राऽमति। एऽ

र र र १र २ १ र
तिरेभन्। तिरेभन्। २। प्रावीविपात्। वाऽचऊ।

१ १ र
मिम्नसिधुः। नसिन्धुः। नसिन्धः। गिरःस्तोमान्।

२ १ र १ र र १
पवमा। नोऽमनीषाः। मनीषाः। २। अन्तःपश्यान्।
२ १ र १ र र र १
वृजने। माऽवराणी। वराणी। २। आतिष्ठतायि।
२ १ १ र र १र
वृषभः। गोऽधुजानन्। धुजानन्। २। हाउ। ३।
१ २ १ २
ओ। होहोवा। २। ओ। हो। होर। वा२३४
५र र २१११११
औहोवा। ई२३४५ (३)॥ १८ * ॥ [१]

२र १ २र १ २
॥ जनित्राद्यम्॥ हाउजनत्। सोमःपवा। ते२
१ २ २ र ५ २ १र २ १ २
जेनि। तामतीनाम्। जनितादायि। वो३जनि। ता
२ ४ ५ २ १र २ १ र २ ३ ४ ५
पृथिव्याः। जनिताग्नायिः। जनिता। सूरियस्या।
२ १ र २ १ २ २ ४
जनितेन्द्रा। स्या३जनि। तो३४३। ता३वा५यिष्णो६५
२ १र र २ १ २ ३ ४ ५ २
इः॥(१) ब्रह्मादेवा। ना३पद। वीःकवीनाम्। ऋ
१ २ १ २ २ ४ ५ २र १र २
षिर्विप्रा। णा३म्महि। षोम्टगाणाम्। श्येनोगृध्रा। णा
१ २ ३ ४ ५ २र १ २ १
३८स्वधि। तिवनानाम्। सोमःपवायि। चा३मति।

---

* ऊ० गा० २प्र० २ख० १९गा० ।

Digitized by Google

२ २ १र १र
आ३४३यि। तो३रा५यिभा६५६न् ॥(२) प्रावोविपात्।
२ १र २ ३ ४५ २१ र २ १ र
वा३ चक्र। मिन्नसिंधूः। गिरस्तोमान्। पवमा।
१ २ ३ ४ ५ २ १ २ १ र २ ३ ४ ५ २र
नोमनोषाः। अन्तःपश्यान्। वृजने। मावराणी। हा
१ २र १ २१ २ २
उजनत्। आतिष्ठतायि। वृषभः। गो३४३। षू३
४
जा५ना६५६न्(३) ॥ १ * ॥ [२]

४र २ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ सोमाऽ५ःप। वा३ता२यिजनि
५ १ र र र र
ता। मतीनाञ्जनितादिवोजनायि। ता३पार्था ३ यि
२ १ १र र र २ १
व्याः। जना२यिताग्नेर्जनि। तासू२३री। जम्भायि।
२ २ १ऽ र र २ २ १
या३स्या। जानितेन्द्रस्यजनितोता२विष्णाउ ॥(१) ब्रह्मो
२ १र र र र र र र र र २
र्भी। ह्मादेवानांपदवीःकवीनामृषिर्विप्राणाम्महायि। षो
१ २ २ १र १ र र र
३मार्ग्गा३णाम्। श्येनो२गृध्राणाᳫस्वधिविवीनाना२३ᳫ
२ १ २ २ १ र ३र २
सो। जम्भायि। मा३ःपा। वायिच्चमत्येता २ यिरेभा

* उ० गा० प्र० २ ख० १ सा०।

१ २ १र र र र र
भान्प्रा। वीविपद्वाचऊर्म्मिं नसिन्धुर्गिररस्तोमान्यवमा।
२ १ २ र १ १ र र र
नो३माना३यिषाः। अन्ता २:पश्यन्वृजनेमाव। राधा
२ १ १ २ १ र र
२३आ। ऊम्मायि। ता३यिष्ठा। तायिवृषभोगोषू२
१र २ १ १ १
जानाउ। वा३४५(३)॥ १० *॥ [३]

१र २ १ २र १ र
॥ श्यावाश्वम्॥ सोमःपवा। तेजनितामता२यि
१ १ र र र १
नाउया२। जनितादिवोजनिताष्टथा२यिव्याउवा२३४।
२ २ २र २ १ र र २ १ १ २र १
जना३४यिताग्नेः। जनितासूरियास्या२। जाबितेन्द्रा।
२ १ ४ ५ ४ ५ १ २र
स्याजनिता२३। तोवा। बा५यिष्णोा६हायि॥(१) ब्रह्मा
र १ २र १ र १ १ र र
दवा। नाम्पदवीःकवा२यिनाउवा२। ऋषिर्विप्राणां
र १ २र २ १ २ १र
महिषोमृगा२णाउवा २ ३ ४। श्येनो३४गृध्रा। णा६स्व
२ १ १ २ १ २ १
धितिर्वनाना२म्। सोमःपवायि। त्यामतिया २ ३ यि।
४ ५ ४ ५ १र २र १ २र १
तोवा। रा५यिभो६हायि॥(२) प्रावीविपात्। वाच

---

* ऊ० गा० २१प्र० १ख० १०सा०।

२　　　　　१　　　　　१　२　२　　२　२
ऊर्म्मिं नसा२यिन्भाउवा२। गिरस्स्तोमान्यवमानोमना
१　　　　　२　२　　२　१　　　१　२　२　१　१
२यिषाउवा२३४। मन्ता३४ःपथ्यान्। वृजनेमावराणा
१　　२　१　　　　२२　१　　　४　५　　४
२यि। आतिष्ठतायि। वार्षभोगो२३। पोवा। जा५
५
नो६हायि (३)॥ १६ *॥ [४] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
षष्ठः खण्डः† ॥ ६ ॥

अथ द्व्यचत्रयात्मके सप्तमे खण्डे‡,
प्रथमद्वचेषु¶—प्रथमा ।

३　१२　३　१　२　१　२　　३　१　२　　३　१　२
अग्निं वोवृधन्तमध्वराणाम्पुरूतमम् ।
२　　३　१　२　१　२
अच्छानप्त्रे सहस्वते ॥ १§ ॥

---

* ऊ० गा० २३प्र० १ख० १९सा० ।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोमीयं साम'—इति वि० ।

‡ 'इडानीमुक्थानि'—इति वि० ।

¶ 'सौरभं ब्रह्मसाम वषिष्ठस्य प्रियतम मच्छावाकसाम'—इति वि० ।

§ छ० आ० १, १, ३, १ (भा० ११७ पृ०) = ऋ० वे० ७, ७, १०, ३ ।

"अध्वराणाम्" अहिंस्यानां बलिनां "नप्त्रे" बन्धुं "सहस्वते" बलवन्तं [विभक्तिव्यत्ययः (३, १, ८५)] "वृधन्तं" ज्वालाभिर्वर्धमानं "पुरुतमम्" अतिशयेन बहुमग्निं हे ऋत्विजः ! "वः" यूयम् "अच्छ" अभिगच्छत । उपसर्गश्रुतेर्योग्यक्रियाध्याहारः ॥१॥

अथ द्वितीया ।

२ १र २र २ १ २ १ १ २ १ २ १ १ २
अयंयथानआभुवत्त्वष्टारूपेवतक्ष्या ।
२ ३उ २ १ १
अस्यक्रत्वायशस्वतः ॥ २* ॥

"अयम्" अग्निः "नः" अस्मान् "तक्ष्या" विकर्त्तव्यानि "रूपेव त्वष्टा" रूपाणि वर्द्धकिरिव "यथा" येन प्रकारेण "आ भुवत्" आ भवति प्राप्नोति, तथैनमग्निमभिगच्छतेत्यर्थः । किञ्च वयम् "अस्य" अग्नेः "क्रत्वा"† प्रज्ञानेन युक्ताः "यशस्वतः" यशस्वन्तो‡ भवामेति शेषः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ १र २ २उ २ २ ३ १ २
अयंविश्वाअभिश्रियोग्निर्देवेषुपत्यते ।
२उ ३ १ २
आवाजैरुपनोगमत् ॥ ३¶ ॥ २०

---

* ऋ० वे० ७, ७, १०, ३ ।

† 'क्रत्वा—तृतीयेयं षष्ठी-स्थाने द्रष्टव्या क्रतोः'—इति वि० ।

‡ 'यशस्वतो यशसा सम्पन्नस्य'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, ७, १०, ४ ।

मनुष्याणां "विश्वाः" सर्वाः "श्रियः" सम्पदः * "देवेषु" देवानां मध्ये यः "अयम् अग्निः"† "अभिगच्छति, सः अग्निः "नः" अस्मानपि "वाजैः" अन्नैः "उपागमत्" उपागच्छतु॥३॥२०

२ र १ २ १
॥ स्वारसैन्धुक्षितम्॥ अग्निर्वोवृधान्ताम्। आध्व

२र र १ २र र २ १ १
राणाम्। पुरुतामौ। होवा३हायि। आच्छा२नाम्न२३।

२ १ ५ ४ ५ २ र र१२
सहोर३४वा। स्वा५तो६हायि॥(१) अयंयथानआभूवात्।

१ र२र र १ २र र २ १ १
त्वाष्टारूपे। वताहायौ। हौवा३हायि। आस्या२स्का

२ १ ५ ४ ५ २
त्वार३। यस्रोर३४वा। स्वा५तो६हायि॥(२) अयंवि

र १ २ २र र १ २र र २
स्वाअभिश्रायाः। आग्निर्द्दवे। षुपात्यातौ। होवा३हा

१ १ २ १ ५ ४ ५
यि। आवा२जायिरु२३। पनो२३४वा। गा५मो६हा

यि (३)॥ २० ‡ ॥ [१]

---

* 'अभिश्रियः—अभिश्रयणमालम्बनं सर्वं। आलम्बनानि'—इति वि०।

† 'अग्निः देवेषु भवति यदा आरविभ्यां पत्यते। पत्यत इति छान्दसः प्रयोगो न दोषः'—इति वि०।

‡ ऊ० गा० १प्र० १ख० २०गा०।

३ २ र
॥ सत्रासाहियम्॥ अग्ना ३ ४ यिम्। वोवृधन्तम्।
५ ५ १ र र र १ १
ओ६वा। अध्वराणाम्पुरुहूता२माम्। आ२च्छा। ना
२ १ ऽ २र ३र २ १ ५ ५
२३प्त्र्। सहौ३हो। वाहा३४३यि। स्वा२३४तो६हा
३ २ र र ५ ५
यि॥(१) अया ३ ४ म्। यथानआभुवत्। ओ६वा।
१ र र र १ १ २ १ ऽ
त्वष्टारूपेवतक्षा२या। आ२स्या। क्रा२३त्वा। यहौ३
२र ३र ६ १ ५ ५ ३ २
३हो। वाहा३४३यि। स्वा२३४तो६हायि॥(२) अया
र ५ ५ १ र र
३ ४म्। विश्वाअभिश्रियः। ओ६वा। अग्निर्देवेषुपत्या
१ २ १ ऽ २र ३र
२तायि। आ२वा। जा२३यिहू। पनौ ३ हो। वा
२ १ ५ ५
हा३४३यि। गा२३४मो६हायि(३)॥ ११ *॥ [२] २०

---

* ऊ० गा० ६प्र० २ख० ११गा०।

अथ द्वितीयखण्डे—प्रथमा ।

२१ २ ३ १ २३ २३१ २ ३ १ २
इममिन्द्रसुतम्पिबज्येष्ठममर्त्त्यम्मदम् ।

३ १ २ ३क २र १ २ ३ २३ १ २
शुक्रस्यत्वाभ्यचरन्धाराऋतस्यसादने ॥ १ * ॥

हे "इन्द्र !" "सुतम्" अभिषुतम् "इमं" सोमं "पिब" कोष्ठ-शम् ? "ज्येष्ठम्" अतिशयेन प्रशस्यं "मदं" मदकरम् "अमर्त्त्यम्" अमारकम् [सोमपान-जन्यो मदो मदान्तरवत् मारको न भवतीत्यर्थः] तथा "ऋतस्य" यज्ञस्य सम्बन्धिनि "सादने" गृहे वर्त्तमानाः "शुक्रस्य" दीप्तस्यास्य सोमस्य "धाराः" "त्वाम्" "अभ्यचरन्" आभिमुख्येन सञ्चलन्ति त्वां प्राप्नुं स्वयमेवा-गच्छन्तीत्यर्थः [ज्येष्ठं—प्रशस्य-शब्दादियसुनि "ज्य च (५,३,६१)"—इति ज्यादेशः । अचरन्—चर सञ्चलने (भ्वा०, प०) छान्दसो लङ् (३, ४, ६) ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ २३ १ २३ २ ३ १ २ ३१ २
नकिष्टद्रथीतरोहरीयदिन्द्रयच्छसे ।

२ ३१ २३ २ ३२ ३ १ २
नकिष्टानुमज्मनानकिःस्वश्वआनशे ॥ २ † ॥

* ऋ० सा० ४, २, १, २ (१ भा० ७०२ पृ०)=ऋ० वे० १, ६, ५, ४ ।
† ऋ० वे० १, ६,६, १ ।

Digitized by Google

हे "इन्द्र!" "यद्" यस्मात् त्वं "हरी"—एतसञ्ज्ञावश्वौ* "यच्छसे" रथे योजयसि, तस्मात् "त्वत्" त्वत्तोऽन्यः कश्चित् "रथीतरः" अतिशयेन रथवान् "नकिः" नास्ति [अन्येषामीदृगश्वयुक्तरथाभावात्]"त्वा" त्वाम् "अनु" लक्ष्य "मज्मना" [बलनामैतत् (निघ० २, ९, २१)] बलेन सदृशोऽपि "न किः" नह्यस्ति "स्वश्वः" शोभनाश्वो "न किः आनशे" न प्राप [इन्द्रस्य बलाश्वयोरसाधारणत्वात् इन्द्रसदृशो बलवान् अश्ववान्] लोके कश्चिदपि नास्तीत्यर्थः [न किष्टत्—"युष्मत्तत्तक्षुष्वन्तः पादम् (८, ३, ११३)"—इति षत्वम्। रथीतरः—अतिशयेन रथी; तरपि "ईद्रथिनः"—इति ईकारान्तादेशः। यच्छसे—यमेर्व्यत्ययेनात्मनेपदम्। स्वश्वः—बहुव्रीहावाद्युदात्तत्वसीत्युत्तर-पदाद्युदात्तत्वं। आनशे—"अश्नोतेश्च (७,४,७२)"—इति अभ्यासादुत्तरस्य नुट्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रायनूनमर्चतोक्थानिचब्रवीतन।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुताअमत्सुरिन्दवोज्येष्ठंनमस्यतासहः॥ ३ †॥२१

* "हरी इन्द्रस्य"—इति नैघण्टुकम् १,१५,१।

† ऋ० वे०,१,६,४,५।

हे ऋत्विजः! "इन्द्राय"* "नूनं" क्षिप्रम्† "अर्चत" पूजनं कुरुत। एतदेव स्पष्टीक्रियते—"उक्थानि" अप्रगीत-मन्त्र-साध्यानि शस्त्राणि स्तोत्राणि च "ब्रवीतन" ब्रूत। "सुताः" अभिषुताः "इन्दवः" सोमाः त्वाम् "अमत्सु" आगत मिन्द्रं मत्तं कुर्वन्तु, अनन्तरं "ज्येष्ठं" प्रशस्यतमं "सहः" सहस्विनं बलवन्तम् तमिन्द्रं नमस्यत नमस्कुरुत [ब्रवीतन—ब्रवीते र्लोटि "तप्तनप्तनथनाश्च (७,१,४५)"—इति तनबादेशः। अमत्सु—मदी हर्षे (भ्वा०,आ०)छान्दसः प्रार्थनायां लुङ्, आगमानुशासनस्या-नित्यत्वादिड़भावः। नमस्यत—"नमोवरिवश्चित्रङः (३,१,१९)"—इति क्यच्। सहः—"युगकारेकाररेफाश्च वक्तव्याः—इति मत्वर्थीयस्य लुक्॥ ३॥ २१

॥ वसिष्ठप्रियम्॥ इममी२३। द्रसुतम्पिब। ज्येष्ठाम्। अमा३र्त्यम्मादा२म्। शुक्रास्यत्वा३। भियार्२क्षा२३४रान्। धाराओ२३४वा। आर्त्ताओ२३४वा। स्सा५दनायि॥(१) नकिष्टू२३। वद्रथीतरः। हारी। यदीइन्द्रायच्छासा२यि। नकायिष्टूवा३। नुमा२ज्मा२३४

* 'इन्द्रायेति चतुर्थी द्वितीयार्थे द्रष्टव्या, इन्द्रम्'—इति वि०।

† 'नूनं निश्चितम्'—इति वि०।

५ १ २ ३ ५ १ २ २ ५ ४
ना। नाकाओ२३४वा। सूवाओ२३४वा। अश्वा५नआ
२ १र ४र ५ ४ ५ २ १२
यि॥(२) इन्द्राया२३। नूनमर्च्च। तोक्था। निचा३ब्रावी१
१ २ १ ३ ५ १
ताना२। सुताअमा३। त्सुरी२न्दा२३४वाः। ज्यायि
२ १ ५ १ २ ३ ५ ४ ४
ष्ठाओ२३४वा। नामाओ२३४वा। स्यता५सहाः। हो
५ई। डा(३)॥ १*॥ [१]

१ २ १ र
॥ आसितायम्॥ इममिन्द्रसुताम्। पिबा। ज्येष्ठम
२ १ १ १
मर्त्तियम्मा२३दाम्। शुक्रा२स्यात्वा२। भियक्षरान्।
१ १ २ १ ५ ४ ३
धारा२आर्त्ता२। स्यसोवा३ओ२३४वा। दा५नोई३हा
१ २ १ १ र २
यि॥(२) नकिष्ट्वाद्रथायि। तरो। हरीयदिद्रयच्छा२३सा
१ १ १ १
यि। नाका२यिष्टूवा२। नुमज्मना। नाका२यिसूवा
१ २ १ ५ ४ ५ १ र
२। अश्वोवा३ओ२३४वा। ना५योई३हायि॥ इन्द्रा
२ र १ र र २ १
यनूनमा। चता। उक्थानिचब्रवीतार३ना। सूता२

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० १खा०।

१ १ १ १
आमा२ । त्वरिन्दवाः । ज्यायिष्ठा२न्नामा२ । स्यतो
२ १ ५ ४ ५
वा३ओ२३४वा । सा५द्दोई३हायि(३) ॥ १७* ॥ [२]

५ ३ २ ४ ५
॥ गौरीवितम् ॥ इमम् । इन्द्रा३ । सुतम्पिबा ।
१र १ २ ४
ज्येष्ठममर्त्त्यिम्मदा२३म् । शूक्रस्यत्वा३१२३ । भियापु क्ष
१ र २ ४ ५ ४ ५
रान् । धाराऋता३१२३ । स्यसोवा । दा५नोई३हायि ॥(१)
५ १ २ ४ र ५ १ र
नकिः । तुवा३त् । रथीतराः । हरीयदिन्द्रयच्छसा
१ २ ४ १
२३यि । नाकिष्टुवा३१२३ । नुमा५ञमना । नाकिस्तुवा
४ ५ ४ ५ ५ र ३ २
३१२३ । स्वयोवा । ना५ओई३हायि ॥(२) इन्द्रा । यनू३ ।
४ ५ १ र १ र २
नमर्चता । उक्थानिब्रवीतना२३ । सूताअमा३१२३ ।
४ १ २ ४ ५ ४
त्सुरी५दवाः । ज्यायिष्ठन्नमा३१२३ । स्यतोवा । सा५
५
ओई३हायि(३) ॥ ३ † ॥ [३] २१

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १७गा० ।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० ३गा० ।

Digitized by Google

अथ तृतीयतृचे*—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
इन्द्रजुषस्वप्रवहायाहिशूरहरिह ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ २उ ३ १ २
पिबासुतस्यमतिर्नमधोश्चकानश्चारुर्मदाय ॥ १ ॥

यानि मया हवींषि दत्तानि तानि "प्र वह" "आ याहि" आगच्छ "शूर" वीर्यवन्! उपसर्गाक्षराणि—"हरिह" [अथवा हरितवर्णा हया यस्य स हरिहयः, तस्य सम्बोधनं क्रियते—हे हरिह! छान्दसो यकारलोपः]"पिबा"† "सुतस्य" सोमस्य उपसर्गाक्षराणि—"मतिर्नमधोश्चकानः", "चारुः" शोभनः "मदाय" भक्षणाय ॥ १ ॥

---

* 'इदानीं चतुर्थेऽहनि षोडशी भवति। तस्य षोडशिनः महान् विचारः इन्द्रश्च इत्यस्य समभवता मित्यारभ्य महान् विचारो निदानकृतेत्युक्तः चतुस्त्रिंशदक्षराणि स्तुता भवन्ति। तमुपसृत्य प्रवहादीनि उपसर्गाक्षराणि निरूप्यन्ते। तथा सति आदिमयाणां पादानां त्रीणि त्रीणि उपसर्गाक्षराणि पादान्तेषु भवन्ति'—इति वि० एवञ्च—

प्रथमर्चि—"प्रवह","हरिह","मतिर्न"—इति नव,
द्वितीयर्चि—"मध्यम","द्विषोन" "स्व२र्ण" इति नव,
तृतीयर्चि—"मित्रोन","यतिर्न","भृगुर्न"—इति नव,

किञ्च प्रथमर्चि चतुर्थपदादौ च "मधो२श्चकान"—इति षट्, तदित्थं सङ्कलनया चतुस्त्रिंशदुपसर्गाक्षराणि सम्पद्यन्ते। अत्र च "स्व२र्ण","मधो२"—इत्युभयत्र विनामस्य द्व्यक्षरत्वेन गणनं बहुविचारेण सम्पादितम् ॥

† "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १२२ ३२१ १२ १ २ ३ २
इन्द्रजठरन्नव्यन्नपृणस्वमधोर्द्दिवोन।

१ २ ३१ २ ३ २   १ २ ३ १ २ १ २ १ २
अस्यसुतस्यस्वा॒ऽ३ऽर्नोपत्वामदाःसुवाचोअस्थुः॥ २ ॥

हे "इन्द्र!" "जठरम्" उदरं "नव्यं न" नवतरं "पृणस्व" पूरयस्व "मधोः" मधुरस्य "दिवो न" "अस्य" सोमस्य "सुतस्य" अभिषुतस्य "स्वर्न" स्वर्गस्येव "उप त्वा" उप समीपे त्वाम् "मदाः" "सुवाचः" शोभनवाचः "अस्थुः" स्थितवन्तः॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २   ३ २   १ २उ   ३ १ २ ३ २उ ३ २
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रोनजघानवृत्रंयतिर्न।

३ १ २ ३ २उ   ३ १ २ ३ २उ   ३ २ ३ १ २
विभेदवलम्भृगुर्नससाहेशत्रून्मदेसोमस्य॥ ३ ॥ २२

"इन्द्रः "तुराषाट्" [तुरि सीदति यः सः तुराषाट्] "मित्रो न" मित्र इव "जघान" "वृत्रं" शत्रुं "यतिर्न"—उपसर्गाश्चराणि "विभेद" भिन्दस्व "वलं" वलोनाम दानवस्तं वलं "भृगुर्न" नीणि नीणि पदान्तेषु उपसर्गाक्षराणि भवन्ति "ससाह" सहितवान् "शत्रून्" "मदे" भक्षणे कृते सोमस्य तथाच निविदापदे विहतस्य षोड़शिनः। अस्य मदे जरित इत्यारभ्य बहूनि वीर्ययुक्तानि कर्माणि* ॥ ३ ॥ २२

* एतत्पृचस्य व्याख्यानं विवरणकृत्कृतानुकृतमेवेति व्याचष्टोर्विशेषः।

५ १ १ ४ ५ १र
॥ गौरीवितम्* ॥ इन्द्र। जुषा३। स्वप्रवहा। आ
र र १ र १ ४
याहिशूरहरिहार२३। पाथिबासुता३१२३। समतिर्न्नो
१ र १ ४ ५ ४ ५
५मधोः। चाकानश्चा३१२३। रुम्मीवा। दा५योहा
५ ३ १ ४ ५ १ र
यि॥(१) इन्द्र। जठा३। रन्नव्यन्ना। पृणस्वमधोर्हि
र १ १ ४ १
वोना२३। आस्यसुता३१२३। स्यस्वर्न्ना५उपा। त्वाम
र १ ४र ५ ४ ५ ५
दाःसू३१२३। वाचोवा। आ५स्योहायि॥(२) इन्द्रः।
३ १ ४र ५र १ र १
तुरा३। षाणिमन्नोना। जघानवृत्रंयतिर्न्ना२३। बायि
र १ ४ १ र १ ४र
भेदवा३१२३। लंभृगुर्न्ना५ससा। छेशत्रून्मा३१२३। दे
५ ४ ५
सोवा। मा५स्योईहायि(३) ॥ २ † ॥ [१] २२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥

---

* "गौरीवीतम्"—इति ख० पु० पाठः।

† ऊ० गा० ३प्र० १ख० २सा०।

Digitized by Google

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ५ ॥

॥ इति तृतीयस्यार्द्धः-प्रपाठकः* ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे पञ्चमोऽध्यायः ॥

---

* 'इति तृतीय-प्रपाठकस्य पञ्चमार्द्धः । चतुर्थमन्त्रः परिसमाप्तः'—इति वि० ।

Digitized by Google

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्म्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम्॥ ६ ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्याय आरभ्यते* ॥

तत्र,

गोवित्पवस्वेति प्रथमे खण्डे—

प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
गोवित्पवस्ववसुविद्धिरण्यवि
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
द्रेतोधाइन्दोभुवनेष्वर्पितः।
२ ३ १ २ ३ २उ
त्वꣳसुवीरोअसिसोमविश्ववित्त-
३ २३ १ २ ३ १र २र
न्त्वानरउपगिरेमआसते ॥ १ † ॥

हे "इन्दो" सोम ! त्वं "पवस्व" क्षर‡। कीदृशस्त्वं ? "गोवित्"¶ गवां लम्भकः, "वसुवित्"§ धनस्य लम्भकः, "हिरण्य-

---

* 'इदानीं षष्ठमध्यायमुच्यते'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७,२,१९,४।

‡ 'पवस्व पूयस्व'—इति वि०।

¶ 'गोवित्—गावो यस्य विद्यन्ते स गोवित्'—इति वि०।

§ 'वसुवित्—वसु धनं तेन तद्वान्'—इति वि०।

Digitized by Google

वित्'* हिरण्यस्य लम्भकः, "रेतोधाः" रेत उदकं तस्य धातौषधीनां यद्वा रेतः प्रजनन-सामर्थ्यं तस्य धारयिता "भुवनेषु" उदकेषु "अर्पितः"; भो सोम! कीदृशस्त्वं? "सुवीरोऽसि"† शोभनवीर्योऽसि भवसीति, "विश्ववित्" सर्वस्य वेत्तासि। यस्मादेवं तस्मात् तादृशं "त्वा" त्वाम् "इमे" "नरः"‡ नेतारः "गिरा" स्तुत्या "उपासते"¶॥

"नरः"-विप्राः"—"इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ १ २
त्वन्नृचक्षाअसिसोमविश्वतः

१ २ ३ १र २र
पवमानवृषभताविधावसि।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
सनःपवस्ववसुमद्धिरण्यवद्वयꣳ

२ ३ १ २ ३ १ २
स्यामभुवनेषुजीवसे॥ २ §॥

---

* 'हिरण्यवित्--हिरण्यविशिष्टं वसु'—इति वि०।

† 'सुवीरः—शोभनवीरः'—इति वि०।

‡ 'नरः—ऋत्विजः'—इति वि०।

¶ 'उपासते—उप समीपे स्थित्वा आसते, समीपे उपविश्य गिरा स्तुतिलक्षणया वाचा इमे आसते स्तुतिं कुर्वाणाः'--इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, १८, ४,।

Digitized by Google

भो "सोम!" त्वं "विश्वतः" सर्वतः सर्वेषु "भुवनेषु"* "नृचक्षाः† असि" नृणां द्रष्टा भवसि। हे "पवमान" पुनान सोम! "वृषभ" अपां वर्षक! "वाः" अपः "वि धावसि" विविधं गच्छसि, स त्वं "नः"‡ अस्माकं "पवस्व" क्षर किञ्च "वसुमत्" बहुभिर्वसुभिर्वासकैर्गवादि-द्रव्यैर्युक्तं, तथा "हिरण्यवत्" बहुभिः हिरण्यैर्युक्तं धनं। वयञ्च वसुभिर्हिरण्यैश्च युक्ताः "भुवनेषु" लोकेषु "जीवसे" जीवितुं प्रभवः "स्याम" भवेम॥ २॥

अथ तृतीया।

३ २ ३ १र २र ३ १ २
ईशानइमाभुवनानिईयस

३ १२ ३ १२३ १ २र
युजानइन्दोहरितःसुपर्ण्यः॥

१ २ ३ १२ ३ २उ ३
तास्तेक्षरन्तुमधुमद्घृतम्पय

१२३१२ ३१२
स्तवव्रतेसोमतिष्ठन्तुकृष्टयः॥ ३ ¶॥ १

हे "इन्दो" सोम! "ईशानः" सर्वस्य स्वामी त्वम् "इमा" इमानि "भुवनानि"§ भूतजातानि "ईयसे" गच्छसि [ईङ्

---

* 'भुवनेषु—भुवनानि चतुर्दश'—इति वि०।

† 'नृचक्षाः—नृणां चक्षुभूतः'—इति वि०।

‡ 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ७, ३, १९, २।

§ 'भुवनानि—चतुर्दश—इति वि०।

Digitized by Google

गतौ (दि० प्रा०), "दिवादिभ्यः श्यन् (३,१,६९)"—इति श्यन्]। किङ्कुर्वन्? "हरितः" हरितवर्णाः "सुपर्ण्यः" सुपतमानाश्वा रथे "युजानः" योजयन्, "ताः" सुपर्ण्यः "ते" तव सम्बन्धिन्यः "मधुमत्" माधुर्योपेतं "घृतं" दीप्तं "पयः" उदकं "चरन्तु"। हे सोम! तव "व्रते" कर्मणि तिष्ठन्तु "कृष्टयः"* मनुष्याः सर्वे॥

"ईयसे"-"वीयसे"—इति पाठौ॥ ३॥ १

॥ द्विरभ्यस्तं तौम्रोत्तरम॥ गोवित्पवस्ववसुविद्धिर। ण्यवायित्। ण्यवा२३४५यित्। रेतो३१२३४। धाइन्दो भुवनेष। पिताःपिताः। तुवा३१२३४म्। सुवीरोअसि सोमवि। श्ववायिश्वावायित्। तन्वा३१२३४। नरउप गिरे। मश्रा३सा५ता६५६यि॥(१) त्वनृचक्षाअसिसो मवि। श्वताः। श्वता२३४५ः। पवा३१२३४। मानवृष भताविधा। वसायिवसायि। सना३१२३४ः। पवस्वव सुमद्धिर। ण्यवाण्यवात्। वया३१२३४म्। स्यामभुवने। षुजा३यिवा५सा६५६यि॥(२) ईशानइमाभुवनानिई।

* 'कृष्टयः—कवयः पण्डिताः मेधाविनः'—इति वि०।

१ २ १ १ १ १ १ १ २ २ १
यसायि। यसा२३४५यि। युजा३१२३४। नइन्दोहरितः

१ २ १ २ २र २ २
सुप। प्रियाप्रियाः। तास्ता२१२३४यि। चरन्तु मधु

१ २ १ २ १ २ १ २ र
मत्तम्। पयाःपयाः। नवा३१२३४। व्रतेसोमतिष्ठ।

१ २ ४
तुका३ई५या६५६ः(३) ॥ ७ * ॥ [१]

२र १ २ १ २ १ २
॥ श्येनम् ॥ गोवित्पवस्ववसुवायित्। हा२३यिरा।

१ १र १ २र ३ १ र १ र
ण्याविद्रे तो३चाउवा२३। धाइया। दोभुवनेषुवार्पायि

२ १ ५ २ १ र २ २र १
ताः। त्व०सौ३हो। वायिरोचसा३१उवा२३। सोम

२ १ २ १ ५ २ १ र १
पा। विश्ववित्तन्वाना१रा२ः। उयौ३हो। गायिरेम

२ २ २२ १ २ १ र २
स्त्रा३१उवा२३। ए३। सतथा३२ ॥(१) त्वन्नृचक्षाअसि

१ २ १ २ २र २ २
सो। मा२३वायि। स्वातःपवा३१उवा२३। मानथा।

१र ५ २ १ ५ २ १ २
वृषभताविधावासायि। सनौ३हो। पावस्वा३१उवा

२ ३ २ १ २ १ ५ २
२३। सुमदा। हिरण्यवदया०स्या१मा२। भवौ३हो।

---

* ऊ० गा० ८प्र० २ख० ७गा०।

१　२　　२　२२१　　१र २ १ २ १र
नायिषुजा३१उवा२३। ए३। वसवा३२॥(२) ईशानइमा

२१　२　१ र २　　१र २ २
भुवना। ना२३ई। यासेयुजा३१उवा२३। नाइया।

र १　२　१र ऽ ऽ　१　२
दोहरितःसुपार्णयाः। तास्तौ३हो। चारन्तुमा३१उवा

२ २ १　१　२　१र ऽ २
२३। धूमदा। घृतम्पयस्तवाब्रा१ता२यि। सोमौ३हो।

१　२　२　२२१
मायिष्ठन्तुवा३१उवा२३। ए३। छयवा३२(३)॥१८७॥ [२]१

अथ द्वितीयर्चे—

प्रथमा।

१ २　　२ १ २ १ २
पवमानस्यविश्वविद्प्रतेसर्गाअसृक्षत।

१ २　२ १ २ १ २
सूर्यस्येवनरश्मयः॥ १ †॥

हे "विश्ववित्" विश्वस्य द्रष्टः सोम! "पवमानस्य" क्षरतः "ते" तव "सर्गाः"‡ सृज्यमाना धाराः "सूर्यस्येव रश्मयः" सूर्यस्य किरणा इव प्रकाशमानाः "न"—इति सम्प्रत्यर्थे। इदानीं "प्रासृक्षत" प्रासृज्यन्त॥ १॥

* ऊ० गा० १३प्र० १ख० १८गा०।

† ऋ० वे० ७, १, २७, १।

‡ 'सर्गाः—स्रष्टवः उदकसङ्घाताः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ २ १ २ १ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

केतुङ्कृण्वन्दिवस्परिविश्वारूपाभ्यर्षसि।

३ १ २

समुद्रःसोमपिन्वसे॥ २ *॥

हे "सोम!" "समुद्रः"† समुद् द्रवन्ति यस्माद्रसाः स समुद्रः स त्वं "केतुं"‡ प्रज्ञानं "कृण्वन्" कुर्वन् अस्माकं "विश्वा रूपा" विश्वानि रूपाणि "दिवः"¶ अन्तरिक्षात् "अभ्यर्षसि"§ अभि पवसे "पिन्वसे" नानाविधानि च धनानि अस्मभ्यं प्रयच्छसि॥२॥

अथ तृतीया।

३ १२ ३२ ३१२ ३ १ २

जज्ञानोवाचमिष्यसिपवमानविधर्मणि।

१ २ ३ १२ ३२

क्रन्दन्देवोनसूर्यः॥ ३ ||॥ २

हे "पवमान" सोम! "देवः न सूर्यः" द्योतमानः सूर्य इव "जज्ञानः" प्रादुर्भूतस्त्वं "विधर्मणि" विधारके** दशापवित्रे "क्रन्दन्" ध्वनन् "वाचम्" शब्दम् "इष्यसि" प्रेरयसि॥

---

* ऋ० वे० ७, १, २७, २।

† 'समुद्रः—समुद्रभूतस्त्वम्'—इति वि०।

‡ 'केतुध्वजः तम्'—इति वि०।

¶ 'दिवस्परि—द्युलोकस्योपरि—इति वि०।

§ 'अभ्यर्षसि—आभिमुख्येन रक्षसि'—इति वि०।

|| ऋ० वे० ७, १, २७, ४।

** 'विधर्मणि—विविधे कर्मणि'—इति वि०।

Digitized by Google

"जग्मान:"-"हिन्वान:' —इति पाठौ,"क्रन्दन्""अक्रान्"—इति च ॥ ३ ॥ २

प्रसोमासइति समर्च्चं तृतीयं सूक्तम्;

तत्र, प्रथमा।

१र २र ३ १ २ ३ १ २
प्रसोमासोअधन्विषुःपवमानासइन्दवः।
१ २ ३ १ २
श्रीणानाअप्सुवृञ्जते ॥ १ * ॥

"पवमानासः" पूयमानाः "इन्दवः" दीप्ताः "सोमासः" सोमाः "प्राधन्विषुः" [धन्वति गतिकर्मा (निघ० २,१४,६४)] प्रगच्छन्ति किञ्च "श्रीणानाः"† गोभिः श्रयमाणाः "अप्सु" वसतीवरीषु‡ "वृजन्ते" गच्छन्ति [व्रज व्रजी गतौ (भ्वा०,प०)] सम्पृक्ता भवन्तीत्यर्थः॥

"वृजन्ते"-"मृजन्त"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १र २र ३ १ ३ १ ३ १ १ २ ३ २
अभिगावोअधन्विषुरापोनप्रवतायतीः।
३ १र २र
पुनानाइन्द्रमाशत ॥ २ ¶ ॥

* ऋ० वे० ६, ८, १४, १।

† 'श्रीणाना:—श्रीणनं मिश्रणं, मिश्रयमाणाः'—इति वि०।

‡ 'अप्सु—सप्तम्या बहुवचनमिदं तृतीया-बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, अद्भिः—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, ८, १४, २।

"गावः" गमनशीलाः* "इन्दवः" सोमाः "अभि अधन्विषुः" दशापवित्रमभिगच्छन्ति । किमिव ? "प्रवता" प्रवणवता देशेन "यतीः" गच्छन्त्यः "आपः नः" आपइव †, पश्चात् "पुनाना" "इन्द्रं" प्रणीयितुम् आशत व्याप्नुवन् ॥२॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १२ ३२ ३ १ २
प्रपवमानधन्वसिसोमेन्द्रायमादनः ।
१ २३ १२ ३२
नृभिर्यतोविनीयसे ॥ ३‡ ॥

हे "पवमान" सोम ! "इन्द्राय" इन्द्रस्य "मादनः" मादयिता त्वं "प्रधन्वसि" प्रगच्छसि पवित्रम् । तदेवाह—"नृभिः" नेतृभिः ऋत्विग्भिः "यतः" गृहीतः¶ "विनीयसे"§ हविर्धानात्‖ ॥

"मादनः--"पातवे"—इति पाठो ॥३॥

---

* 'गावः—आदित्यरश्मयः उदकानि सोमरसा गावश्च'—इति वि० ।

† 'आपोन—न-शब्द उपमार्थीयः आपइव "प्रवता यतीः" यथा प्रवणेन आपो गच्छन्ति तद्वत् सोमेन अभिपूयमानेन गावो धन-धान्य-देवताय प्रवणा भवन्ति, अतएव पुनाना इन्द्रमाशत'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ९, ८, १४, २ ।

¶ 'यतः—नियतः संयत इति यावत्, अथवा यमु बन्धने ऋत्विग्भिर्बद्धः सोमबन्धनेन'—इति वि० ।

§ 'विनीयसे—विविधं नीयसे'—इति वि० ।

‖ 'अथवा पवमान प्रधन्वसि पात्रं प्रतीन्द्रपानाय तदर्थं हविर्धानात् विनीयसे'—इति अस्मद्देशीयव्याख्या ।

अथ चतुर्थी ।

२ ३ १२ ३१२ २ ३ ३१२ ३ १ २

इन्दोयदद्रिभिःसुतःपवित्रम्परिदीयसे ।

३ २ ३ २३ ३ १ २

अरमिन्द्रस्यधाम्ने ॥ ४ * ॥

हे "इन्दो" त्वं "यद्" यदा "अद्रिभिः" ग्रावभिः "सुतः" अभिषुतः "पवित्रं" दशापवित्रं † "परिदीयसे" परिगच्छसीत्यर्थः । तदा "इन्द्रस्य" "धाम्ने" स्थानाय धारकायोदराय वा "अरं" पर्याप्तोऽसि ॥

"परिदीयसे"--"परिधावसि"—इति पाठो ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी ।

१ २ ३१ २ ३ १२ ३ १ २

त्वꣳसोमनृमादनःपवस्वचर्षणीधृतिः ।

२ ३ १ २ ३ १ २

सस्निर्योअनुमाद्यः ॥ ५ ‡ ॥

हे "सोम !" "नृमादनः नृणां मादयिता "चर्षणीधृतिः" चर्षणीभिः ऋत्विग्भिः प्रजाभिः धृतस्त्वं "पवस्व" । "यः" त्वं "सस्निः" शुद्धः "अनुमाद्यः" स्तुत्यः ¶ स पवस्वेति समन्वयः ॥

"चर्षणीधृतिः"-"चर्षणीसहे"—इति पाठो ॥ ५ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ८, १४, ४ ।

† 'पवित्रं परिदीयसे—द्वितीयैकवचनमिदं षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् पवित्रस्योपरि दीयसे'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १४, ५ ।

¶ 'अनुमाद्यः—यस्य पश्चात् देवता माद्यन्ति स अनुमाद्यः'—इति वि० ।

अथ षष्ठी।

१ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २
पवस्ववृत्रहन्तमउक्थेभिरनुमाद्यः।
१ २ ३ १ २ ३ २
शुचिःपावकोअद्भुतः॥ ६* ॥

हे सोम! "वृत्रहन्तमः" शत्रूणामतिशयेन हन्ता त्वं "पवस्व" चर। कीदृशस्त्वम्? "उक्थेभिः" शस्त्रैः "अनुमाद्यः" स्तुत्यः "शुचिः" शुद्धः† "पावकः" अन्यस्य शोधकः‡ "अद्भुतः" महान्¶, एवं महानुभावः पवस्व॥

"वृत्रहन्तमः"-"वृत्रहन्तम"—इति पाठौ॥ ६॥

अथ सप्तमी।

१ २ २ १ २ २ १ २ ३ १ २ २
शुचिःपावकउच्यतेसोमःसुतःसमधुमान्।
२ १ २ ३ २
देवावीरघशꣳसहा॥ ७§ ॥ ३

"सुतः" अभिषुतः "मधुमान्" माधुर्योपेतः "सः" सोमः "शुचिः" स्वयं शुद्धः "पावकः" शोधकश्च उच्यते तथा "देवावीः" देवाना-

---

* ऋ० वे० ६, ८, १४, ६।

† 'शुचिः—दीप्तः'—इति वि०।

‡ 'पावकः—पावन स्वभावः'—इति वि०।

¶ 'अद्भुतः—अपूर्वः नाम्नो द्वितीयः'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ६ ८, १४, ७।

मविता तर्पयिता* "अघसंसहा" अघं पापं शंसतीत्यघशंसा असुरास्तेषां हन्तेति चोच्यते ॥

"सुतःसमधुमान्"-"सुतस्समध्वः"—इति पाठौ ॥ ७ ॥ ३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय-खण्डे—

प्रकविरिति समर्चं प्रथमं सूक्तम्;

तत्र, प्रथमा।

१२ २३१२ ३१२ ३ १ २
प्रकविर्देववीतयेऽव्यावारेभिरव्यत।

२ १ ३२ ३१२ ३२
साह्वान्विश्वाअभिस्पृधः ॥ १ † ॥

"कविः" मेधावी सोमः "देववीतये" देवानां पानाय "अव्यावारेभिः" अविसम्बन्धिभिः वालैः दशापवित्रेण "अव्यत" अव्यते प्राप्यते, "साह्वान्" अभिभवितां साढा‡ सोमः "विश्वाः स्पृधः" सर्वान् सङ्ग्रामान् हिंसकान् वा अभिभवतीति शेषः ॥

"अव्यावारेभिरव्यत"-"अव्योवारेभिरर्षति"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'देवावीः—देवानां अवनभूतः'—इति वि०।

† ऋ० वे० ६, ८, १०, २।

‡ 'साह्वान्—साधन-स्वभावः'—इति वि०।

अथ द्वितीया ।

१२ १२ ३ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
सहिष्माजरितृभ्यआवाजङ्गोमन्तमिन्वति ।
१ २ ३ १ २
पवमानःसहस्रिणम् ॥ २ * ॥

"स हि ष्मा" स खलु "पवमानः" सोमः "जरितृभ्यः" स्तोतृभ्यः "गोमन्तं" "बहुभिर्गोभिर्युक्तं" "सहस्रिणं" सहस्र-सङ्ख्याकं "वाजम्" अन्नम् "आ" आभिमुख्येन "इन्वति" व्याप्नोति प्रयच्छतीत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
परिविश्वानिचेतसामृज्यसेपवसेमती ।
१ २ ३ १ २
सनःसोमश्रवोविदः ॥ ३ ‡ ॥

हे "सोम !" त्वं "चेतसा" त्वदीयेनास्मदनुकूलेन चित्तेन "विश्वानि" सर्वाणि धनानि "मती" मत्या अस्मत्स्तुत्या "मृज्यसे" दशापवित्रेण शोध्यसे । ततः "पवसे" रसं क्षरसि ।

* ऋ० वे० ६, ८, १०, २ ।

† 'सहस्रिणं—सहस्र-पोषण-समर्थम्'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १०, ३ ।

Digitized by Google

एवम्भूतः "सः" त्वं "नः" अस्मभ्यं "श्रवः" अन्नं* "विदः"† देहीति शेषः॥

"मृज्यसे"-"मृशसे"—इति पाठौ॥ ३॥

अथ चतुर्थी।

३क २र ३ १ २   २र ३ १ २   ३ १ ३ २

अभ्यर्षबृहद्यशोमघवद्भ्योध्रुवꣳरयिम्।

१ २ ३   २ ३ १ २

इषꣳस्तोतृभ्यआभर॥ ४ ‡॥

हे "सोम!" त्वं "बृहद् यशः" महतीं कीर्त्तिम् "अभ्यर्ष" अभिगमय, "मघवद्भ्यः" हविष्मद्भ्यः¶ अस्मभ्यं "ध्रुवं"§ रयिं "धनं" च अभ्यर्ष। किञ्च "इषम्" अन्नं|| "स्तोतृभ्यः" अस्मभ्यम्** "आभर" आहर॥ ४॥

अथ पञ्चमी।

१   ३र   ३ १र   २र १ १   २

त्वꣳराजेवसुव्रतोगिरःसोमाविवेशिथ।

३ १ २

पुनानोवह्नेअद्भुत॥ ५ ††॥

---

* 'श्रवः—अन्नं यशो वा'—इति वि०।

† 'विदः—विद ज्ञाने, विद्लृ लाभे, विद सत्तायाम्। अन्नलाभकरः'-इति वि०।

‡ ऋ० वे० ९, ८, १०, ४।

¶ 'मघवद्भ्यो यजमानेभ्यः—इति वि०।

§ 'ध्रुवं स्थिरं'—इति वि०।

|| 'इषम् अन्नं इष्टिं वा'—इति वि०।

** 'स्तोतृभ्यः यजमानेभ्यः'—इति वि०।   †† ऋ० वे० ९, ८, १०, ५।

Digitized by Google

हे "वक्के" यज्ञादेर्वोढः! "अद्भुत!"* "सोम!" "सुव्रतः" सुकर्मा "पुनानः" त्वं "राजा इव" "गिरः" अस्मदीयाः "स्तुतीः "आविवेशिथ" आविशसि ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी।

१र २र१ २ २१२ ३ १ २ ३ १ २
सवह्निरप्सुदुष्टरोमृज्यमानोगभस्त्योः।

१ २ ३१२
सोमश्चमूषुसीदति ॥ ६ † ॥

"सः" सोमः "वह्निः" यज्ञादेर्वोढा "अप्सु" अन्तरिक्षे वर्त्तमानः "दुष्टरः" दुःखेन अन्यैस्तरणीयः "मृज्यमानः" शोध्यमानः "गभस्त्योः" हस्तयोः‡ एवम्भूतः सन् "चमूषु" पात्रेषु "सीदति"¶ ॥ ६ ॥

अथ सप्तमी।

३ २ ३ १र १र ३ २ ३ १ २
क्रीडुर्मखोनमꣳहयुःपवित्रꣳसोमगच्छसि।

१ २ ३ २ ३ १ २
दधत्स्तोत्रे सुवीर्य्यम् ॥ ७ § ॥ ४

* 'अद्भुतमभूतपूर्वं'—इति वि०।

† ऋ० वे० ६, ८, १०, ६।

‡ 'गभस्त्योः—बाह्वोः'—इति वि०।

¶ 'चमूषु सीदति—भक्षणीयेषु तिष्ठति'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ६, ८, १०, ७।

Digitized by Google

हे "सोम!" "क्रीडुः" क्रीडन-शीलस्त्वं "मंहयुः"* [मंहति-दानकर्मा (निघ० ३,२०,१०) दानेच्छुः "मखो न" दानमिव "पवित्र" "गच्छसि"। किं कुर्वन्? "स्तोत्रे" स्तुतिकर्त्रे "सुवीर्य" शोभन-वीर्यं "दधत्" प्रयच्छन् ॥ ७॥ ४

अथ यवंयवमिति चतुर्ऋचं द्वितीयं सूक्तं;

तत्र, प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

यवंयवन्नोअन्धसापुष्टम्पुष्टम्परिस्रव।

१ २ ३ १ २

विश्वाचसोमसौभगा ॥ १† ॥

हे "सोम"! त्वं "नः" अस्मभ्यम् "पुष्टंपुष्टम्"‡ अत्यन्तं बहुलं "यवंयवं"¶ पुनःपुनर्घृतं रसम् "अन्धसा" अन्नरूपया धारया "परिस्रव" क्षर [तत्र प्रार्थयितुस्तृष्णयात्यन्तं पीड़ितत्वात् "आबाधे च (८,१,१०)"—इति द्विर्भावः। आबाधनमाबाधः पीड़ा प्रयोक्तृधर्मो नाभिधेयधर्म इत्युक्तम्]। अपिच "विश्वा" विश्वानि "सौभगा"§ सौभगानि धनानि परिस्रव अस्मभ्यं प्रयच्छेत्यर्थः॥ १॥

---

* 'मंहयुः—पूजेयुः अथवा मंहयुः पूजाकारः'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १, ११, १।

‡ 'परिस्रवसामान्या पुष्टिः धनधान्यादिना वर्द्धमानिका पुष्टि र्धनमित्यादिका'—इति वि०।

¶ 'यवं—अभ्यासे भूयामर्थः प्रतीयते। यवं धान्यविशेषं यवपुरोडाशेभ्यो वे गु-भूतम्'—इति वि०

§ "सुपांसुलुक् (७, १, ३९)"—इत्याले रूपम्।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ २ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १२ १२
इन्दोयथातवस्तवोयथातेजातमन्धसः।
२ १ १ २ ३ १ २
निबर्हिषिप्रियेसदः॥ २* ॥

हे "इन्दो" सोम! "अन्धसः" अन्नरूपस्य "तव" सम्बन्धी "स्तवः" स्तवनं स्तोत्रं† तथा "ते" तव "यथा जातं" यथा प्रादुर्भूतमस्ति, तथा त्वं "प्रिये" प्रीणयितरि "बर्हिषि" अस्मद्यज्ञे "नि सदः"‡ निषण्णो भव॥ २॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २ ३ १२ २२ ३ १ २
उतनोगोविदश्ववित्पवस्वसोमान्धसा।
३ १ २ ३ १ २
मक्षूतमेभिरहभिः॥ ३¶ ॥

"उत" अपि च हे "सोम!" "नः"§ अस्माकं "गोवित्" गोप्रदः॥ "अश्ववित्" अश्वप्रदश्च त्वं** "मक्षुतमेभिः" मक्षुतमै अतिशयेन शीघ्रैः "अहभिः" अहोभिर्हेतुभिः "अन्धसा पवस्व" अन्नरूपया धारया क्षर॥ ३॥

* 'तव स्तवः क्रियते स्तोत्र-प्रकारात्मकः'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १, १२, २।

‡ 'नि—नितराम्'—इति वि०।

¶ 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि०

§ ऋ० वे० ७, १, १२, ३।

|| 'गोवित्—गोमान्'—इति वि०

** 'अश्ववित्—अश्ववान्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ चतुर्थी ।

२ ३ २ ३ १र २र३ २ १ २ ३ १ २
योजिनातिनजीयतेहन्तिशत्रुमभीत्य ।
१ २
सपवस्वसहस्रजित् ॥ ४ * ॥ ५

हे "सहस्रजित्" असङ्ख्यात-शत्रूणां जेतः ! † सोम ! "यः" भवान् "जिनाति" शत्रून् जयति स्वयं शत्रुभिः "न जीयते"। प्रकारान्तरेण तदेवाह—"शत्रुमभीत्य" स्वयमेव शत्रुमागत्य "हन्ति" किन्तु तेन न हन्यते इति शेषः। एवम्भूतः स त्वं धारया चर ॥ ४ ॥ ५

अथ तृचात्मके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ १र २र ३ २ १
यास्तेधारामधुश्चुतोऽसृग्रमिन्दऊतये ।
१ २ ३ २ ३ १ २
ताभिःपवित्रमासदः ॥ १ ‡ ॥

भो "इन्दो" सोम ! "ते" तव "मधुश्चुतः" मधुर-रसस्य श्चोतयित्र्यः "याः" "धाराः" "ऊतये" रक्षणाय "असृग्रं" सृज्यन्ते "ताभिः" धाराभिः त्वं "पवित्रम्"¶ "आसदः" आसीद ॥ १ ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, १२, ४ ।

† 'स पवस्व सहस्रजित् सहस्राणां जेता'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, २५, १ ।

¶ 'पवित्रं'—इमापवित्रम्'—इति वि० ।

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २

सोअर्षेन्द्रायपीतयेतिरोवाराण्यव्यया।

१ २ ३ २ ३ १ ३ २

सीदन्नृतस्ययोनिमा॥ २ *॥

हे सोम! "सः" अभिषुतः त्वम् "अव्यया" अविमयानि "वाराणि" वालानि "तिरः" तिरस्कुर्वन् "ऋतस्य" यज्ञस्य "योनिं" कारणभूतं दशापवित्रम् "आसीदन्" आभिमुख्येन उपविशन् "इन्द्राय" इन्द्रस्य "पीतये" पानाय "अर्ष" चर॥

"ऋतस्ययोनिमासीदन्"-"योनावनेषु"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

त्वꣳसोमपरिस्रवस्वादिष्ठोअङ्गिरोभ्यः।

३ २१ १र २र

वरिवोविद्घृतम्पयः॥ ३ †॥ ६

हे "सोम!" "स्वादिष्ठः" स्वादुतमः "वरिवोवित्"‡ अस्म-दभिलषितस्य धनस्य लम्भकश्च त्वम् "अङ्गिरोभ्यः" अङ्गिरसा-

---

* ऋ० वे० ७, १, २५, २।

† ऋ० वे० ७, १, २५, ४।

‡ 'वरिवोवित्—वरिवः=वरिष्ठः, वित्=भवः'—इति वि०।

मर्थाय* "घृतं" दीप्तं† "पयः" क्षीरवत् सारभूतं रसं "परिस्रव" परिक्षर ॥

"त्वं सोम"-"त्वमिन्दो" —इति पाठौ ॥ ३ ॥ ६ ॥

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य
द्वितीयः खण्डः‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीय-खण्डे¶—

प्रथम-तृचे, प्रथमा ।

१ २ १ २ ३क २र ३ २ ३
तवश्रियोवर्ष्यस्येवविद्युतो

१र २ ३ १ २ ३ १ २
ग्ने श्चिकित्रउषसामिवेतयः ।

१र २र ३ १ २ ३ १ २ ३
यदोषधीरभिसृष्टोवनानिच

१ २ ३ १ २ ३ १र ३र २ १ २
परिस्वयश्चिनुषेअन्नमासनि ॥ १ §॥

"अग्नेः" अङ्गनादि-गुण-युक्तस्य "तव" "श्रियः" रश्मि-लक्षणा विभूतयः "चिकित्रे" प्रज्ञायन्ते । तत्र दृष्टान्तः—"वर्षस्येव॥

---

* 'अङ्गिरोभ्यः—अङ्गिरो नाम देवास्तेभ्योऽर्थे'—इति वि० ।

† "घृतमाज्यम्"—इति क्रमं दीयव्याख्या ।

‡ 'उक्तं वक्ष्यमाणं । चित्रवं सौमिकञ्च तत् । पवमानः'—इति वि० ।

¶ 'इदानीमाग्न्यानि; आग्नेयमग्रममाज्यम्'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ८, ४, २०, ५ ।

॥ मूले तु "वर्षस्येव ,, —इति ष-वकारः श्रूयते ।

विद्युतः” यथा वर्षितुर्मेघस्य सम्बन्धिन्यो विद्युतः, “उषसामिवेतयः” यथा चोषसाम् ‘एतयः’ गमनशीलाः श्यामाः प्रकाशाः प्रशायन्ते, तद्वदित्यर्थः। कदेत्यचाह—“यद्” “यदा” त्वम् “श्रोषधीः” व्रीहियवाद्याः “वनानि” श्ररण्यानि च श्रभिसृष्टो सृष्टः दग्धुं विसृष्टः सन् “स्वयम्” श्रात्मना “श्रासन्” श्रास्ये मुखे “श्रन्नम्”श्रदनीयं स्थावर-लक्षणं“परि चिनुषे”परिक्षिपसीत्यर्थः॥

“विद्युतोऽग्ने:”-“विद्युतश्चित्रा”—इति, “उषसामकेतवः”-“उषसामिवेतयः”—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १उ २ १ २
वातोपजूतइषितोवशाँ२अनु

३ १उ ३ १ २ ३ १ २
तृषुयदन्नावेविषद्वितिष्ठसे।

१ २ ३ २ २ ३ २ १
श्रातेयतन्तेरथ्यो२३यथापृथक्

१ २ ३ १ २ ३ १ २
शर्द्धाँ२स्यग्ने अजरस्यधक्षतः॥ २* ॥

हे “अग्ने!” त्वं “यद्”यदा “वातोपजूतः” वायुना कम्पितः† “वशान्” कान्तान् वनस्पतीन् ‘अनु” प्रति “तृषु” क्षिप्रम्

---

* ऋ० वे० ८, ४, २१, २।

† ‘वातोपजूतः—वातयुक्तः’—इति वि०।

"इषितः" प्रेषितश्च* सन् "अन्ना" अन्नानि अदनीयानि वनस्पत्यादीनि स्थावराणि "वेविषत्" व्याप्नुवन् "वितिष्ठसे" इतस्ततो गच्छति; तदानीम् "अजरस्य" जरा-रहितस्य "धक्षतः" दहतः "ते" तव "अर्चींषि"† तेजांसि "यथा" "रथ्यः" रथिनः तद्वत् "आ पृथक्" पृथगायन्त गच्छन्ति ॥

"अजरस्य"-"अजराणि"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ १ २ १ २ ३ १ २
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधन
३ १र २र ३ १ २ ३ १
मग्निꣳ होतारं परिभूतरं मतिम्।
१र २र ३ १ २ ३ २उ
त्वामर्भस्य हविषः समानमित्त्वां
३ १ २ ३ २
महोवृणते नान्यन्त्वत्॥ ३‡ ॥ ७

"मेधाकारं" प्रज्ञायाः कर्त्तारं "विदथस्य" यज्ञस्य "प्रसाधनम्" प्रकर्षेण साधकं "होतारं" देवानामाह्वातारं "परिभूतरम्" अतिशयेन शत्रूणा मभिभवितारं "मतिं" मन्तारं "यं" "त्वाम्" "अग्निम्" वयमृत्विजः वृणीमहे—इति शेषः। हे अग्ने! "त्वामित्" त्वामेव "अर्भस्य" अल्पस्यास्य "हविषः"

---

* 'इषितः—इषु इच्छायाम्, इच्छासंयुक्तः'—इति वि०।

† 'अर्चींषि—बलानि'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ८, ४, १९, २।

Digitized by Google

पुरोडाशादिकस्य भक्षणार्थमिति शेषः। "समानमित्" सहैव ऋत्विजः "वृणते" प्रार्थयन्ते "मह:" महतः सोमात्मकस्य हविषः भक्षणार्थं त्वामेव वृणते "त्वत्" त्वत्तः "अन्यम्" अतिरिक्तं देवं "न" वृणते॥

"परिभूतरं"-"परिभूतमम्"—इति छन्दोगबह्वृचानां पाठौ, "त्वामभक्षस्य हविषः"-"तमिद्‌मस्य हविषि"—इति, "इत्त्वाम्मह्यो"-"तमिम्मह्यो"—इति च॥ ३॥ ७

अथ द्वितीय-तृचे—प्रथमा।

२ १ २ ३ १२ ३१२ ३ १ २

पुरुरुणाचिध्यस्त्यवोनूनंवांवरुण।

२ ३१ २ ३ १

मित्रवꣳसिवाꣳसुमतिम्॥ १ *॥

हे मित्रावरुणौ! "वां" युवयोः "पुरुरुणा" [प्रथमार्थे तृतीया (७,१,८५)† पुरोरपि बहु उरु बहुतरम् अथवा पुरु च तदुरु च पुरुरु] अत्यन्तं बहुतरमित्यर्थः, तादृक् "अवः" रक्षणं "नूनं" निश्चयेन "अस्ति हि" [हि प्रसिद्धौ; चिदिति पूरणः] हे "वरुण!" हे "मित्र!" "वां" युवयोः "सुमतिम्" अनुग्रहबुद्धिम् "वंसि"‡ सम्भजेयम्॥ १॥

---

* ऋ० वे० ४, ४, ८, १।

† "अत्र सोः सुपांसुलुगित्याकारः"—इति ऋ०-व्याख्या।

‡ 'वंसि—याचयसि'—इति वि०।

अथ द्वितीया ।

१ २ २ १ २ २ १ २ १ २

तावाꣳसम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च ।

२ १ २

वयंवाम्मित्रास्याम ॥ २* ॥

हे "अद्रुह्वाणा" हे अद्रोग्धारौ ! "ता" तौ प्रसिद्धौ "वां" युवां सम्यक् स्तुमइति शेषः । स्तोतारः "वयम्" "इषम्" अन्नं "धाम च" आधारम् "अश्याम" प्राप्नुयाम । हे "मित्रा" मित्रावरुणौ ! "वां" स्तोतारौ वयं "स्याम" भवेम सन्तता इति शेषः, युवाभ्यां स्वभूता वा स्याम ॥

"धामच"-"धायसे"—इति पाठौ, "मित्रा"-"रुद्रा"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ २ २ १ २ २ १ २ २ २

पातन्नोमित्रापायुभिरुतत्रायेथाꣳसुत्रात्रा ।

२ २ २ १ २ २ १ २

साह्यामदस्यून्तनूभिः ॥ ३† ॥ ८

हे "मित्रा" मित्रावरुणौ देवौ ! युवां "नः" अस्मान् "पायुभिः" रक्षणैः "पातं" रक्षतम् । "उत" अपिच "सुत्रात्रा" शोभनेन

* ऋ० वे० ४, ४, ८, २ ।

† ऋ० वे० ४, ४, ८, ३ ।

Digitized by Google

त्राणेन "त्रायेथां" पालयेथाम् [इष्टप्रापणानिष्ट-परिहार-भेदेन भेदः—स्तोत्रादि-वैकल्याच्छत्रोर्वा त्रायेथाम् अभिमत-प्रापणेन रक्षतमित्यर्थः]। वयञ्च "तनूभिः" * पुत्रादिभिः सहिताः स्तोत्रैरङ्गैर्वा "दस्यून्" शत्रून् "सह्याम" अभिभवेम ॥

"मित्रा"-"रुद्रा"—इति पाठौ, "त्रायेथां"-"त्रायेताम्"—इति, "सह्याम"-"तुर्याम"—इति च ॥ ३ ॥ ८

अथ तृतीय-तृचे †—

प्रथमा।

३ २ ३ १ २ ३ १ ३ १र २र

उत्तिष्ठन्नोजसासहपीत्वाशिप्रे अवेपयः।

१ १ २ ३ २ ३

सोममिन्द्रचमूसुतम् ॥ १‡ ॥

हे "इन्द्र!" त्वं "पीत्वा" "ओजसा" बलेन "सह" "उत्तिष्ठन्" ¶ "शिप्रे" हनू "अवेपयः" अकम्पयः मदावेशादिति भावः। किं पीत्वा? "चमू" चम्वोरधिषवण-फलकयोः "सुतम्" अभिषुतम् "सोमम्" ॥

"पीत्वा"-"पीत्वी"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'तनूभिः—त्रिभिः पुत्रभिः शरीरैरभिहुतैरिति वाक्यशेषः'—इति वि०।

† 'ऐन्द्रसाम्यम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ८, ३९ = ऋ० वे० ६, ४, २८, ४।

¶ 'उत्तिष्ठन्—ओजसा सह वीर्येण उत्थानं कुरु। सोमं पिब। पीत्वा शिप्रे हनूनासिके च मत्तः सन् अवेपयः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १र २र
अनुत्वारोदसीउभेस्पर्द्धमानमददेताम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रयद्दस्युहाभवः ॥ २* ॥

हे "स्पर्द्धमान" शत्रुभिः सह स्पर्द्धां कुर्वाण इन्द्र ! "त्वा" त्वाम् "अनु" लक्ष्य "उभे रोदसी" उभे अपि द्यावापृथिव्यौ "अददेतां" हृष्येताम् "यद्" यदा "दस्युहा भवः" शत्रूणां हन्ता भवसि, तदा अददेतामिति सम्बन्धः ॥

"स्पर्द्धमानमददेतां"-"क्रक्षमाणमकृपेताम्"—इति पाठौ ॥२ ॥

अथ तृतीया ।

१ २३१ २ ३१र २र २ १ २
वाचमष्टापदीमहन्नवस्रक्तिमृतावृधम् ।
२ ३ १ २ ३क २र
इन्द्रात्परितन्वम्ममे ॥ ३† ॥ ९

"अष्टापदीम्" अष्टाभिर्दिग्भिर्विदिग्भिश्चाष्टापदीं,‡ "नवस्रक्तिम्" उपरिस्थितेनादित्येन नवस्रक्तिम् आसु दिक्षु व्याप्तामि-

---

* ऋ० वे० ६, ५, २८, ५ ।

† ऋ० वे० ६, ५, २९, २ ।

‡ 'अष्टापदीम्—चत्वारो वेदाः शाखाणि च अष्टापदानि'—इति वि० ।

Digitized by Google

त्यर्थः*, "ऋतावृधं" यज्ञस्य वृद्धिं कुर्वन्तीं,† "वाचं" स्तुतिमयीं, परिपूर्णात्‡ "तन्वं तनूं न्यूनां सतीम्¶ "अहम्" "परि ममे" न्यूनयन्तां करोमीत्यर्थः§। कार्त्स्न्येन स्वरूपं स्तुत्वा विषयीकर्तुमशक्यत्वादितिभावः॥

"ऋतावृधम्"-"ऋतावृधम्"—इति पाठौ॥२॥९

अथ चतुर्थ-खण्डे ||—

प्रथमा।

१ २ ३ १ ३ २ १२ ३२
इन्द्राग्नीयुवामिमेऽ३भिस्तोमाअनूषत।
१ २ ३ २
पिबतꣳशम्भुवासुतम्॥ १** ॥

हे "इन्द्राग्नी!" "युवाम्" "इमे" "स्तोमाः" स्तोतारः†† "अभ्यनूषत" अभिष्टुवन्ति। हे "शम्भुवा" सुखस्य भावयितारा विन्द्राग्नी "सुतम्" अभिषुतम् अस्मदीयं सोमं "पिबतम्"॥१॥

---

* 'नवधाति—नव धातवः कोषाः गाः वहिष्यमाणाः यस्यां नव धातवा नवधाति' चिहत्कौमिकम्'—इति वि०।

† 'ऋतावृधम्—ऋतो यज्ञः अथवा ऋतं सत्यं तं वर्द्धयतीति ऋतावृधम्'-इति वि०।

‡ 'इन्द्रात् परि—उपरि'—इति वि०।

¶ 'तन्व'—शरीरम्'—इति वि०।

§ 'ममे—मिमीते'—इति वि०।

|| 'ऐन्द्राग्नमाज्यम्'—इति वि०।

** ऋ० वे० ४, ८, २४, २।

†† 'स्तोमाभिस्तमवदसाहन:'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २　१ २　३ १ २　३ १ २ ३　१ २
यावाꣳसन्तिपुरुस्पृहोनियुतोदाशुषेनरा ।
१ २ ३ २　३ १ २
इन्द्राग्नीताभिरागतम् ॥ २* ॥

हे "नरा" नेतारौ ! "इन्द्राग्नी !" "वां" युवयोः स्वभूताः "पुरुस्पृहा" पुरुभिर्बहुभिः स्पृहणीयाः† "दाशुषे" हवींषि दत्तवते यजमानार्थम् उत्पन्नाः "नियुतः" अश्वाः "सन्ति"‡ हे इन्द्राग्नी ! "ताभिः" "नियुद्भिः" सह "आगतम्" आगच्छतम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २　३ १ ३ १२　१२　३ २
ताभिरागच्छतन्नरोपेदꣳसवनꣳसुतम ।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नीसोमपीतये ॥ ३¶ ॥ १०

हे "नरा" नेताराविन्द्राग्नी ! [सूयतेऽभिसूयतइति सवनः सोमः] "इदं सवनम्"§ इमं सोमं "सुतम्" अभिषुतम् "उप"

* ऋ० वे० ४, ८, २४, ३ ।

† 'पुरुस्पृहा—पुरुस्पृहौ बहुभिः स्पृहणीयौ'—इति वि० ।

‡ 'सन्ति—बहुवचनमिदं द्विवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, सन्तः'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ४, ८, २४, ४ ।

§ 'इदं प्रातःसवनं सुतं सोमम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

प्रति* [यद्वा, इदं प्रातःसवनम् उप अस्मिन् सवने सुतमभिषुतं सोमं प्रति] "ताभिः" नियुद्भिः† आगच्छतम्। किमर्थम्? "सोमपीतये" अस्य सोमस्य पानार्थम् ॥ ३ ॥ १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

तृतीयः खण्डः‡ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ-खण्डे¶, प्रथम-तृचे—

प्रथमा।

१ २   ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २

अर्षा सोमद्युमत्तमोभिद्रोणानिरोरुवत्।

२ ३ १ ३ १ २ ३ २

सीदन्योनौवनेष्वा ॥ १§ ॥

हे "सोम" पवमान! "द्युमत्तमः" अतिशयेन दीप्तिमान् "वनेषु" अरण्येषु मध्ये‖ "योनौ" स्वकारण-भूते पर्वतादि-

---

* 'उप—समीपे'—इति वि०।

† 'ताभिः—तृतीया-बहुवचनमिदं, लौकिकं व्यत्ययेन तैः पालनैः'—इति वि०। "नियुतो वायोः"—इति च निघ० १, १५, १०।

‡ 'उक्तं प्रातःसवनम्'—इति वि०।

¶ 'इदानीं माध्यन्दिनं सवन मभिधीयते'—इति वि०।

§ छ० आ० ६, १, २, ७ (२भा० ६२ पृ०) = ऋ० वे० ७, २, ४, ४।

‖ 'वनेषु—उदकेषु'—इति वि०।

Digitized by Google

स्थाने * "आसीदन्" सर्वतो गच्छंस्त्वं "द्रोणानि" [प्रयोग-बाहुल्यापेक्षमेतत् बहुवचनम्] द्रोणकलशान्† "अभि" लक्ष्य "रोरुवत्" पुनः पुनः भृशं वा शब्दं कुर्वन् "अर्षा" ‡ आगच्छ दशापवित्रमध्याद्विर्गतः सोमः अविच्छिन्न-धारया द्रोणकलशे पतन् शब्दं करोति खलु ॥

"योनौवनेष्वा"-"श्येनोमयोनिमा"—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १र　२र　२　२३१२　　२ १ २
अप्सा इन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः ।
१ २　　३ १ २
सोमाअर्षन्तुविष्णवे ॥ २¶ ॥

"अप्सा" वसतीवरी-नामधेयानामपां सम्भक्तारः [वनषण सम्भक्तौ (भ्वा, प०) ; "जनसनेति (३,२,६७,) विट्, आत्वं विड्-वनोरिति (६,४,४१,) तादृशाः] "सोमाः" "अर्षन्तु" द्रोण-कलशमागच्छन्तु । किमर्थम् ? "इन्द्राय" सर्वदेवानां प्रथमत एव इन्द्रः सोमान् पिबति, तस्मात् तदनु वायुरन्तः तस्मै च "वायवे", तदनन्तरं वरुणः सोमान् पिबति तस्मै च "वरुणाय", ततो "मरुद्भ्यः" एतन्नामकेभ्यो देवेभ्यः, "विष्णवे" सर्वजगद्-

---

* 'योनौ—द्रोणकलशे'—इति वि० ।

† 'द्रोणानि—द्रोणकलशसम्बन्धीनि पात्राणि'—इति वि० ।

‡ "द्व्यचोऽतस्तिङः (६,३,१३५)"—इति दीर्घः ।

¶ऋ० वे० ७, २, ५, १ ।

Digitized by Google

अपिने एतन्नामकाय देवाय च,—एतेभ्यः सर्वेभ्यः सोमा आगच्छन्त्वित्यर्थः ॥

"सोमा अर्षन्तु"-"सोमो अर्षति"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इषन्तोकायनोदधदस्मभ्यꣳसोमविश्वतः।

१ २ ३ १ २
आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३* ॥ ११

हे "सोम!" त्वं "नः" अस्माकं "तोकाय"† पुत्राय "इषम्" अन्नं "दधद्" विदधत् प्रयच्छन् "सहस्रिणं" सहस्र-सङ्ख्याकं धनं "विश्वतः" सर्वतः "अस्मभ्य" च "आपवस्व" आ प्रापय अस्मभ्यं पुत्राय च अन्न-धनादिकं प्रयच्छेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ११

१ र र १ २ १ र र
॥ शाकलम् ॥ अर्षासोमा २द्युमत्तमाः। अभिद्रोणा

२ १र २ १ १ र ११
निरोरु२३वात्। सायिदा २न्। योनीवना २ ३ यि।

१ २ ५ १ र २ १
ऊम्। घू२३४५वो६हायि ॥(१) अप्सादून्द्रा २यवायषायि।

र २१ २ १ १ २ १
वरुणायमरुद्भ्या२३याः। सोमा २ः। आर्षन्तुवा२३यि।

---

* ऋ० वे० ७,१,५,१,।

† 'पुत्राय पौत्राय'—इति वि०।

१ २ ५ १ र र १
ऊम्। ष्णा ३ ४ ५ वो६हायि ॥(२) इषन्तोका २ यनोद

२ १ र २ १ २ १ १
धात्। अस्मभ्य २ सोमविश्वा२३ताः। आपा २। वाख

२ १ १ २ ५
सद्दा२३। ऊम्। खा३४५यिणो६हायि(३) ॥ ३* ॥ [१]

१ र र १ २ २ १ २
॥ वार्षम् ॥ अर्षासोमा। द्युमान्ता३माः। अभि

र १ ७ २ ५ १ र २
द्रो। णा। निरो२ह२३४वात्। सायिदन्यौना३उ।

ऽ २ १र १ २ ५र र २ र
ई३या। वने। षू२वा२३४औहोवा ॥(१) अप्साइन्द्रा।

१ २ २ १ २ र १ ७ २ १
यवाया३वायि। वरुणा। या। मरु२द्भ्या२३४याः। सो

२ ऽ २ १ २ ५र र
मार्षा३। ई३या। तुवि। ष्णा२वा२३४औहोवा ॥(२)

२ र १ २ २ १ १ ७
इषन्तोका। यनोदा३धात्। अस्मभ्यम्। सो। मवा

२ ५ १ २ ऽ २ १
२यिश्वा२३४ताः। आपवस्वा३। ई३या। सह। स्वा

२ ५र र २ ५
२यिणा२३४औहोवा। ऊ२३४पा(३) ॥ ४† ॥ [२]

१ २ १ २
॥ सन्तनि ॥ अर्षाहाउ। सोमद्युमा ३ १ उवा २ ३।

---

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० ३सा०।

† ऊ० गा० ३प्र० १ख० ४सा०।

Digitized by Google

५ १ र २र १र २ ११११ र १
ता२३४माः । अभिद्रोणानिरोरुवा२३४५त् । सीदान्हा

१ र २ ५ २ १र
उ । योनौवना३१उवा२३यि । पू२३४वा ॥(१) अप्सा

र २ र ११र१ २र १ २ २ १ १ १ १ १र २
इन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यिया२ ३ ४ ५ः । सोमाद्धाउ ।

१ २ ५ १ २र १र
आर्षन्तुवा३१उवा२३यि । ष्णा२३४वे ॥(२) इषन्तोका

२र १ २ १ २र १ २ १ १ १ १ १र २ १
यनोदधदस्मभ्यं सोमविश्वता२३४५ः । आपाद्धाउ । वा

२ ५
स्वसद्धा३१उवा२३ । सो२३४णाम्(३) ॥ १२* ॥ [३]

१ २ र १र र २ १
॥ अाक्रवर्णम् ॥ आयिषाम् । तोकायनोदधात् ।

२ १ र १ २ २
अस्मभ्यम् । सोमवा२यि । श्वता३१उवा२३ । ज ३ ४

५ १र १ २ १ २ १ २
पा । आपवा२३स्वा । सद्धस्त्रिणा३माउवा२३ । जा३२

५
३४पा(३) ॥ १८ ॥ [४]

२ र १ १ १ र २ १ २ १
॥ जराबोधीयोत्तरम् ॥ इषन्तोकोवा । यानोदधात् । यस्मा

---

* ऊ० गा० ७प्र० २खा० १२सा० ।

† ऊ० गा० १९प्र० १खा० १८सा० ।

Digitized by Google

र १ र २ ४ ५
भ्या२३९सो। मविश्वाता:। आपावा१स्वा२३सा। च।

३ २
ष्विणो३४५ई। डा(३)॥१५*॥[५]

१ र १ २ १
॥मार्ग्रीयवम्॥ अप्सौहोवा। आयिन्द्रा२। य

२ ३ ५ १ १र १ २ १र र
वाया२३४वायि। वरुणाय। मरुद्भ्या१या२:। सोमा:।

२ २ ३ ५ १ ३ ५र र
श्वा। औ३होयि। आ२३४र्षा। द्रुवा२३४औहोवा।

२ १ १ १ १ १
ए३। ष्णवा२३४५यि(२)॥२†॥[६]११

अथ प्रगाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
सोमउष्वाण:सोतृभिरधिष्णुभिरवीनाम्।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वयेवहरितायातिधारयामन्द्रयायातिधारया॥१‡॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १५सा०।

† ऊ० गा० १८प्र० २ख० २सा०।

‡ ऋ० सा० ६, १, ३, ५ (२भा० ८८पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, १३, २।

Digitized by Google

"सोतृभिः" अभिषुण्वद्भिः ऋत्विग्भिः "स्नानः"* अभिषूयमाणः "सोमः" "अवीनां" "स्नुभिः"† ["मांसपृत्स्नूनामुपसंख्यानम् (६,१,६३)"—इति सानु-शब्दस्य स्नु-भावः] समुच्छ्रितैः वालैः पवित्रैः "अधि याति" अधिकं गच्छति। "उ"—इति प्रसिद्धौ। "अश्वया इव" वडवया इव "हरिता" हरित-वर्णया धारया "याति" "मन्द्रया" मदकारिण्या द्रोणकलशमधिगच्छति॥

"उष्णाणः"-"उषुवाणः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २
अनूपेगोमान्गोभिरक्षाःसोमोदुग्धाभिरक्षाः।

३ २उ ३१२ ३ १र २र
समुद्रन्नसंवरणान्यग्मन्मन्दीमदायतोशते ॥ २‡ ॥ १२

"गोमान्" गोयुक्तः सोमः "अनूपे" निम्ने देशे‡ कलशे "गोभिः" गोर्विकारैः क्षीरादिभिः§ सह "अक्षाः" क्षरन्ति।

---

* क्वचित् तु "ष्णाणः"—इति मूर्द्धन्य-षकार-णकारोपेतः श्रूयते। तत्र "पूर्वपदात् (८, ३, १०६)"—इति षत्वम् सुतरां णत्वञ्च।

† "ष्णुभिः"—इति मूर्द्धन्यपाठो क्वचित्, "पूर्वपदात् (८, ३, १०६)"—इति च तत्र दीर्घः।

‡ 'अनूपे—उर्व्वीः प्रदेशे'—इति वि०।

§ 'गोभिः—उदक-सङ्घातैः गोभिर्वा'—इति वि०।

तदेवोच्यते—"सः" सोमः प्रातमोभिश्रणार्थं "दुग्धाभिः गोभिः" सह "अचाः" चरति [चरतेर्लुङि रूपम्]। किञ्च "समुद्रं न" यथा समुद्रमुदकानि गच्छन्ति तद्वत् "संवरणानि" सम्भजनीयानि रसरूपाणि अन्नानि* द्रोणकलशम् "अग्मन्" गच्छन्ति [गमेर्लुङि च्लेर्लुकि रूपम्] किञ्च "मन्दी" मदकरः सोमः "मदाय" मदार्थं "तोशते"† हन्यते अभिषूयते [तोशतिर्वधकर्मा (निघ० २,१९,२९)] ॥ २ ॥१२

॥ मानवोत्तरम् ॥ हौवायि। सोमउषाणःसोतृभिः। हौवायि। आधिष्णुभिरवीनाम्। आश्वयेव। हारिता या३१। तिधा२रा२३४या। मन्द्राया२३४या३। ता२ यिधार३४औहोवा। रा२३४या। हौवायि। मन्द्रया यातिधारया। हौवायि। मन्द्रयायातिधारया। आ नूपे। गोमान्गो३१। भा२यिरा२३४चाः। सोमोदूर३ ग्धा३। भा२यिरा२३४औहोवा। आ २ ३ ४ स्वाः ॥(२)

---

* 'संवरणानि—उदकानि'—इति वि०।

† 'तोशते—तुषि प्राप्तो व्यापयति'--इति वि०।

१ २ २ २१२ १२ १ २
होवायि। सोमोदुग्धाभिरच्चाः। होवायि। सोमोदु
२ २ ७ १ १ ७ १ ७ २
ग्धाभिरचाः। सामुद्रम। सांवरणा३१। नियार२आ२३
५ २ १ २ १ ३ ५२ २
४ग्मान्। मन्दायिमा२३दा३। या२तो२३४औहोवा।
२ ५
आ२३४ते(३)॥ ५* ॥[१]

१ २ १२ २ २ १ २
॥ आनूपन्ध्व्रम्॥ सोमाःसोमाः। उग्वाणा३ःसोतृ
१ २ १ २ १
१भी२ः। अधिष्णुभिः। आवा१यिना२म्। आश्वा
१ १ २ २ २१२ २ १ २ २
२येवा२। हरितायातिधारा२३या। मन्द्राया३या३।
१ ४ २ ५ १ २ १ २ २
तार३इधा३। रा३४५योई३हायि॥(१) मन्द्रामन्द्रा। या
२ १ १ १ १२ २ १ २
यातो३धारा१या२। मान्द्रयाया। तिधारा१या२।
१ १ १२ २ २ १ २ १२ १ २
आनू२पेगो२। मान्गोभिरा२३चाः। सोमोदू३ग्धा३।
१ ४ २ ५ १२ २ १२ १
भा२३यि३। राआ२३४५औहोई३हायि॥(२) सोमाःसोमाः।
२ १ २ १ १२ २ २ १ २
दुग्धा३भायिरा१चा२ः। सोमोदुग्धा। भायिरा१चा

* ऊ० गा० २ प्र० १ अ० ५ खा० ।

र्२ः । सामू२द्राना२ । संवरणानियार३म्मान् । मन्दा

यिमा३दा३ । यार३तो३ । श्रा ३ ४ ५ तो ६ हायि(३)

॥ ६* ॥ [२]

॥ वाम्रम् ॥ सोमउष्वाणःसो । हा३हा३यि । तर

३४ । भिस्तृभीवा । अधाहो२यि । ष्णुभायिर्द्यौ२ ।

आवा१यिना२म् । आश्वयेव । हरायितायां । तिधा

उवा३ । ऊ२३४पा । रया२ । मान्द्रा२याया२ ।

तिधा । रा२या२३४ औहोवा ॥(१) मन्द्रयायातिधा ।

हा३हा३यि । रा२३४ । यारयोवा । मान्द्राहो२यि ।

यायाहो२ । तायिधा१राया२ । आनूपेगो । मानूगो ।

भिराउवा३ । ऊ३४पा । अक्ष्ना२ः । सोमो२दूग्धा२भि

रा२ । हा२३४ औहोवा ॥(२) सोमोदुग्धाभिरा । हा३

* ऊ०गा० ३प्र० १ख० ६सा० ।

२ १ र ५ १र
हाउयि। आ२३४। वाःत्वोवा। सोमोहो२यि।
१ १ १ १ १ १
दुग्धाचो२। भायिरा१चा२ः। सामुद्रम। संवारा
० ३ १ १ ५ १ १
णा। नियाउवाइ। ऊ३४पा। अग्मा२न्। मान्दी
१ १र ३ ५र र १
२माद्दा२। यतो। आरता२३४औहोवा। ऊ२२३४
५
पा(३) ॥ ७* ॥ [३]

२र ३ ५
॥ अग्नेस्त्रिणिधनम् ॥ सोमउप्वा। णःसोतृ२३४भीः।
२ १ २ ५ २ २
अधायिष्णुभिरा३१उवा२३। वी२३४नाम्। आश्वाये२
५ ११ र र २ ५ २
३४वा। हरितायातिधा३१उवा२३। रा२३४या। मा
२ ५ २ ५
न्द्राया२३४या। तिधा३१उवा२३। रा २ ३ ४ या ॥(१)
२ र २ ५ ११ र र २
मन्द्रयाया। तायिधारा२३४या। मन्द्रयायातिधा३१उ
५ २ २ ५ १ र २
वा२३। रा२३४या। आनूपि२३४गो। मान्गोभिरा३१
५ २ २ ५ २
उवा२३। आ२३४वाः। सोमोदू२३४ग्धा। भिरा३१

---

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० ७सा०।

५ १र र २
उवा२३ । आ२३४वा: ॥(२) सोमोदुग्धा । भायिरा२

५ १र १र र २ ५
३४णा: । सोमोदुग्धाभिरा३१उवा२३ । आ२३४वा: ।

२ २ ५ २ १ २
सामूद्रा२३४न्ना । संवरणानिया३१उवा२३ । सा २ ३ ४

५ १ १ ५ २ १
ग्मान् । मान्दीमा२३४दा । यतो३सा३उवा२३ । आ

५
२३४ते(३) ॥ ८* ॥ [४]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तः ॥ मन्द्रा३या३याऽतिधारयोवा । मान्द्र

२र र १ २ १ रर ५र
याया । तिधारा१या२ । आनूपेगो३१२३४ । मान्गो ।

१ २ र १ २ ७ २ १
भायिरा१णा२: । सोमोदू१ग्धा२ । भिरा३ । आ२३४

२ १११११
५ । आ२३४५:(२) ॥ ३† ॥ [५]

५र र २ ४र ५ ४ ५ १र १ २ १
॥ कालेयम्‡ ॥ सोमोदू३ग्धाभिरणा: । सोमोदुग्धा ।

२ १ २ ३ २ १ २४र ५
भिरणा२३: । समुद्रन्ना३ । सा२३४म् । वरणानि ।

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० ८सा० ।

† ऊ० गा० ८प्र० १ख० ३सा० ।

‡ "लघ्वाकालेयम्"—इति ख० पु० पाठः ।

Digitized by Google

२ १ १ २२ २ ५ ४
आ३२मान्। मन्दायिमदौ। वा३४३ओ३४वा। यतो५
४
मतायि। औ५ई। डा(२) ॥ ४* ॥ [६]

२ र २र ५
॥ मानवाद्यम् ॥ मन्द्रयाया। तिधारा२३४या।
२ ३ ५ १ १र र १ २
तायिधारा २ ३ ४ या। मान्द्रयाया। तिधारा१या २।
१र २र १ ७र २ १ २ ५ १र १र
अ। नू। पे। गोमान्गो३। भा२यिरा२३४वाः। सोमो
१ १ २ ५र र २ ५
दुग्धा२३। भा२यिरा२३४औहोवा। आ२३४वाः(२)।
॥ १२† ॥ [७]

१ र र र र २
॥ आग्नेस्त्रिणिधनम् ॥ अनूपेगो। मान्गोभायिरा
५ १र १र र १
२३४वाः। सोमोदुग्धाभिरा३१उवा२३। आ२३४वाः।
२ ३ ५ १ १ र २
सामूद्रा२३४वा। संवरणानिया३१उवा२३। आ २ ३ ४
५ २ ३ ५ २ १
ग्मान्। मान्दीमा२३४दा। यतो३आउवा२३। आर
५
३४ते(२) ॥ १३‡ ॥ [८]

---

* अ० गा० ८प्र० २अ० ४गा० ।

† अ० गा० ९प्र० २अ० १२गा० ।

‡ अ० गा० १९प्र० २अ० २गा० ।

Digitized by Google

॥ वैष्णवाद्यम् ॥ सोमउष्वा । णःसो२तृभायिः । तृ
भिः । अधिष्णुभिरा२वीनाम् । वीनाम् । अश्वयेवह
रितायातिधा२रया । रया । मन्द्रयायातिधा२रया२३ ।
आ२ । या२३४ । औहोवा ॥(१) मन्द्रयाया । तिधा२
रया । रया । मन्द्रयायातिधा२रया । रया । अनूपे
गोमान्गोभिरा२क्षाः । क्षाः । सोमोदुग्धाभिरा२क्षा२३ः ।
आ२ । क्षा२३४ । औहोवा । सोमोदुग्धा । भि
रा२क्षाः । क्षाः । सोमोदुग्धाभिरा२क्षा२३ः । आ२ ।
क्षा२३४ । औहोवा ॥(२) सोमोदुग्धा । भिरा२क्षाः ।
क्षाः । सोमोदुग्धाभिरा२क्षाः । क्षाः । समुद्रन्नसंव
रणान्यग्मान् । ग्मन् । मन्दीमदायतो२शता२३यि ।
आ२ । ता२४३ । औहोवा । ऊ२३४पा(३) ॥१८*॥ ९]

* ऊ० ग्रा० १०प्र० १ख० १८ सा० ।

१८ २ २ १ २ २
॥ वैष्णवोत्तरम् ॥ सोमः। सोमाः। उष्वाणःसोतृ
१ २ २ १ २ २ १
भिः। अधायिष्णू३भायिः। आश्वी३हो। वायिना२
१ २ २ २ १ २ २ १ १ २
म्। अश्वयेवहरितायातिधा१रा३या। मन्द्राधौ३हो।
१ २ २ १ ५ ४ ५
यायातिधोर२३४वा। रा५योई३हायि(१) ॥ २०* ॥ [१०]

१२ २ २ १
॥ यौक्तस्रुचम् ॥ सोमउष्वाणःसो। तृभायिः। अ-
२ १ २ १ १२ २ २ २
धिष्णु भिरवा२३यिनाम्। आश्वा२ै। येवहरितायाति
१२ २ १ १ २ २ १ ५ ३
धारा१२३या। मान्द्रा२। यायातिधो२३४वा। रा१२३४
५ २ १ २ १२ १ २ २ २ १२
या ॥(१) मन्द्रयायातिधा। रया। मन्द्रयायातिधारा
२ १२ २ २ २ ११ २ १
२३या। आनू२। पेगोमान्गोभिरा२३क्षाः। सोमा
१ २ १ ५ ३ ५ १२ १२
२ः। दूग्धाभिरो२३४वा। आ२३४क्षाः ॥(२) सोमोदु
१२ २ १ २ २ २ २ १ २ १
ग्धाभिरा। क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा२३क्षाः। सामू२।
१ २ २ १ २ १ १ २ २ १
द्रन्नसंवरणानिया२३ग्मान्। मान्दी२। माढायतो२३४
५ ३ ५
वा। आ२३४ते(३) ॥ ११ ॥ [११] १२

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० २०गा०।
† ऊ० गा० २०प्र० २ख० १गा०।

अथ तृतीय-तृचे—

प्रथमा।

१ २   ३ १ २ ३१ ३ १२   ३१ ३ १ २
यत्सोमचित्रमुक्थ्यन्दिव्यम्पार्थिवंवसु।
१ २   ३ १२   ३१
तन्नःपुनानआभर॥ १* ॥

हे "सोम !" "यत्" "चित्र" चायनीयम् "उक्थ्यम्"† स्तुत्यं "दिव्यं" दिवि भवं "पार्थिवं" पृथिवी-सम्बन्धञ्च यत् "वसु" धनमस्ति "तत्" "नः" अस्मभ्यम् "पुनानः" पूयमानः सन् "आभर" आहर॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २   ३ १२   ३१   ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषापुनानआयूꣳषिस्तनयन्नधिबर्हिषि।
२ ३ १ २   ३ १ २
हरिःसन्योनिमासदः॥ २‡ ॥

हे सोम! "आयूंषि" यजमानादीनामृत्विजां जीवितकालान् "पुनानः" शुद्धान् कुर्वन् "वृषा" कामानां वर्षकस्त्वं "स्तनयन्" शब्दं कुर्वन् "अधि बर्हिषि" [अधीति सप्तम्यर्थानुवादी] आस्तीर्णे दर्भे "हरिः सन्" हरितवर्णः सन् "योनिं" स्वकीयं स्थानम्¶ "आसदः" आसीद॥

---

* ऋ० वे० ६, ८, ९, १। † 'उक्थ्यं—नामरूपम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ९, ३। ¶ 'योनिं—द्रोणकलशम्'—इति वि०।

Digitized by Google

"आयूंषि"-"आयुःषु"—इति पाठौ, "आसदः"-"आसदत्"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३१र २र ३ १ २ ३ १ २
युव०ᳬ हिस्थःस्वःपतीइन्द्रश्चसोमगोपती ।
३ १ २ ३ १ २
ईशानापिप्यतन्धियः ॥ ३* ॥ १३

हे "सोम !" त्वम् "इन्द्रश्च" युवं हि" युवां खलु "स्वःपती" सर्वस्य स्वामिनौ "स्थः" भवथः । तथा "गोपती" गवां पालकौ† "ईशाना" ईश्वरौ सन्तौ "धियः" अस्मदीयानि कर्माणि‡ "पिप्यतम्" प्यायथतम्¶ ॥

"युवंहिस्थःस्वःपती"-"युवंहिस्थःस्वर्पती"-इति पाठौ ॥ ३ ॥ १३

२र १ २ १ र
॥ ऐष्यवम् ॥ यत्सोमचित्रमुक्थायाम् । दिव्यम्पार्थि
२ १ ५ ३ २ ४ १ र
वंवसू । तन्नःपू२३४ना । नथा३भा५रा६५६ ॥(१) वृषा
र र १ २ १ २ १
पुनानआयू०ᳬषी । स्तनयन्नधिबर्हिषायि । हरिःसा२३
५ ३ २ ४ २ १
४न्यो । निमा३सा५दा६५६ः ॥(२) युव०ᳬ हिस्थःस्वःपा

* ऋ० वे० ६, ८, ८, २ ।

† 'गोपती—गवां पती, उदकानामादित्यरश्मीनां वा'—इति वि० ।

‡ 'धियः—बुद्धयः'—इति वि० ।

¶ 'पिप्यतं—पाययतम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

१ १ र २ १र१र ५ ३ २
ती। इन्द्रस्यसोमगोपतायि। ईशानार२३४पी। प्यता
४
इन्धाप्र्याई५६:(३) ॥ ८* ॥ [१] १६

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डे‡ प्रथम-सूक्ते—

प्रथमा ।

१ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रोमदायवावृधेशवसेवृत्रहानृभिः ।
२उ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र २
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भेहवामहे
१र २र३१ २
सवाजेषुप्रनोविषत् ॥ १¶ ॥

---

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० ८सा० ।

† 'उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि० ।

अतोऽनन्तरं विवरणकृता इहैव प्रकृतेः प्रत्युत्थता एव व्याख्याताः । तथाहि—'इहार्णो' इष्टानि भवन्ति, तत्र पञ्चमेऽहनि प्रकृत्यः इष्टं भवति ता उच्यन्ते ;—इन्द्रो-द्वैवत-ब्राह्मणानि परिभाषाभिहितानि "विद्मा मघवन्" इत्यंशः त्वं मघवन्'—इत्यादि । एवमेतद्ग्रन्थे उत्तराग्रन्थीयएव सत्रागानाब्राचिकः न तु ग्रन्थान्तरच्छन्दआर्चिकपरिशिष्ट-भूतः, परमेतदतीव चित्रं मूलपुस्तकदर्शनेन तथात्वं व्याख्यानात् ।

‡ 'बार्हद्गिरं समाप्ताम'—इति वि० ।

¶ छ० आ० ५, १, ३, २ (१भा० ८३६४०) = ऋ० वे० १, ८१, १ ।

"वृत्रहा" वृत्रस्यावरकस्य वृष्टि-निरोधकस्य मेघस्यासुरस्य वा हन्ता। यद्वा, आवरकाणां शत्रूणां हन्ता, "इन्द्रः" "मदाय" हर्षार्थं "शवसे" [बलनामैतत् (निघ० २,९,३) बलार्थञ्च "नृभिः" यज्ञस्य नेतृभिः ऋत्विग्भिः "वृधे" स्तोत्र-शस्त्र-रूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव। स्तुत्या हि देवता प्राप्त-बला सती प्रवर्द्धते। "तम् इत्" तमेवेन्द्रम् "महत्सु" प्रभूतेषु "आजिषु" सङ्ग्रामेषु "ऊति" रक्षां कुर्वन्तमितिशेषः "हवामहे" अस्माकं रक्षणाय आह्वयामहे। ["उत" अपिच "ईम्" एनम् एवम्भूतमिन्द्रम्*] "अर्भे" अल्पे सङ्ग्रामे हवामहे अस्माभिराहुतः सचेन्द्रः "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु "नः" अस्मान् "प्राविषत्" प्रावतु प्रकर्षेण रक्षतु॥ ["ऊतिमर्भे"--"उतेमर्भे"—इति पाठौ॥ वावृधे—वृधेः कर्मणि लिट् तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घत्वम्†। नृभिः—"सावेकाच (६,१,१६८)"—इति प्राप्तस्य विभक्त्युदात्तत्वस्य "नृचान्यतरस्यां (६,१,१८४)"—इति प्रतिषेधः। हवामहे—ह्वयतेर्लटि "ह्वः (६,१,३२)"—इत्यनुवृत्तौ "बहुलञ्छन्दसि (६, १, ३४)"—इति सम्प्रसारणम् , अपि गुणावादेशौ। अविषत्—अवरक्षणे (भ्वा०,प०) लेटड़ागमः, "इतश्च लोपः (३, ४, ९७)—इति इकारलोपः, "सिब्बहुलं लेटि (३,१,३४)—इति सिप् , तस्यार्द्धधातुकत्वात् वलादिलक्षण इट्]॥ १॥

---

* ऋग्वेद-पाठमनुसृत्येदं व्याख्यानम्।

† परं चिन्त्यमेतत्—"संहितायामभ्यासस्य अन्येषामपि दृश्यत इति दीर्घत्वम्। तुजादिभ्योऽपि तूतुजान इति यत् पदकाले दीर्घः श्रूयेत"—इति ऋग्वेद-व्याख्यावसरेऽस्यैव व्याख्या।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
असिद्धिवीरसेन्योसिभूरिपराददिः ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
असिदभ्रस्यचिद्वृधोयजमानाय
३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २
शिक्षसिसुन्वतेभूरितेवसु ॥ २* ॥

हे "वीर !" शत्रु-क्षपण-कुशलेन्द्र ! त्वं "सेन्यः असि" सेनार्हो भवसि†, त्वमेकोऽपि सेना-सदृशो भवसीत्यर्थः । "हि"‡ यस्मादेवं तस्मात् प्रभूतं शत्रूणां धनं "पराददिः" परादाता शत्रूणां पराङ्मुखं यथा भवति तथा आदाता "असि" भवसि "दभ्रस्य चित्" अल्पस्य नामैतत्¶ अल्पस्यापि तव स्तोतुः§ "वृधः" वर्धयितासि, तथा "यजमानाय" यागं कुर्वते "सुन्वते" सोमाभिषवं कुर्वते पुरुषाय "शिक्षसि" अपेक्षितं धनं ददासि [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघ०३,२०,८)] यस्मात् "ते" तव वसु"

* ऋ० वे० १, ६, १, ९ ।

† विवरण-मते 'वीरसेन्यः'—इत्येकं पदम्, अत एवैवं व्याख्यानम्—'वीरसेन्यः—वीराः सेना यस्य असौ वीरसेन्यः'—इति । परमेतत् पदपाठ-विरुद्धम्, तत्र "वीर । सेन्यः"—इति भेद-स्वरयोर्दर्शनात् ।

‡ 'चोति पदपूरणः'—इति वि० ।

¶ "दभ्रम्"—इति निघण्टौ तृतीयस्य द्वितीये ह्रस्वनामसु पठमिति दर्शनात् ।

§ 'दभ्रस्य—ध्वंसकस्य'—इति वि० ।

धनं "भूरि" बहुलं अक्षयं धनं विद्यते तस्मात् ददासीति भावः॥ [पराददिः—डु दाञ् दाने (जुहो० उ०) "आदृगमहन जन (३,२,१७१)"—इति कि-प्रत्ययः; लिड्वद्भावाद् द्विर्वचने कृत्वम्, "आतो लोप इटि च (६,४,६४)"—इत्याकारलोपः। वृधः—वृधेरन्तर्भावितण्यर्थादिगुपध-लक्षणः कः। सुन्वते—"शतुरनुमः (६,१,१७३)"—इति विभक्तेरुदात्तत्वम्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ १ २ २ १ २ २ १ २ ३ १ २
यदुदीरतआजयोधृष्णवेधीयतेधनम्।
३ १ १ ३ २ ३ १ ३ २उ ३ १ ३२
युङ्क्ष्वामदच्युताहरीकं हनःकंवसौ
३ १ २ ३ १ २
दधोऽस्माँ इन्द्रवसौदधः॥ ३*॥ १४

[अथेदमाख्यानम्—'रहूगण-पुत्रो गोतमः कुरु-सृञ्जयानां† राज्ञां पुरोहित आसीत्, तेषां राज्ञां परैः सह युद्धे सति स ऋषिः अनेन सूक्तेन इन्द्रं स्तुत्वा स्वकीयानां जयं प्रार्थयामास'—इति। तस्य च तत्पुरोहितत्वं वाजसनेयिभिराम्नातम्—"गोतमोह वै राहूगण उभयेषां कुरु-सृञ्जयानां‡ पुरोहित आसीत्"—इति।] "यत्" यदा "आजयः" सङ्ग्रामाः "उदीरते" उद्गच्छन्ति उत्पद्यन्ते तदानीं "धना" धनं "धृष्णवे" यो धृष्णुः धर्षयिता

* ऋ० षा० ४, ६, २, ९ (१भा० ८४४पृ०) = ऋ० मं० १, ६, १, २।

†, ‡ "सञ्जयानां"—इति रा० मा० पु० पाठः।

Digitized by Google

शत्रूणां जेता भवति तस्मै "धीयते" निधीयते, जयतो धनं भवतीत्यर्थः। हे इन्द्र! त्वं तादृशेषु युद्धेषु प्रवृत्तेषु "मदच्युता" शत्रूणां मदस्य गर्वस्य च्यावयितारौ "हरी" त्वदीयावश्वौ "युक्ष्व" स्व-रथे योजय, योजयित्वा च कञ्चिद्राजानं तव परिचरणम-कुर्वन्तं "हनः" हन्याः कञ्चन त्वां परिचरन्तं "वसौ" वसुनि धने "दधः" स्थापय॥ [उदीरते—ईरगतौ (आ०) आदा-दिकः, "अनुदात्तेत्त्वाल्लसार्वधातुकानुदात्तत्वे (६,१,१८६) धातु-स्वरएव शिष्यते, "यद्वृत्तान्नित्यम् (८,१,६६)"—इति निघात-प्रतिषेधः। धना—"सुपां सुलुक् (७,१,३९)"—इति डादेशः। युङ्क्ष्वा—युजिर् योगे (रु० उभ०), अन्तर्भावित-ण्यर्थोऽत्रेति "बहुलञ्छन्दसि (२,४,७३)—इति विकरणस्य लुक्, "द्व्यचो-ऽतस्तिङः (६,३,१३५)"—इति संहितायां दीर्घत्वम्। हनः—हन्तेर्लेटि सिप्यडागमः, हनश्च दधश्च चार्थप्रतीतेः "चादिलोपे विभाषा (८,१,६३)"—इति प्रथमायास्तिङ्विभक्तेर्निघात-प्रतिषेधः। वसौ—लिङ्ग-व्यत्ययः। दधः—दध धारणे (भ्वा०आ०) लेटि व्यत्ययेन परस्मैपदम्॥ ३॥ १४

॥ सन्तनि॥ इन्द्रोवाउ। मादायवा३१उवा२३। वा२३४ङ्कः। ग्रवसेवृत्रहानृभिस्तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भेह वामंहा२३४५यि। सनाहाउ। जायिषुप्रनो३आउवा२३।

५ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २ २ २ ३ १ २ १
वा२३४यिषात् ॥(१) असिद्धिवीरसेन्योसिभूरिपराददिर

२ १ २ १२ २२ २ २ १११ १ २
सिदभ्रस्यचिद्वृधोयजमानायशिक्षसा२३४५यि। सुन्वाश्वा

१ २ २ ५ १ २
उ। तायिभूरिता३१उवा२३यि। वा२३४सू ॥(२) यदु

१२ १२ १ २ २ १ २ १२ १२ १ १२ १ १ १२ १ १२ १
दीरतआजयोधृष्णवेधीयतेधनंयुङ्क्ष्वामदच्युताहरीकंहन

२ १ २ २ १ १ १ १ १ १ २ १ २
नःकंवसौदधा२३४५ः। अस्मान्हाउ। आयिन्द्रवसा३१उ

५
वा२३। दा२३४धाः(३) ॥ ४* ॥ [१] १४

अथ द्वितीय-तृचो†—

प्रथमा।

३ २ ३ १ २ ३ १ २
स्वादोरित्थाविषूवतो

१ २ ३क २२
मधोःपिबन्तिगौर्यः।

१ २२ ३ १ २ ३
यादूइन्द्रेणसयावरी

२ ३ १ २ ३ १ ३
वृष्णामदन्तिशोभथा

२ ३ १२ ३ १ २
वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ १‡ ॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० २ख० ४गा०।

† 'रायोवाजीयमच्छावाकसाम'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ५, १, २, २(१भा० ८३१पृ०) = ऋ० वे० १, ६, ६, ५।

Digitized by Google

"स्वादीः" स्वादुभूतस्य रसयुक्तस्य "इत्था विषूवतः" इत्थ मनेन प्रकारेण सर्वयज्ञेषु व्याप्तियुक्तस्य "मध्वः" मधोः मधुर-रसस्य सोमस्य "क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (१,४,३२ वा०)"—इति कर्मणः सम्प्रदानत्वात् चतुर्थ्यर्थे षष्ठी। एवंविधं सोमं "गौर्यः" गौरवर्णा गावः पिबन्ति। या गावः "शोभथाः" [वचन-व्यत्ययः] इन्द्रेण सह शोभन्ते "वृष्णा" कामाभिवर्षकेन्द्रेण "सयावरीः" सह यान्त्यो गच्छन्त्यः सत्यः "मदन्ति" हृष्टा भवन्ति। ता इन्द्रपीतस्य सोमस्य शेषं पिबन्तीत्यर्थः। "वस्वीः" पयः-प्रदानेन निवासकारिण्यः ता गावः "स्वराज्यं" स्वस्येन्द्रस्य यत् "राज्यं" राजत्वं तदनु लक्ष्यावस्थिता इति शेषः॥ [विषूवतः—विष्लृ व्याप्तौ (जु०उभ०) अस्मादौणादिकः कुप्रत्ययः ततो मतुप् "ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् (६,१,१७६)"—इति मतुप उदात्तत्वम्, "अन्येषामपि दृश्यते (६,३,१३७)"—इति संहितायां दीर्घः, व्यत्ययेन मतोर्वत्वम्। मध्वः—"जसादिषु छन्दसि वा वचनम् (१,४,७)"—इति "घेर्ङिति (७,३,१११)"—इति गुणा-भावे यणादेशः। गौर्यः—"षिद्गौरादिभ्यश्च (४,१,४१)"—इति ङीष्, जसि यणादेशे "उदात्तस्वरितयोर्यणः (८,२,४)"—इति परस्यानुदात्तस्य स्वरितत्वम्। सयावरीः—या प्रापणे (अदा०प०) "आतोमनिन् (३,२,७४)" —इति वनिप्, "वनोरच (४,१,७)"—इति ङीब्रेफौ। मदन्ति—मदी हर्षे (दि०प०), श्यनि प्राप्ते व्यत्ययेन (३,१,८५) शप्। वस्वीः—"वस निवासे (भ्वा०प०)शृस्वृस्निहि (उ०,१,१०)"—इत्यादिना वसे रुप्रत्ययः, "धान्ये नित् (उ०१,९)"—इत्यनुवृत्ते राद्युदात्तत्वम, "वोतो

गुणवचनात् (४,१,४४)"—इत्यत्र "गुणवचनात् ङीषाद्युदात्तार्थम् (४, १, ४४ भा०)"—इतिवचनात् वसुशब्दात् ङीपि यणादेशः, असि "वाच्छन्दसि (६,१,१०६)"—इति पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्। स्वराज्यं—"अकर्मधारये राज्यम् (६,२,३०)" —इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ २ १ २ १ २ २ १ २
ता अस्य पृशनायुवः सोमꣳ श्रीणन्ति पृश्नयः।
२ १२ १२ २ १ २ १ २ २ १ २ १
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रꣳ हिन्वन्ति सायकं
२ २ १ २ २ १ २
वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ २* ॥

"ताः" पूर्वोक्ताः† "अस्य" इन्द्रस्य "पृशनायुवः" स्पर्शनकामाः पृश्नयः नानावर्णाः‡ गावः इन्द्रेण पातव्यं "सोमं" पयसा "श्रीणन्ति" मिश्रीकुर्वन्ति, "इन्द्रस्य" "प्रियाः" प्रीतिहेतुभूताः "ताः" "धेनवः" "सायकं" शत्रूणामन्तकारकं¶ "वज्रं" आयुधं "हिन्वन्ति" शत्रुषु प्रेरयन्ति इन्द्रो यथा शत्रुषु वज्रं प्रेरयति तथेन्द्रस्य मदमुत्पादयन्तीत्यर्थः। अन्यत् पूर्ववत्॥ [हिन्वन्ति

---

* ऋ० वे० १, ६, ७, १।

† 'ताः—धेनवः'—इति वि०।

‡ 'पृश्नयः—गावः'—इति वि०।

¶ 'सायकं—शरणभूतं चेपणीयम्'—इति वि०।

Digitized by Google

हिंवि प्रीणनार्थः (भ्वा० प०), इदित्त्वान्नुम् । सायकं—षो अन्त-कर्मणि (दि० प०), धवुल्यात्त्वे युगागमः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ १ १ २ ३ १ १ १२ ३ १ १
ताअस्यनमसासहःसपर्य्यन्तिप्रचेतसः ।
३ २ १ ३ १ ३२१
व्रतान्यस्यसश्चिरेपुरूणिपूर्वं
२ ३ १ ३ १ ३ ३ १ १ २
चित्तयेवस्वोरनुस्वराज्यम् ॥ ३ * ॥ १५

"प्रचेतसः" प्रकृष्टज्ञानाः "ताः" गावः "अस्य" इन्द्रस्य "सहः" बलं "नमसा" स्वकीयेन पयोरूपेणान्नेन "सपर्य्यन्ति" परिचरन्ति "पुरूणि" बहूनि "अस्य" इन्द्रस्य "व्रतानि" असुर-बधादि-रूपाणि वीर्य-कर्माणि "सश्चिरे" सेविरे ज्ञातव्यतया इत्यर्थः । किमर्थम्? "पूर्वचित्तये" युयुत्सूनां असुराणां पूर्वमेव प्रज्ञापनार्थं† [अनेन युध्यमाना वृत्रादयः सर्वे मरणं प्राप्ताः किमर्थं भवद्भिः प्राणास्त्यजन्त इति तेषां बोधनायेत्यर्थः । अन्य-त्पूर्ववत् ॥ पूर्वचित्तये—चिती सञ्ज्ञाने (भ्वा० प०), भावे क्तिन्, मन्क्त्यधादित्वात् पूर्वपदान्तोदात्तत्वम् ॥ ३ ॥ १५

* ऋ० वे० १, ६, ७, २ ।

† 'पूर्व-चित्तये—पूर्व-प्रज्ञापनाय'—इति वि० ।

४र ३र ४ ३र ४ ५र २ २ ३र ४र ४
॥ ध्यैतम् ॥ स्वादोरित्थाविषू । वता३४औहोवा ।
१ र २ १ ० ५ ५ ३र र २
माधोःपिब । तिगौरियार३४ः । ओ६हा । याइन्द्रेण
३र ३र१ २ १ २ ५
सयावरीवृ । श्रोमार३दा । तिशोर२ । भार३४था ॥(१)
३र ४ २ ४ ५र २ २ ३र ४र ५ १ ३र
ताअस्यपृशना । युवा३४औहोवा । सोमं७श्रीण । ति
१ ० ५ ५ २ १र २ र १ ३र १
पार्श्वयार३४ः । ओ६हा । प्रियाइन्द्रस्यधेनवोव । ज्राउ
२ १ २ ५ ३र ४ २
ह्वार३यिन्वा । तिसार२ । यार३४काम् ॥(२) ताअस्यन
४ ५र २ २ ३र ५र ५ १ १ १ ०
मसा । सहा३४औहोवा । सापर्य्यन्ति । प्रचायितसा
५ ५ २ १र २ र १ २
र३४ः । ओ६हा । व्रतान्यस्यसश्चिरेपू । रुणार३यिपू ।
२ ५ १ र २ २ १
वर्चा२यि । तार३४यायि । वस्वोरनुस्वा३रा । ऊर्म्मायि ।
२ ५र र २ ५
जार२यार३४औहोवा । वार३४सू(३) ॥ ४ * ॥ [१] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य
पञ्चमः खण्डः† ॥ ५ ॥

---

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ४सा० ।

† 'उक्त' माध्यन्दिनं पवमम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ षष्ठे खण्डे,* प्रथमतृचे—

प्रथमा।

१ २ ३ १र २र२ १र २र ३ १

असाव्यꣳशुर्मदायाप्सुदक्षोगिरिष्ठाः।

३ २उ ३ १ २

श्येनोनयोनिमासदत्॥ १ †॥

"गिरिष्ठाः" पर्वत-जातः "अंशुः" सोमः "मदाय" मदार्थम् "असावि" अभिषुतः "अप्सु" वसतीवरीषु "दक्षः" प्रवृद्धश्च भवति। किञ्च "श्येनो न" यथा श्येनः पक्षी वेगेनागत्य स्थानमासीदति तद्वदयं सोमः "योनिं" स्वकीयं स्थानम् "आसदत्" आसीदति॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ १र २र ३ १ २ ३ १ ३ १र २र ३ २

शुभ्रमन्धोदेववातमप्सुधौतन्नृभिःसुतम्।

१ २ ३ १ ३ १ २

स्वदन्तिगावःपयोभिः॥ २ ‡॥

यत् "देववातं" देवैः प्रार्थितं¶ "शुभ्रं" शोभनम् "अन्धः" अन्नस्वरूपं "नृभिः" नेतृभिः "सुतम्" अभिषुतम् "अप्सु"

---

* 'इदानीं तृतीय-सवनमुच्यते'—इति वि०।

† ऋ० आ० ५, २, ४, ७ (२आ० ११५०) = ऋ० वे० ७, १, २४, ४।

‡ ऋ० वे० ७, १, २४, ५।

¶ 'देववातं—देवानां भक्षणीयम्'—इति वि०।

Digitized by Google

वसतीवरीषु "धौतं" शोधितं सोमं "गावः" पशवः "पयोभिः" आशिरैः "स्वदन्ति" स्वादयन्ति ॥

"धौतंसुतं"-"धूतःसुतः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ २ ३१२ ३२ ३१ २ ३ १ १
आदीमश्वन्नहेतारमशूशुभन्नमृताय।
२ ३ १ २ ३ १ २
मधोरसꣳसधमादे ॥ ३ * ॥ १६

"आत्"† अनन्तरं "हेतारं" प्रेरकम्‡ "ईम्"¶ एनं "मधोः" मधुरस्य सोमस्य "रसं" "सधमादे" यज्ञे "अमृताय" अमरणाय "अशूशुभत् ऋत्विजः शोभयन्ति। तत्र दृष्टान्तः— "अश्वं न" यथा प्रेरका अश्वं सङ्ग्रामे शोभयन्ति तद्वत् ॥

"हेतारं"-"हेतारः"—इति पाठौ, "मधोः"-"मध्वः"— इति च ॥ ३ ॥ १६

१ २ १ २
॥ सन्तनि ॥ असाहाउ। वायाꣳशुर्मा३१उवा२३।
५ २ १ २ १ ३२ २ १ १
दा२३४या। अण्सुदच्चोगिरिष्ठा१ः। श्येनोहाउ। ना
२ २ ५ २ १
योनिमा३१उवा२३। सा२३४दात् ॥(१) शुभ्रम

* ऋ० वे० ७, १, २५, १।

†, ¶ "आत्"—"ईम्"—इत्येतावुपसर्गौ—इति वि०।

‡ 'हेतारं—शीघ्रगामिनम्'—इति वि०।

२र र१ र२ १२र१ २ ३ २ २ १
मन्धोदेववातमप्सुधौतन्नृभीःसुतार्म्। स्वदाहाउ। ता

२ २ ५ १र २र १ २ १
यिगावःपा३१उवार३। यो२३४भीः॥(२) आदीमश्वन्न

र २र १ र २ १ २र ३ १ १ १ १ १ १ १
श्वेतारमध्रुध्रुभन्नमृतायार३४५। मधोर्हाउ। रासध

१ ५
सदाधा३१उवा२३। मा२३४दे(३)॥ १० *॥ [१]

१ र २ १ र र २
॥ गौषूक्तम्॥ असाव्यंशुर्मदौ। हौहोवाहायि।

र १ २ १ र २ १
हाया। अप्सुदक्षोगिरो२। ऊवायि। ऊवा२यि। ष्ठा२ः।

र २र २ २ १ १
श्येनोनयोनिमौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। सादा२३त्।

१ ३ ५र र २ १ र २र र र २
होर्वा२३४औहोवा॥(१) शुभ्रमन्धोदेवौ। हौहोवाहा

र १ २ १ र २ १
यि। वाताम्। अप्सुधौतन्नृभौ२। ऊवायि। ऊवा

१ १ र २ १
२यि। सूता२म्। स्वदन्तिगावःपौ२। ऊवायि। ऊ

१ १ ३ ५र र
वा२यि। योभा२३यिः। हो२वा२३४औहोवा॥(२)

१र २र १ २ १ र र १२ र १ र
आदीमश्वन्नहौ। हौहोवाहायि। ताराम्। अध्रुध्रु

० ऊ० गा० १प्र० १ख० १० खा०।

२ १ १ १ र
भवमौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। ताया२। मधोर
२ १ १
सꣳसधौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। मादा २ ३ यि।
१ ५ र र १ १ र २ ३ १ १ १ १
हो२वा२३४औहोवा। अग्निराऊता२३४५:(३)॥ १८* ॥[२]

१ र २ १
॥ ऐड अर्चितम्॥ असाव्यꣳशो। हायि। मदा
२ १ र २ २ २ र र ३
२३या। अप्सु२ज्ञोगा१यिरा३यिष्ठाः। श्येनोनयो२३४
५ १ २ २ १ ४ ५
हायि। नायिमा३हायि। सदात्। औ२३होवा ॥(१)
२ १ १र१ २ १ र २
शुभ्रमन्धो। हायि। देववा२३ताम्। अप्सुधौतमृभा
२ २ ३ ५ १ १ २
१यिःसू३ताम्। स्वदन्तिगो२३४हायि। वा:पा३हायि।
र १ ४ ५ १र१र १ २
योभायि:। औ२३होवा॥ (२) आदीमश्वो। हायि। न
१र २ १ र २ २ २ र ३
हेता२३राम्। अप्सुभ्रुभमा१र्ना३या। मधोरसो२३
५ १ २ २ र १ १ ४ ५
४हायि। साधा३हायि। मादा। औ३होवा।
होई। डा(३) ॥ ४ † ॥ [३]

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० १८सा०।

† ऊ० गा० १६प्र० १अ० ४सा०।

॥ अध्वर्य्यवसोमसाम ॥ असाव्यꣳशुर्म्मदाया ३ ए। अप्सुदक्षोगिरिष्ठाः। श्येनोनया२३। हायि। नायि माउवा। सादाउवा३ ॥(१) शुभ्रमन्धोदेववाता३मे। अप्सुधौतन्नृभिःसुताम्। स्वदन्तिगा२३। हायि। वाः पाउवा। योभाउवा३ ॥(२) आदीमश्वन्नचेतारा३मे। अशूशुभन्नमृताया। मधोरसा२३म्। हायि। साधा उवा। मादाउवा३। ऊ३२३४पा(३) ॥ २ * ॥ [४] १६

अथ प्रगाथरूपे द्वितीय-सूक्ते†—

प्रथमा।

अभिद्युम्नम्बृहद्यशइषस्पतेदिदीहिदेवदेवयुम्।

विकोशम्मध्यमंयुव ॥ १ ‡ ॥

हे "इषस्पते" अन्नस्य पते! "देव!" स्तोतव्य सोम! "द्युम्नं" द्योतमानं "बृहत्" प्रभूतं "यशः" अन्नरूपं "देवयुं"

---

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० २सा०।

† 'श्यावनं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ६, २, ४, २ (२भा० २२६पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १८, ४।

Digitized by Google

देवान् कामयमानं हविर्लक्षणं त्वदीयं रसम् "अभि दीदिहि" अस्मभ्यमाभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः। [यद्वा, हे सोम! यतो ऽत्र देवयुं देवानिच्छन्तं यजमानमभिलक्ष्य प्रकाशय। आमन्त्रितस्याविद्यमानवत्त्वेन (८,१,१९) पादादित्वादनिघातः। किञ्च "मध्यमम्" अन्तरिक्ष-स्थितं "कोशं" मेघं "वियुव" ह्यस्य विगमय विश्लेषय॥

"देवयु"-"देवयुः"---इति पाठौ॥१॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ ३ २र ३ २ ३ २उ १ २ १ १ २
आव च्यस्व सुदक्ष चम्वोः सु तो विशां वह्निर्न विश्पतिः।
२ १ ३ १ १ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः॥ २ *॥ १७

हे "सुदक्ष" शोभन-बल! "चम्वोः" अधिषवण-फलकयोः "सुतः" अभिषुतः त्वं "वह्निः न विश्पतिः" सर्वासां प्रजानां वोढा राजेव "विशां" प्रजानां वोढा सन् "आ वच्यस्व" आगच्छ कलशमापवस्व [वचेर्गत्यर्थस्य व्यत्ययेन श्यनि रूपम्। किञ्च त्वम् "अपः" अपाम् उदकादीनां "रीतिं" व्याप्तां गतिं वृष्टिं "दिवः" द्युलोकात् "पवस्व" कुरु। किं कुर्वन्? "गविष्टये" गामात्मन इच्छते यजमानाय "धियः" कर्माणि "जिन्वन्" प्रेरयन्॥

"अपोजिन्वन्"-अपाञ्जिन्व"—इति पाठौ॥२॥१७

* ऋ० वे० ७, ५, १८, ५।

॥ च्यावनम् ॥ अभा२३४यि । द्यु म्नम् । बृहा२३४ द्यशा६ः । हाउ । आयिषस्पा२३४ता यि । दिदीहिदेव देवायू२३४ऌ्हायि । वायिकोशा३म्मा३ । ध्यामा२३ऌ्हा३४३यि । यू२३४वो६हायि ॥(१) विको२३४ । ग्रम्म । ध्यमा२३४युवा६ । हाउ । आवच्चा२३४स्वा । मुदच्च चमुवो हतो२३४हायि । वायिशांवा३क्रा३यिः । नावा२३हा३४३यि । य्या २ ३ ४ तो६हायि ॥(२) विश्वा२३४म् । वह्निः । नवा३४यिश्पतो६ः । हाउ । वाष्टिन्दा२३४यि वाः । पवस्वरीतिमापो२३४हायि । जायिन्वान्गा३वा३यि । हाया२३हा३४३यि । धा२३४यो६हायि(३) ॥ ११ * ॥ [१]

॥ ऐषिरम् ॥ अभिद्यु म्नम्बृहद्या३शाः । आयिषस्प ते । दायिदीश्हायिदे२ । वादा१यिवायू२म् । वायि

* ऋ० मा० ३प्र० १ख० ११सा ०।

१ ४ ५ ४ ५ १ र
को१ग्राम्बार२३ । ध्यमोवा । यू५वो६हायि ॥(१) विको

२ १ २ १ ७ १ २
ग्रम्मध्यमंयू३वा । चावच्यस्व । सूदत्वाचा२ । मूवो१:

१ २ ४ ५ ४
सुता२: । वायिश्वा१वाक्का२३यि: । नवोवा । ग्यां५तो

५ १ र २ १ १
६हायि ॥(२) विश्वांवह्निन्नविश्पा३ती: । वाष्टिन्दिव: ।

१ ७ १ २ १ २
पावस्वारी२ । नायिमा१पा२: । जायिन्वा१न्गावा२३

४ ५ ४ ५
यि । ष्टयोवा । धा५यो६हायि(३) ॥ १ * ॥ [२]

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १
॥ सफम् ॥ अभिद्यू३म्नम्ब् । ह्या२३४श्रा: । इष

२ १ २र १ २ १ २ ३
स्पतायिदी२ । दीहिदायिवा३दा३यि । वा३२३४यूम् ।

७ १ २ २ २ ५
विको । ग्रम्माध्या३मा३म् । यू३४५वो६हायि(१)॥ १२† ॥[३]

३ ४ ५ ७ ३ ४ ५
॥ वाचःसाम ॥ अभिद्युम्नाम् । चाँयि । बृहद्यशा

५ १ २ र १ २ १ र १
६ए । आयिषस्पते । दायिदी१ह्यायिदे२ । वादेवयुम् ।

---

* ऊ० गा० ५प्र० १अ० १खा० ।

† ऊ० गा० ९प्र० १अ० १२खा० ।

Digitized by Google

१　२　　　　１　４　　２　　５
वायिकोऽ१आम्मा२३ । ध्या२३मा३म् । यू३४५ वो६ हा

२ ४र ५　　　　२ ४ ५ ५ १ २
यि ॥(१) विक्को३अम्मा । हो । ध्यमंयुवा६ए । आवच्य

१ ०　　　　१ र २　　１ २ ०
स्व । छदन्नाचा२ । मूवोःसुतः । वायिआ१वाक्का २३

१　४　　　　２　　５　　３ ४र
यिः । ना१३वा३यि । ध्या३४५तो६हायि ॥(२) विश्वा

५　　２　　３ ४ ५ ५ १ २ १ ०
वक्कीः । हौयि । नविश्पता६ए । वार्ष्टिन्दिवः । पाव

१ २　१ २　　　　１
स्हारी२ । तायिमपः । जायिन्वा१ग्गावा२३यि । ष्टा२

४　２　　５
३या३ । धा३४५योई६हायि(३) ॥ १४ *॥ [४] १७

अथ तृतीय-तृचे*—

प्रथमा ।

३ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्राणाशिशुर्महीनाᳪहिन्वन्नृतस्यदीधितिम् ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विश्वापरिप्रियाभुवदधद्विता ॥ १ †॥

● ऊ० गा० १४प्र० २अ० १४सा० ।

* 'ओसं साम'—इति वि० ।

† छ० आ० ६, २, ३, ५ (२भा० २११ पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, ४, १ ।

"प्राणा" ते [अनिते : प्रानचि "बहुलञ्छन्दसि (२,४,७३)" —इति विकरणस्य लुक्, "सुपां सुलुग् (७,१,३९)"—इति सुप आकारादेशः] यज्ञस्य प्रापयिता चेष्टयिता "मह्नीनां" महतीनां मंहनीयानां वा अपां "शिशुः" पुत्र-स्थानीयः सोमः "ऋतस्य" यज्ञस्य "दीधितिं" प्रकाशकं धारकं वा स्वीयं रसं "हिन्वन्" प्रेरयन् "विश्वा" सर्वाणि "प्रिया" प्रियाणि हवींषि "परिभुवत्" परिभवति व्याप्नोति । "अध" अपिच "द्विता" द्विधा भवति दिवि च पृथिव्याञ्च वर्त्तत इत्यर्थः ॥

"प्राणा"-"क्राणा"--इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३१ २ ३ २ १ २ ३ १र २र ३२
उपचितस्यपाप्योऽ२ऽरभक्तयद्गुहापदम् ।

३१ २ ३१र २र ३१ २ ३ २
यज्ञस्यसप्तधामभिरधप्रियम् ॥ २* ॥

"चितस्य एतन्नामकस्य ऋषेस्तोतुर्मम यज्ञे "गुहा" गुहायां हविर्धाने वर्त्तमानयोः "पाप्योः" पोषणवद्रुठयोः अधिषवण-फलकयोः "पदं"स्थानं सोमः "यत्" यदा "उप अभक्त" सम-भजत । "अध" अनन्तरं "यज्ञस्य" "धामभिः" च धारकैः "सप्त" सप्तभिश्छन्दोभिः गायत्र्यादिभिः "प्रियम्" प्रीणयितारं सोमम् "अभि"ष्टुवन्ति ऋत्विजः [अपि वा सप्त सर्पणशीलैर्वसतीवर्या-दिभिरुदकैः सोममभिषुण्वन्ति ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ७, ५, ४, १ ।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १र २र ३ २
त्रीणित्रितस्यधारयापृष्ठेष्वैरयद्रयिम्।
१ २ ३ १ २ ३ ३ २ १ २
मिमीतेअस्ययोजनाविसुक्रतुः॥ ३* ॥ १८

सोमः "त्रितस्य" मम यज्ञस्य सम्भूतानि "त्रीणि" सवनानि धारया आत्मीयया "वि धारया"। किञ्च पृष्ठेषु" सामसु "रयिं" दातारमिन्द्रम् "ऐरयत्" आयमतु "सुक्रतुः" शोभन-यज्ञः स्तोता "अस्य" इन्द्रस्य "योजना" संयोजनादीनि स्तोत्राणि "वि मिमीते" करोति† यस्मादेवं तस्मादिन्द्रं सामसु प्रेरयत्वित्यर्थः॥

"ऐरयत्"—"एरया"—इति पाठो॥ ३ ॥ १८

२र १ र २र १
॥ओम्॥ प्राणा। शिशुर्म्महो। नाम्। हो
१ २र १ र
ई२। हो। वाहोयि। हिन्वन्नृतस्यदीधितायिम्।
२ १ २ २ १ २ २ १ २
विश्वापा१रा२३यि। प्री३याभू३वात्। अधा २ ३ हिता
२ १ र २र १ १
३४३॥(१) उपा। त्रितस्यपा। ष्योः। होई२। हो।

---

* ऋ० वे० ७, ५, ४, ३।

† 'विमिमीते—मा माने, मानं करोति'—इति वि०।

२र १ र २ १ २
वाहोयि। अभक्तयद्भुहापदाम्। यद्मास्या१सा २ ३।
२ १ २ १ १ २ २र१
:प्ना३धामा३भायि। मधा२३प्रिया२३४३म् ॥(२) चीणी।
र २र १ १ २र१ र
त्रितस्यधार। या। होई२। हो। वाहोयि। पृष्ठे
२ १ २ २ १ २१
ष्वैरयद्र्यायिम्। मिमायिते१आ२३। स्या३योजा३ना।
१ २ १
विसूर२३क्रतू२३४३:। औ२३४५ई। डा(३) ॥ १२* ॥ [१]

२र र १ २ १
॥ त्रैतम् ॥ प्राणाग्निशुर्मंहायिनाम्। हिन्वनृतस्य
र २ र र ऽ१ ५ १
दीधितायिम्। विश्वापरिप्रिया३भूवो२३४हायि। धा२
३ ५र र २ १ २ १ १ १ १ २
धा२३४औहोवा। ए३। हिता२३४५ ॥(१) उपचितस्य
र१ २ १ र २ २ ऽ १
पाषायो: अभक्तयद्भुहापदाम्। यज्ञस्यसप्ताधा३माभी
५ १ २ ५र र २ १ ३ १ १ १ १
२३४हायि। आ२धा२३४औहोवा। ए३। प्रिया२३४५
२र र १ २ १ र र
म् ॥(२) चीणित्रितस्यधाराया। पृष्ठेष्वैरयद्र्यायिम्।

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० १२गा०।

१ २ २　२ ३ १　५　१　२　५२ २
मिमीतेअस्ययो३जानो२३४हायि । वा२यिसू२३४औहो

२　१ २ १ १ १ १
वा । ए३ । क्रतू२३४५ः(३) ॥ २* ॥ [२]

१२ २　१२　२
॥ सुज्ञानम् ॥ प्राणाश्शिशुः । महीनाम् । हिन्व

१　२　२ २ १　१२
न्नार्त्ता२ । स्यदीधितायिम् । विश्वापारा२यि । प्रिया ।

२　५२ २　१ २　२
भू२वा२३४औहोवा । अधद्वितए३ ॥(१) उपच्चिता । स्य

१ १　१　१　२ १　२　१
पार्थियोः । अभक्तायार२त् । गुहापदाम् । यज्ञस्यासा

१२　२　५२ २　१　१
२ । प्रधा । मा२भा२३४औहोवा । अधप्रियमे३ ॥(२)

१२　२ १　२ २ १　१
चौणिच्चिता । स्यधा२या । पृष्ठेषूवा२यि । रयद्रया

२ २ १　१२　२　५२ २
यिम् । मिमीतेआ२ । स्यो । जा२ना२३४औहो

१　२　१　१ १ १ १
वा । विसुक्रतुरि३उपा२३४५(३) ॥ २०† ॥ ३]

१२ २　२ १　५
॥ दैवोदासम् ॥ प्राणा३१ । शिशू३१२३४ः । म ।

१　२　२ २　२ १　५२
हा३यिनाम् । हिन्वा३१न् । न्नता३१२३४ । स्यदी ।

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० १सा० ।

† ऊ० गा० ७प्र० १ख० २०सा० ।

२ २ ३ २ ३ २ ५र
धा३यितायिम्। विश्वा३१। परा३१२३४यि। प्रिया।

२ र ३ ५ ३ २ १ ५ ३ २
भू३वात्। अधा३१। हिता३। ओ२३४वा॥(१) उपा

२ २ ५र १ २ ३ २
३१। चिता३१२३४। स्वपा। पा३योः। अभा३१।

३ २ ५र २ २ ३२ ३
क्तया३१२३४त्। गुहा। पा३दाम्। यज्ञा३१। स्व

२ ५र २ २ ३ २ ३ २
सा३१२३४। स्वधा। मा३भायिः। अधा३१। प्रिया३

१ ५ ३र २ ३ २
म्। ओ२३४वा॥(२) चौणी३१। चिता३१२३४। स्व

५र २ २ ३ २ ३२ ५
धा। रा३या। पृष्ठा३१यि। ध्रुवा३१२३४यि। रयत्।

२ २ ३ २ ३र २ ५ र
रा३यायिम्। मिमा३१यि। तेष्वा३१२३४। स्वयो।

२ ३ ३२ ३ २ १ ५ ३
जा३ना। विसू३१। क्रतू३ः। ओ२३४वा। ऊ२३४

५
पा(३)॥ २१*॥ [४]

१र र र १ २ १२
॥ अध्यम्॥ प्राणाग्निमूर्२र्म। चौनोवा। हिन्वन्

१ २ ३र २ १ ३र १ ११र२ १
ता। स्वदीधितायिम्। विश्वापरिप्रियाभुवद्। धार

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० २१खा०।

१ १२ १ १ १
३। हिताउवा। श्रूधिया२। ए२३हिया३४३। औ२
३४५ई। डा(१)॥ १४*॥ [५]

१२ १२ १ ५ १ २ ५
॥ पौष्कलम्॥ प्राणाम्नाइयिप्रुः। मांहा२३४यिनाम्।
१ १ १ १ २ २ ५ १ १
च्छिन्वानृता। स्वादायिधी२३४तोम। विश्वापरायि।
७ २ २ १ २ १ १ ११ २ १ १
प्रिया२भ२३४५वा६५ईत्। मधद्विता२३४५॥(१) उपत्नी३
४ ५ २ २ ५ १ १ ११ २ २
तस्य। पाषा२३४योः। मभाक्तयात्। गूद्दापा२३४
५ २ १ ७ २ १
दाम्। यन्नास्यसा। प्रधा२मा२३४५भा६५६यिः। म
१ १ १ १ १ १ १२ १ १ ४ ५ २ २ ५
र्धप्रिया२३४५म्॥(२) त्नौष्नि त्नौ३तस्य। धारा२३४या।
२ १ २ १ २ २ ५ २ १ २
पृष्ठायिषुवायि। रायद्रा२३४यायिम्। मिमायितेभ्रा।
७ २ २ १२ १ १ १ १
स्ययो२जा२३४५ना६५६। विसुक्रतू२३४५ः(३)॥ २*॥ [६]

१२ २ २ १ २ १ २
॥ अध्यम्॥ प्राणाम्निभू२र्म्ना। त्नौनोवा। हिन्वन्नृ
१ १ १२ २ १ २२ १ १ १२ २ १
ता। स्वदीधितायिम्। विश्वापरिप्रियाभुवद्। धा२३।

* ज० गा० ८प्र० १ख० १४सा०।

† ज० गा० ८प्र० २ख० २सा०।

२ १र १ र १
द्विताउवा । श्रूधिया२ ॥(१) उपश्चिता२स्य । पार्थियो

२१ २१ २ १र २ १ २१ २१र २
वा । अभक्षयात् । गुहापदाम् । यज्ञस्य सप्तधामभि

१ २ १र १र
र । धार२३ । प्रियाउवा । श्रूधिया२ ॥(२) त्रीणिचि

र १ २१र११ २२१ १
ता२स्य । धारयोवा । पृष्ठेषुवायि । रयद्रयायिम् ।

र १र र१ १र १ २ १र
मिमीतेअस्ययोजनावि । सू२३ । क्रताउवा । श्रूधि

१ १ १
या२ । ए२३हियाउ४३ । औ२३४५ई । डा(३) ॥ ५*॥ [७]

१रर र र १ २
॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ प्राणाशिशाऔहोहायि । मा

३ ५ २ १ ५ १ र र
हा२३४यिनाम् । चिन्वाना२३४हा । तस्यदीधितिंविश्वा

२ ३र ४र ५ १ २ ५ २ ३ ५
पा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उरुवा२३४रायि ।

२ १र १ १ ७ २ ३र ४र ५ १ २ ५
प्रियाभु । वादधद्दा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि ।

३र २ ५र ५ २ र प
औहो३१२३४ । ता । एहिया६हा ॥(१) उपत्रिताऔ

१ २ ३ ३ ५ २ १ ५ १ र
होहायि । स्थापाषा२३४योः। अभाक्षा२३४हा । यज्ञ हा

* ऊ० गा० ११प्र० १अ० ५खा० ।

२ ३र ४र ५ १ ७ ५ २ ३
प्रद्ंयग्मस्या३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उङ्कवा२
५ २ १र २ १ ७ २ ३र ४र ५ १ ३
३४सा । प्रधाम । भायिरधप्रा३४ । औहोवा । इहा
५ ३र २ ५र ५
२३४हायि । औहो३१२३४ । याम् । एचियाइहा ॥(२)
२र र र १ २ ३ ५ २ १
त्रीणित्रिताऔहोहायि । स्याधारा२३४या । पृष्ठायिषू
५ १र र २ ३र ४र ५ १ ३
२३४हायि । ऐरयद्रयिम्मिमीता३४ । औहोवा । इहा
५ २ ३ ५ १ १र २ १ ७ २
२३४हायि । उङ्कवा२३४आ । स्ययोज । नाविस्तुका२
३र ४र ५ १ ३ ५ ३र २
४ । औहोवा । इहा२३४हायि । औहो३१२३४ । तूः ।
५ १ ५ ४
एहियायाईहा । होपुई । डा(३) ॥ ८* ॥ [८]

२र र १ २ २ १
॥ वार्शम् ॥ प्राणाशिशूः । माहा ३ यिनाम् । चि
र ७ ३ ५ र
त्वन्तस्यदीधि । तायिम् । विश्वा२पा२३४रायि । प्रि
र २ ७ २ १ ३ ५र र
याभुवा३त् । ई३या । अध । दा२यिता२३४औहोवा ॥(१)
२ १ ३ २ १ र
उपत्रिता । स्यपाषा३योः । अभक्तयज्ञ,हाप । दाम् ।

* का० गा० १५प्र० २ख० ८षा० ।

० ३ ५ १ र २ ३ २ २
यम्रा२स्रा२३४सा। प्राधामभा३यिः। ई३या। अध।
२ ५र र २र १ २ २
प्रा२या२३४औहोवा ॥(२) चौणिचिता। अधारा३या।
१ र र ० ३ ५ १ र
पृष्ठेषेरयद्र। यायिम्। मिमा२यितेर३४आ। आयो
२ २ २ १ ३ ५र र २
जना३। ई३या। विसु। का२नू२३४औहोवा। ऊ
५
२३४पा(३) ॥ ८* ॥ [९] १८

अथ चतुर्थ-तृचे†—

प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ० २ ३ १ २ ३ २
पवस्ववाजसातयेपवित्रेधारयासुतः।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ २
इन्द्रायसोमविष्णवेदेवेभ्योमधुमत्तरः॥ १‡ ॥

हे "सोम!" "सुतः" अभिषुतः त्वम् "इन्द्राय" "विष्णवे" च अन्येभ्यो मित्रादिभ्यः "देवेभ्यः" "मधुमत्तरः" अतिशयेन माधुर्य्योपेतः सन् "वाजसातये" अन्न-लाभाय "पवित्रे" "धारया" "पवस्व" चर॥

---

* ऊ० गा० १६प्र० २ख० ८गा०।

† "गौरीवितं साम"—इति वि०

‡ ऋ० वे० ७, ४, २८, १।

Digitized by Google

"वाजसातये"-"वाजसातमः"—इति पाठौ, "मधुमत्तरः"-"मधुमत्तमः"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वा॒ᳫँ रि॑हन्ति धी॒तयो॒ हरिं॑ प॒वित्रे॑ अ॒द्रुहः॑।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
व॒त्सं जा॒तं न मा॒तरः॒ पव॑मान॒ विध॑र्मणि ॥ २* ॥

हे "पवमान" पूयमान सोम ! "वि धर्मणि" विविधं हविषां धारकेण† यज्ञे "अद्रुहः" द्रोह-वर्जिताः "धीतयः" अङ्गुलयः [धीतय इति अङ्गुलिताम (निघ० २,५,७)] "हरिं" हरित-वर्णं "पवित्रे" स्थितं "त्वां" "रिहन्ति" लिहन्ति निष्पीड़नार्थं स्पृशन्तीत्यर्थः। तत्र दृष्टान्तः—"वत्सं जातं न मातरः"; 'मातरः' मातृ-भूता गावः उत्पन्नं 'वत्सं' यथा 'लिहन्ति' तद्वत् ॥

"धीतयः"-"मातरः"—इति पाठौ, "मातरः"-"धेनवः"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २
त्वं द्यां च॑ महिव्रत पृथि॒वीं चाति॑ जभ्रिषे।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
प्रति॑ द्रा॒पिम॑मुञ्चथाः॒ पव॑मान महित्व॒ना ॥ ३‡ ॥ १९

* ऋ० वे० ७, ४, १८, २।

† 'विविधे कर्मणि'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १८, ४।

Digitized by Google

हे "महिव्रत" महाकर्मन् सोम! "त्वं" "द्यां" द्युलकं "पृथिवीं च" "अति जभ्रिषे" अत्यन्तं बिभर्षि [डुभृञ् धारण पोषणयोः (त०उ०), तस्य छान्दसे लिटि (३,४,६) सर्वविधीनां छन्दसि वैकल्पिकत्वात् अत्र इडागमः । अन्तरिक्षे सोमात्मना,- पृथिव्यां लता-रूपेणेति एवं लोकद्वयवर्त्तित्वम्]। हे "पवमान' चरन्! त्वं "महित्वना" महत्त्वेन युक्तः सन् "द्रापिं" कवचं* "प्रति अमुञ्चथाः" प्रतिमुञ्चसि संवृणोसि ॥ ३ ॥ १९

॥ गौरीवितम् ॥ पव । स्वा३ । जसातयायि । पवित्रे धारयासुता२३ः । आयिन्द्रायसो३१२३ । मवा पूयिष्णवायि । दायिवेभ्योमा३१२३ । धुमोवा । ता५ रो६हायि ॥ (१) तुवाम् । रिहा३ । तिधीतयाः । ह रिम्पवित्रेअद्रुहाः । वात्सञ्जाता३१२३म् । नमा५तराः । पावमाना३१२३ । विधोवा । मा५णो६हायि ॥(२) तु वम् । द्याञ्चा३ । महिव्रता । पृथिवीञ्चातिजभ्रिषा२३

---

* 'द्रापिं—द्रातव्यम् *** केषां? यजमानानाम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

१ २र २ २ १ २र २
यि। प्रातिद्रापा३१२३यिम्। अमूपुचथाः। पावमाना
४ ५ ४ ५
३१२३। मद्दोवा। त्वापूनोद्दाायि(३) ॥ १३ ॥ [१]

२ २ २ १ २
॥ पार्थम् ॥ ओ३दो३दोयि। पव। स्ववा२। ज
२ २ ५ २ १र २ २ ३ ५
सांता२३४यायि। पवि। चेधा२। रयामू२३४ताः।
२र १ ३२ ३ ५ २ रर १
इन्द्रा। थसो२। मवायिष्णा२३४वायि। देव। भ्यो
३ ४ २र १
मा२३। धुमा३न्तापूरा६५६ः ॥(१) तुवाम्। रिहा२।
२ २ ३ ५ २ १ २ र २ ३
तिधायिता२३४याः। हरिम्। पवा२यि। चेअद्रू२३
५ २ १र ३ २ ३ ५ २
४द्राः। वत्सम्। जाता२म्। नमाता२३४राः। पव।
१र २ ४ १ १र
माना२३। विधा३र्मापूणा६५६यि ॥(२) तुवम्। द्या
३ २ १ ५ २ १र २ २ ३
म्चा२। मच्छिव्रा२३४ता। पृथि। वीम्चा२। तिजभ्री
५ २ १र २ २ ३ ५
२३४षायि। प्रति। द्रापा२यिम्। अमुचा२३४थाः।
२ २ २ १र २
ओ३दो३दोयि। पव। माना२३। मद्दा३यित्वापूना
६५६(३) ॥ १४ ॥ [२]

* ऊ० गा० ३प्र० १खं० १३गा०।

† ऊ० गा० ३प्र० १खं० १४गा०।

२ १ १ १ ५ २
॥ रयिष्ठम्॥ पवस्खवा । जसाताश्यायि । श्रौहो
१ १ २१ २ १ २ १ १ १ १ १ २
३वा । इन्द्रायसोमविष्णवा२ ३ ४ ५ यि । इन्द्रायसो ।
१ २ २ ५ २ २ २ १२ १२ १ २ ३ १
मवायिष्णा३वायि । श्रौ३हो३वा । देवेभ्योमधुमत्तरा२
१ १ १ १२ २ २ १ २ २ उ २ २
३४५ः । देवेभ्योमा । धुमात्ता३राः । श्रौ३हो३वा ॥(१)
१२ १ २ २ ५ २ २ १
तुवाᳩरिच्चा । तिधायिता३याः । श्रौ३हो३वा । हरि
२ २ १ २ १ १ १ १ २ २ १ २ २
म्यविचे अद्रू हा२३४५ः । हरिम्पवायि । चे षाद्रू३हाः ।
उ २ २ १ २२१ १२ १ १ १ १ १ २ २
श्रौ३हो३वा । वत्सञ्जातन्नमातरा २ ३ ४ ५ः । वत्सञ्जा
१ २ २ ५ २ २ १ १२ १ २
ताम् । नमाता३राः । श्रौ३हो३वा । पवमानविधर्म्म
१ १ १ १ १ २ २ १ २ २ ५ २ २
णो२३४५ । पवमाना । विधर्म्मा३णायि । श्रौ ३ हो ३
२ २ १ २ २ उ २
वा ॥(२) तुवन्ध्याञ्चा । महायिव्रा३ता । श्रौ ३ हो ३
२ १२ २ २ १ १ १ १ १ २ २
वा । पृथिवीञ्चातिजभ्रिषा२३४५यि । पृथिवीञ्चा । ति
१ २ २ ५ २ २ १ १२ १ २ २ १ १
जाभ्रो३षायि । श्रौ३हो३वा । प्रतिद्रायिममुञ्चथा२ ३
१ १ २ २ १ २ २ ५ २ २
४५ः । प्रतिद्रापायिम् । ममूञ्चा३थाः । श्रौ३हो३वा ।

१ २र १ २ ३ १ १ १ १ १ २र ३ १ २ १
पवमानमच्छित्वना२३४५। पवमानमच्छित्वना१। पवमाना।
१ १ २ ऽ २ २ ऽ २ २ ऽ २
महायित्वा३ना। औ३हो३वा। औ३हो३वा। ई३या।
ऽ २ ५ २ २ ५
ई३या ३ ४। हा। हाउवा३। ऊ३२३४पा(४) ॥१*॥ [३]
५ ३ २ २ २
॥ द्विरभ्यस्तत्वाष्ट्रीसाम ॥ पव। स्वा३। हा३हा।
३ १र १ ५ १र २ २ २ २ २र
जसातायार२३४यि। पवि। त्रधा३। हा३हा। रया
१ ५र ३ २ २ २ ३ १ १
सूतार२३४ः। इन्द्रा। यसो३। हा३हा। मविष्णार
र ५र ३र २ २ २ ३ २ १
३४यि। देवे। भ्योमा३। हा३हा। धुमा३हो२३
५ ४ ५ ५ र ३ २
४। वा। ता ५ रो ६ हायि ॥(१) तुवाम्। रिहा ३।
२ २ ३ १र १ ५ ३ २ २
हा३हा। तिधीतायार२३४ः। हरिम्। यवा३यि। हा
२ ३र १ १ ५ ३र २ २
३हायि। चअद्रहा२३४ः। वत्सम्। जाता३म्। हा
२ ३ १र १ ५ ३र २ २ २
३हायि। नमातारा२३४ः। पव। माना३। हा३हा
३ २ १ ५ ४ ५ ५
यि। विधा३हो२३४। वा। मा५णोईयायि ॥(२) तुव

---

* ऊ० गा० ८प्र० १ख० १गा०।

३र १ १ १ २ १ १ ५
म्। द्याऽवा३। हा३हा। महित्वाता२३४। पृथि।

२र १ २ ३ ३ २ १ ५ ३र
वीऽवा३। वा३वा। निजभ्रीषा२३४यि। प्रति। द्रा

२ २ २ ३ २ १ ५ ३र
पा३यिम्। वा३हायि। अमुत्वाथा२३४ः। पव। मा

२ २ ३ ३ २ १ ५ ४
ना३। वा३वायि। मघा३हो२३४। वा। त्वा५नोह

५
हायि(३)॥ ६*॥ [४]

२ २ २ ४र ५र २
॥ श्यावाश्वम्॥ पवा ३१। स्वा३वा। जसा। ता

४५ ५ १ र र १र १
३ये। एहिया। पा। वित्रेधारा। या। सुतार:।

१र र १ र १ ४ ५ १र
एहिया२। इन्द्रायसोमा३वा३यि। ष्णा२३४वायि। ऐ

१र र र १र २ ४ २
हा२यि। एहिया२। देवेभ्योमाधु३मा३। ता३४४रो

५ ३ २ २ ४ ५र २
इहायि॥(१) तुवा३१म्। रा३यिह। न्तिधी। ता२३ः।

५ १ २ १
एहिया। हा। रिम्पवित्रे। अ। द्रुहा२ः। एहि

१र २ ४ ५ १र
या२। वत्सञ्जातान्नो३मा३। ता२३४राः। ऐहा२

---

* ऊ० गा० ८प्र० २अ० ६खा०।

Digitized by Google

१र १र २ ४ २
यि । एँहिया २ । पवमानावा३यिधा३ । मा३४५णो६
५ ३ १ २ ४ ५ १ ४
हा यि ॥(२) तुवा३१म । द्या३च्च । महि । प्रा३त ।
५ १ र र २ १
एहिया । पा । र्थिवीञ्चातायि । ज । भ्रिषा २यि ।
१र १र २ ४ ५ १र
एहिया २ । प्रतिद्रापायिमा३सू३ । चा२३४थाः । ऐ
२र १र २ ४ १
हा २यि । एहिया २ । पवमानामा३हा३यि । त्वा३४५
५
नो६हायि(३) ॥ १८* ॥ [५]

२ र २ १
॥ चान्श्रीगवम् ॥ पवस्ववाजसा१तायायि । पवित्रे ।
र १ १ १ र १ र १ ३ १
धारा२३या । ऊम्मा २१५२ । सुतइन्द्रायसोमविष्णवा२
१ १ १ १ २ २ २ २
३४५यि । दायिवा३उवा । भ्यो २मा । धू२३मा । त
१ २ ४ ५ २र २ १
रा । औ३होवा ॥(१) त्वा७रिहन्तिधा१यितायाः । ह
२ १ १ र १ १ १र १
रिम्य । विन२३आ । ऊम्मा २१५२ । ऋुहोवत्सञ्जातन्न
२र १ ३ १ १ १ १ १ २ २ १
मातरा२३४५ः । पावा३उवा । मा २ना । वा २ ३ यि

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० १८गा० ।

२ १ २ ४ ५ २
धा । मणा । औ३होवा ॥(२) त्वन्द्याश्चमद्दा १ विद्या

२ १ र र २ १ २
ता । पृथिवीम् । षाता२३यिजा । ऊम्मा२१ऽ२ । धि

र २र १ २ २ १११ १ १ २ २ १
षेप्रतिद्राविमभुञ्चथा२३४५ः । पावा३उवा । मा२ना ।

२ १ २ ४ ५ ४
मा२३हायि । त्वना । औ३होवा । होऽ५ई । डा(३) ।

॥ २०॥ [६]

२ १ ४र ५ २र २ ५
॥ आकूपारे ॥ पवस्वा२३वाज । साता२३४यायि ।

१ १र २र १ २ र २ १
पवा२यिस्वधा । रयासुताः । इन्द्रायासो२ । मविष्व

२र २ १र १ ४ २ १
वायि । देवेभ्योमा२३ । धू२३मा३ । ता३४५ रो ६ हा

२ १र ४ ५ २र २ ५ १
यि ॥(१) तुवा२रा२३यिहन्ति । धीता२३४याः । हरा

१ २र १ २ १ र १
२यिम्पवायि । चे अङ्कुषाः । वत्सञ्जाता२म् । नमात

२ १ १ ४ २ ५
राः । पवमाना२३ । वा२३यिधा३ । मा३४५णो६हा

२१ ४ ५ २ २ ५ १
यि ॥(२) तुवन्द्या२३श्चम । दिव्रा२३४ता । पृथ्वा२यि

● ज० गा० १५प्र० २अ० २०सा० ।

१२ २ १ २ १
वीच्वा। तिजभिषायि। प्रतिद्रापा२विम्। अमुच
२ १ १ ४ २ ४
थाः। पवमाना२३। मा२३वा३यि। त्वा३४५नोई२वा
यि(३) ॥ २१* ॥ [७]

२ १२ २ १
॥ आचेयम् ॥ पवस्वा। जसातार२३यायि। पा
२२ १२ २ १२ २ १२ २ २
विचे धा। रयासू२३माः। इन्द्रायसो। माविष्णावा२
१२ २ २ ४ ५ ५
यि। देवेभ्योश्मा३। धुमोवा। ता५रो६वायि ॥ (१)
१ २ १२ २ १ २ १ २२१
तुवाऽरिचा। तिधीतार२३वाः। वारिपवि। चेभद्र
२ १ २ ७५ १ २ १
२३षाः। वत्सञ्जातम्। नामातारा२ः। पवामा३नार।
४ ५ ४ ५ २ २ १
विधोवा। मा५णोई२वायि ॥(२) तुवन्धाच्वा। महिम्ना
२ १ १२ १ १ २ १ २
२३ता। पार्थिवीच्वा। तिजश्रीर२३षायि। प्रतिद्रापिम्।
० १ २ १ ४ ५ ४
आमुञ्चाया२ः। पवामा३मा३। मघोवा। त्वा५नो
५
ई२वायि(३) ॥ १०† ॥ [८]

* ऊ० मा० ११प्र० १ख० २१सा०।

† ऊ० मा० १६प्र० १ख० १८सा०।

४ २ ४ ३ ४र
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवा५स्व। वा३जा३सा३साता
५ १ र २ १ २ २ १ १ र
यायि। पावित्रेधा। रा३यासू३ताः। इन्द्रा२य। सो
२ १ १ २ १ रर
मा२३वा। ऊम्मायि। ष्णा३वायि। दायिवेभ्योमधुमा
५२ २ १ २ १र र र
२त्तराउ॥(१) राख्व। वा३रिद्धन्तिधीतयोहरिम्यबायि।
२ १ २ २ १ र १ २ १
त्रे३आद्रू३द्याः। वत्सा२जा। तन्ना२३मा। ऊम्मायि।
२ २ १ र ५ २ १ २ १
ता३राः। पावमानविधा २ म्मणाउ॥(२) णायित्व। व
र र २ २ २ १ १
न्द्याम्त्रमच्द्रितपृथिवीश्चा। तीञजाभी३षायि। प्राता२
१र २ १ २ २ १ र
यिद्रा। पिमा२३मू। ऊम्मायि। चा३थाः। पावमान
५ २ २ ५१११
मद्दा२यित्वनाउ। वा३४५(३)॥ ८॥ [८]

१ ५ १र१र
॥ वासदस्यवम् ॥ पा२३४। व। स्वा। जासात
१ र५ १र१र
या२३यि। पा२३४। वि। त्रेधा। रायासुता२३ः।
१ र ५ १र१ १
आ२३४यि। द्रभयसो। माविष्णावा२३यि। दा२३४यि।

---

* ज० गा० १६प्र० २आ० ९गा० ।

Digitized by Google

र र ५ ११ १ १ र
वे। भ्योमा। धुमत्तरा३१उ ॥(१) तू२३४। वाम्।
५ २र १र १ ५
रिद्दा। तीधीतया२३ः। द्धा२३४। रिम्। पवायि।
२र १ १ र ५ २र १र
चे मद्र् द्धा२३ः। वा२३४। त्वम्। जाताम्। नामा
१ र ५ २र१ १
तरा२३ः। पा२३४। व। माना। वीधर्म्म णा३१उ ॥(२)
१ र ५ २र १ १
तू२३४। वम्। द्याम्बा। माद्दिव्रता२३। पा२३४।
र ५ २र १ १
थिं। वीच्चा। तीजभ्रिषा२३यि। प्रा२३४। ति।
र ५ २र १ १ र ५
द्रापायिम्। चामुच्चथा२३ः। पा२३४। व। माना।
२र १ २ १ १ १ १
माद्दित्वना३१उ। वा२३४५(३) ॥ ३* ॥ [१०]

३ ५ र १र ४ ५र २
॥ वषट्कारनिधनम् ॥ पवस्ववाजसातये। पवस्वा
४र ५ ४र ५ २ र र १ ७ १ १
३वाजसातयायि। पवित्रे धारा३यासुता२ः। रयासू१
१र ऽ २ र १ ७
ता२३ः। ओमो३वा। इन्द्रायसोमा३वायिष्णवा२यि।
१ २ १र ऽ २ र र र १ ७
मवायिष्णा१वा२३यि। ओमो३वा। देवेभ्योमध३मात्त

* ऋ० मा० २०म० १ख० ३सा०।

रा२ः । भुमास्ता१रा२३ः । ओम् । ओ२ । वा२३४ । औहोवा । ऊ२३०पा(१) ॥ २* ॥ [११]

॥ अद्याभ्रीयाद्यम् ॥ त्वन्द्याश्चमहिव्रता । पृथिवी श्चातिजज्ञी२३षापि । प्रतिद्रापिममुञ्चा२३थाः । पवमा २३ना३ । मा२ । हित्वा३४ औहोवा । ना२३ ४५ (३) ॥ १२† ॥ [१२] १९

अथ पञ्चम-खण्डः‡—

प्रथमा ।

इन्दुर्वाजीपवतेगोन्योघा

इन्द्रेसोमःसहइन्वन्मदाय ।

हन्तिरचोबाधतेपर्य्यरातिं

वरिवस्कृण्वन्वृजनस्यराजा ॥ १¶ ॥

---

* ऊ० गा० २२प्र० ३अ० २खा० ।

† ऊ० गा० २२प्र० १अ० १२खा० ।

‡ 'दाशस्पत्यं साम'—इति वि० ।

¶ ऋ० सा० ६, १, ५, ८ (२भा० ११९४०)=ऋ०वे० ७, ३, १२, ५ ।

"इन्दुः" क्षरण-शीलः "सोमः" "वाजी" बलवान् "गोन्योघा" गमनशील-गोघोनाम-रस-सङ्घातः "इन्द्रे" "सह्रः" बलकरं रसम् "इन्वन्" प्रेरयन् सोमः "मदाय" अस्य मदार्थं "पवते" क्षरति। किञ्च "रक्षः" राक्षस-कुलं हन्ति" हिनस्ति। किञ्च "अरातिं" शत्रुं "परि बाधते" परितः संहरति। कीदृशः? "वरिवः" वरणीयं धनं "कृण्वन्" स्तोतॄणां कुर्वन् "वृजनस्य" बलस्य "राजा" ईश्विता सोमइति॥

"अरातिम्"-अरातीः"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३१ १ २ ३ १ २　३ २
अधधारयामध्वापृचान

३ १र २र　३ २ ३
स्तिरोरोमपवतेअद्रिदुग्धः।

२३ १ २　३ १ २ ३ २
इन्दुरिन्द्रस्यसख्यञ्जुषाणो

३ २ ३ १ २　३ १र २र
देवोदेवस्यमत्सरोमदाय॥ २*॥

"अध" अथ अनन्तरं "अद्रि-दुग्धः" ग्रावभिर्दुग्धोऽभिषुतः सोमः "मध्वा" मदकारिण्या "धारया "पृचानः" देवान् सम्पर्चयन्† "रोम"‡ अवि-रोमभिः कृतं पवित्रं "तिरः"

* ऋ० वे० ७, ४, १३, १।

† 'पृचानः—सिच्यमानः'—इति वि०।

‡ 'रोम—रोमाणि चर्ममयानि, दशापवित्रस्येत्यर्थः'—इति वि०

तिरस्कृत्य व्यवधायकं कृत्वा "पवते" कलशेषु चरति। किञ्च "इन्द्रस्य" "सख्य" सखिभावं कर्म वा "जुषाणः" सेवमानो "देवः" द्योतमानः "मत्सरः" मदकरः* "इन्दुः" सोमः "देवस्य" इन्द्रस्य "मदाय" मदार्थं "पवते" चरति ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ २ ३१ २ ३ २
अभिव्रतानिपवतेपुनानो

३ २ ३ २उ ३१२ ३र २
देवोदेवान्त्स्वेनरसेनपृञ्चन्।

२ ३ १२ ३१र ३र ३
इन्दुर्धर्माण्यृतुथावसानो

३२ १ २ ३२ ३ १ २
दशक्षिपोअव्यतसानोअव्ये ॥ ३† ॥ २०

"धर्माणि" धारकाणि "व्रतानि" कर्माणि "ऋतुथा" ऋतोः काले "वसानः" आच्छादयन् "इन्दुः" सोमः "पुनानः" पूयमानः सन् "अभि पवते" कलशानभिलक्ष्य चरति। कीदृशः? "देवः" सङ्क्रीडनशीलः‡ 'स्वेन आत्मीयेन "रसेन" इन्द्रादीन् "पृञ्चन्" सम्पर्चयन् संयोजयन्¶। तमिमं सोमं

---

* 'मत्सरः—मदनीयः मत्तयोग्यो वा"—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, ४, १३, २।

‡ 'देवः—सोमः दानादि-गुण-युक्तः'—इति वि०।

¶ 'पृञ्चन्—तर्पयन् प्रीणयन् वा'—इति वि०।

"दश" दशसङ्ख्याकाः "चिपः"* [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ० २,५,३)] कर्मार्थं प्रेर्यन्त इति तत्सङ्ख्याका अङ्गुलयः "साती" समुच्छ्रिते† "अव्ये" अवि-भवे पवित्रे "अव्यत" गमयन्ति [यद्वा, तत्र पवित्रे पूयमानं सोमम् अव्यत गच्छन्ति। वी गत्यादिषु (अदा०प०) लङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् ॥

"व्रतानि"-"प्रियाणि"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २०

१ र र र र १ र र
॥ दाशस्पत्यम् ॥ इन्दुरौहोवाहाइया। वाजाउ।
२ र र १ २ २
वा३। हाउवा। पवतेगोनियोघाउ। वा३। हाउ
१ २ १ २ २
वा। इन्द्रायिसोमः। साहइन्वाउ। वा३। हाउवा
१ २ ५र र २१११११ २१ २
३। मा२दा२३४औहोवा। या२३४५। हन्तायिरक्षो।
र १ २ २ १ २ ५र
बाधातायिपाउ। वा३। हाउवा३। मा२दा२३४औ
र २१११११ २१ २ १ २
होवा। तीर२३४५म्। वरायिवस्कृ। पवन्वृजनाउ।
२ १ २ ५र र २ १ १
वा३। हाउवा३। स्या२रा२३४औहोवा। जा २ ३

* 'चिपः—चिप्यन्त इति चिपः अङ्गुल्यः,—इति वि०

† 'उर्वे प्रदेशे'—इति वि०।

१ १ २ र र र र १ २ र २
४५॥(१) अधीच्चोवाच्चाईया। धाराउ। वा३। हाउ

र र १ २ २ १
वा। यामधृवापृचानाउ। वा३। हाउवा। तिरोरो

२ १ २ २ १ २
म। पवाताआउ। वा३। हाउवा३। द्रा२इदू२३४

५र र ३ १११ २१ २ १ २
औहोवा। ग्धा२३४५:। इन्दूरायिन्द्रा। स्यसाखीया

२ १ ३ ५र र २ ११
उ। वा३। हाउवा३। जू२षा२३४औहोवा। षा२३

११ २र१ २ १ २ २
४५:। देवोदायिवा। स्यमात्माराउ। वा३। हाउ

१ ३ ५र र ३ १११ २र र
वा३। मा२दा२३४औहोवा। या२३४५॥(२) अभीचो

र र १ २ २ र १
वाच्चाईया। व्रताउ। वा३। हाउवा। निपवतेपु

२ २ १ २ र १
नानाउ। वा३। हाउवा। देवोदायिवान्। स्वेना

२ २ १ २ ५र र
रासाउ। वा३। हाउवा३। ना२पा२३४औहोवा।

२ १११ १ २ १ २ २ १
चा२३४५न्। इन्दुर्बाम्मी। णियार्ण्थाउ। वा३। हा

१ ३ ५र र २ १ १ १ १ १
उवा३। वा२सा२३४औहोषा। ना२३४५:। दमाचा

Digitized by Google

२ १ २ २ १ २ १
यिष्णो । मघ्यामाम्राउ । वा३ । हाउवा३ । नोर्श्वा

५२ २ २ १ १ १ १
२३४औहोवा । व्या२३४५यि(३) ॥ १५* ॥ [१]

२ १ ऽ २ ३२ २
॥ सम्पावैयश्वम् ॥ ओ३हायि । ओ३हा । ओहा ।

१ ऽ २ २ १ २ २ १ २ २ २ ४
इया२ । ओ३हा३ए । इन्दुर्वाजी । पवते । गोनियो

५ २ १ २ २ २ १ २ ३ ४ ५ २ १
घाः । इन्द्रे सोमाः । सचइ । न्वन्मदाया । हन्तिर

२ १ २ २ ३ ४ ५ २ १ २
चो । वा३धते । पर्य्येरातीम् । वरिवस्का । एवा ३

१ २ २ ४ २ १ २
न्वृज । ना३४३ । ष्या३रा५जा६५६ ॥(१) अधधारा ।

२ १ २ २ ३ ४ ५ २ १ २ २ २ १ २ २
या३मधु । वापृचानाः । तिरोरोमा । पवते । अद्रि

४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
दुग्धाः । इन्दुरिन्द्रा । स्या ३ सखि । यज्जुषाणाः ।

२२१२२ २ १ २ २ ४
देवोदेवा । स्यमत्स । रो३४३ । मा३दा५या६५६ ॥(२)

२ १ २ १ २ ३ ४ ५ २२ २ २ २
अभिव्रता । नो३पव । तेपुनानाः । देवोदेवान् । स्व

१ २ ३ ४ ५ ५ १ २ १ २ ३
३नर । सेनपृचान् । इन्दुर्र्मर्मा । णो३श्चतु । थाव

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० १५गा० ।

Digitized by Google

४ ५ २ १ १ २र २ १
सानाः। ओ३हायि। ओ३हा। ओहा। इया२।
५ २ २ १ २ १ २ २ ४
ओ३वा३ए। दशस्त्रियो। अव्यत। सा३४३। नो३वा
५व्या६५६यि(३)॥ ५* ॥ [२] २०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः† ॥ ६ ॥

अथ सप्तमे खण्डे,‡ प्रथम-सूक्तम्¶—

प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्।
१ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ र
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवी
२र ३ २ ३ १ २
षं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० ८प्र० २अ० ५सा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'इहामीमुक्थसामानि'—इति वि०।

¶ 'सत्वयं साम'—इति वि०।

§ छ० आ० ५, १, ४, १ (१भा० ८५४पृ०) = ऋ० वे० ३, ८, ११, ४।

हे "अग्ने!" "द्युमन्तं" दीप्तिमन्तम् "अजरम्" अजीर्णम् "ते" त्वाम् "आ" सर्वतः "इधीमहि" दीपयामः । "यत् ह" यदा खलु "ते" तव "स्या" सा "पनीयसी" स्तुत्या "समित्" दीप्तिं "द्यवि" द्युलोके "दीदयति" दीप्यते तदा हे अग्ने ! "स्तोतृभ्यः" अस्मभ्यम् "इषम्" अन्नम् "आभर" आहर ॥१ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २   २ १ २ २ २ १ २
आतेअग्नऋचाहविःशुक्रस्यज्योतिषस्पते ।

१ २ २ २२ १ २ २ १ २२ १ २
सुश्चन्द्रदस्मविश्पतेहव्यवाट्तुभ्यꣳहूयत

२१२ २ २ १ १ २
इषꣳस्तोतृभ्यआभर ॥ २* ॥

हे "ज्योतिषस्पते" दीप्तेः स्वामिन् अग्ने ! "शुक्रस्य" दीप्तस्य "ते" तुभ्यम् "ऋचा" मन्त्रेण सह† "हविः"‡ "आ" आभिमुख्येन "हूयते" । हे "सुश्चन्द्र" सुष्ठाह्लादक ! शोभन-हिरण्य ! वा, हे "दस्म" शत्रूणामुपक्षपयितः ! । शिष्टं गतम् ॥

"ज्योतिषः"–"शोचिषः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ३, ८, २१, ५ ।

† 'याज्यानुवाक्या-लक्षणया'—इति वि० ।

‡ 'हविः—चरु-पुरोडाशादि-लक्षणम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१२ २२ ३ १ २ १ ११
ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि ।
१ २ ३१ २ ३ १ २ २
उतोन उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत
१२ ३ २ ३ १ २
इषꣳ स्तोतृभ्य आभर ॥ ३* ॥ २१

हे "सुश्चन्द्र" शोभनाह्लादक ! शोभन-हिरण्य ! वा, अग्ने ! "उभे" "दर्वी" दर्व्यौ हविः-पूर्णे स्रुक्स्रुवौ "आसनि" आस्ये "आ श्रीणीषे" आश्रयसि पचसि वा "उतो"† अपिच "नः" अस्मान् "उक्थेषु" यागेषु‡ "उत्पुपूर्याः उत्पूरय¶ फलैः । हे "शवसस्पते" बलस्य पालयितः ! । इषमित्यादि गतम् ॥३॥२१

१र ४र ५ र २ ४ ५
॥ सञ्जयम् ॥ आतेअग्नइधी । माइ३यि । द्युम
२ ४र५ ४ ५ ३ ४ १र ४र १ ४र ५ र ४ ३ ४र १ ३ ४ ५
न्ता३न्देवअजरम् । यद्धस्यातेपनीयसी । समिद्दीदयता
२ ५ ३ ५ १र ४र५ र
यि । ऊ३ । ऊम् । द्या२३४वी ॥(१) आतेअग्नऋचा ।
२ ४ ५ १ ४र ५ ४ ५ ३ ४ ३ ४
हा३वायिः । शुक्रस्या३ज्योतिषस्पतायि । सुश्चन्द्रदस्म

* ऋ० वे० ५, ८, २२, ४ ।

†,¶ 'उत उ—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

‡ 'उक्थेषु—सामसु'—इति वि० ।

Digitized by Google

३ ४ ३र २ ४ ५ २र १ २ ४ ५ ५ २र २ ५
विद्यतेद्रव्यवाऽत्तुभ्यं॒ॢम् । ऊ३ । ऊम् । या२३४ता

२र ४र ५ २ ४ ५ २र २ ४
यि ॥(२) प्रोभेस्तुस्यन्द्रवि । भ्या३ताथि । दवीआ३यि

२र ५ ४५ ५ २र ४ २ ४ र र २र ४ ५ ५
पौषमासनायि । उतोनवत्युपूर्व्यांउक्थ्युप्रवसा । इ३

२ ५ १ र २ १ ५
३ऊम् । पा२३४तायि । इषऽम्त्तोनृभ्याऽ३या । ऊ३ ।

२ २ ५
ऊम्३४म् । भा३४५रोई्हायि(३) ॥ १६ * ॥ [१]

१ र ५ र ४ ५
॥ सौगमतम् ॥ आ२३४ । तेमयद्ध्भी । माहायि ।

२ र १ १२ २ १ २ २
द्यु मन्तन्देवाऽ३ । आ२३ । जरमा । यद्वास्या३ता३यि ।

१ २ ५ २ १ १ २ २
पानीऽरया२३४सी । समिद्धो२द्य । ता२३यि । द्यवि

२ १ र५ र ४ ५ २
या ॥(१) आ२३४ । तेमयक्षचा । हावायिः । भ्रुक्र

र १ १२१ १ २ २
स्यज्योती३ । षा२३ः । पतया । सुश्चान्द्रा३द्दा३ ।

१ २ ५ २१ १
स्ववाऽरयिम्रपा२३४तायि । द्रव्यवा२ट्तुभ्यम् । ऊ२३ ।

२२२ १ र ५ ४ ५
यतया ॥(२) यो२३४ । भेस्तुस्वन्द्रवि । प्रपानायि ।

* क० गा० ३प्र० १च० १६गा० ।

Digitized by Google

१२ २ २ ३२ १ ३ २ २ १ ० २
ट्वीश्रोणोषे३ । श्रा२३ । सनिया । उतोना३ऊ३त् ।
१ ३ ३ २ ३२ १ ३ ३ ३
पुपू२रा२३४या: । उक्थे षू२भव । सा२३: । पतथा ।
१ २ २ १ ५ २ ५
इषाऽस्तो३ष्टू३ । भ्या२३आ३ । भा३४ ५ रो ६ हायि ।
॥ ६ * ॥ [१२] २१

अथ द्विती-यत्चेर्†—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्रायसामगायतविप्रायबृहतेबृहत् ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ब्रह्मकृतेविपश्चितेपनस्यवे ॥ १ ‡ ॥

हे उद्गातार: ! "इन्द्राय" "बृहत्" एतन्नामकं साम "गायत" उच्चरत । कीदृशाय ? "विप्राय" मेधाविने "बृहते" महते "ब्रह्मकृते" वृष्टिद्वारा हविर्लक्षणस्यान्नस्य कर्त्रे "विपश्चिते" विदुषे "पनस्यवे" स्तुतिमिच्छते ॥

"ब्रह्मकृते"-"धर्मकृते"—इति पाठो ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ६सा० ।

† छ० आ० ४, २, ५, ८ (२भा० ७९१ पृ०)=ऋ० वे० ६, ७, १, १ ।

‡ 'महावैश्वामित्रं साम'—इति वि० ।

अथ द्वितीया।

१र १र २३१२ ३१र २र
त्वमिन्द्राभिभूरसित्वꣳसूर्य्यमरोचयः।
३१२ २३१२ ३१ २
विश्वकर्म्माविश्वदेवोमहाꣳअसि ॥ २ * ॥

हे "इन्द्र!" "त्वम्" "अभिभूः" शत्रूणाम् अभिभविता "असि" भवसि" किञ्च "त्वम्" "सूर्य्यम्" आदित्यम् "अरोचयः" तेजोभिरदीपय,† किञ्च "विश्वकर्मा" विश्वस्य कर्त्तासि "विश्वदेवः" सर्वदेवश्चासि [तथाच यजुर्ब्राह्मणम्—"अग्निं वा अन्वन्या देवता इन्द्रमन्वन्या" इति] अतो "महान्" सर्वाधिकोऽसि ॥२॥

अथ तृतीया।

३ २ ३ १ २३ २ १२ ३२३१
विभ्राजञ्ज्योतिषास्वाऽ३ऽरगच्छोरोचनन्दिवः।
३१ २ ३१ २
देवास्तइन्द्रसख्यायये मिरे ॥ ३‡ ॥ २२

हे "इन्द्र!" त्वं "ज्योतिषा" तेजसा "दिवः" आदित्यस्य "रोचनं" प्रकाशकं अधिकरणत्वेन "स्वः" स्वर्ग "विभ्राजत्" प्रकाशयन् "अगच्छः" अप्राप्नोः, किञ्च "देवाः" सर्वाः "ते" तव

---

* ऋ० वे० ६, ७, १,२।

† 'त्वं सूर्यमपि दीपयसे'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ७, १, ३।

Digitized by Google

"सख्याय" मित्वाय "येमिरे" स्वं स्वमात्मानं नियमितवन्तः:* अस्माकम् इन्द्रः सखा यथा स्यादिति सर्वे देवाः प्रयत्नमकार्षु-रित्यर्थः ॥ ३ ॥ २२

२र र१ १ ४ १
॥ सौमित्रम् ॥ औहोहोयि। औ३होऽ३यि। ओ
१ र १र १र २ १११९ १
३२३४५वा६५६। इन्द्राऽ२यसामगायताऽ२३४५। विप्रा२
२ २ १ १ ११११ २ २ १
यबृहा१त्। ब्रह्मकृते२विपश्चिते२३४५। ए३। पनस्य
१११११ १ १र १र २११११ १ र २र
वे२३४५॥(१) त्वमिन्द्राभिभूरसी२३४५। त्वꣳसूर्य्यमरो
१११११११ २१ २र १ र२११११ २ २
चया२३४५ः। विश्वकर्मा विश्वदेवा२३४५ः। ए३। म
१र १११२ २ १र२ १र २र१ ११११
हाꣳअसा२३४५यि ॥(२) विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वा२३४५ः।
१ २र र १ २ १र१र २ १र १ १ १ १
अगच्छो रोचनन्दिवा१ः। देवास्तइन्द्रसख्याया२३ ४ ५।
१र १र २ ४ २ २
औहोहोयि। औ३होऽ३यि। ओ३२३४५वा६५६। ए३।
१र१ ११११
येमिरा२३४५यि(३) ॥ १७ † ॥ [१] २२

* 'एतदुक्तं भवति—त्वदीयाय सख्याय चात्मानं नियेमिरे'—इति वि०।

† ऋ० गा० ३प्र० १ख० १७सा०।

अथ तृतीय-तृचे*—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ १   ३ १ २   ३ १ २
असाविसोमइन्द्रतेशविष्ठधृष्णवागहि ।
१ २   ३ २उ   ३ १ ३   १२ १ २
आत्वापृणक्त्विन्द्रियꣳरजःसूर्य्योनरश्मिभिः ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र !" "ते" त्वदर्थं "सोमः" "असावि" अभिषुतोऽभूत् । हे "शविष्ठ" अतिशयेन बलवन्! अतएव "धृष्णो" शत्रूणां धर्षयितः! इन्द्र! "आगहि" देवयजनदेशमागच्छ, आगतञ्च "त्वा" त्वाम् "इन्द्रियं" सोमपानेनोत्पन्नं प्रभूतं सामर्थ्यम् "आ पृणक्तु" आपूरयतु । "रजः" अन्तरिक्षं "रश्मिभिः" किरणैः "सूर्यो न" यथा सूर्यः पूरयति तद्वत् [शविष्ठ--शवस्विन्-शब्दादिष्ठनि विन्मतोर्लुक्, "टेः (६,४,११५)"—इति टि-लोपः, पादादित्वान्निघाताभावः (८,१,१८) । गहि—गमेर्लोटि "बहुलंछन्दसि (२,४,७३) "—इति शपो लुक्, "अनुदात्तोपदेश (६,४,३७)"—इत्यादिना अनुनासिक-लोपः, तस्य असिद्धवदत्रा-भात् (६,४,२२)"—इत्यसिद्धत्वाद्धेर्लुगभावः ॥ १ ॥

---

* 'मधावैश्वामित्रं साम'—इति वि० ।

† ऋ० सं० ४, २, १, ६ (१भा० ७०९पृ०)=ऋ० मं० १, ९, ५, १ ।

अथ द्वितीया।

१ २ ३१२ ३२ ३ १ २ ३ १ २
आतिष्ठवृत्रहन्रथंयुक्तातेब्रह्मणाहरी।
२ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
अर्वाचीनꣳसुतेमनोग्रावाकृणोतुवग्नुना॥ २ *॥

हे "वृत्रहन्" शत्रूणां हन्तः इन्द्र! "रथम्"† "आ तिष्ठ" आरोह। यस्मात् "ते हरी" त्वदीयावश्वौ "ब्रह्मणा" स्तोत्रलक्षणेन मन्त्रेण‡ "युक्ता" रथेऽस्माभिर्योजितौ ["सुपां सुलुक् (७,१,३९)"—इत्याकारः] तस्मात् त्वं रथमातिष्ठ। "ते मनः" त्वदीयं मनश्च "ग्रावा" अभिषवार्थं प्रवृत्तः पाषाणः "वग्नुना" वचनीयेनाभिषवशब्देन ["वचेर्गश्च (उ० ३, ३३)"—इति नु-प्रत्ययो गकारश्चान्तादेशः] "अर्वाचीनम्"—अस्मदभिमुखं "सुकृणोतु" सुष्ठु करोतु॥ २॥

अथ तृतीया।

१ ३ १र २र ३ १ २
इन्द्रमिद्धरीवहतोऽप्रतिधृष्टशवसम्।
१ २ ३१र २र३१२ १ २
ऋषीणाꣳसुष्टुतीरुपयज्ञञ्चमानुषाणाम्॥ ३ ¶॥ २३

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः॥

* ऋ० वे० १, ६, ५, २=य० वे० ८, ३३।

† 'रथं—रंहणीयं वेगवन्तम्'—इति वि०।

‡ 'ब्रह्मणा—त्रैविद्य-लक्षणेन अथवा ब्रह्मणा अन्नेन। अथवा ब्रह्मणा हिरण्यगर्भेण'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० १, ६, ५, १=य० वे० ८, ३४।

"अप्रतिधृष्टशवसं" केनाप्यधर्षितबलमहिंसितबलमित्यर्थः "इन्द्रमित्"*इन्द्रमेव "ऋषीणां" वसिष्ठादीनां† "मानवाणाम्" अन्येषां मनुष्याणाञ्च "सुष्टुतीः" शोभनाः स्तुतीः "अश्वा" "हरी" अश्वौ "उप वहतः" समीपं प्रापयतः। यत्र यत्र स्तुवन्ति यत्र यत्र यजन्ते तत्र सर्वत्रेन्द्रमश्वौ प्रापयत इत्यर्थः। [मानुषाणाम् "मनोर्जातौ (४,१,१६१)"—इति मनु-शब्दादञ् षुगागमश्च] ॥ "ऋषीणां सुष्टुतीः"-"ऋषीणाञ्चस्तुतीः"—इति पाठौ ॥३॥ २३

॥ महावैश्वामित्रम् ॥ इयायि । इया३ । ओहा ओहा । (एवन्त्रिः) असाविसो । मइन्द्राता२यि । शविष्ठधा । ष्णा वागाही२ । आत्वापृणा । न्ता इन्द्राया२म् । रजःसूर्य्यो । नरश्मायिभा२यिः ॥(१) आतिष्ठ वा । तृहन्नाथा२म् । युक्तातेब्रा । ह्मणाहारी२ । अर्वाचीनाम् । सुतेमाना२ः । ग्रावाकृणो । तुवग्नूना२ ॥(२) इन्द्रमिद्धा । रीवहाता२ः । अप्रतिधा । ष्टश

* 'इत्—इति पदपूरणः'—इति वि०।

† 'ऋषीणां—दर्शन-समर्थानाम्'—इति वि०।

Digitized by Google

१ २ २ ३ १२ १
वासा२म्। क्षणीणा९सूं। ष्टुतीरूपा२। यज्ञश्चमा।
१ १२ २ १
नुषाणा२म्। यज्ञश्चा। मानुषाणा२म्। इयायि।
४ ५ ४ ५ ३ ५ ३
इया३। ओहाओहा। ३। होऽइडा। २। होर३४५ई।
डा(३) ॥ १८ * ॥ [१]

१२ २ २ ३२ १
॥ त्वष्ट्रीसाम † ॥ असाविसो३हा। मइन्द्राता२यि।
१ २ २ ३ २२ १ १२ २ २ २ २
प्रविष्ठधा३हा। एवागाही२। आत्वापृणा३हा। तु
२ १ १ २ १ २ ३२ १ ५
इन्द्राया२म्। रजःसूर्य्यो३हा। नरा३होर३४। वा।
४ ५ १२ २ २ ३ १ १
मा५यिभोई्हायि ॥(१) आतिष्ठवा३हा। तृषन्नाथा२
१ २ २ २ २ ३ २२ १ १२ २ २
म्। युक्तातेब्रा३हा। ह्मणाहारी२। अर्वाचीना३९
२ ३ २२ १ १ २ २ २ ३ १ १
हायि। सुतेमाना२ः। ग्रावाक्षणो३हा। तुवा३होर
५ ४ ५ १ २ २ १२
३४। वा। ग्रे५नोई्हायि ॥(२) इन्द्रमिद्धा३हा। री
२ १ २ २ ३ २१ १ २
वहाता२ः। अप्रतिधा३हा। ष्टप्रवासा२म्। क्षणी

* उ० गा० ३प्र० १भा० १८सा०।

† 'खारत्वाष्ट्री'—इति क० पु० पाठः।

Digitized by Google

र २ १ २ ३ २र १ १ १ १ ३र २
णाꣳसूꣳहा। ष्टुतीढ़पा२। यम्म्वा३हायि। मानू३
१ ५ ४ ५
घो२३४। वा। घा५णोꣳहायि(३) ॥ १८ * ॥ [२]

५ र ३ १ ४ ५ १
॥ गौरीवितम् ॥ असा। विसो३। मइन्द्रतायि। प्र
र १ र २ ४
विष्ठधृष्णुवागचा२३यि। आत्वापृणा३१२३। क्तुइ५द्रि
१ र १ ४ ५ ४ ५
याम्। राजःसूर्यो३१२३। नरोवा। श्मा५यिभोꣳहा
५र ३ २ ४ ५ १ र र
यि ॥(१) आति। ष्ठवा३। त्वचनुथाम्। युक्तातेब्रह्म
र १ र र २ ४ १
णाचरा२३यि। आर्वाचीना३१२३म्। सुते५मनाः। आ
र २ ४ ५ ४ ५ ५
वाक्रणो३१२३। तुवोवा। गू५नोꣳहायि ॥(२) इन्द्रम्।
३ २ ४र ५ १ १ ३र
दृह्मा३। रीवहताः अप्रतिधृष्टशवसा२३म्। आर्षी
र १ ४ १ २ ४र
णाꣳसू३१२३। ष्टुती५ढ़पा। याम्म्वा३१२३। मानो
५ ५
वा। घा५णोꣳहायि(३) ॥ ४ † ॥ [३] २३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

सप्तमः खण्डः ॥ ७ ‡ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १८गा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० ४गा०।

‡ 'द्वादशस्य पञ्चमः परिसमाप्तम्'—इति वि०।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ६ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्ग-प्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे षष्ठोऽध्यायः* ॥

---

* 'तृतीयः प्रपाठकः परिसमाप्तः'—इति वि० मूलग्रन्थसम्मतम् ।

Digitized by Google